प्रकाशक :

लालचन्द कोठारी

सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट

बीकानेर

मुद्रक :

रेफिल आर्ट प्रेस,

३१, बड़तल्ला स्ट्रीट,

कलकत्ता-७

फोन : ३३-७९२३

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ मे बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा संस्कृत, हिन्दी एवं विशेषत. राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानो एवं भाषाशास्त्रियो का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमे प्रारम्भ से ही मिलता रहा है।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षो से बीकानेर मे विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तिया चलाई जा रही हैं, जिनमे से निम्न प्रमुख है—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस सम्बन्ध मे विभिन्न स्रोतो से सस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दो का संकलन कर चुकी है। इसका सम्पादन आधुनिक कोशो के ढंग पर, लंबे समय से प्रारम्भ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं। कोश मे शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं दी गई हैं। यह एक अत्यन्त विशाल योजना है, जिसकी सन्तोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है। आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य में इसका प्रकाशन प्रारम्भ करना सम्भव हो सकेगा।

२. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भंडार के साथ मुहावरो से भी समृद्ध है। अनुमानत: पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग में लाये जाते हैं। हमने लगभग दस हजार मुहावरो का, हिन्दी मे अर्थ और राजस्थानी मे उदाहरणो सहित प्रयोग देकर सम्पादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबन्ध किया जा रहा है। यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है।

यदि हम यह विशाल सग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह सस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिये भी एक गौरव की बात होगी।

३. आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का प्रकाशन

इसके अंतर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं:—

१. **कळायण,** ऋतु काव्य। ले० श्री नानूराम सस्कर्ता।

२. **आभै पटकी,** प्रथम सामाजिक उपन्यास। ले० श्री श्रीलाल जोशी।

३. **वरस गांठ,** मौलिक कहानी सग्रह। ले० श्री मुरलीधर व्यास।

'राजस्थान-भारती' मे भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओ का एक अलग स्तम्भ है, जिसमे भी राजस्थानी कवितायें, कहानिया और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं।

४. 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन सस्था के लिये गौरव की वस्तु है। गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानो ने मुक्त कंठ मे प्रशंसा की है। बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एव अन्य कठिनाइयो के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन सभव नही हो सका है। इसका भाग ५ अक ३-४ **'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक'** बहुत ही महत्वपूर्ण एव उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अक एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है। पत्रिका का अगला ७वा भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा हैं। इसका अक १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड का सचित्र और वृहत् विशेषाक हैं। अपने ढग का यह एक ही प्रयत्न है।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के संबंध मे इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन मे भारत एव विदेशो से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाएं हमे प्राप्त होती हैं। भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशो मे भी इसकी माग है व इसके ग्राहक हैं। शोधकर्त्ताओ के लिये 'राजस्थान-भारती' अनिवार्यत: संग्रहणीय शोध-पत्रिका है। इसमे राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखो के अतिरिक्त सस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचंद नाहटा की वृहद् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसधान, सम्पादन एवं प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि की प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियो को सुरक्षित रखने एव सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप मे मुद्रित करवा कर उचित मूल्य मे वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। संस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्र थो का अनुसधान और प्रकाशन सस्था के सदस्यो की ओर से निरंतर होता रहा है, जिसका सक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६. पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई संस्करण प्रकाश मे लाये गये हैं और उनमें से लघुतम सस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अश 'राजस्थान-भारती' मे प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध सस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती में प्रकाशित हुए हैं।

७. राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखा) की ७५ रचनाओ की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अक मे प्रकाशित हुई है। उनका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक 'काव्य क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन सस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबंध राजस्थान-भारती में प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड क्षेत्र के ५०० लोकगीतो का सग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र के सैंकडो लोकगीत घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरियां, और लगभग ७०० लोक कथाएं सग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतो के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पाबूजी के पवाड़े और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' मे प्रकाशित किए गए हैं।

१०. बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखो का विशाल संग्रह 'बीकानेर जैन लेख सग्रह' नामक बृहत् पुस्तक के रूप मे प्रकाशित हो चुका है।

११. जसवंत उद्योत, मुहता नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रथो का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचन्द भडारी की ४० रचनाओ का अनुसन्धान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के सम्बन्ध मे भी सबसे प्रथम 'राजस्थान भारती' मे लेख प्रकाशित हुआ है।

१३. जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखो और 'भट्टि वश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४. बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथो का अनुसन्धान किया गया और ज्ञानसागर ग्रंथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओ का संग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५. इसके अतिरिक्त सस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियो के निर्वाण-दिवस और जयन्तियां मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्य गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमे अनेकों महत्वपूर्ण निबध, लेख, कविताएं और कहानिया आदि पढ़ी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियो तथा भाषणमालाओ आदि के भी समय-समय पर आयोजन किये जाते रहे हैं।

१६. बाहर से ख्याति प्राप्त विद्वानों को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्रीकृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रम्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं।

गत दो वर्षों से महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ आसन की स्थापना की गई है। दोनो वर्षों के आसन-अधिवेशनों के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, विसाऊ और पं० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, हूंडलोद थे।

इस प्रकार सस्था अपने १६ वर्षो के जीवनकाल में, सस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरतर सेवा करती रही है। आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह सम्भव नही हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लडखडा कर गिरते पडते इसके कार्यकर्त्ताओ ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की वाधाओ के वावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे। यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नही है, न अच्छा संदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्यालय को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं, परन्तु साधनो के अभाव मे भी सस्था के कार्यकर्त्ताओ ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर संस्था के गौरव को निश्चित ही बढा सकने वाली होगी।

राजस्थानी-साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है। अब तक इसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश मे आया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एव अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनो और साहित्यिको के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हें सुगमता से प्राप्त करना सस्था का लक्ष्य रहा है। हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढता के साथ अग्रसर हो रहे हैं।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तको के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना सम्भव नही हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक सशोध एवं सास्कृतिक कार्यक्रम मन्त्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओ के विकास की योजना के अतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये १५०००) रु० इस मद मे राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष मे प्रदान की गई है, जिससे इस वर्ष निम्नोक्त २१ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

१. राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोतमदास स्वामी
२. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल
३. अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४. हमीरायण—	श्री भंवरलाल नाहटा
५. पद्मिनी चरित्र चौपई—	,, ,, ,,
६. दलपत विलास—	श्री रावत सारस्वत
७. डिंगल गीत—	,, ,, ,,
८. पंवार वंश दर्पण—	डा० दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठोड ग्रंथावली—	श्री नरोतमदास स्वामी और श्री बदरीप्रसाद साकरिया
१०. हरिरस—	श्री बदरीप्रसाद साकरिया
११. पीरदान लालस ग्रंथावली—	श्री अगरचंद नाहटा
१२. महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३. सीताराम चौपई—	श्री अगरचंद नाहटा
१४. जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचंद नाहटा और डा० हरिवल्लभ भायाणी
१५. सदयवत्स वीर प्रबंध—	प्रो० मंजुलाल मजूमदार
१६. जिनराजसूरि कृतिकुसुमांजलि—	श्री भंवरलाल नाहटा
१७. विनयचंद कृतिकुसुमांजलि—	,, ,, ,,
१८ कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावली—	श्री अगरचंद नाहटा
१९. राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२०. वीर रस रा दूहा—	,, ,, ,,
२१. राजस्थान के नीति दोहे—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२. राजस्थानी व्रत कथाएं—	,, ,, ,,
२३. राजस्थानी प्रेम कथाएं—	,, ,, ,,
२४. चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५. भड्डली—	श्री अगरचंद नहाटा और म: विनय सागर
२६. जिनहर्ष ग्रंथावली	श्री अगरचंद नाहटा
२७. राजस्थानी हस्त लिखित ग्रंथो का विवरण	,, ,,
२८. दम्पति विनोद	,, ,,
२९. हीयाली–राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य	,, ,,
३०. समयसुन्दर रासत्रय	श्री भंवरलाल नाहटा
३१. दुरसा आढा ग्रंथावली	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक सावन संग्रह (सपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरदास ग्रथावली (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (प्रो० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० श्री अगरचंद नाहटा), नागदमण (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया) मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रथो का सपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नही हो रहा है।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एव गुरुता को लक्ष्य में रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमे अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त सपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रथो का प्रकाशन सभव हो सकेगा।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षा विकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मजूर की।

राजस्थान के मुख्य मत्री माननीय मोहनलालजी सुखाडिया, जो सौभाग्य से शिक्षा मत्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने मे पूरा-पूरा योगदान रहा है। अतः हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ हो सके। संस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी।

इतने थोडे समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थो का सपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य मे जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादकों व लेखको के अत्यन्त आभारी हैं।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर सग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन संग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियटल इन्स्टीट्यूट वडोदा, भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ वृहद् ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बबई, आत्माराम जैन ज्ञानभंडार वडोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशकर देराश्री, प० हरिदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक सस्थाओ और व्यक्तियो से हस्तलिखित प्रतिया प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रथो का सपादन सम्भव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थो का सम्पादन श्रमसाध्य है एव पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियो का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छतः स्खलनंक्वपि भवत्येव प्रमादत., हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनो का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावो द्वारा हमे लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुनः मा भारती के चरण कमलो मे विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक
लालचन्द कोठारी
प्रधान-मन्त्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

बीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
संवत् २०१७
दिसम्बर ३, १९६०

प्राक्कथन

सुकवि जिनहर्ष राजस्थान के विशिष्ट कवि हैं जिन्होने साठ वर्ष पर्यन्त राजस्थानी, गुजराती भाषा में निरन्तर साहित्य रचना करके उभय भाषाओं के साहित्य भण्डार को खूब समृद्ध किया। उन्होने प्रधानतया जैन प्राकृत, सस्कृत कथा ग्रन्थों को आधार बनाकर रास, चौपाई भाषा-काव्यो की रचना की है। उनकी फुटकर रचनाए भी काफी मिलती हैं जिनका गत ३०० वर्षों में अच्छा प्रचार रहा है। जब हम बालक थे अपने घर, मन्दिर व उपासरो में कवि जिनहर्ष की रचनाए—स्तवन, सज्झाय, श्रावक-करणी आदि सुनकर कवि के प्रति हमारा आकर्षण बढता गया। साहित्य क्षेत्र मे जब हमने प्राचीन कवियो और उनकी रचनाओ की खोज का कार्य प्रारम्भ किया तो जिनहर्ष की रचनाओ का हमें विशेष परिचय मिला, तथा इतनी अधिक रचनाओ की जानकारी मिली जिसकी हमें कल्पना तक न थी। कवि का प्रारम्भिक जीवन राजस्थान में बीता पर किसी कारणवश स० १७३६ में कवि पाटण गए और उसके बाद केवल सं० १७३८ में राधनपुर चौमासा करने के अतिरिक्त स० १७६३ तक सभी समय पाटण मे ही बिताया। इसीलिए कवि की पिछली रचनाओ में गुजराती का प्रभाव विशेष रूप से देखा जाता है। प्रारम्भिक रचनाए अधिकांश राजस्थानी व कुछ हिन्दी में भी हैं। पाटण में अधिक रहने के कारण उनकी अनेक रचनाए वही के ज्ञानभण्डारों में उपलब्ध है और उनमें से बहुत-सी कृतियां तो कवि के स्वयं लिखित हैं।

जैन गुर्जर कविओ भाग-२ में जिनहर्ष की रचनाओं का विवरण जब हमने पढा तो मालूम हुआ कि पाटण के भंडार में कवि के अनेक रासादि की प्रतियाँ होने के साथ-साथ फुटकर रचनाओं की एक संग्रह प्रति भी वहाँ है। उन दिनों आगम-प्रभाकर मुनिराजश्री पुण्यविजय जी पाटण में थे, उन्हें उस संग्रह प्रति की नकल करा भेजने के लिए लिखा तो आपने अत्यन्त कृपापूर्वक वहाँ से सुवाच्य अक्षरों में भोजक केशरीचन्द पूनमचंद से उसकी प्रतिलिपि सं० १९९२ में कराके भेजी तथा साथ ही जिनहर्ष सम्बन्धी गीत* तथा उनकी हस्तलिपि का फोटो भी भेजा जिसका उपयोग हमने अपने ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह में उन्ही दिनों में कर लिया। इधर बीकानेर आदि के भंडारों में कवि की जो लघु रचनाए प्राप्त हुई उनकी प्रतिलिपि भी करते रहे। इस तरह करीब ३० वर्षके प्रयत्न से कवि की लगभग ४०० लघु रचनाए हमने संगृहीत की, जो इस संग्रहमें प्रकाशित की जा रही हैं। पाटण से मुनिश्री पुण्यविजयजी ने हमें जो सामग्री भिजवायी उसके लिए हम उनके बडे आभारी है। उनके प्रेषित सामग्री के अतिरिक्त भी पाटण के भंडारों में कवि की अन्य रचनाओं की प्रतियाँ हैं पर वे प्राप्त न होने से उनका उपयोग किया जाना सम्भव न हो सका। साठ वर्ष की दीर्घकालीन साहित्य साधना में कवि ने और भी अनेकों फुटकर रचनाएं कीं जिनका कोई संग्रह प्राप्त नहीं होता इसलिए ज्यो-ज्यों खोज की जाती है, अज्ञात रचनाएं प्राप्त होती ही रहती है। प्रस्तुत ग्रंथ के छपने के बाद भी कवि की कुछ ऐसी ही अज्ञात रचनाए मिली हैं जिन्हें कवि की जीवनी व रचनाओं सम्बन्धी लेख के अन्तमें दे दी गई हैं।

---

* इनमें से १ गीत इसी ग्रन्थ के पृष्ठ ५२३-२४ में दिया गया है।

अभी तक और भी खोज करने पर ऐसी रचनाएं प्राप्त होना सम्भव है। कुछ रचनाओं में एक ही प्रति मिलने के कारण पाठ त्रुटित व अशुद्ध रह गये हैं, जिनकी अन्य प्रतियों की खोज होना आवश्यक है।

कवि की बडी-बडी रचनाओं में से कुछ रास ही अभी तक प्रकाशित हो सके हैं, बहुत से रास अभी अप्रकाशित हैं जिनके प्रकाशित होने पर ही कवि के साहित्यिक कर्त्तृत्व के सम्बन्ध में प्रकाश डाला जा सकता है। कवि की जीवनी के सम्बन्ध में कोई भी महत्वपूर्ण ऐसी रचना नही मिली जिससे कवि के जन्मस्थान, वंश, माता-पिता, विहार, धर्मप्रचार आदि कार्यों की जानकारी मिल सके। प्राप्त साधनो के आधार से कवि के सम्बन्ध में जो कुछ विदित हो सका है, उनकी रचनाओं की सूची के साथ आगे दिया जा रहा है। इस ग्रन्थ में प्रकाशित रचनाएं विविध प्रकार एवं शैलियों की है, हमने उनका स्थूल वर्गीकरण तो कर दिया है पर उनकी विशेषताओं आदि के सम्बन्ध में विस्तार से प्रकाश डालने की इच्छा होने पर भी ग्रथ पर्याप्त बडा हो जाने से उस इच्छा का सवरण करना पडा है।

कवि के रास चौपाई आदि रचनाओ में तत्कालीन प्रसिद्ध अनेक देशियों का उपयोग हुआ है, जिनकी पूरी सूची बनायी जाने पर इस समय की प्रचलित अनेक विस्मृत लोकगीतों की जानकारी मिल सकती है। प्रस्तुत ग्रंथ में भी शताधिक देशियों का उपयोग हुआ है जिनकी सूची ग्रन्थ में अन्त में दी जा रही है। जिनराजसूरि, समयसुन्दर आदि १७वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के कवियों की रचनाए भी इतनी अधिक लोक-प्रिय हो गई थी कि इन रचनाओं की तर्ज में कवि ने अपनी रचनाए

गुफित की हैं। कई रचनाओं में पूर्ववर्ती कवियों का अनुकरण, भाव साम्य दिखाई देता है। जिनहर्ष के परवर्ती कवियों पर भी कवि की रचनाओं का प्रभाव अच्छा देखा जाता है। इस विषय में विशेष अनुसन्धान किया जाने पर कवि के प्रभाव एवं देन की पूरी जानकारी मिल सकती है।

प्रस्तुत ग्रन्थ की भूमिका राजस्थानी साहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक प्राध्यापक श्री मनोहर शर्मा (सम्पादक-वरदा) ने लिख भेजने की कृपा की है इसलिए हम उनके आभारी हैं। कवि के साहित्यिक महत्व के सम्बन्ध में उन्होने भूमिका में अच्छा प्रकाश डाल दिया है।

अगरचन्द नाहटा

भूमिका

भारतीय साहित्य को जैन विद्वानों का जो योगदान मिला है, उसकी गरिमा बहुत ऊँची है। उनकी साहित्य-साधना प्राचीन काल से आज तक सतत् प्रकाशमान रही है और इसका अत्यन्त महत्वपूर्ण फल प्राप्त हुआ है। जहा उन्होंने प्राचीन भारतीय भाषाओं में बहुविध साहित्य-रचना प्रस्तुत की है, वहां मध्यकालीन भारतीय भाषाओं के साहित्य भडार को भी अपनी मूल्यवान कृतियो से भरा-पूरा किया है। यही तथ्य आधुनिक भारतीय भाषाओं के सम्बन्ध में समझा जाना चाहिए। इस सुदीर्घकाल में जैन-समाज में इतने अधिक साहित्य-तपस्वी हुए हैं कि उनकी नामावली प्रस्तुत करना भी कोई सहज कार्य नहीं है, फिर इसका सम्पूर्ण पर्यवेक्षण तो और भी कठिन है।

जैन मुनियो का उद्देश्य सद्धर्म का प्रचार करना मात्र रहा है, जिससे कि जन-साधारण में सद्भावना बनी रहे। इस उद्देश्य की समुचित पूर्ति के लिए साहित्य एक उत्तम साधन है। फलस्वरूप जैन मुनि जीवन पर्यन्त विद्या-व्यसनी बने रहे है। उनके सामने सद्धर्म के अतिरिक्त अन्य कोई सासारिक स्वार्थ नही रहता। यही कारण है कि साहित्य की श्रीवृद्धि एव उसका सरक्षण उनके जीवन का पुनीत व्रत बन जाता है और वे इसका आमरण पालन करते है। इतनी निष्ठा के द्वारा तैयार किया साहित्य-संचय अति विस्तृत एव परमोपयोगी होना स्वाभाविक है।

विशेष बात यह है कि जैन साहित्य-साधक एकमात्र अपने साम्प्र-दायिक घेरे के बन्धन में ही नही रहे और उन्होंने अनेक ज्ञान-शाखाओं की अभिवृद्धि की ओर ध्यान लगाया। उन्होने अपने ग्रन्थागारों में सभी उपयोगी विषयो की रचनाओं को सगृहीत एव सुरक्षित किया फल यह हुआ कि देश के अनेक विकट परिस्थितियों में से गुजरने पर भी जैन-भण्डारों में भारतीय ज्ञान-साधना का अमृत-फल किसी अश में सुरक्षित रह सका। इस प्रकार बहुत अधिक साहित्य-सामग्री नष्ट होने से बचा ली गई। जैन ज्ञान-भण्डारों की यह सेवा सदैव अविस्मरणीय रहेगी।

राजस्थानी साहित्य को तो जैन-विद्वानो का विशेष योगदान मिला है। प्राचीन राजस्थानी-साहित्य प्राय. जैन-विद्वानो का ही सुरक्षित प्राप्त हो सका है और यह सामग्री बडी ही महत्वपूर्ण तथा विस्तृत है। जहा राजस्थानी साहित्य अपने वीर कवियों के सिंहनाद के लिए प्रसिद्ध है वहा इसके भक्तों एव सन्तों की अमृत-वाणी भी कम महत्वपूर्ण नही है। अभी तक अन्य सम्प्रदायों के समान जैन भक्ति-साहित्य का अध्ययन समुचित रूप से नही हो पाया है, अन्यथा राजस्थानी साहित्य और भी अधिक गौरव की वस्तु माना जाता। हर्ष का विषय है कि कुछ समय से इस दिशा में भी विद्वानो का ध्यान आकर्षित हुआ है और कई अच्छे सग्रह-ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। ये ग्रन्थ जहाँ साहित्यिक अध्ययन को आगे बढाते है, वहाँ भाषा शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से भी परमोपयोगी है।

जसराज राजस्थानी जनता के कवि हैं। किसी कवि के लिए जन-जीवन में घुल मिल जाना परम सौभाग्य का सूचक है। इस से कविवाणी विस्तार पाकर लोकवाणी का रूप धारण कर लेती है। अनेक लोगों को

जसराज के दोहे याद मिलेंगे परन्तु वे यह नही जानते कि उनका प्रिय कवि जसराज कौन हुआ है। भारतीय जनता काव्य-रसिक तो अतिमात्रा में है परन्तु कवि जीवन की ओर यहाँ विशेष ध्यान कभी नही दिया गया। यही कारण है कि भारत के अनेक मनीषी कवियों को देशव्यापी सम्मान एव गौरव प्राप्त होने पर भी उनका इतिवृत्त लगभग अज्ञात सा ही है।

जसराज अठारहवीं सदी के सुप्रसिद्ध जैन कवि जिनहर्ष हैं। वे खरतर गच्छीय मुनि शान्तिहर्ष के शिष्य थे। उनकी साहित्य-सेवा लगभग पचास वर्षों तक सतत चलती रही और उन्होंने अनेक सरस तथा उपयोगी रचनाए प्रस्तुत कीं।

कवि जिनहर्ष की भाषा सुललित प्रसाद गुण सम्पन्न एव परिमार्जित है। उसका साहित्यिक स्वरूप वडा मधुर एव आकर्षक है। सरस्वती का कवि को यह वरदान है। कवि ने जन्म भर सरस्वती की उपासना की है और प्रायः उनकी सभी रचनाए वदना-पूर्वक प्रारम्भ हुई हैं।

प्रस्तुत प्रकाशन में कवि की अनेक फुटकर रचनाओं को सम्मिलित किया गया है कवि की राजस्थानी भाषा भी अत्यन्त सुललित एव साहित्यिक है। उदाहरण लीजिए :—

सभा पूरि विक्रम्म, राइ बैठो सुविसेसी।
तिण अवसर आवीयउ, एक मागध परदेसी॥
ऊभो दे आसीस, राइ पूछइ किहाँ जासौ।
अठा लगैं आवीयौ, कोइ तैं सुण्यो तमासौ॥
कर जोडि एम जंपइ वयण, हुकम रावलौ जो लहु।
जिनहर्ष सुणण जोगी कथा, कौतिग वाली हूं कहु॥१॥

श्री वल्लभपुर नवल, तासु पति श्रीपति सोहै ।
कुमरी जोवनवंत, रूप रति सुर नर मोहइ ॥
चवि चौवोली नाम, तेण हठ एम सवाह्यउ ।
बोलावेसी वहसि, वार मो च्यार उमाह्यौ ॥
जिनहर्ष पुरुष परणिनी तिको, तां लगि नर निरखु नहीं ।
वहु भूप आइ वदी हुआ, वोल न वोलै मैं कही ॥ २॥

(चौवोली कथा, पृ० ४३६)

इसी प्रकार कवि की व्रजभापा भी अत्यन्त मधुर एव आकर्षण-मयी है :—

फागुन मास उलासह खेलत,
फाग रमै वहु नारि की टोरी ।
ताल कसाल मृदग वजावत,
ल्यावत चन्दन केसर घोरी ॥
लाल गुलाल अवीर उडावत,
गावत गीत सुहावत गोरी ।
नीरसुगन्ध सरीर कु छांटत,
रीझत गेह करी जव होरी ॥४॥

(राजुल वारहमास, पृ० २१९)

कवि की पजावी भापा का भी एक उदाहरण पृष्ठ २२५ तथा सिन्धी भापा का भी इसी ग्रन्थ के पृ० ३४१ में देखना चाहिए ।

कवि जिनहर्ष का ऐसा भापाधिकार आश्चर्यजनक है । साथ ही इन सभी भापाओं की रचनाओं में आपने साहित्यिकता का गुण वनाए

रखा है और कही भी शिथिलता प्रकट नही हो पाई है। कवि की यह विशेषता और भी अधिक सराहनीय है।

जिनहर्ष स्वाभाविक कवि होने के साथ ही जैन मुनि थे। जैन परपराओ एव मान्यताओ के प्रति आप की परम निष्ठा थी। फलत: आपकी अनेक रचनाओ में यह भक्ति-भावना प्रवल तरगवती के रूप में प्रकट हुई है। भक्त जिनहर्ष ने जैन तीर्थंकरो एवं आचार्यों की विनम्र भाव से अनेकश स्तुति की है। इन स्तवन-गीतो में उनके हृदय का दृढ एव अटूट विश्वास भरा हुआ है। उदाहरण देखिए —

अभिनन्दन गीतम्

(राग नट)

मेरउ प्रभु सेवक कुं सुखकारी।
जाके दरसण वछित लहीये, सो कइसइ दीजइ छारी ॥ १ ॥
हिरिदइ धरीयइ सेवा करीयइ, परिहरि माया मतवारी।
तउ भव दुख सायर तइ तारइ, पर आतम कउ उपगारी ॥२॥
अइसउ प्रभु तजि आन भजइ जो, काच गहइ जो मणि डारी ॥
अभिनदन जिनहरख चरण गहि, खरी करी मन इकतारी ॥३॥

(चौवीसी, पृ० २१)

मुनिसुव्रत गीतम्

(राग-तोडी)

आज सफल दिन भयउ सखी री ॥
मुनिसुव्रत जिनवर की सूरति, मोहनगारी जउ निरखी री ॥१॥

आज मेरइ घरि सुरतरु ऊगउ, निधि प्रगटी घरि आज अखी री।
आज मनोरथ सकल फले मेरे, प्रभु देखत ही दिल हरखी री ॥२॥
ताप गए सवहि भव-भव के, दुरगति दुरमति दूरि नखी री।
कहइ जिनहरख सुगति कु दाता, सिर परि ताकी आन रखी री ॥३॥

(चौवीसी, पृ० ३०)

प्रभु भक्ति

(राग वेलाउल)

प्रभु पद-पकज पाय के, मन भमर लुभाणउ।
सुन्दर गुण मकरन्द के, रसमइ लपटाणउ ॥ १ ॥
राति दिवस मातउ रहइ, तिस भूख न लागइ।
चरण कमल की वासना, मोह्यउ अनुरागइ ॥ २ ॥
सुमनस अउर की सुरभता, फीकी करि जाणइ।
रहइ जिनहरख उलासमइ, अविचल सुख माणइ ॥ ३ ॥

(पद सग्रह, पृ० ३४७)

इन पदों से कवि के हृदय का भक्ति रस मिश्रित प्रेमतत्व टपका पड़ता है। असल में जिनहर्ष प्रेमतत्व के गायक है और इसी के कारण कवि को इतनी अधिक लोकप्रियता मिली है। आपके प्रेममय उद्‌गारों को सरलता और स्वाभाविकता सहज ही हृदय पर अधिकार कर लेती है। प्रेम तत्व का ऐसा उज्ज्वल निदर्शन कम ही कवियों में मिलता है।

सर्वप्रथम कवि द्वारा किया हुआ प्रेम तत्व निरूपण द्रष्टव्य है। इसमें प्रेम की गम्भीरता एव विस्तार का प्रकाशन ध्यान देने योग्य है :—

प्रीत म करि मन माहरा, करै तो काचौ काइ ।
काचा मिणिया काच रा, जसराज भांजे जाइ ॥४५॥
घन पारेवा प्रीति, प्यारी विण न रहे पलक ।
ए मानवियां रीति, देखी जसा न एहडी ॥४६॥
एक पखीणी अंग, प्रीति कियां पछताइजै ।
दीपक देखि पतग, जल वलि राख हुवै जसा ॥४७॥
साजनिया ससार, जो कीजै तो जायनै ।
नेह निवाहण हार, जसा न विरचै जीवता ॥४८॥
निगुणा सेती नेह, थिर न रहै कीधां-थकां ।
छीलर सर ज्युं छेह, जल जातौ दीसै जसा ॥८९॥
निगुणां हन्दो नेह, ऊगत दिन छाया जिसी ।
सुगुणां तणौ सनेह, जसा ढलती छाहडी ॥९०॥

(प्रेम पत्रिका)

कवि ने विरह-वर्णन वहुत अधिक किया है । यह प्रसग वडा ही मार्मिक है । इसमें विरही के मन को विभिन्न दशाओं का स्वाभाविक चित्रण हुआ है । इस प्रकार के चित्र अनेक हैं । प्रेम की पीडा का प्रकाशन देखिए—

जिण दिन सज्जन वीछडया, चाल्या सीख करेह ।
नयणे पावस ऊलस्यौ, झिरमिर नीर झरेह ॥१॥
सज्जण चल्या विदेसडै, ऊभा मेल्हि निरास ।
हियडा में ते दिन थकीं, मावै नाही सास ॥२॥
जीव थकी वाल्हा हता, सज्जनिया ससनेह ।

आडी भुय दीधी घणी, नयण न दीसै तेह ॥३॥
खावौ पीवौ खेलवौ, कांई न गमइ मुज्झ।
हियडा मांही रात दिन, ध्यान धरू इक तुज्झ ॥४॥
नयणां मेती प्रीतडी, कीधी घणै सनेह।
दैव विछोहो पाडियौ, पूरी न पडी तेह ॥५॥
(दोधक छत्तीसी, पृ० ११७)

प्रेमी की अभिलाषा देखिए—

भुज करि वे भेलाह, मिलस्यु जदि मन मेलुआं।
वाल्ही साई वेलाह, जनम सफल गिणसु जसा ॥६९॥
नयणे मिलसै नैण, उर सु उर मेलिस जसा।
मुख पामेस्यै सैण, आया लेस्यु वारणा ॥७०॥
(प्रेम पत्रिका)

साहित्य जगत् में बारहमासा एवं तिथि-क्रम वर्णन की पुरानी तथा सुपुष्ट परम्पराएं हैं। इनमें ऋतु परिवर्तन एवं सामाजिक जीवन से प्रभावित प्रेमी जन की मनोदशा का चित्रण किया जाता है। प्रेमतत्व के पारखी कवि जिनहर्ष ने इन साहित्यिक विधाओं का भी बड़ा ही सुन्दर प्रयोग किया है—

पिउ वैसाखे हालियो, नैणा सीख करेह।
ऊभी झूरै गोरडी, डब डब नैण भरेह ॥६॥
तू वाजै दिणयर तपै, मास अतारो जेठ।
आंग्यां पावस उहम्यो, कमी मेडी हेठ ॥७॥

काती कंत पधारिया, सीधा वंछित काज ।
घरि दीपक उजवालिया, गोरगी जसराज ॥१२॥

(बारहमास रा दूहा, पृ० १२०-१२१)

पडिवा पीउ हालीओ, मइ हालन्तौ दीठ ।
मनडो ज्याही सु गयौ, नैण वहोव्या निठ्ठ ॥१॥
वीज स आज सहेलियां, ऊगो चन्द मयन्द ।
दुनिया वंदै चन्द नै, हु वन्दू प्रीयचन्द ॥२॥
सखीयां तन सिणगार सजि, खेलौ साँवण तीज ।
मो मन आमण-दूमणो, देखि खिवन्ती वीज ॥३॥
चोथि भगवती पूजतां, आवै वहुली रिद्धि ।
जो प्रीतम घरि आवसी, चोथि करिस प्रीत वृद्धि ॥४॥

(पनरह तिथि रा दूहा, पृ० १२२-१२३)

जैन कथाओं में नेमिनाथ एव स्थूलिभद्र विषयक कथानक अपने आपमें विरह से परिपूर्ण है । इनके सम्बन्ध में अनेक कवियो ने रचनाए की हैं । ऐसी स्थिति में प्रेम पथिक कवि जिनहर्ष के द्वारा इनका अपनाया जाना तो स्वाभाविक ही है । इनकी कथा-नायिकाओं के विरहोद्गार कवि-मुख से अनेकश प्रकट हुए है । उदाहरण देखिए—

(१)

कातिग मास उदास भई,
रांणी राजुल नेम विना दुख पावै ।
प्राण सनेही सोई जसराज,
जो रूठे पीयारे कू आणि मिलावै ॥

ठोर ही ठोर दिवाली करे,
नर दीपक मन्दिर ज्योति सुहावें।
हूं रे दिवाली करूंगी तवे,
मनमोहन कन्त जवे घरि आवे ॥४॥
(नेमि राजीमती गीत, पृ० २११)

(२)

मुझ सूं साढा तीन रहे कर वेगली।
लेई बोल अमोल रह्यां तिहां मन रली ॥
षटरस भोजन सरस सदाई तिहा करै।
जोवन रूप अनूप बिन्हेई इण परै ॥४॥
आयौ पावस मासक अम्बर गाजियौ।
ऊमट आयौ इन्दक मेहा राजियौ ॥
काली कांठल मांहिक झबूकै विजली।
बाहे वेहुं पसारि मिलुं पूजै रली ॥५॥
(स्थूलिभद्र गीत, पृ० ३६१)

कवि जिनहर्ष ने प्रेमतत्व का वड़े विस्तार और साथ ही अत्यन्त वारीकी से वर्णन किया है। इस विषय में उनके उद्‌गार वडे ही मार्मिक है। उनके दोहें तो ऐसे हैं, जो एक वार सुन लेने पर कभी विस्मरण नहीं होते।

जिनहर्ष मुनि थे और सद्‌धर्म का प्रचार उनका जीवनव्रत था। ऐसी स्थिति में उन्होंने प्रबोधन-गीत भी काफी लिखे हैं और उनमें शान्तरस की

निर्मल धारा प्रवाहित की है। सांसारिक मोह में फँसे हुए जीव को चेतावनी देकर उन्होंने अनेकश. मार्ग दर्शन किया है। इस रूप में सतवाणी के उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

(१)

इंधन चंदन काठ करे,
सुरवृक्ष उपारि धतूरज बोवे।
सोवन थाल भरे रज रेत,
सुधारस सूँ करि पाउहि धोवे॥
हस्ति महामद मस्त मनोहर,
भार वहाई के ताहि विगोवे।
मूढ प्रमाद ग्रह्यो जसराज,
न धर्म करे नर सो भव खोवे॥८॥
(मातृका बावनी, पृ० ८३)

(२)

नमियै देव जगद्गुरु, नमियै सद्गुरु पाय।
दया जुगत नमियै धरम, शिवगत लहै उपाय॥२॥
मन तें ममता दूर कर, समता धर चित मांहि।
रमता राम पिछाण कै, शिवपुर लहै क्यु नांहि॥३॥
शिव मन्दिर की चाह धर, अथिर मंदिर तज दूर।
लपट रह्यो कहा कीच में, अशुचि जिहां भरपूर॥४॥

धंधा ही में पच रह्यौ, आरम्भ किउ अपार ।
ऊठ चलेगो एकलो, सिर पर रहेगो भार ॥५॥
(दोहा बावनी, पृ० ६४)

(३)

जोवन ज्यु नदी तीर जातहइ अयाण रे ।
काहें फूलि रह्यउ यउ तउ अथिर तु जाणि रे ॥
जोवन मइ रातउ मदमातउ फिरइ जोर रे ।
काम कउ मरोर्यु कछु देखइ नहीं ओर रे ॥
कामिनी सु चाहइ भोग सकल सयोग रे ।
अलप जीवन सुख, बहुत वियोग रे ॥
रूप देखि जाणइ मो सौ, न को तीन भुवन रे ।
अइसउ अभिमानी तेरी गत हुइगी कउण रे ॥
अंजुरी कउ नीर रहइ, कहउ केती वेर रे ।
तइसउ धन जोवन, न कोई तामइ फेर रे ॥
भजि भगवन्त जोवन कउ लइ लाह रे ।
जउ जिनहरख सुगति की चाह रे ॥
(पद-संग्रह, पृ० ३५२)

कवि की प्रबोधन-वाणी बड़ी प्रभावोत्पादक है । इसी प्रकार कवि ने नीति तत्व का प्रकाशन भी किया है, जो जीवन-व्यवहार के लिए बड़ा उपयोगी तथा सारपूर्ण है । कुछ उदाहरण देखिए—

वदे सुर नर त्रय वखत, थानिक-थानिक थट्ट।
गावै जस मिलिमिल गुणी, गीत गुणे गहगट्ट ॥४॥

(छंद त्रोटक)

गहगट्ट सदा नर गीत गुणे।
थिर थानिक थानिक जस्स थुणे॥
महिमा नव खड अखड मह।
गह पूरत मत्त मसत्त गह ॥५॥

(गणेशजी रो छद, पृ० ३९५-९६)

(२)

पारभ करी परमेसरी, केहर चढी सकोप।
असुर तणा दल आय नै, अडीया सन्मुख कोप ॥१॥
रगत नैंण रातमुखी, रातंबर रो साल।
सहस भुजे हथीयार सझि, विड रूपण वैताल ॥२॥
असुर जिकै असलामरा, मिलीया वेढक मल्ल।
देवी नैं देता दलै, हूकल लागी हल्ल ॥३॥

(छंद पाढगति)

हल्ल हल्ल लागी हूक, टोलै ऊडै लोह टूक,
सागिडदा गिड़दा वाजै सोक, बेरियां विचाल।
सणण वहत सर, सूरिमा फिरै समर,
गडड वाजत गोला, नागिडगिडदा नाल ॥५॥

(देवीजी री स्तुति, पृ० ३९८-९९)

(३)

प्रणमु मरसति सुमति दातारो ।

हसगमण पुस्तक वीण धारो ॥

नाम लीया दिन होइ सवाडो ।

आदि जिणेसर कहिस्यु पवाडो ॥१॥

(आदिनाथ सलोको, पृ० १६६)

ऊपर के अनेक उद्धरणो से प्रकट होता है कि कवि जिनहर्ष की रचनाओं में आश्चर्यजनक वैविध्य है, जो उनकी विद्वत्ता, प्रतिभा तथा क्षमता का परिचायक है। कवि ने अपने समय की प्रायः सभी शैलियों में रचनाए प्रस्तुत करने की सफल चेष्टा की है। यह उनकी काव्य-शक्ति का असाधारण प्रकाशन है। कहा जा चुका है कि मुनि जिनहर्ष का साहित्य वडा विस्तृत है। उन्होंने वडी सख्या में 'रास' सज्ञक रचनाए प्रस्तुत की हैं, जैसे कुसुमश्री रास, श्रीपाल रास, रत्नसिंह राजर्षि रास, उत्तमकुमार रास, कुमारपाल रास, अमरसेन-वैरसेन रास, यशोधर रास, अमरदत्त मित्रानद रास, चदन-मलयागिरि रास, हरिश्चद्र रास, उपमिति-भव-प्रपचा रास, २० स्थानक रास, पुण्यविलास रास, ऋषिदत्ता रास, सुदर्शनसेठ रास, अजितसेन-कनकावती रास, महाबल-मलयासुदरी रास, शत्रुजय माहात्म्य रास, सत्यविजय-निर्वाण रास, रत्नचूड रास, शीलवती रास, रत्नशेखर रत्नवती रास, रात्रिभोजन त्याग रास, रत्नसार रास, जबूस्वामी रास, श्रीमती रास, आरामशोभा रास वसुदेव रास, जिनप्रतिमा हुडी रास आदि आदि। इन बहुसख्यक 'रास' काव्यो का स्वतत्र अध्ययन किए जाने से कथा साहित्य विषयक मूल्यवान ज्ञातव्य प्राप्त हो सकता है। इसी वर्ग

मे कवि की विद्याविलास चौपई, मृगापुत्र चौपई, मत्स्योदर चौपई, विक्रम-सेन चौपई, गुणावली चौपई आदि रचनाए ली जानी चाहिए ।

इनके अतिरिक्त कवि ने स्तवन, सज्झाय, गीत, सलोको, नीसाणी, छद दूहा, कवित्त, बारहमासा, बहुत्तरी, बावनी, छतीसी, पचीसी, चोवीसी, वीसी आदि अनेक नामों वाली परम्परागत शैलियो में रचनाए प्रस्तुत की हैं। इन में से चुने हुए उद्धरण ऊपर दिए जा चुके हैं। इतना ही नही कवि जिनहर्ष के काव्य में अपने समय की शैली के अनुसार प्रहेलिका एवं समस्या पूर्ति के उदाहरण भी प्राप्त है। इन दोनों काव्य विधाओ के नमूने देखिए —

प्रहेलिका (ध्वजा)

उडै मग आकास धरणि पग कदे न धारै ।
पीवे अह निसि पवन नाज नवि कदे आहारै ।
सुकलीणी सुदरी वप्प सिणगार विराजै ।
जीव विहूणी जोइ जिलै नेहागलि जाजै ॥
काठ सु प्रीति अधिकी करै, पख चरण करयल पखै ।
जसराज तास सावासि जपि, अरथ जिको इणरो लखै ॥

(पृष्ठ ४२०)

समस्या—'सिंह के कौन सगा'

काहे कु मित्त ज्यु प्रीति न पालत,
प्रीति की रीति समूल न जाणइ ।
नेह करइ करि छेह दिखावत,
मयण कुसयण उभय न पिछाणइ ॥

रोस करइ ज्यु विचार सनेह,
सनेह पुरातन चीत न आणइ।
सिंह कइ कवण सगा असगा,
सब ही सरखा जसराज वखाणइ॥

(पृष्ठ ४०१)

कवि जिनहर्ष काव्य के साथ ही सगीत के भी ज्ञाता थे और उनके द्वारा विरचित अनेक पदो में शास्त्रीय राग-रागिनी का प्रयोग हुआ है। प्रस्तुत सग्रह में उनके दो सवैये 'रागकरण समय सूचनिका' के रुप में दिए गए है (पृ० ४०७)। इसके अतिरिक्त कवि ने अपने समय के लोक सगीत की धुनों की ओर भी पूरा ध्यान दिया है। लोक प्रचलित धुनो में किसी चीज को प्रस्तुत किए जाने से उसका अच्छा प्रचार हो सकता है क्योकि वे स्वय जनजीवन की अगभूत होती हैं। इस प्रकार अन्य अनेक जैन कवियों के समान कवि जिनहर्ष के द्वारा भी अठारहवी शती के काफी लोक गीतों की आद्य-पक्तियां लोक सगीत के प्रेमियों को अध्ययनार्थ मिल गई है। ऐसी आद्य पक्तियो की एक अति विस्तृत सूची 'जैन गुर्जर कविओ' भाग ३ खड २ में सग्रह कर के प्रकाशित की गई है, जो द्रष्टव्य है। प्रस्तुत सग्रह के अत में कवि जिनहर्ष द्वारा प्रयुक्त 'देशियो' की सूची दी गई है, जो बडी उपयोगी है। इन देशियो पर स्वतत्र शोध की आवश्यकता है। इनमें तत्कालीन जन समाज का हृदय स्पदित है। कुछ उदाहरण देखिए :—

१ हो रे लाल सरवर पाले चीखलउ रे लाल,
घोडला लपस्या जाई। (पृ० ४२)

२ नवी नवी नगरी मा वसइ रे सोनार,
कान्हजी घडावइ नवसरहार। (पृ० ४४)

३. सासू काठा हे गहूँ पीसावि, आपण जास्या मालवइ,
सोनारि भणइ। (पृ० ५४)

४. झीणा मारू लाल रगावउ पीया चूनड़ीअ (पृ० ६०)

५. थे तउ अगला रा खडिया आज्यो,
रायजादा लाइज्यो राजि। (पृ० १६१)

६. वाटका वटाऊ वीरा राजि,
वीनती म्हारी कहीयो जाइ, अरे कहीयो जाइ,
अव पके दोऊ नीवूअ पके, टपक टपक रस जाइ। (पृ० १६१)

७ आठ टके ककणउ लीयउ री नणदी, थरकि रह्यउ मोरी वांह,
ककणउ मोल लीयउ। (पृ० १६३)

काव्य विवेचन का एक अंग भावसाम्य भी है। राजस्थानी कवियो की रचनाओं में इस दृष्टि से विचार करते समय कई पक्ष सामने आते है। कवि जिनहर्ष सस्कृत के विद्वान थे। अत यत्र तत्र उन्होंने सस्कृत-सुभाषितों का अपनी नीति वाणी में अनुवाद-प्रस्तुत किया है :—

खल सगत तजियै जसा, विद्या सोभत तोय।
पन्नग मणि सयुक्त तैं, क्यु न भयकर होय ॥१६॥
नदी नखी नारी तथा, नागणि खग जसराज।
नाई नरपति, निगुण नर, आठे करै अकाज ॥३२॥

दोहा बावनी)

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालंकृतो सन्।
मणिना भूपित. सर्प. किमसौ न भयङ्कर ॥

नदीनां नखिनां चैव शृ गिणा शस्त्र पाणिनाम् ।
विश्वासो नैव कर्तव्यो स्त्रीषु राजकुलेषु च ॥

यत्र तत्र कवि जिनहर्ष की रचनाओं में अन्य कवियों के भाव अथवा शब्दावली तक ज्यों के त्यों दृष्टिगोचर होते है—

१—ऊठि कहा सोई रह्यउ, नइन भरी नींद रे,
काल आइ ऊभउ द्वार, तोरण ज्युं वींद रे।
मोह की गहल माझि, सोयउ वहु काल रे,
कछु वूझ्यु नहीं तु तउ, होइ रह्यउ वाल रे॥

(पृ० ३५१)

सोवू रे सोवूं वन्दा के करै, सोयां आवै रे नींद,
मोत सिरहाणै वन्दा यू खडी, तोरण आयो ज्यूं वींद,
वोलि म्हारा भवरा तू काई भरम्यो रे।

(काजी महमद)

२—दस दुवार को पींजरो तामैं पंछी पौन।
रहण अचूवो है जसा, जाण अचूवो कौन ॥४॥
जो हम ऐसे जानते, प्रीति वीचि दुख होइ।
सही ढढेरो फेरते, प्रीत करो मत कोइ ॥८॥

(पृ० ४१६)

नौ द्वारे का पींजरा, तामें पछी पौन।
रहने को आचरज है, गए अचम्भो कौन॥

(कवीर)

जे मैं एसो जानती, प्रीत कियां दुख होय।
नगर ढढेरो फेरती, प्रीत न करियो कोय॥
(मीरांवाई)

३—वीजुलियां खलभल्लिया, आभै आभै कोडि।
कदे मिलेसूं सज्जना, कचू की कस छोडि॥१७॥
वीजलियां गली वादला, सिहरा माथै छात।
कदे मिलेमु सज्जना, करी उघाडो गात॥१८॥
वीजल्यिां चमके घणी, आभइ-आभइ पूरि।
कदे मिलूंगी सज्जना, करि के पहिरण दूर॥१९॥
(वरसात रा दूहा, पृ० ४२४)

वीजुलिया चहलावहलि, आभइ-आभइ एक।
कदी मिलूं उण साहिवा, कर काजल की रेख॥४४॥
वीजुलियां चहलावहलि, आभइ आभइ च्यारि।
कद रे मिलउली सज्जना, लांवी वांह पसारि॥४५॥
वीजुलिया चहलावलि, आभय आभय कोडि।
कद रे मिलउली सज्जना, कस कचुकी छोडि॥४६॥
(ढोला मारू रा दूहा)

इस प्रकार मुनि जिनहर्ष के काव्य पर विचार करने से उसमें अनेक प्रकार की विविधता दृष्टिगोचर होती है और वे एक साथ ही समर्थ एवं सरस कवि के रूप में प्रकट होते हैं। वे परम भक्त है और उद्‌वोधक हैं। वे प्रेममार्गी हैं और नीतिज्ञ हैं। उन्होंने अपने समय की सभी काव्य-शैलियो में रचनाए प्रस्तुत करके साहित्य के भडार को भरा है। उन्होने

अनेक भाषाओं में काव्य प्रणयन किया है परन्तु वे विशेष रूप से गुजराती तथा राजस्थानी के कवि हैं। उनकी कृतियां सरस एवं साथ ही शिक्षा-प्रद हैं। उनसे सम्बन्धित गीत में यथार्थ ही कहा गया है—

सरसति चरण नमी करी, गाम्युं श्री ऋषिराय।
श्री जिनहरष मोटो यति, समय अनुसार कहिवाय ॥१॥
मन्दमती ने जे थयो, उपगारी सिरदार।
सरस जोडिकला करी, कर्यो ज्ञान विस्तार ॥२॥
उपगारी जगि एहवा, गुणवन्ता व्रतधार।
तेहना गुण गातां थकां, हुइ सफल अवतार ॥३॥

हिन्दी विभाग,
सेठ आर एन रुइया कालेज
रामगढ (सीकर)
दि० १-१-१९६४,

—मनोहर शर्मा

सुकवि जिनहर्ष

यो तो राजस्थान के सैकडो जैन कवियों ने मातृभाषा राजस्थानी की अनुपम सेवा की है, पर उनमें अठारहवी शती के जैन कवि जिनहर्ष अपना विशिष्ट स्थान रखते है। उनकी रचनाए प्रचुर परिमाण में पायी जाती हैं। आपने राजस्थानी, हिन्दी, गुजराती—तीनों भाषाओं में विशाल साहित्य निर्माण कर साहित्य की बडी भारी सेवा की है, फिर भी आपकी गुरु-परम्परा के अतिरिक्त जन्मस्थान, वश, माता-पिता, जन्म व दीक्षा-काल एवं जीवन के विशिष्ट कार्यादि सभी इतिवृत्त अज्ञात है। आपके ग्रन्थादि में जो भी ज्ञातव्य उपलब्ध हैं, उन्ही के आधार से सक्षिप्त प्रकाश डाला जा रहा है।

गृहस्थावस्था का नाम व दीक्षा

आपने जसराज बावनी, दोहा-मातृका बावनी, बारहमास द्वय तथा दोहों में अपना नाम 'जसा' या 'जसराज' दिया है, जिसे आपका गृहस्थावस्था का नाम समझना चाहिए। जैन-दीक्षा के अनन्तर आपका नाम 'जिनहर्ष' प्रसिद्ध किया गया था। आपकी सर्वप्रथम रचना चन्दन-मलयागिरि चौपाई सवत् १७०४ में रचित उपलब्ध है। अनुमानत आपकी अवस्था उस समय १८-१९ वर्ष की तो अवश्य रही होगी। अत आपका जन्म स० १६८५ के लगभग और दीक्षा स० १६९५ से १६९९ के मध्य श्री जिनराजसूरिजी[1] के कर-कमलों से होना सम्भव है।

१—इनके विषय में विशेष जानने के लिए परिषद द्वारा प्रकाशित जिन-राजसूरि कृति-कुसुमाञ्जली देखिये।

गुरु परम्परा

दादाजी के नाम से प्रसिद्ध खरतर गच्छाचार्य श्रीजिनकुशलसूरिजी[1] की शिष्य परम्परा में आप वाचक श्रीसोमजी के शिष्य शान्तिहर्षजी के शिष्य थे। अन्य साधनों से आपका वंश-वृक्ष इसप्रकार है—१ श्रीजिन-कुशलसूरि (स्वर्ग सं० १३८९), २—महोपाध्याय विनयप्रभ, ३ उ० विजयतिलक, ४ क्षेमकीर्त्ति गणि, ५ उपा० तपोरत्न, ६ वाचक भुवन-सोम, ७ उ० साधुरंग, ८ वा० धर्मसुन्दर, ९ वा० दानविनय, १० वा० गुणवर्द्धन, ११ वा० श्रीसोम, १२ वा० शांतिहर्ष, १३ जिनहर्ष।

जन्म-स्थान, विहार एवं रचनाएं

आपकी कृतियों से स्पष्ट है कि संवत् १७३५ तक आप राजस्थान में ही विचरे थे। बीलहावास, साचौर, मेडता, बाहडमेर आदि में रचित आपकी कई रचनाएं उपलब्ध हैं। हमारे विचार में आपका जन्मस्थान भी मारवाड ही होगा। आपकी प्रारम्भिक रचनाएं और दोहे इत्यादि अधिकांश राजस्थानी भाषा में और कुछ हिन्दी में रचित है। सं० १७३६ से आप पाटण में अधिक रहने लगे थे। बीच में सं० १७३७ में मेडता, सं० १७३८ में राधनपुर, सं० १७४१ में राजनगर में रचित रासादि उपलब्ध है एवं तीर्थयात्रा के हेतु आप समय-समय पर शत्रुञ्जय (सं० १७४५, सं० १७५८), सम्मेतशिखर (सं० १७४४) तारंगा, सोवनगिरि, धुलेवा, गौवाज, नारंगपुर, कसारी, पचासरा, फलोधी, कापरहेडा, गौडीजी, चारूप, संखेश्वर आदि स्थानों में पधारे थे पर सं० १७३६ से

१—देखें-दादा जिनकुशलसूरि।

१७६३ तक अन्तिम जीवन पाटण में ही विताया और स्वर्गवासी भी वहीं हुए थे अत॰ स० १७३६ के वाद की कृतियो में गुजराती भाषा का पुट पाया जाना स्वाभाविक ही है।

सुकवि जिनहर्षजी का अपनी कृतियो के निर्माण में प्रधान लक्ष्य सर्व-जन कल्याण का था। इसीलिए प्राकृत, सस्कृत भाषा में आपने एक भी कृति न रचकर समस्त रचनाए लोकभाषा में ही निर्माण की। दीवाली-कल्प वालाववोध, पूजा पचाशिका एव मौनेकादशी वाला०—ये तीनों रचनाए टीका रूप होने से गद्य में हैं, अवशिष्ट छोटी-वडी सभी रचनाए पद्यात्मक है, जिनकी सख्या वड़ी विशाल है और छोटी रचनाए तो इस ग्रन्थ के साथ दे दी गई है, यहाँ रचना सवतादि उल्लेखयुक्त कृतियों की तालिका दी जा रही है। कवि की सवसे वडी रचना १ शत्रुञ्जय माहात्म्य रास है, जो ८५०० श्लोक परिमित है। आपकी समस्त कृतियो का परिमाण सम्भवतः एक लाख श्लोक के लगभग होगा। इतने अधिक रासादि चरित्र काव्य और वह भी केवल लोकभाषा में रचना करने वाले कवि आप एक ही है। अतः राजस्थानी-गुजराती के साहित्य स्रष्टाओ में आपका स्थान अत्यन्त गौरवपूर्ण है।

(१) चन्दन-मलयागिरि चौपाई, स० १७०४ वै० शु० ५ गुरु गा० ३७२ (स० न० ४२०४)

(२) कुसुमश्री महासती चौपाई ढा० ३१ स० १७०७ मि० व० ११ गा० १०३४ (सं० १३२०)

(३) गजसिंह चरित्र चौ० स० १७०८ पत्र ३६

(४) विद्याविलास रास सं० १७११ श्रा० सु० ६ सरसा, ढाल ३०

(५) उपदेश छत्तीसी सवैया (हिन्दी) सं० १७१३ सवैया ३६

(६) मगलकलश चौ० सं० १७१४ श्रा० सु-६ गुरु० ढाल २१

(७) गजसुकुमाल चौ० सं० १७१४ आ० सु० १ कुजवार पत्र ५ डुगरसी भण्डार, जेसलमेर

(८) नन्द वहुत्तरी-विरोचन मेहता वार्ता (हिन्दी) सं० १७१४ कार्तिक, वील्हावास दोहा ७३

(९) मृगापुत्र चौ० सवि सं० १७१५ मा० व० १० साचौर (उत्तराध्ययन से)

(१०) मत्स्योदर रास सं० १७१८ भा० सु० ८ वाहडमेर ढा० ३३ गा० ७०२

(११) जिन प्रतिमा हुंडी रास सं० १७२५ मिगसर गा० ६७

(१२) विहरमान वीसी सं० १७२७ चै० सु० ८ गा० १४४

(१३) कापरहेडा पार्श्व स्त० गा०-७

(१४) आहार दोष छत्तीसी सं० १७२७ आषाढ वदि १२ गा० ३६

(१५) वैराग्य छत्तीसी सं० १७२७ लि० गा० ३६

(१६) रात्रिभोजन रास (हस केशव चौ०) सं० १७२८ आ० सु० १२ राधनपुर पत्र १६ वद्रीदास सग्रह

(१७) शील नववाड सं० १७२९ भा० व० २ ढाल ११

(१८) दोहा मातृका वावनी (हिन्दी) सं० १७३० आषाढ सु० ९

(१९) नेमि वारहमासा सं० १७३२

(२०) सम्यक्त्व सत्तरी सं० १७३६ भा० सु० १० पाटण

(२१) कापरहेड़ा पार्श्ववृद्धस्त० गा० ११

(२२) ज्ञातासूत्र सज्झाय सं० १७३६ फाल्गुन व० ७ पाटण ढाल १६

(२३) दशवैकालिक १० अध्ययन गीत स० १७३७ आ० सु० १५ मेड़ता गा० २०८

(२४) शुकराज चौ० स० १७३७ मि० सु० ४ पाटण, ढाल ७५ गा० १३७६ (श्राद्धविधि से०)

(२५) श्री आदिनाथ स्त० गा० २८ स० १७३८ राधनपुर

(२६) चौवीसी (हिन्दी) स० १७३८ फा० बदि १ गा० ७५

(२७) जसराज बावनी (हिन्दी) स० १७३८ फा० व० ७ गुरु सवैया ५७

(२८) श्रीपाल चौपाई स० १७४० चै० सु० ७ पाटण ढाल ४६

(२९) रत्नसिंह राजर्षि रास (उपदेशमाला रत्नप्रभ टीका से) सं० १७४१ पो० व० ११ पाटण, ढाल ३६ गा० ७०६

(३०) अयवन्ती सुकुमाल स्वा० गा० १०२ ढाल १३ स० १७४१ वै० (आ०) सु० ८ राजनगर

(३१) श्रीपाल रास (लघु) स० १७४२ चै० व० १३ पाटण गा० २७१ (३०१)

(३२) कुमारपाल रास स० १७४२ आश्विन सु० १० पाटण, ढाल १३० गा० २८७६

(३३) समेतशिखर यात्रा स्तवन स० १७४४ चै० सु० ४ गा० ६

(३४) चन्दन-मलयागिरि चौ० स० १७४४ श्रा० सुदी ६ गु० (स० १७४५ पाटण में स्वय लि०) ढाल २३ गा० ४०७

(३५) हरिश्चन्द्र रास सं० १७४४ आ० सु० ५ पाटण, ढाल ३५ गा० ७०१ (भावदेवसूरि कृत पार्श्वनाथ चरित्र से)

(३६) अमरसेन वयरसेन रास सं० १७४४ फा० सु० २ बुध, पाटण

(३७) उत्तमकुमार चरित्र सं० १७४५ आश्विन सुदि ५ पाटण, गा० ५८७ ढाल २९

(३८) शत्रुञ्जय यात्रा सं० १७४५ मौनेकादशी

(३९) वीसी सं० १७४५ वै० सु० ३ गा० १३७ ग्र० १६४

(४०) उपमिति-भव-प्रपंचा (कथा) रास सं० १७४५ ज्ये० सु० १५ पाटण ढाल १२७ गा० ४३००

(४१) हरिबलमच्छी रास सं० १७४६ आ० सु० १ बु० पाटण, ढाल ३२ गा० ६७९ (जीवदया विषये, वर्द्धमान-देशना से)

(४२) यशोधर रास—सं० १७४७ वै० सु० ८ पाटण, ढा० ४२ गा० ८८८ ग्र० ११६६

(४३) वीस स्थानक (पुण्यविलास) रास—सं० १७४८ वै० सु० ३ पाटण ढाल १३२, गा० ३२८७ ग्र० ५०२५ (विचारामृत संग्रह से)

(४४) मृगांकलेखा रास—सं० १७४८ आषाढ व० ६ पाटण, ढाल ४१

(४५) सुदर्शन सेठ रास—सं० १७४९ भा० सु १२ पाटण, ढा० २१ गा० ३८२ ग्र० ५५२ स्वय लि० (योगशास्त्रटीकासे)

(४६) अमरदत्त मित्रानद रास—सं० १७४९ फा० व० २ सोम, पाटण, ढाल ३९ ग्रं० ११५० गा० ८५० (शांतिनाथ चरित्रसे)

(४७) ऋषिदत्ता रास—सं० १७४९ फा० व० १२ बुध, पाटण, ढाल २४ गा० ४५७ स्वय लि०

(४८) गुणकरण्ड गुणावली रास—स० १७५१ आश्विन व० २ पाटण ढा० २६ ग्र० ६०५ हमारे सग्रह मेँ

(४९) महावल मलयसुन्दरी राम—स० १७५१ आ० सु० १ पाटण ढाल १४२ प्रस्ताव ४ (जयतिलकसूरिकृतचरित्र से)

(५०) अजितसेन कनकावती रास—स० १७५१ माघ व० ४ पाटण, ढाल ४३ गा० ७५८ ग्र० १०१४

(५१) दीवालीकल्प वालाववोध—स० १७५१ चै० सु० १३ पाटण में लि० (जिनसुन्दरसूरिकृत से)

(५२) शत्रुञ्जय माहात्म्य रास—स० १७५५ आषाढ व० ५ पाटण, खंड ९ गा० ६४५० ग्र० ८५६८ स्वयं लि० (धनेश्वरसूरिकृतसे)

(५३) सत्यविजय निर्वाण रास—स० १७५६ माघ सु० १० पाटण, (जैन ऐ० रासमाला भाग १ में प्र०)

(५४) रत्नचूड़ रास—स० १७५७ आश्विन सुदि १३ शुक्र, पाटण ढाल ३१ गा० ६७७ ग्र० ८९७

(५५) अभयकुमार रास—स० १७५८ श्रा० सु० ५ सोम, पाटण, ढाल ११

(५६) शीलवती रास—स० १७५८ भा० सु० ८ गा० ४८० स्वय लि०

(५७) शत्रुजय यात्रा स्त० स० १७५८ फाल्गुन व० १२ गा० १४

(५८) रात्रिभोजन परिहार (अमरसेन जयसेन) रास—स० १७५९ आषाढ, व० १ पाटण, ढाल २५ गा० ४७७

(५९) रत्नसार नृपरास—स० १७५९ प्र० श्रा० व० ११ सो० पाटण ढाल ३३ गा० ६०४

(६०) वयरस्वामी चौ०—सं० १७५९ आश्विन सु० १ ढाल १५
हमारे सग्रह में नं० ४०२९

(६१) कलावती रास—सं० १७५९ पाटण ढाल १९ गा० ३२८

(६२) रत्नशेखर रत्नवती रास—स० १७५९ माघ सु० २ ढाल ३६,
गा० ७७०

(६३) स्थूलिभद्र स० स० १७५९ आ० सु० २ पाटण, ढाल १७
गा० १५१ स्वय लि०

(६४) जवू स्वामी रास—सं० १७६० ज्ये० व० १० बुध, पाटण, ४
अधिकार ढाल ८० गा० १६५७ ग्रं० २०७५

(६५) नर्मदासुन्दरी स०—स० १७६१ चै० व० ४ सो० पाटण, ढाल
२९ गा० २१४ ग्र ० २७० स्वय लि०

(६६) आरामशोभा स०—स १७६१ ज्ये० सु० ३ पाटण, ढाल २१
गा० ४२९ स्वय लि०

(६७) श्रीमती रास—स० १७६१ माघ सु० १० पाटण, ढाल १४
गा० ८६९

(६८) वासुदेव रास—स० १७६२ आसोज सु० २ पाटण, ढा० ५०
गा० ११६३

(६९) स्नात्र पूजा पंचाशिका वालाववोध—स० १७६३ लि०

(७०) नेमि चरित्र—स० १७७९ (?) आषाढ सु० १३ पाटण, ४
खंड गा० १०७८ पत्र ३३ स्वय लि०

(७१) मेघकुमार चौ० (७२) चित्रसेन पद्मावती चौ० (७३) चौवोली
कथा (७४) ज्ञानपंचमी कथा वाला० आदि प्रचुर कृतियां
उपलब्ध हैं। इस ग्र थ में भी वहुतसी रचनाए प्रकाशित की
जा रही हैं।

सद्गुण और स्वर्गवास

उपर्युक्त दीर्घ रचना-सूची से स्पष्ट है कि आप निरन्तर साहित्य निर्माण में ही अपना समय व्यतीत करते थे। आप स्वाभाविक काव्य-प्रतिभा सपन्न थे और आपकी लेखनी आविश्रान्त गतिसे चलती रहती थी। इसी प्रकार सयम साधना में भी आप निरतर उद्यत थे। आपके व्रत, नियमादि अन्तिम अवस्था तक अखण्ड रहे। आपके अनेक सद्गुणों में गुणानुरागिता भी उल्लेखयोग्य है जिसके उदाहरण स्वरूप तपा गच्छीय पन्यास सत्य-विजय का निर्वाणरास बनाया। आप प्रकाण्ड विद्वान होते हुए भी अहङ्कार त्यागकर निर्लेप व निरपेक्ष रहते थे। अपनी रचनाओं में कही पाठक, वाचक या कवि शब्द तक का प्रयोग नहीं किया जिससे आपमें आत्म-श्लाघा या अभिमान का अभाव प्रतीत होता है। सवत् १७६३ से १७७६ (?) के बीच व्याधि उत्पन्न होने से आपकी सेवा सुश्रूषा तपागच्छीय मुनिराज श्री वृद्धिविजयजी ने बड़ी तत्परता से की और अन्तिम आराधना भी उन्होने ही करवायी थी। श्रावकों ने अन्तिम देहसंस्कार बडी भक्तिपूर्वक किया इस विषय में हमारा "ऐतिहासिक-जैन-काव्य सग्रह" देखना चाहिए। आपका स्वर्गवास पाटण में हुआ था सभव है वहां उनके चरणपादुके स्तूपादि भी हों तथा उनके संबन्ध में गीत, भास आदि ऐतिहासिक सामग्री भी अन्वेषण करने पर प्राप्त हो।

गुरु-भ्राता एवं शिष्य-परिवार

आपके गुरु श्री शान्तिहर्षजी के आपके अतिरिक्त निम्नोक्त अन्य शिष्यों का उल्लेख पाया जाता है।

१ शान्तिलाभ (ठाकुरसी)—इनकी दीक्षा सं० १७०७ फाल्गुन वदि १ को मेडता में श्री जिनरत्नसूरिजी के द्वारा हुई थी।

२. सौभाग्यवर्द्धन (सांगा)—इनकी दीक्षा सं० १७१३ अक्षय तृतीया को श्रीजिनचन्द्रसूरि द्वारा हुइ थी।

३ लाभवर्द्धन (लालचन्द)—इनकी दीक्षा भी सं० १७१३ अक्षय तृतीया के दिन सीरोही में श्रीजिनचन्द्रसूरिजी द्वारा हुई। ये राजस्थानी के अच्छे कवि हुए है, इनकी निम्न रचनाए उल्लेखनीय हैं।

(१) विक्रम चौपाई (नौसो कन्या खापराचोर-पंचदड)—सं० १७२३ भा० सु० १३ जयतारण, खंभात संघ आग्रह

(२) लीलावती रास—सं० १७२८ काती सु० १४ सेत्रावा

(३) लीलावती (गणित) रास—सं० १७३६ आषाढ वदि ५ बुध, बीकानेर।

(४) धर्मबुद्धि रास—सं० १७४२ सरसा

(५) स्वरोदय भाषा दोहा—सं० १७५३ भादवा सुदि अक्षयराज हेतवे।

(६) पाण्डव चोपाई—सं० १७६७ बील्हावास ग्रन्थ ३७६५

(७) शकुनदीपिका चौ०—सं० १७७० वै० शु० ३ गुरु ग्र० ५६४ अध्याय ५

(८) चाणक्य नीति।

(९) विक्रम पंचदड चौ० सं० १७३३ फाल्गुन

(१०) छन्दोत्तम (संस्कृत छंद ग्रंथ)

(११) नीसाणी अजितसिंह—सं० १७६३ ।

इनके अतिरिक्त मूर्ख सोलही, छिनाल पचीसी आदि कृतियां भी आपकी ही सभवित है ।

४ सौख्यधीर (सुखा)—इनकी दीक्षा स० १७४६ माघ सुदि ११ बीकानेर में श्री जिनचन्द्रसूरिजी द्वारा हुई ।

५ सोमराज (श्यामा)—इन्हें श्री जिनचन्द्रसूरिजी ने स० १७४७ फा० व० ७ को बीकानेर में दीक्षित किया था ।

६ विद्याराज (वीठल)—इनकी दीक्षा भी उपर्युक्त सोमराज के साथ हुई थी ।

७ सत्यकीर्त्ति (सुन्दर)—इनकी दीक्षा स० १७५२ फाल्गुन वदी ५ को बीकानेर में श्री जिनचन्द्रसूरिजी द्वारा हुई थी ।

८ सजयकीर्त्ति (साऊ)—इनकी दीक्षा उपर्युक्त सत्यकीर्त्ति के साथ ही हुई थी ।

सुकवि जिनहर्षजी के शिष्य सुखवर्द्धनजी (सभाचन्द) हुए, जिन्हें वि० स० १७१३ वै० सु० ३ के दिन सिरोही में श्री जिनचन्द्रसूरिजी ने दीक्षित किया था । सुखवर्द्धन के शिष्य दयासिंह हुए जिनका गृहस्थ नाम डाबर था । इनकी दीक्षा स० १७३६ वै० व० १३ को नागौर में श्री जिनचन्द्र सूरिजी के हाथ से हुई थी । आपके शिष्य उपाध्याय रामविजय (रूपचन्द्र) बड़े विद्वान हुए । इन्हें स० १७५५ मिती वैसाख सुदि २ बील्हावास में श्री जिनचन्द्रसूरिजी ने दीक्षित किया था । ये उपाध्याय क्षमाकल्याणजी के विद्या-गुरु थे । आपके बनाये हुए लगभग २८ ग्रन्थ उल्लेखनीय है । इनके सम्बन्ध में 'अनेकान्त' व 'सत सिन्धु' में प्रकाशित मेरा लेख देखना चाहिए ।

उपर्युक्त रामविजयजी के शिष्य वा० पुण्यशीलगणि के शि० वा० समयसुन्दरगणि के शिष्य वा० शिवचन्द्र गणि (शम्भूजी) भी अच्छे विद्वान हुए है। इसी परम्परा में जयपुर के यति श्यामलालजी हुए जिनके शिष्य और खरतरगच्छ की भट्टारक शाखा के पट्टधर श्री जिनविजयेन्द्र सूरिजी बडे प्रभावशाली हुए जिनका दो वर्ष पूर्व स्वर्गवास हुआ है।

जिनहर्षजी की परम्परा—क्षेम शाखा में अनेक विद्वान हो गए हैं। उनके गुरुभ्राता आदि की परम्परा भी लम्बे समय तक चलती रही है जिनकी नामावली हमारे पास है, पर विस्तार भय से उसे नहीं दिया जा सका।

—अगरचंद नाहटा

अ नु क्र म णि का

१ चौवीसी (१)

(स० १७३५ लि०)

चौवीसी (२)

४ विहरमान वीशी (२)

आदिनाथतीर्थ स्तवन—

(२) अजितनाथ

पार्श्वनाथ—

महावीर—

चौवीशी

श्री ऋषभ-जिन-स्तवन

राग-ललित

देख्यौ रे ऋषभ जिणंद तव तैरे[1] पातिक दूरि गयौ ।

प्रथम जिणंद चंद कलि सुरतरु कंद,
सेवे सुरनर इंद आनंद भयौ ॥१॥दे०॥

जाकी महिमा कीरति सार प्रसिद्ध बढ़ी संसार,
कोऊ न लहत पार जगत नयौ[2] ।

पंचम अरै में आज जागे ज्योति जिनराज,
भव सिंधु को जिहाज आणि के ठव्यो ॥२॥दे.॥

वण्यो अद्भुत रूप मोहनी छवि अनूप,
धरम कौ साचौ भूप प्रभुजी जयौ ।

कहइ जिन हरखित नयण भरि निरखित,
सुख घन वरषित इलि उदयौ ॥३॥दे.॥

श्री अजित-जिन-स्तवन

राग-वेलाउल

मेरो लीन भयौ मन जिन सेती ।

उमगि उमगि मग चलत सनेही,

१ मेरो, २ कयौ,

निशदिन ऊठि करण जेती ॥१॥मे.॥

क्रूरम नयण निहारो प्रभुजी,

करूं वीनति हूँ[1] केती ।

अपणौ जानि आणि मन करुणा,

अरज सुणौ मेरी एती ॥२॥मे.॥

ज्ञान मोर प्रगट्यो घट भीतर,

अब मेरी मनसा चेती ।

कहै जिनहरख अजित जिनवर कुं,

निकट राखि भांजउ छेति ॥३॥मे.॥

श्री संभव-जिन-स्तवन

राग-आसावरी

बहुत दिनां थी मैं साहिब पायौ,

भाग बड़े चित चरणै लायौ ।ब.।

पूरब भव रुव पाप खपायो,

समरण आगैवांणी आयौ ॥१॥ब.॥

रसना रस बसि जिन गुण गायौ,

नयन वदन देखत ही सुहायौ ।ब.।

श्रवण सुयश सुणि हरख वढायौ,

कर दोऊ पूजन प्रेम सवायौ ॥२॥ब.॥

१ अब.

तैं मेरो मन छिन में छिनायौ,
सो फिरकै मेरै पासि नायौ ।व.।
आशा पूरण विरुद कहायौ,
कहै जिनहरख संभव जिन भायौ ॥३॥व.॥

श्री अभिनन्दन-जिन-स्तवन

राग-सामेरी

मेरो एक संदेशो कहियौ ।
पाइ परू ं मन वीर वटाऊ,
विच में विलम्ब न रहीयौ ॥१॥मे.॥
खूनी खून घणा मंई कीना,
सुप्रसन्न होइ कै सहीयौ ।
निगुणौ तो पण तेरो चेरौ,
मोकु ं ले निरवहीयौ ॥२॥मे.॥
भव सायर में बूहै जेहॅ,
करुणा करि कै[1] गहियौ ।
अभिनन्दन जिनहरख सामेरी,
आरति चित्ता दहीयौ ॥३मे.॥

श्री सुमति-जिन-स्तवन

राग-वैराडी

समरि समरि सुख लालची मनां ।

१ ग्रर

जाकै नाम होइ साता, अन्तर जामी विख्याता,
सुमति कौ दाता भलो सुमति जिनां ॥१॥स.॥

पंचम जिणंद नीकौ, सिद्धि वधू सिर टीकौ,
जग यश प्रभुजी कौ, त्रय भुवनां ।

एक तूं मेरइ आधार, कहा कहूं वारवार,
सार करि करतार, लेखवि कै अपना ॥२॥

जिंद ते अधिक प्यारो, जाको नाम मंत्र भारौ,
भुजंग संसार वारौ, दूर दुख हरनां ।

कहै जिनहरख सुं, प्रभु के निकट वसुं,
वैरादि के राग नसुं, मेरे कोऊ कामनां ॥३स.॥

श्री पद्मप्रभु-जिन-स्तवन

राग-कन्हरी

पदम प्रभु सूरति त्रिभुवन मोहै ।

नयन कमल अणियारे ता विच,
तारिका सिली मुख सोहै ॥१प.॥

वदन चंद अमित गुण मंगल,
सोह अधिक अधिरोहै ।

भाव भगति इक चित देखत ही,
कामदुधा धरि दोहै ॥२प.॥

तूं सब जाणै अन्तर गति की,
मेरे मन में जोंहै।
पर उपगारी साहिब समवरि,
कहै जिनहरख न कोहै ॥३५.॥

श्री सुपार्श्व-जिन-स्तवन

राग-केदारौ

दोइ कर जोरि अरज करुं अरिहंत।
आगम वचने न चल्यो जेहै,
तरिहुं क्युं भगवंत ॥१दो.॥
धरम कौ मरम न पायौ इतना,
दिन तिण भमही भमंत।
दुख पायौ प्रभु चरणै आयो,
अब तारो गुणवंत ॥२दो॥
सांमि सुपास महिर करि मुझ सुं,
तुम हौ चतुर अनंत।
कहै जिनहरख भवो भव संचित,
के दारुण दुःख जंत ॥३दो.॥

श्री चन्द्रप्रभु-जिन-स्तवन

राग-नट्टी

देखेरी चन्द्रप्रभु में चंद समान।
जा तन की छवि शीतल अनुपम,

चित चकोर सुख दान ॥१दे.॥

यह अधिकाई घटत न कबहूं,
वटत ज्योति असमान ।
पाप तिमिर चूरन निकलंकित,
मदन विरह अपमान ॥२दे.॥

दुई पख पूरण अस्तंगत कब,
होइ न कला निधान ।
कहै जिनहरख ईश नट नागर,
करत सदा गुण गान ॥३दे.॥

श्री सुविधि-जिन-स्तवन

राग—काफी

मेरा दिल लगा सांई तेरा नाम सुं ।
और कछु न सुहावै मौकुं,
चित्त न लागै काम सुं ॥१मे.॥
राखि राखि निज शरणै साहिब,
वीनती करुं मोरा स्वाम सुं ।
झटकि छुराइ पाय परुं अब,
जनम जरा दुःख धाम सुं ॥२मे.॥
एक तूं ही आधार जीइका,
चाह धरुं गुण ग्राम सुं ।

सुविध नाथ जिन हरख प्रभु मोहि,
दीजै शिव सुख माम सुं ॥३मे.॥

श्री शीतल-जिन-स्तवन

राग-तोडी

जब तै मूरति दृष्टि परी री ।
कूर कहुँ तौ तेरी ही सुं,
तब तैं छतियां मेरी ठरी री ॥१ज.॥
नयन न अटके रसिक सनेही,
हटकै न रहै एक घरी री ।
अनमिष देखि रहै प्रभु सूरति,
सुधि बुधि मेरी सहु विसरी[1] री ॥२ज.॥
तुझ सुं नेह लग्यौ दिल[2] भीतर,
और बात दिल तें उतरी री ।
कहै जिनहरख शीतल जिन नायक,
तूं है मेरे जिइ की जरी री ॥३ज.॥

श्री श्रेयांस-जिन-स्तवन

राग-गूजरी

मेरौ मोह्यो श्रेयांस जिनवर ।
देखत ज्योति होत मन सुप्रसन्न,

१ सुघरी, २ उर अंतर, ।

रूप बण्यौ अति सुन्दर ॥१मे.॥

भूले भरम परे उनमारग,
भेद न पावै जे नर ।
कंचन तजि कै पीतल[1] लेहै,
आंन भजइ जे सुरवर ॥२मे.॥

हाजर सेव करै सुर सुरपति,
गावै मिलि मिलि अपछर ।
सेवक सनमुख देखौ साहिब,
कहै जिनहरख निजर भर ॥३मे.॥

श्री वासुपूज्य-जिन-स्तवन

राग-मारू

वासपूज स्वांमी सेती, जो मै नेह न मंड्यो री माई वा.
तौ मोकु अब करुणासागर,
निज हाथन सु छंड्यो री ॥१मा.।वा.॥
नव नव वेष धरी चौगति में,
बहुत भांति करि भंड्यौ री ।
कब ही राउ रंक भयौ कबही,
कबही भेष त्रिदंड्यौ री ॥२मा.।वा.॥
अबहूँ तेरै चरणै आयौ,

१ पातर ।

जामन मरण विहंड्यौ री।
कहै जिनहरख स्वामि सुप्रसन हुइ,
मेरो पातिक खंड्यौ री ॥३मा.।वा.॥

श्री विमल-जिन-स्तवन

राग-कल्याण

प्राण धणी सु ं प्रीति वणाई ।
तन मन मेरो अरस परस भयौ,
जैसे चंबुक लोह मिलाई ॥१प्रा.॥
कोरि भांति करै जो कोऊ,
तौ भी प्रभु सु ं नेह न जाई ।
अंगि अंगि मेरै रंग लागौ,
चोल मजीठ की भांति दिखाई ॥२प्रा.॥
और नाह न धरु ं सिर ऊपर,
और मोहि देखे न सुहाई ।
विमल नाथ मुझ सेवक जाण्यौ,
तौ जिनहरख नवे निध पाई ॥३प्रा.॥

श्री अनन्त-जिन-स्तवन

राग-सोरठ

मैं तेरी प्रीति पिछाणी हो, मैं०
मनकी बात कही तुझ आगै,

तौ भी महिर न आणी हो ॥१मैं॥
हिरदै नाम लिख्यौ मति गहिलै,
डरपुं पीवत पाणी हो ।मैं.।
आव न आदर कबहुं न पायौ,
ऐसी मुहब्बत जाणी हो ॥२मैं.॥
सुपनै ही तै दरसण न दीयौ,
अब तूटेगी ताणी हो ।मैं.।
कहै जिनहरख अनंत प्रभु मोकुं
दीजै निज सहिनाणी हो ॥३मैं.॥

श्री धर्म-जिन-स्तवन

राग-पूर्वी गौड़ी

अब मेरो मनरौ प्रभुजी हर लीनौ ।
सिर पर मुरकी प्रेम की डारी,
मानूं काहु नै कामण कीनौ ॥१प्र.॥
मूरति देखि मोहनी लागी,
रोम रोम मांहि से भीनौ ।
धरमनाथ देखत दृग शीतल,
मन जांणि अमृत रस पीनौ ॥२प्र.॥
सब सायर में मसनां मेरे,
लागौ हाथ नगीनौ ।

मन कौ मान्यौ सैंण सनेही,
यौ जिन-हरख सगीनौ ॥३म.॥

श्री शान्ति-जिन-स्तवन

राग-सारंग मल्हार जाति

कैसे करि पहुँचाऊं संदेश ।
जिन देसन निवसै सोलम जिन,
जाय न को तिण देस ॥१कै.॥
पंथ विषम विषमी है धरणी,
औघट घाट विशेस ।
कहै न कोऊ सिलाम[1] न बतियां,
तार्थं बहुत अंदेस ॥२कै.॥
यौ ही लाख पयौ अब उण दिशि,
करिहुं चित्त प्रवेश ।
जौ कबहु जिनहरख मिलै प्रभु,
अजब करुं मन पेस ॥३कै.॥

श्री कुंथु-जिन-स्तवन

राग-खभायती

मन मोहन प्रभु की मूरतियां ।
निरखि निरखि नयनन सुं अनुदिन,

[1] कुसलात न वतीयें ।

हरखित होत मेरी छतियां ॥१मन.॥

अंतर जामी अंतर गति की,
जाणत है मेरी नतियां ।
कछु इक महिर करौ दुखियन सुं
ध्यान धरूं वासर रतियां ॥२म.॥
और किसी की चाह धरूं नहीं,
दरशन देहि भली भतियां ।
कुंथुनाथ जिन हरख नामि सिर,
जोरि कमल करि प्रणमतियां ॥३म.॥

श्री अरि-जिन-स्तवन

राग–परजयो

कहि कहि रे जिउरा प्रभुजी आगे,
अपने मन की चोरी रे ।
साच कहत कोउ कबहुँ न मारै,
कूर कपट सब छोरी रे ॥१क.॥
आगे भी इण बहुत निवाजै,
अपराधी लख कोड़ी रे ।
रीस न आणै काहू ऊपरि,
जिण तासुं दिल जोरी रे ॥२क.॥

ज्यु[1] तौकुं भी महिर करैगो,
तारैगो भ्रम धोरी रे ।
कहै जिनहरख सेवि अरि साहिब,
राखैगौ पति तोरी रे ॥३क.॥

श्री मल्लि जिन स्तवन

राग–मालवी गौडी

मल्लिनाथ निसनेही निरंजन,
कैसे करियै प्रीती रे ।
कहै न किसही बात दिल की,
कठिन जाकौ चीत रे ॥१म.॥
दिल साच सौ दिल साच राखै,
एह जग की रीति रे ।
एकंग कैसे नेह निवहै,
समझि देखो मीत रे ॥२म.॥
दीप देखि पतंग जरि है,
मच्छ जलधर नीत रे ।
भांति प्रभु जिनहरख ऐसी,
भांजि है क्यु सीति रे ॥३म.॥

१ त्यु ।

श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन

राग-विहागरौ

ऐसौ प्रभु सेवो रे मन ज्ञानी ।

घट घट अंतर जिन लय लाइ,
आप रह्यौ ठौर छानी रे, शुद्ध ध्यानी ॥१ऐ.॥

काहू कूं दे सुखियन कीनौ,
कहियतु है वड़ दानी रे शुद्ध ध्यानी ।
किस ही कुं हसि वात न बूझै,
मन वालो अभिमानी रे शुद्ध ध्यानी ॥२ऐ.॥

तीन लोक में प्रभुता जाकी,
अरि कीनै सहु कांनी रे शुद्ध ज्ञानी ॥
कहै जिनहरख स्वामी मुनिसुव्रत,
छै अपनी राजधानी रे शुद्ध ध्यानी ॥३ऐ.॥

श्री नमि जिन स्तवन

राग-गौडी

नैना में नमि नाथ निहार्यौ ।

देखत ही रोमांञ्चित तनु भयौ,
जाण कि अमृत रस भरि ठार्यौ ॥१नै.॥

सुरतरु सम सुख पूरण साहिब,

अघ घन मेरो दूरि गमार्यों ।
सूरति मूरति देखि सलूणी,
सो मन थै क्युं जात विसार्यों ॥२नै.॥
तारण तरण जिहाज जगत गुरु,
मैं मेरै मन मांहि विचार्यों ।
परम भगत जिनहरख कहत है,
प्रभु दरसण आपौ निस्तार्यों ॥३नै.॥

श्री नेमि जिन स्तवन

राग—वसत

वलिहारी हुँ तेरै नाम की ।
नाम लैण की मैं हर कीनी.
और किसी की चाह न की ॥१व.॥
भव सागर तरणै कुं तरणी,
जम भय तै मैं ओट तकी ।
निस्तारण कौ कारण यौ ही,
दुःख कण चूरण नाम[1]चकी ॥२व.॥
नाम लिए सोई नर जीए,
नाम वस्तु सब मांहिज की ।
कहै जिन हरख नेमि यदुपति,
नाम लेत दिल मेरी छकी ॥३व.॥

१ काम

श्री पार्श्व जिन स्तवन

राग—भैरव

भौर भयौ उठ भज रे पास,
जो चाहै तुं मन सुख वास ।भो.।
चंद किरण छवि मंद परी है,
पूरब दिशि रवि किरण विकाश[1] ॥१भो.॥
शशि तैं विगत भए हैं तारे,
निशि छोरत हैं पति आकाश ।भो.।
सहस किरण चिहुं दिशि पसरी है,
कमलन के वन किरण विकाश ॥२भो.॥
पंखियन ग्रास ग्रहण कुं ऊडे,
तम चर बोलत[2] है निज भास ।भो.।
आलस तजि भजि भजि साहिब कुं,
कहै जिनहरख फलै ज्युं आश ॥३भो.॥

श्री महावीर जिन स्तवन

राग— जयत श्री

साहिब मोरा हो अब तौ महिर करौ,
आरति मेरी दूरि हरो ।सा.।
खानां जाद गुलाम जाणि कै,
मुझ ऊपरि हित प्रीति धरौ ॥१सा.॥
तुम लोभी हुइ बैठे साहिब,

१ काम, २ प्रकाश,

हुँ तौ अति लालची खरौ ।सा.।
तुम भाजौ हूं तौ भाजूँ नहीं,
भावइ मुझ सुं आइ अरौ ॥सा.२॥
साहब गरीब निवाज कहावौ,
हुँ गुनही भौरौ डावरौ ।सा.।
वीर जिणंद सहाई जाके,
कहै जिनहरख सौं काहि[1] डरौ ॥सा.३॥

=कलश=

राग—धन्याश्री

जिनवर चउवीसे सुखदाई ।
भाव भगति धरि निज मन स्थिर करी,
कीरति छन शुद्ध गाई ॥जि.१॥
जाकै नाम कल्प वृक्ष सम वरि,
प्रणमति नव निधि पाई ।
चौवीसे पद चतुर गाइयो,
राग वंध चतुराई ॥जि.२॥
श्रीसोम गणि सुपसाउ पाइ कै,
निरमल मति उर आई ।
शान्तिहर्ष जिनहर्ष नाम ते,
होवत प्रभु वरदाई ॥जि.३॥
॥ इति श्री चतुर्विंशति जिनानां पदानि समाप्तानि ॥

१ कहरै ।

सं० १७३५ वर्षे माह सुदी १४ दिने श्री बीकानेर मध्ये। वा.। श्री दानविनय गणि ततशिष्य मुख्य वा. गुणवर्धन गणि ततशिष्य मुख्य वा. श्रीसोमगणि ततशिष्य मुख्य वा. श्रीशांतिहर्ष गणि, ततशिष्य मुख्य प. जिनहर्ष गणि तद्भ्रातृ पं० शांतिलाभ गणि, तद्भ्रातृ प० सौभाग्यवर्द्धन, तद्भ्रातृ पं० लाभवर्द्धन जी, भ्रातृ पं० सुखवर्द्धन, ततशिष्य पं० दयासिंघ लिखितं। श्री बीकानेर मध्ये। पारख साह खेहसी जी तत् पुत्ररत्न पारख साह नाबर जी, तत्पुत्ररत्न पारख साह पोमसीजी, तत् पुत्ररत्न पारख साह प्रतापसी, तत् पुत्ररत्न पारख साह आसकरण, तस्य भ्रातृ पारख साह सहसमल्ल पठनार्थं लघुभ्रातृ अमरराज सहितेन श्री रस्तु॥

[गुटका–अभय जैन ग्रन्थालय, नं० १६।]



चौवीशी

आदिनाथ-गीतम्

राग-वेलावल

रे जीउ मोह मिथ्यातमइं,
क्या मूझयउ अग्यानी ।
प्रथम जिनंद भजइ न क्युं,
शिव सुष कुं दानी ॥१रे.॥
अउर देव सेवइ कहां,
विषयी केई मानी ।
तरि न सकइ तारइ कहा,
दुरगति नीसानी ॥२रे.॥
तारण तरण जिहाज हइ,
प्रभु मेरउ ज्यानी ।
कहे जिनहरष सु तारि हइ,
भवसिंधु सुग्यानी ॥३रे.॥

अजितनाथ-गीतम्

राग-भैरव

स्वामि अजित जिन सेवइ न क्युं प्राणी ।
जउ तुं चाहइ शिव पटराणी ॥स्वा.॥

अउर सकल तजि कथा विराणी,
        अहनिसि करि प्रभुजी की कहाणी ॥१स्वा.॥

भव वन सघन अगनि प्रजलाणी,
        मिथ्यारज व्रज पवन उडाणी ॥स्वा.॥

जइसइ तिल पीलण कुं घाणी,
        तैसइ करम पीलण प्रभुवाणी ॥२स्वा.॥

क्रोध दवानल पावस पाणी,
        उज्जल निरमल गुणमणि खाणी ॥स्वा.॥

प्रभु जिन हरख भगति मन आणी,
        साहिब द्यउ अपणी नीसाणी ॥३स्वा.॥

संभवनाथ–गीतम्

राग–गौडी

अब मोही प्रभु अपणउ पद दीजइ ।
करुणा सागर करुणा करि कइ,
        निज भगतन की अरज सुणीजइ ॥१अ.॥

तुम हउ नाथ अनाथ के पीहर,
        अपणे जन भव तइं तारीजइ ।
तुम साहिब मइं फिरु उदासी,
        तउ प्रभु की प्रभुता क्या कीजइ ॥२अ.॥

तुम हउ चतुर चतुर गति के दुप,

सो तनु मइं अब सही नस कीजइ ।
संभव जिन जिनहरष कहे प्रभु,
दास निवाजी जगत जस लीजे ॥३अ.॥

अभिनन्दन-गीतम्

राग-नट

मेरउ प्रभु सेवक कुं सुपकारी ।
जाके दरसण वंछित लहीये,
सो कइसइं दीजइ छारी ॥१मे.॥
हिरिदइ धरीयइ सेवा करीयइ,
परिहरि माया मतवारी ।
तउ भव दुष सायर तइं तारइ,
पर आतम कउ उपगारी ॥२मे॥
अइसउ प्रभु तजि आन भजइ जो,
काच गहइ जो मणि डारी ।
अभिनंदन जिनहरष चरण गहि,
परी करी मन इकतारी ॥३मे.॥

सुमतिनाथ-गीतम्

राग-केदारउ

जीउ रे प्रभु चरण चित लाइ ।
सुमति चितधरि सुमति जिनकुं,

भजन करि दुष जाइ ॥१जी.॥

मोह माया जाल मे क्युं
रह्यु तुं मुरझाइ ।
कंठ जम जब आइ पकरइ,
काहु पइं नर हाइ ॥२जी.॥

भव अनंत दुष टारिवइ कुं,
करत क्युं न उपाइ ।
सुगतिकुं जिन हरप दायक,
अचल प्रीति बणाइ ॥३जी.॥

पद्मप्रभु-गीतम्

राग-कनडउ

हो जिनजी अब तु महिर करीजे,
निज पद सेवा दीजे हो ।जि.।
दरसण देहु दयाल दया करि,
ज्युं धीटउ मन छीजइ हो ॥१जि.॥

इकनारि धारी मइ तुमसुं,
अपणउ करि जाणी जइ ।
अउर गवइं सुर नट चिट जाणे,
निरपि निरखि मन धीजइ ।२जि.॥

अन्तर जामी अन्तरगत की,

जाणउ कहा कहीजे ।
पदम प्रभ जिनहरष तुम्हारी,
सोम नजर सुं जीजइ ॥३जि.॥

सुपार्श्वनाथ गीतम्

राग—देवगन्धार

कृपा करी सामि सुपास निवाजउ ।
तुम साहिब हुँ खिजमतगारी युतउ सगपण भाभौ ॥१कृ.॥
तुम ही छोरी अवर सुर ध्याउं, तउ प्रभु तुम ही लाजउं ।
भगत वछल भगतन के साहिब, ता कारण दुपभाजउं॥२कृ.॥
प्रभु मधुकर सब रस के नायक, हिरिदय कमल विराजउं ।
चरणसरण जिन हरष कीए मइ, भए निरभइ अब गाजउं।३।

चन्द्रप्रभु-गीतम्

राम— सामेरी

चंद्रप्रभु अष्टकर्म क्षयकारी ।
आप तरे अउरनकुं तारइ, अपणउ बिरुद विचारी ॥१चं.॥
जिन मुद्रा सुप्रसन प्रभुजी की, उलसत नइंन निहारी ।
सुंदर सूरति मूरति ऊपरि, जाउं हुं बलिहारी ॥२चं.॥
अइसी तनकी छवि त्रिभुवन मइ, अउर किसी नही धारी ।
तास चरण जिनहरप म तजिहुं,दुखीयनकुं उपगारी ॥३चं.॥

सुविधिनाथ-गीतम्

राग—जइ जयंती

नाथ तेरे चरण न छोरूँ ।
जो छुरावइ तोइ पकरि रहुँगउ,
जइसइं बाल मा के अंचर ।ना.।
वहुत दिवस भए प्रभु के चरण लहे,
अब तउ करण सेवा मन भया चंचरा ।ना.।
कृपाजल सींचे दास वृद्धिवंत हुइ उलास उदकसुं,
सींचे जइसइं वधइ हइ उदंचरा ॥१ना.॥
सुविधि जिणंद गुणगेह न दिपावइ छेह,
सेवक निपर निज होइ जउ उछछरा ।ना.।
अइसउ प्रभु पाइ कइ चरण गहुं धाइ,
कइ उपाइ जिनहरप हरप सुप संचरा ॥२ना.॥

शीतलनाथ-गीतम्

राग—मारू

सीतल लोयणां हो जोवउ सीतलनाथ ।
भवदुप ताप मिटइ सहु, थइयइ प्रभुजी सनाथ ॥१सी.॥
तुम्ह समरथ साहिव छतां हो, हुँ तउ फिरूँ अनाथ ।
सेवक सुप देता नथी, तउ सीलही तुम आथि ॥२सी.॥

पोतानउ जाणी करी हो, द्यउ मुझ पूठइ हाथ ।
कहइ जिनहरष मिल्यउ हिवइ, साचउ सिवपुर साथ ॥३॥

श्रेयांसनाथ–गीतम्

राग–काफी

श्रेयांस जिणेसर मेरउ अंतरजामी ।
अउर सुरासुर देखे न रीझुं, प्रभु सेवा जउ पामी ॥१श्रे.॥
रांकन की कुण आण धरइ सिरि, तजि त्रिभुवन सामी ।
दुपभाजइ छिनमांहि निवाजइ, शिवपुर द्यइ शिवगामी।२श्रे.।
क्या कहीयइ तुमसुं करुणा निधि, षमीयो मेरी पामी ।
कहइ जिनहरष पदमपद चाहुं,
अरज करूं सिरनामी ॥३श्रे.॥

वासुपूज्य–गीतम्

राग–मल्हार

हो जिनजी अब मेरइ बनि आई ।
अउर सकल सुर की सेवा तजि,इक तुझसुं लयलाई॥१हो॥
वासुपूजि जिनवर विणु चितमइ, धारूं तमा न काई ।
परम प्रमोद भए अब मेरइ, जउ तुझ सेवा पाई ॥२हो.॥
त्रिभुवननाथ धर्यउ सिर ऊपरि, जाकी बहुत बड़ाई ।
हुं जिन हरप अवर नहीं मागु, द्यउ भव पास छुराई॥३हो॥

विमलनाथ-गीतम्

राग-पूरवी गउडउ

मेरु मन मोह्यु प्रभु की मूरतीयां ।
सुंदर गुण मंदिर छवि देषत,
उलसत हइ मेरी छतीयां ॥१मे.॥
नयन चकोर वदन शशि मोहे, जातन जाणु दिनरतीयां ।
प्राण सनेही प्राण पीया की,
लागत हइ मीठी वतीयां ॥२मे.॥
अंतर जामी सब जाणत हइ, क्या लिखि कइ भेजु पतीयां ।
कहइ जिनहरप विमल जिनवर की,
भगति करूं हुं बहु भतीयां ॥३मे.॥

अनन्तनाथ-गीतम्

राग-परजीयउ

वाल्हा थांरा मुखडा ऊपरि वारी ।
अरज सुणेज्यो एक माहरी,
कांई तुम नइ कहुं छुं विचारी ॥१वा.॥
आठ पहर ऊभऊ थकउरे, सेवा करूं तमारी ।
अंतरजामी साहिवा, कांई लेज्यो खबरी हमारी ॥२वा.॥
सुंदर सूरति ताहरी रे, लागइ पेम पीयारी ।
सात धात भेदी करी, कांई पइठी हीया मझारी ॥३वा.॥

सामि अनंत तुम्हारडारे, गुण अनंत अपारी ।
मुझ जिनहरष संभारी ज्यो,
काई मत मुंकउ वीसारी ॥४वा.॥

धर्मनाथ-गीतम्

राग-वसत

भजि भजि रे मन पनरम जिनंद,
छेदे भव भव के निवड फंद ।भ.।
जाकुं सेवइ सुरपति सुरनरिंद,
पामइ दरसण देखपई आणंद ।
उलसे मन जइसइं चकोर चंद,
काटइ दुप करम कठोर कंद ॥१भ.॥
समकित दायक सुखकुं निधान,
सब प्राणी कुं द्यइ अभयदान ।
अगन्यान मह तेम उदय भान,
ता प्रभु कउ धरीये रिदय ध्यान॥२भ॥
लहीये जाथइं संसार पार, अविचल सुप संपति देणहार ।
आधार नहीं ताकउ आधार,
जिनहरष नमीजइ वार वार ॥३भ.॥

शान्तिनाथ-गीतम्

राग-जइतसिरी

प्यारु पेमकु, मेरउ साहिब हे सिरताज॥प्या.॥

प्रभु दरसण मन उलसेरे, ज्युं केकी घनगाज ।
अउर सकल में परिहरे,मेरइ एक जीवन सुं काज ॥१प्र्या॥
प्रीतम आया प्राहुणा रे, मो दिल मंदिर आज ।
भगति करुं बहुं तेरीयां,अब छोरी सकल भइ लाज॥२प्र्या॥
हिलि मिलि सुख दुखकी कहुँ रे, साहिब थइ सुखसाज ।
अंतरजामी सोलमउ, तासुं प्रीति करूं जसराज ॥३प्र्या॥

कुन्थुनाथ-गीतम्

राग—सोरठ

ग्यानी त्रिणि किणि आगइ कहीयइ,
मनकी मनमें जाणी रहीये हो ।ग्या.।
भूंडी लागइ जण जण आगइ,
कहतां कोई न वेदन भागइ हो ॥१ग्या.॥

संगतइ अपणउ भरम गमावइ,
साजन परजन काम न आवइ हो ।ग्या.।
दुरजन होइ सु करिहइ हास,
जाणी पर्‌या मुंहुं मांग्या पास हो ॥२ग्या.॥

ताथइ म्रुष्टि भली मन जाणी,
धरि के धीर रहावउ पाणी हो ।ग्या.।
कहइ जिनहरप कहइ जो प्राणी,
कुंथु जिणंद आगइं कहि वाणी हो ॥३ग्या॥

अरनाथ-गीतम्

राग-गूजरी

अर जिननायक सामि हमारउ ।
आठ करम अरियण बलवंते, जीते सुभट करारउ ॥१अ॥
अइसउ कोई अउर न होई, प्रभु सरीखउ बल धारउ ।
मयन भयउ जिणि भे असरीरी, कहा करइ सुविचारउ॥२अ॥
दोष रहित गुण पार न लहीयइ, ता की सेवा सारु ।
कर जोरी जिनहरष कहत हे, अब सेवक कुं तारउ ॥३अ॥

मल्लिनाथ-गीतम्

राग-श्रीराग

मल्लि जिणंद सदा नमीये ।
प्रभु के चरण कमल रसलीणे,
मधुकर ज्युं हुँइ कइ रमीयइ ॥१म.॥
निरषि वदन ससि श्री जिनवरकु,
निसिवासर सुष मइ गमीयइ ।
उज्जल गुण समरण चित धरीये,
कबहुँ न भव सायर भमीये ॥२मा.॥
समतारस मे जउ जीलीजइ,
राग द्वेष थइं उपसमीयइ ।
तउ जिनहरष मुगति सुख लहीये,
करम कठिन निज आक्रमीयइ ॥३मा.॥

मुनिसुव्रत-गीतम्

राग-तोडी

आज सफल दिन भयउ सखी री ।
मुनिसुव्रत जिनवर की सूरति,
मोहणगारी जउ निरपी री ॥१आ.॥

आज मेरइ घरि सुरतरु ऊगउ,
निधि प्रगटी घरि आज अपी री ।
आज मनोरथ सकल फले मेरे,
प्रभु देपत हीं दिल हरपी री ॥२आ.॥

ताप गए सवहि भव भव के,
दुरगति दुरमति दूरि नपी री ।
कहइ जिनहरप सुगति कु दाता,
सिर परि ताकी आण रपी री ॥३आ.॥

नमिनाथ-गीतम्

राग-कल्याण

नमि जिनवर नमीये चितलाई ।
जाकइ नाम नवे निधि लहीये,
विपति रहइ नही घर मइ काई ॥१ना.॥

दरसण देपत ही दुप छीजइ,
पातक कुलटा ज्युं तजि जाई ।

सुख संपति कउ कारण प्रभुजी,
ताकु समरण करहु सदाई ॥२ना.॥

कहा वहुतेरे जउ सुर सेवे,
निज कारज की सिद्धि न पाई ।
प्रभु जिनहरष एक सिर करीयइ,
बोधिवीज सिव सुप कुं दाई ॥३ना.॥

नेमिनाथ-गीतम्

राग-रामगिरी

नेमि जिन यादव कुं कुल तार्यु ।
एक ही एक अनेक उधारे,
कृपा धरम मन धार्यु ॥१ने.॥

विषय विषोपम दुप के कारणे,
जाणि सबइं सुप छार्यु ।
संयम लीयौ प्रभु हित कारण,
मदन सुभट मद गार्यु ॥२ने.॥

आप तिरे राजुल कुं तारी,
पूरव प्रेम समार्यु ।
कहइ जिनहरष हमारी वरीयां,
क्या मन मांहि विचार्यु ॥३ने.॥

पार्श्वनाथ-गीतम्

राग-ललित

मान तजी मेरे प्राणी वेर वेर कहुं वाणी ।
काहे मूढ भजनकु आलस करइ हइ ।
अउर कोऊ नावइ काम सगेस इण दाम धाम,
नाम एक प्रभुजी के काम सब सरइ हइ ॥१मा॥

भवकु भंजणहार सुपकु देवणहार ।
ताकु हीयइ धारिजउ तुं करम सुं डरई हइ ।
जपि जपि जगनाथ यउ तउ हइ मुगति साथ ।
जाकउ दरसण देषि अंपीयां ठरइ हइ ॥२मा॥

अइसउ प्रभु कोई अउर देख्यु हइ अपर ठउर ।
ग्यान कु भंडार तजि काहे भूल उपरइ हइ ।
तेवीसमउ प्रभु पास पूरइ हइ सकल आस ।
कहइ जिनहरष जनम दुष हरइ हइ ॥३मा.॥

महावीर-गीतम्

राग-केदारउ

मे जाण्यु नही भव दुप अइसउ रे होइ ।
मोह मगन माया मे घूतउ, निज भवहारे दोइ ॥१म.॥
जनम मरण ग्रभवास असुचिमइ, रहिवनु सहिवनु सोइ ।
भूष त्रिषा परवश वध बंधन, टारि सके नही कोइ ॥२म.॥

छेदन भेदन कुंभी पाचन, पर वैतरिणी तोइ ।
कोइ छुराइ सक्यु नही ज्जर दुष, मइ सर भरीया रोइ॥३म॥
सवहि सगाई जगत ठगाई, स्वारथ के सव लोइ ।
एक जिनहरष चरम जिनवर कुं,
सरण हीया मइ ढोइ ॥४म॥

= कलश =

राग-धन्यासिरी

जिनवर चउवीसे गाए ।
भाव भगति इक चितमती जइसी,
गुण हीयरा मइं ठाए ॥१हो जि॥
चउवीसे जिनवर जगनायक,
सिवपुर महल वनाए ।
चरण कमल की सेवा सारइ,
ह्वइ भी पासि रहाए ॥२ हो जि॥
सतरइ अठतीसइ संवच्छर,
फागुण वदि परिवाए ।
वाचक शांतिहरष सुपसायइं,
जिन जिनहरष सन्हाए ॥३हो जि॥

इति श्रीचतुर्विंशति जिन-गीतानि समाप्तानि

—:o:—

वीशी

सीमन्धर-जिन स्तवन

ढाल—पाटण नगर वषणीयइ । सषी माहेरे म्हारी लषमी देविकि चालउरे, आपण देषिवा जईयइ ॥

पुंडरीकणी नगरी वषाणीयइ,
सषी श्रेयांस घरे जायउ पुत्र रतन्नकि, चालउरे ।
आपण देषवा जईयइ, नयणे कुमार निहालीयइ ।
सषी कीजइ हे एहना कोडि जतन्नकि ॥१॥

साहीलीयउ सुजाण मोरउ जीवन प्राण,
सषी कीजइ हे एहनी मस्तकि ।
हे सषी धरियइ आणकि वा ॥आ॥

घरि घरि थया वधावणा,
वारू वाजइ हे सषी ढोल नीसाणकि ।चा।
धवल मंगल गायइ गोरडी,
जोवा आव्या हे सषी सुरनर राणकि ॥२॥

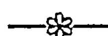
योवन प्रापत प्रभुजी थया,
सषी वाल्हा हे सीमंधर कुमार कि ।चा।
राय महोच्छव वहु करी,
परणाव्या हे सषी रुकमणि नारि कि ॥३॥

राज्य लीला सुख भोगवी,
प्रभु लीधउ हे सषी संयम भारकि ।चा।
समिति गुपति सूधी धरई,
गामागर हे सषी करइ विहार कि ॥४॥

करम खपावी घातीया,
प्रभु पाम्यउ हे सषी केवल नाणकि ।चा।
समवसरण देवे रच्यउं,
तिहां वइसी हे सषी करइ वषाणकि ॥५॥

इंद्र ऊतारइ आरती,
इंद्राणी हे सखी गायइ गीतकि ।चा।
सुरनर ल्यइ सहु भामणा,
जोतइं जीतउ हे सषी जिणि आदीतकि ॥६॥

सुंदर सूरति जोवतां,
भव भव ना हे सषी जायइ पापकि ।चा।
ए जिन हरष वधारणउ,
टालइ सगला हे सषी ताप संतापकि ॥७॥



युगमन्धर-जिन-स्तवन

ढाल—मोरु मन मोह्यउरे रूडा राम स्यु रे ॥एदेशी॥

हीयडुं मिलिवारे प्रभुजी जइ ऊलसइरे,
एतउ जिम चातक जलधार ।

सुंदर सोहइ रे रूप सुहामणउ रे,
एतउ म्हारा आतम नउ आधार ॥
तइं मन मोह्यउं रे श्री युगमंधरा रे,
एतउ राणी प्रिय मंगला भरतार ॥१॥
प्रभुजी नी काया रे कंचण सारिषी रे
एतउ झलकइ तेज अपार ।
सास ऊसास कमलनी वासनारे,
एतउ गुणनउ नहि कोइ पार ॥२॥
मीठी वाणी रे योजन गामिनी रे,
एतउ सुणतां उलसइ देह ।
निज निज भाषा रे सहुको सांभलइ रे,
सहुना टलइ संदेह ॥ ३ ॥
ते दिन कईयइं रे थास्येइ साहिवा रे,
ए तउ देखिसिहुँ दीदार ।
चरण कमलनी करिस्युं चाकरी रे,
एतउ साथइं करिस्युं विहार ॥४॥
नयणे प्रभुजी ना सामु निहालिस्युं रे,
हुँ तउ नमिस्युं तेहना पाय ।
तेहनइ पासइं रे किरिया सीपिस्युं रे,
एतउ निरमल करिस्युं काय ॥५॥

पूरि मनोरथ प्रभुजी माहरा रे,
तुं तउ सहुनउ छइ हितकार ।
बीजा जिनवर कहुँ जिनहरष नइ रे,
एतउ देई दरसण दिल ठारि ॥६॥

—०—

वाहु-जिन-स्तवन

ढाल—उचा ते मदिर मालीया नइ, नीचडी सरोवर पाली
रे माइ ए देशी ।

रामति रमिवा हुं गई,
मोरी सहीयर केरइ साथी रे माइ ।
समोश्रसरण मां सोभता,
मइ दीठा श्री जगनाथ रे माइ ॥१॥

रूपइ तउ प्रभु रलीयामणा,
रवि प्रतपइ कोडी निलाडि रे माइ ।
वार गुणउ प्रभु ऊपरइं,
असोक विराजइ भाड रे माइ ॥२॥

समवसरण मां देवता करइ,
कुसम वृष्टि ततकाल रे माइ ।
साकर पांहइं अति घणुं,
मीठी वाणी सुविलास रे माइ ॥३॥

चामर ढालइ देवता,
सिंहासण रतन जडाव रे माइ ।
भामंडल झलकइ घणुं,
जाणे कोडि गमे दिन राव रे माइ ॥४॥
वाजतइ मधुरी दुंदुभी,
त्रिण छत्र विराजइ सीस रे माइ ।
आठ प्रातीहार सोभता,
जगनायक जगदीस रे माइ ॥५॥
निरमल काया जेहनी,
पीर वरण लोही नइ मंस रे माइ,
सास ऊसास सुगंधता,
जाणे कमल कुसम अवतंस रे माइ ॥६॥
करतां कोई देखइ नही,
प्रभु नइ आहार नीहार रे माइ ।
अतिसय जिन ना एहवा,
थाइ जनम थकी एग्यारि रे माइ ॥७॥
विहरमाण ए तीसरउ,
श्री बाहु जिणंद सुपकार रे माइ ।
भेट्या मइ जिनहरष स्युं,
मोरउ सफल थयउ अवतार रे माइ ॥८॥

*

सुबाहु-जिन-स्तवन

ढाल-आवउ गरबा रमीयइ रूडा रामस्यु रे ।एदेशी।।

चउथा रे विहरमाण विहरता रे ।
कांइ आव्या इणि नगर मझारि रे,
आवउ नइ रे जईयइ जिन नइ वांदिवां रे ।
समवसरण देवे रच्यां रे,
कांइ कहितां नावइ तेहनउ पार रे ।
आवउ नई रे जईयइ जिन नइ वांदिवा रे,
म्हारउ साहिबीयउ सुबाहु सुजाण रे ।
लोकालोक प्रकासतउ रे,
म्हारा साहिबीया नउ निरमल नाण रे,
म्हारउ साहिबीयउ जीवन प्राण रे ।।१आ।।

बारइ रे जेहनइ परषदा रे,
ते तउ बइठी निज निज ठाम रे ।आ।
गणधर वैमानिक सुंदरी रे,
कांई साधवी अगनि कूणि नाम रे ।।२।।

नैरति कूणि भुवनपती रे,
कांई योतिषी विंतरनी नारी रे ।आ.।
वायव कूणि वपाणीयइ रे,
कांई बइठा तेहना भरतार रे ।।३।।

नर-नारी वैमानिका रे,
कांई ईसान कूणइ त्रिरण एहरे ।आ.।
वइसइ प्रभुजी नई आगलइ रे,
कांइ आणी आणी परम सनेह रे ॥४॥
धरम धजा लहकइ भली,
कांई सहस योजन परमाण रे ।आ.।
धरमचक्र आगलि चलइ रे,
कांइ धरम चक्र सुजाण रे ॥५॥
धरम देसण जिनवर दीयइ रे,
कांई मीठी मीठी अमीय समाण रे ।आ.।
सुणतां रे तनमन ऊलसइ रे,
कांई कहइ जिनहरख सुजाण रे ॥६॥

—o—

सुजात-जिन स्तवन

ढाल— गरवउ कउरण नइ कोराव्यउ कि नंदजीरे लाल ।·एदेशी ॥

आपणा सेवकनइ, सुख दीजइ कि, वारी म्हारा लाल ।
काइक करुणा मुझस्युं कीजइ कि ॥वारि॥
तुमे छउ माहरा अंतरजामी कि । वा ॥
षमिज्यो प्रभुजी माहरी खामी रे कि ॥१॥
हुंतउ सेवक छुं प्रभु तोरउ कि । वा ।
वली वली तुमउइ करूं निहोरउ कि । वा ।

हुं तउ भव दुप माहि पीडाणउ कि । वा ।
चउपट चिहुं गति मांहि भीडाणउ रे कि ॥२॥

वली मइ नारिकिना दुष पाम्यां कि । वा ।
मुप मांहि तातां तरूआं नाम्यां कि । वा ।

अगनइं धग धगती पूतलीयां कि । वा ।
मुजनइ तेहनी संगति मिलीयां कि ॥३॥

मुज नइ पावक माहि पचाव्यउ कि । वा ।
नदी वैतरणी मांहि तराव्यउ कि । वा ।

देवे सूलारोपण कीधउ कि । वा ।
मुझनइ लोहयंत्र मांहि लेई दीधउ कि ॥४॥

वली हुं तिरयंचनी गति आयउ कि । वा ।
परवसि घणु घणु दुप पायउ कि । वा ।

तिहां तउ नाक फाड्यउ कांन काप्यां कि ।वा ।
वहु परि भूप त्रिपा दुख व्याप्यां कि ॥५॥

वली मइं नरगतिना दुख वेठ्यां कि । वा ।
तिहां तउ सात विसन मइं सेव्यां कि । वा ।

परनी लुली लुली सेवा कीधी कि । वा ।
तउ ही आस्या कांई न सीधी कि ॥ ६ वा ॥

करमइं किंकर सुरपद पाम्यौ कि । वा ।
तिहां तउ जोरइं मुजनइ दाम्यउ कि । वा ।

पर स्त्री पर सुख देखी भूर्यउ कि । वा ।
लेपइ सुरनउ जनमन पूर्यउ कि ॥७॥

पांचमां श्रीयसुजात सिवगामी कि । वा ।
भव भव तुंहीज माहरउ सामी कि । वा ।

चउपट चिहुँ गतिना दुख चूरउ कि । वा ।
प्रभुजी सुप जिनहरप नइं पूरउ कि ॥८॥

—:०:—

स्वयंप्रभ-जिन-स्तवन

[ढाल— होरे लाल सरवर पालै चीषलउ रे लाल,
घोडला लपस्या जाइ ॥ ए देशी ॥]

हो रे लाल छठा स्वयंप्रभु स्वामिजी रे लाल,
विहरमाण जिनराय ।
हो रे लाल नामइ तउ नवनिधि संपजइ रे लाल,
पातक दूरे पलाइ ॥ १ ॥

हो रे लाल भगति करइ वहु भांतिस्युं रे लाल,
चरणे नमइ त्रिकाल ।
हो रे लाल ततपिणि ते नर नारीयां रे लाल ।
कापइ करमनी जाल ॥ २ ॥

हो रे लाल जे वांदइ प्रभुनइ सदा रे लाल,
देपइ जे दीदार ।

हो रे लाल सुणइ सदा जे देसणा रे लाल,
धन धन ते नरनारि ॥ ३ ॥
हो रे लाल पुन्यवंत मांहि वपाणीयइ रे लाल,
महा विदेह ना लोक ।
हो रे लाल देषी दरपण ऊलसइ रे लाल,
जिमि रवि देषी कोक ॥ ४ ॥
हो रे लाल विचरइ प्रभु जिणि देसमा रे लाल,
पगला जिहां ठवंत ।
हो रे लाल ते धरती पावन करइ रे लाल,
करइ उपगार अनंत ॥ ५ ॥
हो रे लाल भरतषेत्र ना आदमी रे लाल,
पोतइ वहु संसार ।
हो रे लाल ज्ञानीनउ विरह पड्यउ रे लाल,
संसय भर्या अपार ॥६॥
हो रे लाल स्वामी अमस्युं करि मया रे लाल,
राषउ आप हजूरि ।
हो रे लाल कहइ जिनहरप वाल्हां थकी रे लाल,
किम रहिवायइ दूरि ॥ ७॥

—:○:—

ऋषभानन-जिन-स्तवन

[ढाल— गावउ गुण गरवौरे । ए देशी ।]

ऋषभानन जिन सातमउ गुण प्रभुजी रे,
विहरमाण जिनराय गावउ गुण प्रभुजी रे,
सुरनर विद्याधर सहु ।गु.। प्रणमइ जेहना पाय गा. ॥१॥
केवल सूर्योदय करी ।गु.। लोकालोक प्रकास । गा ।
मनना संसय अपहरइ ।गु। अतिसय अधिकउ जास ॥गा.२॥

दीठा सुरमइ अतिघणा ।गु। ते सगला मां पोड । गा. ।
केई लंपट केई लालची ।गु। नावइ एहनी जोडि ॥गा.३॥

चंद्र वदन देषी करी ।गु। हरषइ चित्त चकोर । गा ।
महाविदेहना मानवी ।गु। नाचइ मन जिम मोर ॥ गा.४॥

कीजइ निसि दिन चाकरी ।गु। जउ रहीयइ प्रभु पासि । गा ।
आपइ पदवी आपणी ।गु। अविचल लील विलास ॥गा५॥

महाविदेहमां विहरता ।गु। जग गुरु जगदानंद । गा. ।
जास पसायइं पामीयइ ।गु। कहइ जिनहरष आणंद ॥गा६॥

—०—

अनन्तवीर्य-जिन-स्तवन

[ढाल— नवी नवी नगरीमा वसइरे सोनार ।
कान्हजी घडावइ नवसर हार । एदेशी ॥]

अनंतवीरज आठमउ जिनराय । सुरनर इंद्र नमइ जसु पाय ॥
त्रिगडइ बइठा करइ रे वषाण । साकर पाहइं मीठी वाणि॥१॥

संसय सहुना दूर टलइ । मिथ्यात्वी मन पिणि परघलइ ॥
प्रभुजी विचरइ जिणि २ देस । न करइ ईति तिहां परवेस ॥२॥
महिमा मोटउ जिणवर तणउ । दीपावइ जिण सासण घणउ॥
जिहां एहवउ जिन सासनधणी । न्यायइ वाधइ कीरति घणि३।
कंचण वरणी प्रभुजीनी काय । लाप चउरासी पूरव आय ॥
जउरे म्हाराप्रभुजी नउ देपूरूप।तउमन माहि वाधइ हरपअनूप४
द्यउ नइ रे दरसण मुझनइ सामि । लय लाई रह्यउ ताहरइ नाम।
तुं तउ रे करुणा सागर सही । मुझनइ तारउ बांहइं ग्रही ।५।
ध्यान धरुं छुं ताहरउ हीयइ । हीयउ ठरइ परतपि देपीयइ ।
बिरुद परउ करि द्यउ सिवराज।कहइ जिनहरप वधइ जिमलाज६

सूरप्रभ-जिन-स्तवन

[ढाल— म्हारी लाल नणदरा वीर हो रसिया ।
वे गोरीना नाहलीया ॥ एदेशी ॥]

तुं तउ सहु गुण रसनउ जाण हो रसीया,
तुं समता रस पूरीयउ ।
तुझ नामइ लील विलास हो रसिया,
सुभ तरु बीज अंकुरीयउ ॥ १ ॥
म्हारा मनना मान्या मीत हो रसीया,
सुणि सेवकना साहिबीया ॥ आंकणी ॥

तुज वाणी गुणनी खांणी हो रसीया,
सुणतां तृपति न पामीयइ ।
तुं तउ त्रिभुवन उदयउ भाण हो रसिया
तिणि तुझनइ सिर नामीयइ ॥ २ ॥

तुं तउ म्हारा हीयडानउ हार हो रसीया,
तुं तउ म्हारा सिरनउ सेहरउ ।
तुं तउ म्हारउ जीवन प्राण हो रसिया,
सूरप्रभु मुझ दुख हरउ ॥३॥

हठ करि रहिस्युं तुझ साथि हो रसीया,
पिणितुज केडि न छांडिस्यु ।
जउ आलइ तउ सिवसुख आलि हो रसीया,
नहीं तउ झगडउ मांडिस्युं ॥ ४ ॥

तुंतउ सहु अवसरनउ जाण हो रसीया,
वुरउ केहनइ न मनावीयइ ।
हठ चडीया देषी वाल हो रसिया,
जिम तिम करि समझावीयइ ॥५॥

तुज सरिषा जे जगमांहि हो रसीया,
जस ल्यइ जिणि तिणि वातडी ।
मुझ दरसण द्यउ महाराज हो रसीया,
कहइ जिनहरष सफल घडी ॥६॥

*

विशाल-जिन-स्तवन

[ढाल—आज माता जोगिणि नइ चालउ जोवा जईयई]

सारद चंद्र वदन अमृतनउ, सदन अनोपम सोहइ ।
नयन कमल देखी अणीयाला, सुरनरना मनमोहइ रे ॥१॥
आज म्हारा साहिबनइ चालउ जोवा जईयइ ।
जेहनइ देवी हीयडउ हरषइ, निरषइ चित्त चकोरा ।
घन गर्जारव सांभली वाणी, नाचइ मन जिम मोरा रे ॥२॥
जेहनउ दरसण छइ अति दोहिलउ, देखेवउ प्राणीनइ ।
पूरण पुण्य संयोगइ लहीयइ,मिलियइ हित आणीनइ रे ३।
प्रभुसु सूधी मोह विलूधी, धर्म राग रंगाणी ।
चोलतणी परि रंग न जायइ, सातधात भेदाणी रे ॥४॥
साहिब म्हारउ चतुर सनेही, रूडउ नइ रलीयामणउ ।
नयणांथी अलगउ नवि कीजइ, रसीयउ रंग रसालउ रे ।५।
श्रीविसाल दसमउ वइरागी, विहरमाण वडभागी ।
कहइ जिनहरष सुथिर लयलागी, पुण्य दसा हिव जागी रे ६

—०—

वज्रधर जिन-स्तवन

[ढाल-गोकल गामई गादरइजो महीडउ वेवण गईथीजो । एदेशी ।]

श्रीवज्रधर गुणरागी जो, सुणि साहिब सोभागी जो ।
तुझ मइ क्रोध न लहीयइ जो, समता सागर कहीयइ जो ।१।

लोभ नही तुझ पासइं जो, सम त्रिण मणि प्रति भासइ जो ।
करुणानउ तुं दरियउ जो, गुण रतने करी भरीयउ जो ।२।
धरम तणउ तुं धोरी जो, हुं बलिहारी तोरी जो ।
तुझ सरिपउ उपगारी जो, कोइ नही संसारी जो ॥३॥
भव सायर तुं तारइ जो, जनम जरा दुप वारइ जो ।
सेवक नइ हितकारी जो, भव भव भंजण भारी जो ॥४॥
जंगम सुरतरु विचरइ जो, जोगी भोगी समरइ जो ।
तुझनइ लेप न लागइ जो, राति दिवस तुं जागइ जो ॥५॥
तुझनइ काम न व्यापइ जो, करम तणी जड कापइ जो ।
आप सरीपउ कीजइ जो, जिम जिनहरप पतीजइ जो ॥६॥

—०—

चन्द्रानन-जिन-स्तवन

[ढाल-गरवै रमिवा आवि मात जसोदा तो नइ वीनवु रे। ए देशी]

चंद्रानन स्वामी चंद्रथी अधिक तुं सीयलउ रे ।
चंद्र कलंकित जोइ तुं तउ दिन दिन ऊजलउ रे ॥१॥
थाइ कला ते हीण, वधती घटती नहीं सारिपी रे ।
ताहरी कला नहीं पीण, परतपि कीधी नइं पारिपीरे ॥ २ ॥
तेहनइ लंछण लोक, कोई लावइ छइ केहवा रे ।
तुज नहीं कोई, पुन्यइ पामीयइ एहवा रे ॥ ३ ॥

पख ग्रहइ तसु राह, वइरी वैर आवी लीयइ रे ।
तुजनइ सेवइ राह, ताहरइ वइरी नवि पामीयइ रे ॥ ४ ॥
तेहनइ रोहिणि नारि, रोहिणि वाल्हउ सहू कहइ रे ।
तइं तउ छोड़ी नारि, समता नारी रातउ रहइ रे ॥५॥
तुं त्रिभुवन नउ चंद, बारमां जिनवर सांभलउ रे ।
द्यउ जिनहरख आनंद, महिरि करी मुझनउ मिलउ रे ॥६॥

चन्द्रबाहु-जिन-स्तवन

[ढाल—गीदूडउ महकइ राजि गीदूडउ महकइ । ए देशी]

श्रीचंद्रबाहु तेरमा, तुं तउ सांभली रे साहिब अरदास ।सां।
म्हारा हो गुणवंता लाल, म्हारा हो केसरिया लाल ।
म्हारा हो मानीता लाल, म्हारा हो व्हालेसर लाल ॥
मुजरउ जी लेज्यो राजि मुजरउ जी लेज्यो ।
हुं सेवक प्रभु तुम तणउ, तुं माहरउ साहिब सुखवास ॥१॥
मोहणगारा साहिबीया, मन मोह्यउ रे प्रभुजी तुझ नाम ।मो।
राति दिवस मनमइ वसइ, मइ भमतां रे पाम्यउ विश्राम । २
आइ मिलुं किम तुज भणी, नवि दीधी रे पांपडली देव ।दी।
चरणे आउं ताहरे, कर जोडी रे करूं ताहरी सेव । जो३॥
भवसायर बीहामणउ, तरि न सकुं रे साहिबजी तास ।न।
तारूं मेल्हइ आपणा, तउ तरिनइ पहुचुं सिवबास ॥त.४॥

करुणा सागर तुं सही, हुँ करुणा रे केरउ ठाम ॥क॥
ओलग घउ जिनहरषस्युं, नही बीजउ रे माहरइ कोई काम।५

भुजंग-जिन-स्तवन

[ढाल—राजपीयारी भीलडी रे । एदेशी]

गामागर पुरवर विहरता रे, भय भंजण स्वामि भुजंग कि ।
प्रभुजी ईहां पधारिज्यो रे ।
सेवक नइ पाय वंदावीयइ रे, जिम थायइ मन उछरंग कि।१प्र
छइ स्वामि तु मनइ पूछिवा रे, माहरा मन केरा सदेह कि ।प्र।
संसय मिथ्यात टलइ नहिरे,कुण टालइ तुज विणि तेहकि।२।
सामाचारी थई जूजूइ रे, निज निज थापइ सहु कोइ कि ।प्र।
सी साची करिनइ मानीयइ रे, मनडा मा डोलउ होइकि ।३प्र।
सहु कोकवरायइ जिन मती रे, सहु वांचइ सूत्र सिद्धांतकि ।प्र।
एक थापइ वली एक ऊथपइ रे,मनमांहि पडइ तिणि भ्रांतिकि४
ईहां अतिसय ज्ञानी को नही रे, पूछी करीयइ निरधारकि ।प्र।
मनना संदेह निवारीयड रे, करियइ सुध धरम विचारकि ।५
करुणा सागर करुणा करी रे, सेवकनी पूरवउ आसकि।प्र।
सफली करि जिनवर चउदमा रे, जिनहरप तणी अरदासकि ६

ईश्वरप्रभ–जिन–स्तवन

[ढाल—वाई रे चारणि देवि । एहनी]

जगदानंद जिनंद, वाइ रे जगदानंद जिनंद ।
त्रिभुवन केरउ राजीयउ, वाई रे ईश्वर देव ।
सेवइ चउसठि इंद्र ।वा। अनंत गुणे करि गाजीयउ ॥१॥
ईश्वर कहइ जे लोक । वा । पारवती नउ वालहउ । वा ।
भसम लगावइ अंग ।वा। ते ईश्वर मत सद्दहउ ॥२ वा ॥
वइसइ वृषभनी पूठि । वा । अलख जगावइ जोगउ । वा ।
भांग धतूरइ प्रीति । वा । संग न छोडइ भोगनउ ॥३ वा ॥
वाघंबर गजचर्म । वा । लहकइ रुंडमाला गलइ । वा ।
दीसइ अति विद्रूप । वा । नाद सबंद धुनि ऊछलइ ॥४वा॥
ते इश्वर नही एह ।वा। भोलइ मत को जाणिज्यो । वा ।
निरमोही निकलंक ।वा। तेह नइ ईश्वर मानिज्यो ॥वा५॥
विहरमान जिन राय ।वा। केवल ज्ञानइ दीपतउ ॥वा॥
करि जिनहरख समान ।वा॥ ईश्वर प्रभु अरि जीपतउ ॥६ वा॥

नेमिप्रभ–जिन–स्तवन

[ढाल—साहिबा फदी लेस्यु जी । ए देशी]

नेमि प्रभु सुणि वीनती, थारी चाकरी करूं करजोडि रे ।
साहिबा लाहउ लेस्युं जी ।

लागी रहस्युं पाउले, हुँ तउ आलस अलगउ छोडिरे ।१सा।
प्रभु मुप चंद निहालिस्युं, मुझ नयण चकोर पसारि रे ।
नृत्य करिसि आगले रही, प्रभुना गुण हीयडइ धारि रे ।२सा
वइसी प्रभुजीनइ आगलइं, सांभलिस्युं सरस वषाण रे ।
सीस ऊपरि हुँ रापिस्युं, जगनायक ताहरी आण रे ।।सा३।।
प्रभुजी नउ गायउ गाइसुं, प्रभुजी नउ वचन प्रमाण रे ।
प्रभुजीना चरण पपालिस्युं, सुच पाणी छ्रजतउ आंणिरे ।४।
आगलि भावन भाविस्युं, उपजाविसि प्रीति अपार रे ।
सफल मनोरथ थाइस्यइ, ते दिन धन २ अवतार रे ।।सा.५।।
दक्षण भरतइं हुं रहुं, तुमे रहउ महाविदेह मझारि रे ।
ईहां थकी मुझ वंदना, जिनहरप सदा अवधारि रे ।।सा०६।।

वीरसेन-जिन-स्तवन

[ढाल—सोनलारे केरडीरे,वावि, रूपलाना पगथालीयारे । ए देशी]

सहीरो रे चतुर सुजाण, आवउ वीरसेन वांदिवारे ।
कीजइ रे धन अवतार, पातक कसमल छांडिवा रे ।।१।।
आपणउ रे साहिब एह, मेल्हीजइ नही वेगलउ रे ।
निसि दिन रे एहनइ पासि,रहीयइ प्रेमइं आगलउ रे ।।२।।
मनना रे मेटइ दाग, केवल ज्ञान दिवाकरु रे ।
तजीयइ रे अंतर मइल, रहीयइ साहिब स्युं सरु रे ।।३।।

छोडी रे विषय विकार, कीजइ प्रभुनी चाकरी रे ।
थायइ रे जो ए पुरयाल, आपइ मुगती पुरी सिरी रे ॥४॥
एहवउ रे कोई नही देव, एहनी करइ तडो वडी रे ।
देवना रे देव नउ देव, एहनी ठकुराई वडीरे ॥ ५ ॥
धरीयइ रे हीयडइ ध्यान, करम षपइ भव केरडां रे ।
थायइ रे प्रभु सुपसाय, कहइ जिनहरप न फेरडां रे ॥६॥

महाभद्र-जिन-स्तवन

[ढाल—दल वादल उलट्या हो नदी ए नीर चल्यौ । ए देशी].

अढारमां साहिब हो, कीधी वात कहुं ।
तु अंतर जामी हो, चरणे लागी रहुं ॥१॥

हुं तउ प्रभु अपराधी हो, कुटल कदाग्रही ।
मिथ्यातइं मुक्यउ हो, सुमति न मन रही ॥२॥

मइं जीव संताप्या हो, आल वचन कह्यां ।
मइं अब्रह्म सेव्यां हो, दान अदत्त ग्रह्यां ॥३॥

परिग्रह वहु मेल्या हो, रात्री भोजन कर्यां,
वहु कपटइं भरीयउ हो, क्रोधादिक धर्यां॥४॥

मइ किरीया कीधी हो, लोक दिपावणी ।
मन माहे करइ हो, हुं त्रिभुवन धणी ॥५॥

मुज करणी माटी हो स्री संभलावीयइ ।
मावीत्रां आगलि हो, कह्यउ पिणि चाहीयइ ।६॥

म्हारा मनमां घोपउ हो, स्युं थास्यइ हिवइ ।
दुख पामिसी बहुला हो, हुँ तउ भव भवइं ॥७॥

पिणि सरणउ सबलउ हो, महाभद्र तुम तणउ ।
जिनहरष समापउ हो, सिवसुप अतिघणउ ॥८॥

देवयशा-जिन-स्तवन

[ढाल—सासू काठाहे गहुँ पिसावि, आपण जास्या मालवड, सोनारि भणइ, एहनी]

कंता सुणि हो कहुं एक वात,
आपण जास्युं प्रेमसुं, गोरी एम भणइ ।
वालंभ देवजसा जिनराय, चरणे नमीयइ पेमस्युं ॥गो१॥

एतउ विचरइ हो विदेह मझारि, नरनारी प्रति बूझवइ।गो।
उगणीसमउ साहिब सुजाण, वाणी अमृतधारा श्रवइ ॥गो२॥

कंता एहनउ हो रूपनिहालि,नयण सफल कीजइ आपणा।गो
कंता प्रभुना हो अतिसय जोइ, करम सबला कापणा ॥३॥

कंता रमिस्युं हो राम सुरंग, प्रभु आगलि ऊभा रही ।गो।
आपण करिस्युं हो जनम प्रमाण,गास्युं प्रभु गुण गहगही।४॥

कंता एहनउ हो सुरभ सरीर, कमल तणी परिमहइ ।गो।
कंता एहनउ मोहनरूप, देपी मुझ मन ऊमहइ ॥५॥

कंता एहनाहो गुण निकलंक, जिम कसोटी कंचन कस्यउ।गो।
कंता माहरइ हो जीवन प्राण, ए जिनहरप हीयइ वस्यउ।६।

अजितवीर्य-जिन-स्तवन

[ढाल—लटकउ थारउ रे लोहारणीरे। ए देशी]

अजितवीर जिन वीसमा रे,
तुं तउ मोहण मोहणा वेली,मटकउ थारा रे मुपडा तणउरे।
नव कमले सोना तणे रे, चालइ गजगति वेलि ॥ १ म ॥
नयण कमल अणीयालडां रे, सीतल नइ सुसनेह । म।
चंद्रवदन अमृत करइ रे, वाणी पावस मेह ॥ २ म ॥
निरमल तीपी नासिका रे, दीप सिपा अउ हार । म।
दंत पंति हीरा जड्या रे, जाणे मोतीहार । ३ म।
अधर प्रवालीउ पीयारे, वांह कमलना नाल । म।
आंगलीयां मगनी फलीरे, सुंदर नइ सुकमाल । ४ म।
रूपइं सुरनर मोहीया रे, मोह्या चउसठी इंद । म।
समवसरण वइसी करी रे, प्रतिबोधइ नर वृंद ॥ ५ म ॥
दीठां विणि मन ऊलसइ रे, मिलिवा तुझ जिनराय । म।
कहइ जिनहरप आवी मिलउरे, कइ ल्यउ मुज बोलाइ ।६म।

कलश

[ढाल—मा पावागढथी ऊतर्या मा । ए देशी]

सारद तुझ सुपसाउलइ रे, मा गाया गरबा वीसरे ।
जुगतिस्युं भावे रे भगतिस्युं मइं थुण्या रे ।
मा ए तीसे जगबंधवा रे, मा ए वीसे जगदीश रे ॥१॥
मा जंबूदीव विदेहमां रे, मा विचरंता जिन च्यारि रे ।
मा आठे अरिहंत उपदीसइ रे, मा धातकि विदेह मझारि रे।२।
मा पुष्कर अरध विदेहमां रे, मा आठे करइ विहाररे ।
मा केवल ज्ञानइ सोहता रे, मा धरम तणा दातार रे ॥३॥
मा ए वीसे जिनवरतणा रे, मा सारीषा बल रूप रे ।
मा कंचण वरण सहू तणा रे, मा पाय नमइ सुर भूप रे॥४॥
मा काया सहुनी पांचसइ रे, मा धनुष ऊंची इम दापी रे ।
मा आऊषा सहु जिन तणा रे,मा पूरव चउरासी लाप रे ।५।
मा वीसे जिनवर माहरा रे, मा साहिब हुँ तउ दास रे ।
मा प्रभुजीनी पगरज सिर धरूं रे मा सेवा करूं उलास रे।६
मा ते दिन कहीयइं थाइस्यइ रे, मा देपीसि हुं दीदार रे ।
मा वीनविसुं मन वातडी रे,मा प्रभु आगलि किणि वार रे७
मा चउविह संघमां परवर्या रे, मा बइठा त्रिगढा मांहि रे ।
मा वीसे जिननी साहिबी रे, मा देपुं परम उछाहि रे ।८।

मा धन दिन मास सुहामणउ रे,मा गिणिस्यु ंजनम प्रमाणरे।
मा विहरमाण हुं भेटिस्यु ंरे,मा पवित्र हुस्यइ मुभप्राण रे।६।
मा सतरइ पचतालइ समइरे,मा द्वितीय वैशाष सुदि त्रीज रे ।
मा मइ जिनहरषइं गाईया रे, मा निर्मल थयौ वोधिबीज रे
॥ १० जु ॥

इति श्री वीस विहरमाण स्तवनानि समाप्तानि ।
सर्वगाथा १३७॥ ग्रंथाग्र १६२॥ सवत् १७६१ वर्षे ज्येष्ठवदि
१ दिने शनिवारे लिखितानि जिनहर्षेण श्री पत्तनमध्ये ॥

वीशी

सीमंधर-जिन-स्तवन

[ढाल—वीर वखाणी राणी चेलणा जी, एहनी]

सामि सीमंधर सांभलउजी, माहरी एक अरदास ।
हीयडउ मिलण उमाहीयउ जी,प्रीति तणइ पच्चउ पास ॥१॥
नाणइ भय मन केहनउ जी, [1]राखीयउ न रहइ अनीत ।
आवइ जाइ हे जालूअउ जी, राजि चरणे मुझ चीत ॥२सा.॥
एक वाल्हेसर तुं धणी जी, सीस धरुं तुझ आण ।
अवर सुं मिलण मुझ आखडी जी,
तुं हीज देव प्रमाण ॥ ३ सा. ॥
भरम भूलइ थकइ मइं घणाजी, जाणि शिव सुख तणी खाणि ।
सेविया हुसी सुर सांमठा जी,
खून खमि त्रिजग दीवाण ॥४सा.॥
माहरा अवगुण जोइस्यउ जी, तउ न सरइ कोइ काज ।
अवगुण गुण करि जाणिस्यउ जी,
तउ ही ज रहिसी मुझ लाज ॥५सा.॥
माहरी प्रीति लागी खरी जी, जेहवी चोल मजीठ ।

---

१ भाखर गिणइ न भीति ।

रंग विदरंग न हुवइ कदे जी,
अधिक अधिकी सदा दीठ ॥६सा.॥
राजि पुखलावती हुं इहां जी, भेटीयइ किण परि पाव ।
कहइ[1] जिनहर्ष म वीसारिज्यो जी,
अउहीज[2] लाख पसाव ॥७सा.॥

—o—

युगमंधर-जिन-स्तवन

[ढाल—सहीया सुरताण लाडउ आवइलउ, एहनी]

प्राण सनेही जुगमंधर सामी, वीनती सुणउ प्रणमुं सिरनामीहो
मुझ[3] हीयडउ हेजइ गहगहीयउ,
चरण कमल भेटण ऊमाहीयउ हो ॥१प्रा.॥
भाखर भीति गिणइ नही काइ, आवइ तारइ पासि सदाइ हो ।
मनडउ जाणइ जाइ मिलीजइ,
दोइ कर जोड़ी सेवा कीजइ हो ॥२प्रा.॥
तुं साहिब हुं सेवक तोरउ, वाल्हेसर तुं प्रीतम मोरउ हो ।
[4]नवली प्रीति प्रभु सुं लागी,
रागी सुं मत थाज्यो नीरागी हो ॥३प्रा.॥

---

१ प्रभु । २ एतलइ । ३ मिलिवा मुझ हीयडउ गहगहीयउ ।
४ प्रीति परम गुरु तुम सु लागी ।

नवला[1] सेवक पासइ राखउ, छिह कदे मुझ नइ मत दाखउहो।
तुं ही ज साजण सयण सनेही,
तुझ उपरि वारूं मुझ देही हो ॥४प्रा.॥
प्राण करूं कुरबाण अम्हीणा, साहिब सूरति सुं लय लीणा हो
जिण दिन देखीस सूरत नइणे,
दाखिस निज वातडीयां वरणे हो ॥५प्रा.॥
सेवक नइ दीदार दिखावउ, वइगा हुइ नइ वार म लावउहो ।
इवडी ढील कहउ किम कीजइ,
[2]पोताना जाणी सुख दीजइ हो ॥६प्रा.॥
आइ सकुं नहीं हुँ तुझ तीरइ, दूरि[3] थकी बलिहारी प्रभुजी रइहो
कहइ जिनहर्ष किसी पर कीजइ,
[4]मिलीयां विण किम प्राण पतीजइ हो ॥७प्रा.॥

बाहु-जिन-स्तवन

[ढाल—झीणा मारू लाल रगावउ पीया चूनडी, एहनी]

तुं तउ सायर सुत रलियामणउ,
थाहरउ अमीय भर्यो छइ गात ।

---

१. सेवक जाणी पासइ राखउ, नयण सु शीतल प्रभुजी भाखउ हो । २, परतखि भावी दरसण दीजे हो । ३. इहा थी पाय नमूं प्रभुजी रे हो । ४. पाख हुवइ तउ ऊडी मिली जइ हो।

चंदा तुं तउ जाइ कहै वाहु सामिनइ,
तुं तो सहचारी गयणंगणइं,
तुं तउ[1] फिरइ सदा दिन राति ॥१चं.॥
थांरा दरसणरी म्हानुं खांति ।चंदा।आंकणी।
थांनइ बार परषदा ओलगइ, थांनइ सेवइ सुरनर कोडि ।चं।
साहिबा रूप वण्यउ थाहरउ अति भलउ,
साहिबा[2] अवर न को प्रभु जोड़ी ॥२।चं.॥
तुं तउ[3] भव भय भंजण सांभल्यउ, हुं तउ भवदुख पीड्यउ जोर
दुख भंजउ सेवक[4] जाणि नइ,
हुं तउ तुझ[5] नइ करू रे निहोर ॥३चं.॥
जेतउ अधिकानइ ओछा गिणइ,
ते तउ निज स्वारथीया मीत ।चं०।
सोटा[6] अविहड तउ पडिहइ नहीं,
एतउ उत्तम माणस रीति ॥चं. ॥४॥
मइं तउ कीधी साची मो दिसा,
म्हारा साहिबिया सुं प्रीति ।चं।

---

१. प्रभु वदण जाये प्रान । २ बीजउ नावइ नाहरी जोड़ । ३ तुझ नइ । ४ महिर धरी करी । ५ एतलउ । ६ निस्वारथीया ।

जम वारा लगि तुटइ नहीं.

जिम पंकज नइ आदीत ।।चं.।। ५।।

थेतउ साहिब करुणा रस भर्यो, लहि अवसर करज्यो सार ।

जिनहरष हीयइ धरि भेटिसु , धन दिन धनधन अवतार ।चं.।

—०—

सुबाहु-जिन-स्तवन

[ढाल —हमीरीया नी अथवा मालीना गीतरी ।]

वाल्हेसर संभालीयइ, विरुद गरीब निवाज सुबाहु ।

करुणा निधि करुणा करी, सारउ वंछित काज । सुबाहु. ।१।

दुखीयउ दीन दया मणउ, राज तणो हुं दास ।सु.।

दीनदयाल कृपाल तु , राखि सनेहा पास ।सु.। २ ।वा.।

[1]देवल देवल देवता, फिर फिर मुक्या जोइ ।।सु.।।

[2]तुडि आवइजे ताहरी, तिसउ न दीसइ कोइ ।सु.। ।३।वा.

[3]भवसायर पडता थकां, जउ मुझ आपउ बाह ।।सु.।।

तउ तरि आऊ तो[4] कन्हइ, रहुं चरणां री छाह ।सु.। ।४।

---

१ ज्ञानी ध्यानी मइ घणा । २ ताहरी समवडि जे करइ, तेहवउ न दीठउ कोइ । ३ जउ एक सुर मेल्हउ इहा तास विलबी बाह । ४ तुम्ह ।

करि न सकुं हुं ताहरी, सेवा[1] भगति न कांइ ।।सु.।।
कोइ क दिन मिलिवा तणी, दीसइ छइ अंतराइ ।सु.। ।५।
दूरि थकी पिणि आपणा सेवक चीतारेह । सु. ।
कुंभाफी लालब चांह ज्युं, मूं नाम वीसारेह ।सु. ।६। वा.
प्रीत पतंगा रंग ज्यु, मत करिज्यो जिनराज ।सु.।
देखण जिनहरषइ हीयउ, मेलउ दे महाराज ।सु.। ।७। वा.।

—:o:—

सुजात-जिन-स्तवन

[ढाल.—श्रावक लिखमी हो खरचीयइ ।ए ।]

मनमोहन महिमा निलउ, गुणसायर गंभीर रे लाल ।
भय भंजण भगवंत जी, क्रोध दवानल नीर रे लाल ।१।
समता रस संपूरीयो, ममता नहीं लवलेस रे लाल ।
दमता इंद्री आतमा, नमता इंद्र नरेस रे लाल ।।२ म.।।
गति आगति सहु जीवनी, जाणइ केवल धार रे लाल । सा.।
मन संदेह निवारता, विहरइ उग्र विहार रे लाल ।।३।।म. ।
भूख तृषा सहु वीसरइ, सुणतां सरस वखाण रे लाल ।
वयर विरोध न सांभरइ[2] करतां आण प्रमाण रे लाल ।४।
वदन कमल जिम विकसितउ, देखइ ते[3] सुकयत्थ रे लाल ।
भेटइ ऊलट आणिनइ[4], धन २ ते मणिमत्थ रे लाल ।५।

---

१ तिहां किणि आइ । २ उलसित थायइ प्राण रे । ३ धन धन्न ।
४ निति ऊलसतइ मन्न रे ।

मुझनइ मेलउ किहां थकी[1] ताहरउ हुइ जिनराज रे लाल ।
तउ पिण सेवक जाणिनइ[2],करिज्यो काइ निवाज रे लाल।६।
विहरमाण मुझ वंदणा, जाणेज्यो निसदीस रे लाल ।
वात सुजात किसी कहुं, तुं जिनहरष जगीस रे लाल ।७।

स्वयंप्रभ-जिन-स्तवन

[ढाल —राजरनी]

माहरा मननी वात, दाखुं सगली[3] हो आगलि ताहरइ ।
तुं मांहरइ पित मात, अलगउ न रहइ हो मन थी काहरइ ।१।
हुं भमियउ भव मांहि जनम मरणना हो बहुला दुखसह्या ।
तुं जाणै जिनराइ, एकणि जीभइ हो किम जायइ कह्या ।२।
नह रहइ चंचलचीत, वार्यउ अहनिसि हो रति आरति सहुं ।
पर रमणी सुं प्रीति, काम विटंबण हो हूं केही कहुं ।३।
विनडइ माया मोह, क्रोध न छोडइ हो माहरी पाखती ।
न मिटइ किमइ लोह[4], मान माया तउ हो न घटइ इक रती।४।
नयण वयण नहीं ठाम विकथा च्यारे हो राति दिवस करूं
हीयडइ ताहरउ नाम, नावइ किण परि हो भवसायर तिरूं
माहरउ पापी जीव, केइ वातां हो मनमइ चींतवइ ।
करिसी[5] नरगइ रीव, सूधी सेवा हो ताहरी नवि हवइ ।६।

---

१ भाग विना । २ मुझनइ सामि । ३ कांइक । ४ सोह न वाधइ हो जेह थी रथ रिती । ५ दुरगति ।

निसुणी स्वयंप्रभु सामि, हुं तउ खूनी हो सेवक ताहरउ ।
कहइ जिनहरष सुठाम दीजइ कीजइ हो ऊपर माहरउ ।७।

ऋषभानन जिन स्तवन

[ढाल — भणइ देवकी किणि भोलव्यउ]

ऋषभानन सुं प्रीतडी, हुं तउ करिसु २ अंतर खोल साहिबा ।
कपट न कोइ राखिसुं ,मइ तउ पायउ २ भेद अमोल ।सा.।
इतरा दिवस लगी भम्यो, वहुला दीठा दीठा देवी देव ।सा.।
भरम मिथ्यात वसइं पड्यो,
साचा जाणी नइ रूडा जाणी नइ कीधी सेव।।२।।रि.।।
के कामी के लोभीया, केतउ [1]क्रोधी क्रोधी रुद्र अतीव ।सा.।
दूषण भरिया देखि नइ,
म्हारउ न मिलइ न मिलइ त्यां सु जीव ।सा.।।।३।।रि.।।
रससागर समता रस तणउ, रूडि सूरति नीकी मूरति मोहनवेल
संतोषइ सहु को भणी,
मीठी वाणी आछी वाणी अमृत रेलि ।।सा.।। ।४। रि.।
पांति विचइं विहरउ करइ, एतउ ओछा २ नउं आचार ।सा।
एक नजरि सहु ऊपरै, तुं राखइ प्राण आधार ।सा.। ।५।
जेहनी प्रीति न पालटइ, तिणि सुं मिलियइ वार हजार ।

---

१ क्रोधइ भर्या

गरज न का जिणसुं सरइ, कीजइ ऊभा ऊभा ऊभ जुहार।
साहिब तुझ विण को नही, म्हांरा मनरउ मान्यउ मीत ।
कहइ 'जिनहर्ष' निवाहिज्यो, मुझ सेती सेती अविहड़ प्रीत ।

अनन्तवीर्य-जिन-स्तवन

[ढाल—हिवरे जगत गुरु शुद्ध समकित नीमी आपियइ]

आज ऊमाही जीभड़ी, होजी करिवा प्रभु गुण ग्राम ।
जन्म सफल[1] माहरउ हुसी, होजी हियड़इ धरतां नाम ॥१॥

हिवइ रे सखाइ श्री अनंत-वीरज थासी माहरउ जी ।
तउ फलिसी हो मुझ आश जगीश कि,
दिवस हुसी मुझ पाधरउ जी ॥२॥

मोटां नी मींटइ करि, होजी सीझइ सगला काज ।
फलइ मनोरथ मन तणा, होजी जउ तू सइ महाराज ॥३हि.॥

मोटा तउ विरचइ नहीं, होजी कदेय न दाखइ छेह ।
सा पुरसा री प्रीतड़ी, होजी पाथर केरी रेह ॥ ४ ॥ हि.॥

अहिला नइ अकियारथा, होजी तुझ विणि जे दिन जाइ ।
आशा लूधा सेवकां, होजी दरसण न दियइ कांइ ॥५ हि.॥

आघउ ही कां सुं करइ, होजी इवड़ी खांचा ताण ।
हेज हीयाली दे[2] मिलउ, होजी हियड़इ करुणा आण ॥६हि.॥

---

१ सफला थास्यइ हिवे । २ यु ।

हुं तउ दीन दयामणउ, होजी साहिब दीन दयाल ।
मुझ जिनहरख सदा हुवइ, होजी वंछित पूरि कृपाल ।.७हि.।।

सूरप्रभ-जिन-स्तवन

[ढाल-जोवउ म्हारी आई उण दिसि चालतो हे]

आवउ मोरी सहियं सूरप्रभु स्वामि ना हे,
हिल मिलि नइ गुण गावां हे ।
अंतर जामी वाल्हेसर तणी हे, मउज कदे किणि पावां हे ।१।
प्राण सनेही परमेसर विना हे, वंछित फल कुण आपइ हे ।
करुणानिधि करि आपणी हे,सेवक थिर करि थापइ हे ।२आ।
सेवा जउ सूधी प्रभु तणी हे, किम ही कीधी जायइ हे ।
तउ कुमणा न रहइ किणि वातरी हे,दिन २ दौलति थायइ हे३
इणि साहिव री मू[1]रति मोहणी हे, दीठा ही वणि आवइ हे ।
ते देखइ जे साहिव ना हुवइ हे, अवर न देखण पावइ हे ।४।
अंतरगत नी अलवेसर परवइ हे, पीड़ कहउ कुण पालइ हे ।
जन्म मरण भव सागर बूडतां हे, हितसुं हाथे झालइ हे ।।५।।
अरियण कोइ गंजी सकइ नहीं हे, थायइ वलवंत वेली हे ।
आप समोवड़ि ओलगतां करइ हे, रूंख प्रमाणइ वेलि हे ।६
जे जग मांहे आप सवारथी हे, तेहनउ सग न कीजइ हे ।
काम कढ़ जिनहर्ष जिके हुवइ हे, आपण पउ तसु न दीजइ हे ।७

---

१ सूरति ।

विशाल-जिन स्तवन

[ढाल—सूहव री]

आज लह्यउ मंइ भेदो, हियड़इ जागी हो सुमति सुनिरमली।
मनमइं अधिक उमेदो, पूगी माहरी हो सगली ही रली ।१।
अंतर कंचण काचो, अंतर जिवड़ो हो सर सायर खरउ ।
अंतर मिथ्या साचो, जिनवर बीजां होइ वड़ो आंतरउ ।२।
दीठा देव अनंतो, ताहरी समवड़ हो को नावइ सही ।
ताहरा गुण अरिहन्तो, किण ही मांहे हो मइ दीठा नहीं।३
केहा ते कहउ देवो, स्वारथ भीनां हो जे अहनिशि रहइ ।
तेहनी करतां सेवो माहरउ मनड़ो हो हिवइ तो नवि वहइ।४।
ज्यां सु पड़ि मन आतो,
त्यां सु हियडउ हो कहउ नइ किम हिलइ ।
मेटण नावइ खांतो, मन मोताहल हो भागा नवि मिलइ।५
तु साहिव सिरदारो, तुझ नइ छोडी हो नाथ न को करु ।
मइं कीधी इकतारो, इण भवि तूं ही हो बीजो नादरूं ।६।
श्री विशाल गुण गेहो, मुझ नइ दीजई हो दर्शन रावलउ ।
कहइ जिनहर्ष सनेहो, तुझ नइ मिलिवा हो मन उतावलउ ७

वज्रधर-जिन स्तवन

[ढाल—चवर ढुलावइ गजसिंह रउ छावी महल मे]

अधिक विराजइ वज्रधर साहिबारी साहिबी जी,

अर सेवइ सुर नर कोड़ ।
सोवन सिंघासण हीरे जड़ियउ वैसणै जी,
अर झलकै होडा होड ।१। ।अ.।
समवशरण में हो वैठा जिनवर उपदिसै जी,
अर धर्मना च्यारि प्रकार ।
परषद् वारइ हो देसण नीकी संभलइ जी,
अर सुर वोलइ जयकार ।२। ।अ.।
कुसम वरसावे हो साहिवा जी रा महल में जी,
अर विकसित जानु प्रमाण ।
चमर विन्हे दिशि ढालइ ऊभा देवता जी,
अर भामंडल ज्युं भाण ।।३।। ।अ.।
वाजित्र वाजइ हो साहिवा जी रा अति भला जी,
अर श्रवणे अधिक सुहाइ ।
प्रभु गुण गावइ हो अप्सर मीठा कंठ सुं जी,
अर चारू वेश वणाइ ।४। ।।अ.।।
इन्द्र उतारइ हो साहिव जी री आरती जी,
अर चंदण लेपइ गात ।
कंचण वरणी हो काया तेजइ झिग-मिगइ जी,
अर वदन कमल विकसात ।५। ।अ.।
एहवी निहालूं हो नयणे रूडी साहिवी जी,

अर सेवु' अहनिश पाय ।
महिर करीनइ हो सेवा द्यउ जिनहरख सु' जी,
अर शिव सुख तणउ उपाय ।६। ।अ.।

—०—

चन्द्रानन जिन स्तवन

[ढाल पर्थीडा री]

श्री चन्द्रानन चतुर विचारियइ रे,
विरुद पोतानउ गरीब निवाज रे ।
जे पाछइ ही करिवउ पिणि आपनइ रे,
ते तउ पहिली कीजइ काज रे ॥१॥ श्री.॥

मुझ नइ तउ तरिवउ तुम थी हुसी रे,
भव सायर हु'ती जिनराज रे ।
तउ हिवइ केही करउ विचारणा रे,
बांह गह्यां री बहिज्यो लाज रे ॥२॥ श्री.॥

चोरी कीधी मइं तुझ सु' घणी रे,
चोरां सेती कीधउ गूझ रे ।
मार लहेसी आगली प्राणियउ रे,
करम उदय जदि आसी सूझ रे ॥३॥ श्री.॥

हूं मिथ्यात कदाग्रह मोहियउ रे,
पोता नउ मत कीध प्रमाण रे ।

पिणि तउ साची खबर न का पड़ी रे,
तिणि भ्रम भूलउ फिरूं अयाण रे ।।४।। श्री.।।

कामी क्रोधी कुटिल कदाग्रही रे,
धरम तणी न सुहावइ वात रे ।
हसि हसि पाप दिसि पगला भरूं रे,
कुण गति थासी माहरा तात रे ।।५।। श्री.।।

माहरी तउ करणी छइ एहवी रे,
जेह थी लहियइ नरक निगोद रे ।
पिण साहिब नउ बल सबलउ अछई छे,
तिणि मन मांहे अधिक प्रमोद रे ।।६।। श्री.।।

आभउ भाभउ मुझ नइ ताहरउ रे,
करिज्यो जुगती वात सुजाण रे ।
कहइ जिनहरख चरण शरणइ हुज्यो रे,
ताहरा माहरा जीवन प्राण रे ।।७।। श्री.।।

चन्द्रबाहु–जिन–स्तवन

[ढाल— गौडी मिश्र]

सुणि २ मोरा अंतरजामी, तोनइ वीनति करूं शिरनामी हो।
तुं तउ त्रिभुवन नाथ कहावइ, स्युं देइ नइ वरतावइ हो।सु.१।
तोरउ तारक नाम कहीजइ, तार्यउ कोइ न सुणीजइ हो ।सु.।
तुं तउ मोह तणा दल मोड़इ,किम सेवक नइ सुख जोड़इ हो२

परिग्रह राखइ नहीं पासइ, चउविह संघ तउ किम वासइ हो।
किणही न कांई न दीधउ तउ,पिण त्रिभुवन जस लीधउ हो३
धुरि[1] क्रोध इग्यागारा सुणिया,
तउ आठ करम किम हणीया हो ।
अभिमान नहीं तुझ मांहि, तउ इवड़ी प्रभुता काहे हो ।सु.४।
माया केलवि नवि जाणइ, सुरनर तउ किम वसि आणइ हो।
निरलोभी तुझनइ कहियइ,गुण संग्रह तउ किम वहियइ हो५
तांहरा अवगुणपिणि मीठा मइं तउ परतिख नयणे दीठा हो ।
ईसर जे करै सु छाजइ, बीजा करेइ तउ ढीढी वाजइ हो ॥६॥
मुझ सरिखउ तारि मइ वासी,साचउ विरुद तारक तउ थासी हो
जिनहर्ष हिवइ वणि आई, चन्द्रबाहु कीध सखाइ हो ।सु.७।

भुजङ्ग-जिन-स्तवन

[ढाल-रहउ रहउ बालहा एहनी]

स्वामि भुजंगम वीनति, एक सुणउ महाराज ॥ जिनजी ॥
भगत वच्छल मिलि भावसुं, राज गरीब निवाज ॥जि.१॥
गुण ताहरा जिम सांभलुं, रोमांचित हुवइ देह ॥ जि. ॥
दीठां पाखइ हो प्रीतड़ी, लागी अचिरज एह ॥जि.२सा ॥
जाणुं मिलियइ हो जाइ नइ, पूछीजइ हित[1] वात ॥जि. ॥
पूरीजइ मन खांतड़ी, सेवीजइ दिन रात ॥ जि० ३ सा. ॥

---

१ मुझ माहे क्रोध न सुणिया।

अनमिष नयणे हो निरखियै, प्रभु सूरति सुसनेह ॥ जि०॥
आंखड़ियां ताढिक वलइ, जिम ग्रीषम रिति मेह ॥जि. ४॥
तु अंतर्गत आतमा, तूं साजण तूं सइण ॥ जि० ॥
तुझ नइ देखिसि जिण घड़ी, सफल गिणिस दिन रइंण ।जि. ५
घड़ी घड़ी नइ अंतरइ, चीता आवइ सामि ॥ जि० ॥
प्राण सनेही हो ताहरइ, हुं बलिहारी नामि ॥जि० ६ सा.॥
जउ मिलिवउ सिरज्यो हुवइ, तउ हिज मिलिवउ थाइ ।जि.।
कहइ जिनहर्ष चीतारिज्यो, दूरि थकी महाराइ ।जि.।७।सा.।

ईश्वर-जिन-स्तवन

[ढाल—सुणि सुणि वालहा.]

ईसर प्रभु अवधारियइ, माहरी एक अरदास ।
करुणाकर करुणा करउ, सेवक देखि उदासो रे ॥१॥
प्रीतम माहरा, अलवेसर अरिहन्तो रे,
भेटण ताहरा चरण हियो उलसंतो रे ॥प्री.॥२॥
जाणु हूं सेवा करू, तुम[1]ची वेकर जोड़ ।
राति दिवस हाजर रहूं, ए मुझ मन मई कोड़ो रे ।३। प्री.।
आंखड़ियां अलजउ करे, देखण तुझ दीदार ।
मन तरिसई मिलिवा भणी, जिम चातक जलधारो रे ।४।प्री.।

---

१ सामी ।

सुहणा मांहे सांभरइ, साहिब वार हजार ।
पिणि परतखि दीसइ नहीं, पोतइ पाप अपारो रे ।५। श्री.।
जिम मन चालइ माहरउ, तिम जउ चरण चलंत ।
इवड़ी ढील न तउ करूं, ततखिण आइ मिलंतो रे ।६। श्री. ।
जाणेज्यो मेरी वंदणा, अह ऊगमतइ सूर ।
कहइ जिनहरख सहेजसुं, मुझ नइ राखि हजूरो रे ।७ ।श्री.।

नेमप्रभु-जिन-स्तवन

[ढाल—वडरागी थयउ. एहनी]

माहरा मन नी वातड़ी रे, तुं जाणइ जगदीश ।
अंतरजामी माहरा रे, तिणि तुझ नामूं शीशो रे ॥१॥
सेवक वीनवइ, मुझ भव सायर तारो रे ।
शरणइ ताहरइ, कीजइ प्रभु उपगारो रे ॥२॥ से.॥
तारक तउ तारइ जिको रे, अवर न तारक होइ ।
तारक विरुद कहाविउ रे, तउ मुझसाम्हो जोयो रे ।३। से.।
तइं तार्या तारइ तुंही रे, तूंही तारण हार ।
माहरी वेला कांइ करउ रे, इतरउ सोच विचारउ रे ।४।
निगुणउ तउ पिण ताहरउ रे, हूं सेवक महाराज ।
छोरूं होइ उछांहला रे, मावीतां नइ लाजो रे ।५। से.।

जे कहिवउ छइ तुम मणी रे,
ते तउ अम्ह नइ लाज ।
सीख किसी सुपरीछनइ रे,
सुणि साहिब सिरताजो रे ॥६से.॥
नेमप्रभु म वीसारिजो रे,
धरिज्यो अविहड़ नेह ।
कहइ जिनहर्ष विचारिज्यो रे,
सइंण न दाखइ छेहो रे ॥७से.॥

वीरसेन–जिन–स्तवन

[ढाल— आज नइ बधावो सहिया माहरइ]

जउ कोइ चालइ हो उण दिसि आदमी,
तउ लिखि द्यु संदेश ।
प्राण सनेही हो श्रीवीरसेन नइ,
मिलिवा मन अंदेश ॥१ज.॥
कागलवाही हो जउ कीजइ किमइ,
थायइ सइंध पिछाण ।
दिन दिन थायइ हो चवती प्रीतड़ी,
मिलिवा उलसइ प्राण ॥२ज.॥
कागल मांहे हो खांति करी लिखु, ठावा बोलि विचारि ।
मत निसनेही हो रीझइ वाचिनइ,

आपइ मौजि अपार ॥३ज.॥

साहिबनइ तउ हो कुमणा कांन थी,
पूरण पूरण चाहि ।
सेवक मउज न पावइ प्रभु तणी,
चूक चाकरी मांहि ॥४ज.॥

माहरइ तउ गरज न का किणि वातरी,
कहिवउ छइ मुझ तारि ।
साहिब सउ वाते इक वातड़ी,
आवागमण निवारि ॥५ज.॥

ढावा[1] संदेशा हो जउ पहुंचाईयइ,
फेरि पड़इ कुज कोइ ।
निज मन मांहे हो प्रभु मानइ भलो,
जउ दिन सावल होइ ॥६ज.॥

करम सखाइ हो मुझ छोडइ नहीं,
पड़ियउ सबलइ पासि ।
जउ जिनहर्ष महिर प्रभुनी हुवइ,
पूगइ सबली आश ॥७ज.॥

महाभद्र-जिन-स्तवन

[ढाल—मोरा प्रीतम ते किम कायर होइ]

निशि भर सूतां आज मंइजी, दीठां सुपनां मांही ।

---

१ सीठा ।

रोम रोम मुझ ऊलस्या रे, अंग अधिक उच्छाहि ॥१॥

जगतगुरु सुणि महाभद्र जिणंद ।

प्रभु सुं लागी मोहनीजी, जेम चकोरां चंद ॥ज.॥आं॥.

जाणुं प्रभु संइमुख मिल्याजी, भागी अंतर वाड़ि ।

मुझ मन रलियाइत थउ जी, हिवइ हुं केहनइ पाड़ि ।२ज.।

रे हियड़ा तुं दउड़तो जी, जेहनइ मिलिवा काज ।

ते साहिब आवि मिल्या जी,

पाम्यउ[1] त्रिभुवन राज ॥३ज.॥

जेहनी वाट निहालतउ जी, धरतउ निश दिन ध्यान ।

ते परतखि दीठा सही जी, महिमा[2] मेरु समान ॥४ज.॥

मन मानीता मीत सुं जी, केही कीजइ कांणि ।

कहतउ कहतउ वातड़ी जी, हियड़ा संक म आणि ।५ज.।

साहिब नंइ गुदराइतुं जी, निज सुख दुख नी वात ।

इम चिन्तवतां जागियउ जी, ततखिण मन मुरछात ।६ज.।

जउ सुहणे आवी मिलो जी, परतखि न मिलो काइ ।

कहइ जिनहर्ष अरथ्यारथा जी,

तुझ विण जे दिन जाइं ॥७ज.॥

देवयशा-जिन-स्तवन

[ढाल—के के ईश्वर लाधउ-एहनी]

श्री देवयशा श्रवणे[3] सुण्यो.

---

१ पामिसि हिवइ शिव । २ साहिब कचरणवान । ३ उगणीसमउ ।

दुःख भंजण रंजणहार रे, वाल्हेसर मोरा ।
परमेसर पीहर तो पखइ,
कुण तारइ जलधि संसार रे ।वा.॥१॥

सुख दुख पाणी सु भरयउ,
कोइ नावइ थाग अथाह रे ।वा.।
वहइ जन्म मरण कल्लोल मइ,
मद आठेइ मच्छ ग्राह रे ।वा.२॥

अइतो राग द्वेष आरा विन्हे,
क्रोधादिक गिरि सुविशाल रे ।वा.।
अउ तउ झूठ मिथ्यात भरम पड्यो,
विपया रस सरस[1] सेवाल रे ।वा.॥३॥

माहरो प्राणी तलफइ घणु,
पड़ियउ भवसायर मांहि रे ।वा.।
करुणा कर तउ हूं नीकलु,
जउ काढइ तु कर साहि रे ।वा.॥४॥

तूं तारइ तउहिज हूं तिरु,
वीजउ नहीं तारणहार रे ।वा.।
मुझनइ आझउ छइ ताहरउ,
वइगी करज्यो मुझ सार रे ।वा.॥५॥

वीजा सगला अवहीलनइ, हुं लागउ ताहरइ केड़ि रे ।वा.।

---

१ जागि जवाल ।

निज भगत निरास न मेलिज्यो,
पासइ राखेज्यो तेड़ि रे ।वा.॥६॥
कोइ तउ केहनइ ओलगइ,
कोइ केहना हुइ रह्या दास रे ।वा.।
जिनहर्ष भवो भव माहरइ,
एक तुंहीज सास वेसास रे ।वा.॥७॥

—:o:—

अजितवीर्य्य–जिन–स्तवन

[ढाल—महाविदेह खेत सु^ामरणहउ]

अजितवीरज अरिहन्त सुं,
मिलियउ माहरउ मन्न लाल रे ।
अवर न को बीजउ लखइ,
आवइ जावइ प्रछन्न लाल रे ॥१अ.॥
हटकुं तउ पिणि नवि रहइ,
रसियउ प्रेम विलूध लाल रे ।
प्रभु गुण मीठा मन गमइ,
ज्युं साकर सुं दूध लाल रे ॥२अ.॥
पलक न छोड़इ पाखती,
रहइ जपतउ जगदीश लाल रे ।
भमर कमल ज्युं मोहियउ,
चित चरणे निशदीश लाल रे ॥३अ.॥

तंइ कीधी काइ मोहनी, देखण तरसइ नइण लाल रे ।
वाल्हउ लागइ ताहरउ,
दरसण वाल्हा सइण लाल रे ॥४अ.॥
ठामे ठामे ठावका, देवल देवल देव लाल रे ।
पिणि ते मन मानइ नहीं,
न करूं तेहनी सेव लाल रे ॥५अ.॥
सेवा कीजइ तेहनी, जे पूरइ मन आश लाल रे ।
सेवा फल लहियइ नहीं,
संग न कीजइ तास लाल रे ॥६अ.॥
साहिब गुण परिमल भर्या,
कहइ जिनहर्ष विकाश लाल रे ।
बीजा सुर डहकावणा,
फूल्या जाणि पलास लाल रे ॥७अ.॥

—०—

= कलश =

[ढाल—कागलियउ करतार भणी सी परि लिखू -एहनी]

विहरमान वीसे नित वंदियै रे, अढीयां दीपां मांहि ।
भवियण मन संदेह निवारतां रे, सेवइ सुरनर पाय ॥१वि.॥
ए वीसेइ सुरतरु सारिखा रे, मन वंछित दातार ।
भाव भगति इक चित्त आराधतां रे,
लहियइ भव जल पार ॥२वि.॥

काया धनुष विराजइ पांचसइ रे, सोवन वरण शरीर ।
आउ चौरासी पूरव लाख वखाणिये[1] रे,
सायर जेम गंभीर ॥३वि.॥
बारह परषद आगलि उपदिशइ रे, च्यारे धरम सुरङ्ग ।
लंछन[2] वृषभ सहु नै सोहता रे, दीठां मन उछरंग ॥४वि.॥
त्रिकरण सूधे वीसे जिन संस्तव्या रे. वीसे गीत[3] रसाल ।
गुणियल गायो मिलि मिलि वे जणा रे,
झिलती मिलती ढाल ।५वि.॥
मुनि लोचण वारिधि निसिपति (१७२७) समे रे,
मधु सित आठम दीस ।
वाचक शान्तिहर्ष सुपसाउलै रे,
कहै जिनहर्ष जगीश ॥६वि.॥

इति श्री वीस-विहरमान-गीतानि समाप्तानि

[संवत् १७२७ वर्षे निती ज्येष्ठ वदि १० दिने ॥श्रीरस्तु॥श्री।]

---

१ नउ २ समवसरण माहे वैठा थका रे. ३ तवन ।

मातृका-बावनी

ओंकार अपार जगत आधार सबे नर नारि संसार जपें हैं,
बावन्न अक्षर मांहि धुरक्षर ज्योति प्रद्योतिन कोटि तपे हैं।
सिद्ध निरंजन भेख अलेख सरूप न रूप जोगेंद्र थपे हैं,
एसो माहातम हे ओंकार को पाप जसा जाके नांम खपे हैं ।१।

नग्ग चिंतामणि डारि के पत्थर जोउ गहें नर मूरख सोई,
सुंदर पाट पटंबर अंबर छोरि के ओढण लेत हैं लोई ।
काम-दुधाघर तें जु विडार कें छैल गहें मति मंद जि कोई,
धर्म्म कूं छोड़ अधर्म्म करे जसराज उणों निज बुद्धि वगोई ॥२॥

मच्छर तो मन को तजीयइ भजीयइ भगवंत अनंत सदाई,
श्री भगवंत कें जाप कियें भव ताप संताप रहइ न कदाई ।
पूजत जो प्रभु के चरणांबुज ताहि सुराधिप मांने वडाई,
जो गुण गाव जसा जगनाथ कें ताहु कि जात मिथ्यात जडाई॥३॥

सिद्ध सोई उपजें न संसार में रिद्ध सोई कहू खात न खूटें,
कंचन सो कसवट्ट चडें फुनि वज्र सोई घन घाउ न फूटें ।
पंडित सोई सभा कूं रिजाउत सूर सोई सनमुखहि जुट्टें,
दांन सोई वहु मांन सुं दिजें ससनेह जसा कबहुं जु न तुट्टें ।४।

धंध सवे सनवंध जसा कुण काको पिया पिय माय सनेहि,
कामनि कामकला विकला सुत बंधु अग्यारथ हे निज देहि ।
मंदिर सुंदर घोष आवास विणास लहें खिण में फुनि एहि,
जो कछु पुन्य करोगे तो साथि न साथहि आवेंगे और सवेहि ।५।

अग्गर अग्गि में जोरे दहावत तौ तो सुगंध सवे विसतारें,
चंदन काटत है जु परस्सु तो ताहि परस्सु वदन सुधारें ।
यंत्र में पीलत ईषन कुं जन कूं उह मिष्ट जसा रस छारें,
सज्जन कूं दुख देत दुरज्जन सज्जन तोहि न दोष विचारें ॥६॥

आज में काज करूंगो सहि यह कालि करूंगो कछूक घटे हे,
यूं न कियो में कियो यह काहे कू राति रच्यो सविचार घटें हें ।
में जूं कियो मेरो होत कियो सब आप जू आपहि माहि कटें हैं,
तू जू करें जसराज वृथा प्रभु को जूं कियो कबहुं न मटें हें ॥७॥

इंधन चंदन काठ करें सुर वृक्ष उपारि धतूरज बोवें,
सोवन थाल भरें रज रेत सुधारस सूं कर पाउहि धोवे ।
हस्ति महामद मस्त मनोहर भार वहाइ कें ताहि विगोवें,
मूढ प्रमाद ग्रह्यो जसराज न धर्म करे नर सो भव खोवें ॥८॥

ईष कहं कहां आक धतूर कपूर कहां कहां लूंण कि खारि,
सूर कहां कहां ज्योति खद्योत निसाउ जू आरि कहां अंधिआरि ।
रिरि कांहां कांहां कंचन हें कहां लोह कहा गज वेलि समारि,
हाथि कहां खर उंट कहां कहां धर्म अधर्म पटंतर भारि ॥९॥

उद्यम थें रिद्धि वृद्धि नवे निद्धि उद्यम थें सब काज सरें हैं,
भोजन भात सजाई मिलें सब उद्यम थें दुख दूरि टरें हैं।
उद्यम थें सुख संपति भोग संयोग मिलें घरि केलि करे हैं,
उद्यमवंत जसा नर सोई निरुद्यम जाणि पसू विचरे हैं ॥१०॥

ऊग्यो दिवाकर दूरि गमे निसि उग्यो निसाकर घाम समे हैं,
पावस होत सु वृष्टि घना घन की ततकाल दुकाल क्रमें हैं।
नीर त्रिखातुर पीर हरें फुनि भूंखण कूं भैया अन्न दमें हैं,
सीत शीतीत अगन ते होत त्युं पुन्य जसा सब पाप गमें हैं ॥११॥

रिद्धि लही अरू दान दीउ नहि तउ कहा रिद्धि लही न लही हैं,
गालि सही अरू काल सह्यउ नही तउ कहां गालि सही न सही हैं।
देह दही अरू नेह दह्यो नही तो कहा देह दही न दही हैं,
प्रीत रही अरू प्रेम रह्यो नही तो कहा प्रीत रही न रही हैं ॥१२॥

रीस कूं मारि विपाक विचारि कें रिस महानल देह कूं बालें,
रीस मे आदर मान लहि नहि रीस पुरातन प्रीत प्रजालें।
रीस थें मात पिता प्रिय वल्लभ सज्जन सयण सम्बन्ध न पालें,
रीस जगा सब लोक कूं गालें जोरावर सो जोउ रिस कूं गालें १३

लिपि लखि विधिना सिर में तन में कछु टालि जसा न टरें हैं,
आरति रौद्र धरें मन में यूं हि देस विदेस वृथा विचरें हैं।
उद्यम साहस बुद्धि पराक्रम कोटक दाय उपाय करें हैं,
जेतो लख्यो सुख दुक्ख फला फल ते तो जहां तहां पान परे हैं१४

लीयो नहि जस वास जगत्त में तो तो जसा कहा आइ कीयउ हैं,
सांगास रूप भयों मृग मावज पेट भर्यउ भूइं भार दिउं हैं।
लोकन मइं पति जाकि नहि अकियारथ ताहु को जनम्म जीयो हैं,
मात को जोवन घात कियो कछू जातन संबल साथि लियो हैं।१५।

एकन कूं गजराज सुखासण एक कूं पाउ न पानहि पाई,
एकण कूं चित्तसाल महल्ल रू एकन कूं मढ़ियां जु वणाई।
एकण कूं घरिणी तरुणी सुख एकन कूं परणी दुखदाई,
एक सुखी दुखीया एक दीसत सर्व जसा निज कृत्य कमाई॥१६॥

ऐ ऐ मोह नरिंद कि राज थानि जग तीन को लोक हरायो,
मोह थें सूरि सज्यंभव पूत कें कारण नैन में नीर वहायो।
मोह थें अंध भइ मरुदेवी जू गौतम केवल ग्यान न पायो,
मोह जसा छल्यो आद्रकुमार कूं सूत के तांतण मांहि बंधायो।१७।

ओट गहि नहि कोट की चोट सहि पै सुभट्ट अहट्टत नांहिं,
धान सनमुख लेतन देत हैं पीठ करैं जस लेत सदांहि।
सत्रु हणों न गणों बल ताहु को प्रांण की हांणि गणों न कहांहि,
सूर को पंथ रु पंथ निग्रंथ को दोनूं बराबर हें जग मांहि॥१८॥

औषध सो करिये जसराज जरा मृत्यु रोग वियोग समावें,
भोजन सो करियें मयमत्त सदा रहिइ कछू और न भावें।
सो मरणो करिइं डरिये नहि क्रूर कृतांत न आवण पावें,
दौलत सो करियें खिरचें नहि रयण अमुलिक गांठि बंधावें॥१९॥

अंन्न खरो धन है जसराज दुरभख अन्न जगत्त आधारें,
अन्न करें उपवास तप जप दिन वुभुत्तत भूख निवारें ।
कीरति अन्न करें त्रय लोक में अन्न गइ अखिआत वधारें,
जहां परग्घल अंन्न तहां हैं अन्न चतुर्गति दुक्खविडारें ॥२०॥

अक्क कटुक्क जगत्त कहावत ताके कह्य गुण पार न आवें,
जो कछू पीर सरीर में होत ताहु परि दिनौ दरद गमावें ।
अंतरसाल रहें नहि जाहु थें सुख संजोग मिलें तनु पावें,
सज्जन ऐसे जसा करियें गुण उगुण उपरि जोर दिखावें ॥२१॥

कूकर पूंछ हलावत पाउन वीची परें तोहि टूक न पावें,
देखि मतंगज मांन न छारत काहु मनाहत चित्त हरावें ।
तोउ न को नव निधि मिलें बहु आदर सूं जतना सूं रहावें,
धीर पणो जग्गराज भलो विण धीरज सो वपरो जू कहावें ॥२२॥

खार तजो मन को अरे मानव खारत देह उधार न होई,
शांति भजो मन भ्रांत तजो कछू होइ गजो तो करो वस्तु लोई ।
जीव की घात की वात निवारि के आप समान गणो सब कोई,
राग न द्वेप धरो मन में जस राज सुगत्ति जो चाहिइं जोई ।२३।

गाज मरद्दकि रद्द गिरद्द की मीति कबे थिरता न रहाई,
औस को नेह रहें कबहुं थल में जल वारि कित्ति ठिहराई ।
तेज कितोक भिसें खजुआ को नदि गीर कि जु सूतो वहि जाई,
देखन ओछह को जसराज पें नीको नेह न ह्वै सुखदाई ॥२४॥

घन घोर घटा करि के वरसि घन चातक बूंद लहैं न लहैं,
दीनानाथ को होत उद्योत दसो दिसि कोसीक तांहि न तेज सहैं।
सरितापति वारि अपार निहारि सछिद्र न कुंभ में नीर रहैं,
सब दायक को लहैं दान जसा किस ही न लह्यो कहा दोस कहैं।२५

निफल नागर वेलमई अरू तूं वनवेलि भई सफली हैं,
सोघन में सुर भाई नहि द्रुम सुरभाई अत्यंत भिलें हैं।
सुंदर सोभत हैं मृग के दृग नारि के हीन न पूगी रली हैं,
नाथ अधन्न किए सुदता जुगति नाहि वात सबे विचली हैं॥२६॥

चोरि करें धन माल हरे न किसी सूं डरें हैं धरे पग खोरें,
मोहन मंत्र लगाई कछु ठग लोक ठगें पुनि गांठरि छोरें।
अंजन चत्तु अदृश्य जहां तहां जाइ के कृत्य करे निज जोरें,
चोर एते न कहावें जसा भैया चोर सोउ मन माल कूं चोरें।२७।

छोरि कपट्ट निपट्ट जू उवट्ट दवट्ट जो तूं सुख चाहैं,
काम मरट्ट विकट्ट पछट्ट कें क्रोध निकट्ट सुघट्ट विराहैं।
लोभ लपट्ट रह्यो क्युं सुमट्ट उगट्ट समकित चित्त उमांहैं,
सुख्ख सरट्ट लहैं सिव थट्ट में नट्ट जसा सब तट्ट अगाहैं।२८।

जिण पांणी के विंद थें पिंड कीउ जीउ आंपण पैं तिण में विचरेहैं,
चख नाक श्रवन्न वदन्न रसन्न रदन्न चरन्न हसत्त थरें हैं।
जसराज सबे मन वंछित पूरत थंभ विना ब्रह्मंड धरें हैं,
जिण एतो कियो सोई चित्त करेंगो रे तु मन काहे कूं चित करे हैं२९

झूरें कहा धन काज अग्यानि रे झुरें कहा धन आई मिलेगो,
जो धन की चित चाहि धरें तो करे न क्यु पुन्य तुरत्त फलेगो ।
सुख को मूल गह्ये सुख पाइए मूल बिना फल केसे तूं लेगो,
पुन्य किया जसराज नवे निद्धि सुख सरोवर मांहि झिलेगो ।३०।

नारि के कारण रावण कूं रघुपत्ति हण्यो गढ लंक लियो हें,
नारि के कारण पांडव सूं पद्मोत्तर राय संग्राम कियो हें ।
नारि के कारण भ्रात हण्यो युगबाहु सनेह बिडार दियो हें,
नारि जसा अनरत्थ को कारण जोउ तजें जग में सुखियो हें ।३१।

टेक न छोरि न छोरी रे नायक टेक थलि प्रभुता पद पावें,
टेक थें रिद्ध नवे निद्धि संपद कीरति लोक जगत्त में गावें ।
प्राण की हांण जो होइ तो होण दें टेक गइ कबहुं फिरि नावें,
टेक को मांणम होइ जसा विणी टेक पसू उपमान कहावें ।।३२।।

ठार के नीर सूं कुंभ भरातन वातन सुं न वरे निपजें हें,
धान बिना नवि जीवत वाल दालिद्र बिना धन सो तो न जे हें ।
चांम चिर्यें विन लोहु दिखांतन दांन बिना सनमांन भजें हें,
सुख की आस धरें मन में जसराज उपाय तो दूरि तजें हें ।३३।

डरीयें नहि भूत पिसाच्च तहें कहा भूत पिसाच्च करें बपरो,
रन व्रंन्न भयंकर मांहि कहा डर चोर मिले तो गहें कपरो ।
समसांण हें राण परि जहां प्रांण जहां डर होइ न कोई खरो,
डरीयें बिणु मांन लह्यें जसराज अकाज मनुष्य करे निखरो।३४।

ढील भली करे ते कछु आरंभ आरंभ छोरत ढील न कीजें,
ढील भलि अपसोण हुवें तव सोण भलें ततकाल चलीजें ।
ढील भलि करीइं जहा वेढि निवारण वेढि न ढील खमीजें,
ढील भलि जसराज पटंतर दीजें जो दान तुरंत सो दीजें ॥३५॥

नीर अथाह तरें रजनि सर छिलर मांहि तो बूडि मरें हें,
सावज कान धरें जसराज सीयालन को सुणि साद डरें हें ।
फूल की माल हणि हवे अचेत न सांकल घाड निसंक धरें हें,
डूंगर टूंक चडे जु पडे भुइ नारि अनेक चरित्र करें हें ॥३६॥

तोलूं महामति मंत मनोहर तोलूं भलें गुण ताहु के लागें,
तोलूं कुलीन सुशास्त्र विसारद सज्जन कीरति बोलत रागें ।
तोलूं कहें यह उत्तम वंस को सुर भले इणीक भए आगें,
तोलूं जसा तजि मांन महातम जात कछू किणी आगें न मांगे ३७

थोक इते जसराज कलयुग मांहि गए धन हांणि सई हें,
ग्यान विग्यान सुदांन की हांणि सुमत्ति उकत्ति सुरत्ति गई हें ।
सुख की सीर में भीर परि अरू धीर पुरष्प कूं पीर दई हें,
धम्मं अधम्मं विचार गयो सब सृष्टि रची विधि मानू नई हें ।३८

देह तो व्याधि को गेह कह्यो मलमूत्र अपावन द्वार झरें हें,
हाड रू मांस भरी चमरी सूं मढी मढीया जैसें नीर गरे हें ।
काच को भाजन भाजत हें छिन में तसें देहविभाज परें हें,
देह तो खेह में जाइ मिलेगी जसा कहा देह को नेह करें हें ३९

धन्न जगत्त में सो जसराज संपत्ति विपत्ति में सत्त धरें हें,
आपकी कीरति आप करें नहीं प्रीति के वेण सदा उचरे हें।
दीन दुखि जन को हित वच्छल सज्जन सूं उपगार करे हें,
गर्व करें नहि पाइ विभूति विभूति सुं पुण्य भंडार भरें हें।४०।

नैकु विचारि कहु मेरे प्राणी ममत्त विपत्ति को कारण हेरे,
खुचि रहे हे ममत्त कुमत्ति में सो तो अनेक उदेस सहें रे।
देस विदेस फेरे मम नाज कर्‌यो सुख मांन रिति न लहें रे,
एह ममत्त कुमत्ति देखावत्त भत्ति तजो जसरास कहें रे ॥४१॥

पंडित नांम धरावें अनेक पे पंडित सोई सभाकू रीझावें,
दान के देवणहार अनेक पें दाइक सोउ जगत्त जिवावें।
दत्त विचत्तण हे जू अनेक पें दत्त सोई परतत्त हसावें,
सुर अनेक कहावें जसा फुनि सुर सोई अमरापुरि पावें ॥४२॥

फोज विचें रण तूर नगारे घुरे केइ सुर संग्राम करें हें,
केइ प्रचंड महा भुजदंड मृगाधिप खंड विहंड करें हें।
केइ महामद मस्त पटाजर ताहि सनमुख जाइ अरे हें,
दर्प्प कंदर्प्प विदारक अल्प तिसी के पगें जसराज परे हें।४३।

बूंब परें तब उत्तम मध्यम कायर सूर सबे मिल धावें,
आम प्रयोग होवें तब लोक सबे मिलि आइ के लाय बुझावें।
जीमणवार निहार सबे नर नारि विचारी उछाह सूं आवें,
दिन वसुत्ति घोरे कहें जसराज तबे ढिग कोन रहावें ॥४४॥

भूख कुलीन करें अकुली नह भूख घरा घर भीख मंगावें,
नीच की चाकरि भूख करावें रू निम्मल वंस कूं मैल लगावें।
भूख भमावे विदेस विपत्त में दीन दुखी मसकीन कहावें,
भूख समो नहि दुख जसा कोइ पापनि भूख अभक्ख भखावें ४५

मेह के कारण मोर लवें फुनि मोर कि वेदन मेह न जांणें,
दीपक देखि पतंग जरें अंग सोक वहु दुख चित्त में नांणें।
मीन मरें जल के जू विछोहन मोह वरेन न प्रेम पीछांणें,
पीर दुखी की सुखी कहा जाणे रे सेण सुणो जसराज वखांणें ४६

याग रच्यो बलराय छलन कूं वांमन रूप द्विजन्म ह्वे आयो,
तिन्न चरन्न रहन्न कूं नैकु धरा मोहि देहुइ तेहु अघायो।
पावक तो गुरुद्धज दान महीवल दायक राय कहायो,
वेकुंठ दांन सुपात्र थें पावें जसा वल सो तो पताल पठायो ४७

राज्य तज्यो हरिचंद नरेसर सत्यव्रती निज सत्य रहायो,
सत्य के कारण सीत सती सच्य पावक पैठि कै अंग नवायो।
सत्य के कारण श्री रघुराय भज्यो वनवास अवास पठायो,
सत्य तजो मत वीर विचक्षण सत्य जसा तिहां चित्त वसायो ४८

लूंण गलें जल संगत तें जल सीतल पावक थे प्रजलें हें,
धन्य जयारि भिखारी को मांन प्रवास की नारि को सील चलें हें।
आलस विज्ज पमायें सें दान संदेस्यें उलग्ग कछू न फलें हें,
हाथ परायें करमण त्युं गुण उत्तम गर्व किये जु गलें हें ॥४६॥

वांझणी नारि लह्यो सपनो मन मांहि जाणइं मेरे पूत भयो हें,
गावत मंगल गीत महा धुनि नांम भलो विप्र देखि दयो हें ।
आस फलि डर की गुरु कि वहु पूज करी सुख मान लियो हें,
युं करतां जसराज जगी सुख डार निसास उलास गयो हें ५०

शंकर तो वृख वैठि निरंतर भीख पिया संगी मांगि जीमें हें,
ब्रह्म करें हें कुलाल को कांम दिनेसर तो दिन राति भमें हें ।
विष्णु जगत्त के नाथ सू तो अवतार में संकट पीर खमें हें,
कर्म थें कोई न छूटो जसा बलवंत करम्म न कोई क्रमें हें ॥५१॥

खूंचि रह्यो कह्या कीच में नीच तुमी चतो तेरे समीप रहें हें,
जा घर में थिर वास भुयंगम सो तो अचानक मृत्यु लहें हें ।
सोचि जसा तेरो आय घटे सरिता जल ज्यों दिन राति वहें हें,
धर्म्म सुधाफल छोरी के काहें कूं सुख्य किंपाक संराचि रहें हें ५२

सीख भली गुरु की मानु ईष समान गुमान निवार गहें जो,
दीपक ग्यान हीयें प्रगटें अग्यान पतंग को अंग दहें जो ।
सम्यग धर्म अधर्म्म लखें न चखें जु मिथ्यात न घात लहें जो,
सिद्ध को राज लहें जसराज सदा गुर कि सिर आंण वहें जो ।५३।

हंस रू काग रहे तरु ऊपर दोड़ परस्परें चित्त मिलायो,
कोई समें एक भूपति खेलत छांह निहार जसा तिहां आयो ।
काग कुया तकें विठ भई नृप तांण कवांण सें वांण चलायो,
काग गयो रह्यो हंस सुवंश को नीच की संगत मृत जूं पायो ५४

लंक महागढ वंक त्रिकूट समुद्र की खाय बनाय लही हे ,
रावण राज की जोर आवास विणस्सण काल कुबुद्धि भइ हें ।
सीत हरी हरी फोज करी हण्यो रावण कूं कहा बुद्धि गइ हें,
राज गरीब नवाज वडे जसराज विभीपण लंक दई हें ॥५५॥
चोर सूं सीस मुंडावत हें केई लंब जटा सीर केई रहावे,
लूंचन हाथ सूं केई करे केई अंग पंचागिनी माहें धूखावें ।
राख सूं केइ लपेट रहें केई मोन दिगंबर केइ कहावें,
कष्ट करें जसराज बहुत्त पें ज्ञान विना सीव पंथ न पावें ॥५६॥
संवत सर अठतिस में मास फागुण में
बहुल सातिम दिनवार गुरु पाए हें,
वाचक शांतिहरख ताहू के प्रथम शीख
भलके अच्चर परि कवित्त बनाए हें ।
अवसर के विचार बैठि कै सभा मझार,
कह्यो नर नारी के मन में सु आए हें ।
कहे जिनहर्ष प्रताप प्रभुजी के भइ,
पूरन बावन्नि गुणीयन कूं रीझाए हें ॥५७॥

॥ इति श्री मातृका-बावनी ॥

दोहा बावनी

ओम् अक्षर सार है ऐसा अवर न कोय ;
 शिव सरूप भगवान शिव सिरसा वंदू सोय ॥१॥

नमियै देव जगद्गुरु नमियै सद्गुरु पाय ।
 दया जुगत नमियै धरम शिवगत लहै उपाय ॥२॥

मन तें ममता दूर कर समता धर चित मांहि ।
 रमता राम पिछाण कै, शिवपुर लहै क्युं नाहिं ॥३॥

शिव मंदिर की चाह धर अथिर मंदिर तज दूर ।
 लपट रह्यौ कहा कीच में अशुचि जिहां भरपूर ॥४॥

धंधा ही में पच रह्यौ आरंभ किउ अपार ।
 ऊठ चलेगो एकलौ सिर पर रहेगौ भार ॥५॥

अन्यायोपार्जित अदत्त धन बहुत रीत फल सोय ।
 दान स्वल्प फुनि फल बहुत न्यायोपार्जित होय ॥६॥

आतम पर हित आपकुं क्या पर को उपदेश ।
 निज आतम समझ्यौ नहीं कीनौ बहुत कलेश ॥७॥

इतना ही में समझ तुं बहुत पढ़े क्या ग्रंथ ।
 उपशम विवेक संवर लह्यौ यातें शिवपुर पंथ ॥८॥

ईति भीति यातें रही प्रगट भई शुभ रीति ।
नीत मार्ग पैदा किउ सो गाउ ताके गीत ॥६॥

उदय भयें रवि के जसा जायें सकल अंधार ।
त्युं सद्गुरु के वचन तें मिटे मिथ्यात अपार ॥१०॥

ऊगत बीज सुखेत में जसा सकल संजोग ।
त्युं सद्गुरु के वचन तें उपजत बोध प्रयोग ॥११॥

एक टेक धर के जसा निगुंण निर्मम देव ।
दोप रोप जामैं नहीं करहुं ताकी सेव ॥१२॥

ए विषम गति कर्म की लखी न काहू जाय ।
रंकन तें राजा करै राजा रंक दिखाय ॥१३॥

ओस बिन्दु कुश अग्र तें परत न लागै वार ।
आयु अथिर तैसें जसा कर कछु धर्म विचार ॥१४॥

औषध न मिले मीच कुं यातें मरै न कोय ।
कर औषध जिन धर्म कौ जसा अमर तुं होय ॥१५

अंध पंगु जो एक ह्वै जरै न पावक मांहि ।
त्युं ज्ञान सहित क्रिया करै जसा अमरपुर जाहि ॥१६॥

अमर जगत में को नहीं मरे असुर सुरराज ।
गढ़ मढ मंदिर ढह पड़ै अमर सुजस जसराज ॥१७॥

कंचन तैं पीतर भए मूरख मूढ गमार ।
तजै धर्म मिथ्यामति भजै धरम अपार ॥१८॥

खल संगत तजियै जसा विद्या सोभत तोय ।
पन्नग मणि संयुक्त तैं क्युं न भयंकर होय ॥१६॥

गाज शरद की कारमी करत बहुत आवाज ।
तनक न बरसै दीन त्युं कृपण न दै जसराज ॥२०॥

घरटी के दो पड़ बिचै कण चूरण ज्युं होय ।
त्युं दो नारी बिच पड़्यौ सो नर उगरै नहीं कोय ॥२१॥

नहीं ज्ञान जामैं जसा नाहिं विवेक विचार ।
ताकौ संग न कीजियै परहरियै निरधार ॥२२॥

चपला कमला जान कै कछु खरचौ कछु खाउ ।
इक दिन भोंइ सोवौ जसा लंबा करकै पाउ ॥२३॥

छल कर बल कर बुद्धि कर कर के जसा उपाय ।
आतम बराबर आपणौ दुरिजन दूर नसाय ॥२४॥

जुवती सब जुग वश कियौ किसी न राखी माम ।
जो यातैं न्यारौ रहै ताकुं जसा प्रणाम ॥२५॥

झाझी बात न कीजिये थोरा ही में आण ।
जसा बराबर लेखवो सो आप प्राण पर प्राण ॥२६॥

नग दुहिता पति आभरण ताको अरि जसराज ।
तस पति नारी विण पुरस न बधे शोभा लाज ॥२७॥

टाणा टूणा छोर दै याते न सरै काज ।
चोखै चित जिन धर्म कर काज सरै जसराज ॥२८॥

ठग सो जो परमन ठगै पर उपजावै रीझ ।
जसा करै वश जगत कौ साचा ठग सोईज ॥२९॥

करै कहा जसराज कहै जो अपनै मन साच ।
खिण में परगट होयगा ज्युं प्रगटाये काच ॥३०॥

ढाहे कोट अज्ञान का गोला ज्ञान लगाय ।
मोहराय कुं मार लै जसा लगै सब पाय ॥३१॥

नदी नखी नारी तथा नागणि खग जसराज ।
नाई नरपति निगुण नर आठै करै अकाज ॥३२॥

तारै ज्युं नर कुं जसा भवसागर में पोत ।
त्युं तारे गुरु भव निधि करै ज्ञान उद्योत ॥३३॥

थोभ लोभ नहिं जीव कुं लाख कोड़ धन होत ।
समता ज्युं आवै जसा सुख सदा मन पोत ॥३४॥

दच्छिण उत्तर च्यार दिश जसा भमै धन काज ।
प्रापति विना न पाइयैं करौ कोड़ि अकाज ॥३५॥

धन पाया खाया नहीं दीया भी कुछ नांहिं ।
सोवां गुल होवें जसा ढुंढत है धन मांहिं ॥३६॥

निगुण पूत नारी निलज कूप हि खारौ नीर ।
निघर मित्र जसराज कहै चारु दहै शरीर ॥३७॥

पर उपगारी जगत में अलप पुरुष जसराज ।
शीतल वचन दया मया जाके मुख पर लाज ॥३८॥

फौज दिशौ दिश में लगी जसा धुरे नीसाण ।
झूझै सन्मुख जायकें सूर गयो नहीं प्राण ॥३६॥
बूंब परै सब दोरहै ले ले आयुध हाथ ।
वदन मलीन करै जसा जाचै कोई अनाथ ॥४०॥
भगत भली भगवंत की संगत भली सुसाध ।
औरन की संगत जसा आठुं पहर उपाध ॥४१॥
मूरख मरण न देखियत करत बहुत आरंभ ।
सात विसन सेवै सदा करै धर्म विच दंभ ॥४२॥
याग करै प्राणी हणै भाखै धर्म उलंठ ।
देखो ज्ञान विचार के क्युं पावै वैकुंठ ॥४३॥
रीस त्याग वैराग धर हो योगी अवधूत ।
शिव नगरी पावै जसा कर ऐसी करतूत ॥४४॥
लहणा दैणा कुछ नहीं मुंह की मीठी वात ।
रिदय कपट धरै जसा ताकै सिर पर लात ॥४५॥
वरसै वारांधि अहो निशि खाखर तीतौ पान ।
भाग्य बिना पावै नहीं जाचक दाता दान ॥४६॥
संख सरीखा ऊजला नर फूटरा फरक् ।
जसा न सोभै ज्ञान बिन ज्युं बुंटी काम धरक् ॥४७॥
खरौ पंथ है सूर कौ रण विच मुंड विहंड ।
पाछा पाव धरै नहीं जो होवै सतखंड ॥४८॥

सायर मोती नीपजै हीरा हीरा खाण ।
ज्ञान ध्यान तिहां नीपजै जिहां सदगुरु की वांण ॥४६॥

हस्त हि मंडन दान है घर मंडन वर नार ।
कुल मंडन अंगन जसा मानव मंडन सार ॥५०॥

लंछन निशिपति शान्तरुचि सूरज लंछन ताप ।
दाता लंछन धन बिना सबहु दिया सराप ॥५१॥

खान्त दान्त समता रता हणो नहीं षट्काय ।
जसा ज्ञान क्रिया मगन सो साधु कहवाय ॥५२॥

सतरै सै त्रीसै समै नवमी सुकल आषाढ ।
दोधक बावन्नी जसा पूरन करी कृत गाढ ॥५३॥

॥ इति दोधक बावन्नी सम्पूर्णम् ॥

[लिखित । वच्छराज श्री इन्दोर मध्ये लिपिकृत स्व हस्तेन]

उपदेश—छत्तीसी

अथ जिन स्तुति कथन सवइया ३१

सकल सरूप जामैं प्रभूता अनूप भूप,
धूप छाया माया है न अैन जगदीस जू ।
पुन्य है न पाप है न सीत है न ताप है न,
जाप कै प्रताप कटै करम अनीस जूं ।
ज्ञान को अंगज पुंज सुख वृत्त को निकुंज,
अतिसै चोतीस फुनि वचन पैंतीस जू
अैसो जिनराज जिनहरख प्रणमि उप—
देश कीं छतीसी कहुं सवइयै छतीस जूं ॥१॥

अथ अथिर कथन सवइया ३१

अरे जीव काची नींव ताहू परि अमारति,
तैं तो अति गति करि जोर सी उठानी है ।
तूं तो नही चेतता है जांनता है रहगी दिढ,
मेरी मेरी कर रह्यौ यामैं रति मांनी है ।
ग्यांन की निजरि खोलि देखि न कछू है तेरा,
मोह दारू में छकानो भयो अग्यनांनी है ।

कहै जिनहरख न ढहत लगैगी वार,
कागद की गुडी कोलु रहै जहां पानी है ॥२॥

अथ काया स्वरूप कथन सवइया ३१

काहै काया रूप देखि गरव करै है मूंढ,
छिन मै विगर जाय ठांम है असार की।
पट्खंड जाकी आंण भांण सोम न्रन तेज,
चक्रवर्त्ति की समृद्धि भी अपार की।
वात इंद्रलोक मांहि औसो कहू रूप नांहि,
देव तहां आए जात करण दीदार की।
कहै जिनहरख विगर गई पलक मै,
ग्रैसी खूब काया होती सनत कुमार की ॥३॥

पुनः काया स्वरूप कथन सवइया ३१

काया है असुची ठांम रेत की मढी है तांम,
चांम सौं गही है भया वंधी नसां जाल सूं।
ठोर ठोर लोहुं कुंड केसन के ब्रधे झुंड,
हाडन सुं भरी भरी बहुत जंजाल सूं।
श्लेखमा कौ गेह मलमूंत सूं बंधी है देह,
निकसे असुभ नवद्वार परनाल सूं।
अैसी देह याही कै सनेह तूं तो भयो अंध,
कहै जिनहरख पचै है दुख झाल सूं ॥४॥

अथ लोभ स्वरूप कथन सवइया ३१

माया जोरिवै कु जीव तलफत है अतीव,
देस तजि जाय परदेस परखंड जूं ।
जंगली जिहाज बैठौ जल निधि मांहि पैसे,
लोभ को मरोर्यौ गाहै गिर पर चंम जू ।
भूख सहै प्यास सहै दुर्ज्जन की त्रास सहइ,
तात मात भ्रात छोरि ह्वै खंड खंड जू ।
असो लोभी लोभ कै लियै तै दुख सहै कोरि,
कहै जिनहरख न जांणै है त्रिभड जू ॥५॥

अथ क्रोध कथन सवइया ३१

क्रोध छोरि मेरे प्राणी कुगति की सहिनाणी,
इहै वीतराग वांणी सुणि सुणि लीजियै ।
क्रोध तैं सनेह छूटै सैण प्रेम तै अछूटै,
क्रोध तै सुजस नांहि अधम गिणीजीयै ।
खंदक सरीस कह्यौ क्रोधन तै देस दह्यौ,
तप सब हारि र्‍यो वेद में सुणीजीयै ।
द्वारिका को कीनो दाह दीपायन क्रोध ठाह,
असो क्रोध कहै जिनहरख न कीजियै ॥६॥

अथ मान दूषण कथन सवइया ३१

अधम न करि मांन मांन कीयै ह्वै है हांन,
मांन मेरी सीख मांन सुख ग्राही मान रे ।
मांनतें रावण राज लंका सूं गयो वेकाज,
कियो है अकाज लाज गई सब जाण रे ।
दुर्योधन मान करि हारी सब धर अरि,
मांन तै गयो है मुंज चातुरी की खांणि रे ।
कहै जिनहरख न मांन आंण मन मैं,
आंणइ तो दसारणभद्र जैसो मांन आंण रे ॥७॥

अथ माया दूषण कथन सवइया ३१

माया काहे करै मूढ छोर दे माया की रूढ,
माया भली नांहि जांणि तोनूं है विचारी जू ।
नासिजै है मित्राचार प्रीत मै वढै विकार,
सजन की सजनाई छूटै तूटै मांरी जू ।
माया हुंतै टूंट सूंट ह्वै खर वृखम उंट,
मलिनाथ माया साथ भयो वेद नारी जू ।
माया दुरगति ठौर छौरि कहा करूं और,
कहै जिनहरख ज्यूं ह्वै है अविकारी जू ॥८॥

अथ लोभ दूषण कथन सवइया ३१

माया काहे कुं बढावइ काहू कै न साथि आवै,
आई न आवैगी देख चित्त में विचार कै ।
माया कटावै सीस लार वहै निस दीस,
भूप गहै दहै आगि चोर ल्यहइ मारि कै ।
सुपन लह्यो ज्युं राति कारमी ह्वै वात जान,
तैसै माया क्युं न देखै आंखिन उघारि कै ।
कहै जिनहरख हरख धरि करतूत,
मेरे यार नंदराय कुं ल्दौ संभारि कै ॥६॥

अथ संसार असार स्वरूप कथन सवइया ३१

यौ तौ है संसार सविकार कछु सार नही,
दीसता है मेरे यार छार ज्युं असार ज्यूं ।
काहै लपटाय रहै काहें कुं तुं दुख सहै,
काहै भ्रंम भूलो भ्रम भूला है अपारी जू ।
जासु तूं कहत सुख सो तो दुख रूप आही,
माखी जैसे रही लाग मिठाई मझार जू ।
काहै जिनहरख न उडि सकै थकै परी,
तकै चिहुं ओर असो जांणिलै संसार जूं ॥१०॥

अथ प्राणातिपात कथन सवइया ३१

जीव कूं जो मारै नर पातिक कौ सौउ धर,
पर भव कौ न डरै महा जम राण जू।
तनक भी दया नावै सुचि कवहु न पावै,
डांण वाहै ऐसै ज्युं कपोत कुं सींचाण ज्युं।
खायै तो उपर मंस तामै नही धर्म अंस,
वंसन को जारिवै कुं पावक प्रमाण जू।
दुरगति वास वाकूं सुगति न ठाम ताकूं,
दुख सहै कहै जिनहरख सुजाण जू ॥११॥

अथ मृषावाद कथन सवइया ३१

प्राणी मेरे कर जोर तोसूं मैं करूं निहोर,
मृखावाद छोरि छोरि कोउ न सवाद रे।
वचन सकै न वोल निपट निटोल-
कीरति जै है अमोल अंग उदमाद रे।
वदन की गंध दुरगंध सहीजै न वंध,
अंध कंध धंध ही मैं मति छवि छाद रे।
कहै जिनहरख न सांन सनमांन
अग्यान वढै है जाथे ऐसो मृषावाद रे ॥१२॥

अथ अदत्तादान कथन सवइया ३१

लहै जो अदत्ता ममता मै रत्ता मत्ता रहै,
तत्ता फिरै लोह ज्युं दुचिता नांहि चैन ज्युं।

कहुं न वेसास ताहि आस पास धन नास,
हास करै डरै सब कोई वाके सैन ज्युं ।
चोर सो कहावै भावै कुल कलंक लावै,
चावै अपजस पावै पाप भरै नैन जू ।
कोउ न प्रतीत धरइ पातिक सुं जाइ अरै,
कहै जिनहरख श्रवण सुंणि वैन जू ॥१३॥

अथ मैथुन कथन सवइया ३१

कांमनी सूं रुचि भोग हिलि मिलि कै संयोग,
मानै सुख सब लोक नांम लेवै ताक जू ।
तासूं लागि रहै मता बंध है करम सत्ता,
परभव दुख मानूं फल है विपाक जू ।
आप सुं कहु न बूझै करम जाल में अरूझै,
विषयन में असूझै सूझै न वेपाक जू ।
कहै जिनहरख न कांम तै वदै है मांन,
व्रत भंग कीधइ परै ठोर ठोर धाक जू ॥१४॥

अथ परिग्रह कथन सवइया ३१

परिग्रह छोरि देहु सुगुरू की सीख लेहु,
बंध मै परै है काहे रहै निरबंध रे ।
परिग्रह भीर पर्यो लोह जंजीरन जर्यो,
निकसि सकै न अर्यो तूं तो भयो अंध रे ।

यौ तो है कठिन अंग तिछन जैसो निषंग,
अंग अंग सालि संग दुकृत कौ खंध रे ।
तूं तो परिग्रह छोरि रहै तो अखंड तेरे,
कह जिनहरख समझि सब बंध रे ॥१५॥

अथ रात्रिभोजन वर्जित कथन सवइया ३१

रैण चोर वहै वाट सब रोकि रहै घाट,
रैण पशू अन्न गल बंध न बंधाइयै ।
पितर न झेलै पिंड कालिमा अखंड दंड,
दान सील तप भाव धर्म न पाईयै ।
मृतक न जारीयत भुंइ मै न गारीयत,
सतीय न काठ गहै पूजा न रचाईयै ।
अन मांस सम वरि लोहूं जल एक एक,
रैण जिनहरख भोजन कैसे खाईयइ ॥१६॥

अथ दान महिमा कथन सवइया ३१

देहु दांन सीख मांन दांन तें अचल थांन,
राव रांणा द्यै है दांन ग्यानी दांन देहु रे ।
सवा भार कंचन करण दीधो लीधो जस,
दांन तै विक्रम भयौ सुजस को गेह रे ।
भोज मुंज विद्या पुंज दांन तै भए अगंज,
बलिराउ आगै हरि धरा दांन लेह रे ।

गोरोचन तन तै छुडाय दीयो विप्र सुत,
दांन तै वढै है जिनहरख सनेह रे ॥१७॥

अथ सील महिमा कथन सवइया ३१

वेढ को करईया महाजन को मरईया उप-
शम को हरईया क्रोध भर्यो ही रहतु है।
तप को गमईया जांणै खांण को समईया नही,
भौर ज्यु भमईया श्रम खेध मै सहैतु है।
तुष्ट को दमइया रंग रास को रमईया सब,
नागर न मैया भया स्वईच्छा मै वहैतु है।
ऐसो दुराचारी मारी नारद लह है मोख,
सील तै सलिल जिनहरख कहतु है ॥१८॥

तप कथन सवइया ३१

सु दिढपहारी चोर महापातिकी अघोर,
च्यार हत्या कीनी जोर साहुकार नंद जू।
अर्जुन मालागार मोगर हथ्यार ग्रहि,
षट नर नारि एक करति निकंद जू।
ऐसौ महापापी दोउं तप तें तरे है सोउ,
सेवै सुरनर हरकेसी कुं आणंद जूं।
विसनकुमर जिनहरख जोयण लाख,
रूप कियौ तपहुं तै चाढ्यौ नाम चंद जूं ।१६।

अथ भाव महिमा कथन सवइया ३१

प्रसनचंद मुनीस संयम गहि जगीस,
केवली भयो है सब करम खपाइकै ।
इलापुत्र वंस परि खेलै है हरख धरि,
केवल लह्यौ सु परि ग्यांन मन लाइ कै ।
कूरगडू अणगार केवली कपिल सार,
खंदक सुसीस अइसुकमाल भाइ कै ।
ददुर भयो देवेस दुरगता सरग लह्यो,
भाव जिनहरख अचल होत जाइ कै ॥२०॥

अथ अल्प आयु कथन सवइया ३१

तेरी है अल्प आयु तूं तो खेलता है डाव,
जांणै है जीवन मेरो कबहुं न तूटैगो ।
यौ तो है नदी का पूर दिन दिन घटै नूर,
करत अकाज नहीं लाज कैसै छुटैगो ।
कंठगति प्रांण तेरै ह्वैगे बल प्राण घेरे,
आइ जमरांण जब तोकूं गहि कूटैगो ।
कहै जिनहरख न कोउ तेरो रखवाल,
देखत ही काल ठाल काया कोट लूटैगो ।२१।

अथ शिक्षा कथन सवइया ३१

जागि रे अग्यानी जागि काहे कूं माया सूं लागि,
रह्यौ है जलत आगि मांहि कांहि दाभै है ।

करि कै कपट कोट खेल कै अतारी चोट,
धन मेलवे कूं दोर दे कै कांम साझै है ।
जांणै है मै जोरवर मोहुं सुं न कोउ नर,
धन कौ कमाउ वर पिंड प्राण जाझै है ।
काहुं कुं कठोर पाप करि कै वंधावै आप,
आपणी ही वुद्ध आपलूत जैसे बाझै है ॥२२॥

अथ एकत्व भावना कथन सवइया ३१

काके कहौ घोरे हाथी काहू के सबल साथी,
काकौ माल धरा भया देस गढ़ कोट रे ।
काहू के हिरण्य हेम काकी मृगनैणी पेम,
तात मात भ्रात काके काके धोट जोट रे ।
काके छूने धवलहर मंदिर महिल काके,
काहू के भंडार भरे एते सब खोट रे ।
कहै जिनहरख काहू के न का कौ तुं ही,
ताथै मन चेत चेत आओ धरम ओट रे ॥२३॥

अथ धर्म प्रीति कथन सवइया ३१

जैसी तेरी मति गति रहत एकाग्रचित,
राति धौस दौरि दौरि हौस सु कुं मावै है ।
रूप की धरणहार अपछर अणुंहार,
अैसी नारि देखि देखि जैसै मन ल्यावै है ।

पिंडहू तै प्यारे पूत को रहावै सूत,
निरखि निरखि जाको दरस सुहावै है ।
जिनवर धर्म जो ऐसी प्रीति धरै जिन-
हरख तुरत परम गति कुं पावै है ॥२४॥

अथ आयु स्वरूप कथन सवइया ३१

जैसै अंजुरी कौ नीर कोउ गहै नर धीर,
छिन छिन जाइ वीर राख्यौ न रहात है ।
तैसैं घटि जै है आउ कोटिक करो उपाउ,
थिर रहै नही सही वातन की बात है ।
ऐसैं जीव जांणि कै सुकृत करि धरि मन,
समता मै रमता रहै तो नीकी घात है।
अथिर देही सुं उपगार यौ हो सार जिन-
हरख सुथिर जस भौन मै लहातु है ॥२५॥

अथ वीतराग स्वरूप कथन सवइया ३१

जोउ जोग ध्यांन धरै काहू की न आस करै,
अरज सबद जरै लागै है न दाग जू ।
मन ममता न माया कारमी गिणै है काया,
रहै ग्यानामृत धाया अजब सो ताग जू ।
छोर्‌यौ है संसार पास जाई रहै वनवास,
रहत सदा उदास अजब सोभाग जू ।

सरल तरल मन राग दोष कौ न घन,
जिनहरख कहै वीतराग जू (१) ॥२६॥

अथ शुद्ध गुरू कथन सवइया ३१

गैर उपदेश हरैं आगम उपदेश धरै,
विरुद्ध करै न भव जल निधि पाज है।
पुन्य पाप दोनूं कहै धरम को भेद लहै,
परिसह सब सहै कारो धन सु काज है।
कृत्य अरू अकृत्य स्वरूप सब उपदिसै,
ग्यान दरसण विध चरण समाज है।
सुगति कुगति जिनहरख कहत पंथ,
जुगवासी तारवै कुं सुगुरु जिहाज हई ॥२७॥

अथ महा रूढ कथन सवइया ३१

अरे हो अग्यानी अभिमानी गुरु वांणी सुण,
तू तो भव भ्रम करत नही लाज है।
केइ काल भये तोकूं जाणे न तो बूझि मोकूं,
श्रवण सिद्धांत सुणि कर्म दल भाज है।
जागि ह्वै सचेत चित समता समेत गहो
लहो भेद आइ जमरांण नित खाज है।
असै वैण कहै गुरू तोउ ते न धरै उर,
पांणी मै पाखण जैसै किधूं सरद गाजै है।२८।

अथ गुरु हितोपदेश कथन सवइया ३१

चौगति को फेर ऐसो पात ज्युं वब्युला कैसो,
कंदुक चौगांन वीच दुख त्यौं सहीजीये ।
लहै न विश्राम जीउ जहां तहां करै रीउ,
खेध मै पर्यो ही रहै सदैव कहा कीजियै ।
भ्रमत भए उदासी धर्म की जो लेत भासी,
तोरि कै संसार फासी धर्म ओट लीजीयै ।
धर्म तइं न कर्म लागें भव के भ्रमण भागै,
वोध वीज जागै जिनहरख कहीजीयै ॥२९॥

अथ स्वभाव मिलन कथन सवइया ३१

जैसै घनघोर जोर आय मिलै चिहुं ओर,
पवन को फोर घटत न लागै वार जू ।
सिरता को वेग जैसै नीर तै वढै है तैसैं,
छिन में उतरि जाइ सुगम अपार जू ।
तैसैं माय मिलै आय उधम कीयै विनाय,
सुकृत घटै है तव जैहैं कहूं लारजू ।
ऐसो है तमासो जिनहरख वन (?)
धन दोउं मिलै आइ जोईयो विचारजू ॥३०॥

अथ पाप फल कथन सवइया ३१

पाप तै वढै है कर्म कर्म तइ वढै है भर्म,
दोनुं भया पातिक के वीजरे (?) ।

ऐसौ बीज जोउ बावै सुकृत कमाई खोवै,
ऐसै ताके फल होवै वचन पतीज रे ।
अधम लहै है जाति भटकत द्यौस राति,
प्रीतम वियोग जोग खल देख्यां खीजरे ।
दरिद वढै है गेह अपजस को न छेह,
कूर जिनहरख कहूं तौ करि धीज रे ॥३१॥

अथ नवकार महिमा कथन सवइया ३१

सुख को करणहार दुख को हरणहार,
मुगति कौ देणहार भव्य उर हार जू ।
भय कौ भंजणहार अरि कौ गंजणहार,
मन कौ रंजणहार नित अविकार जू ।
यौंही नीको मंगलीक समरण निरभीक,
महामंत्र तहतीक महिमा अपार जू ।
चवद पूरव सार जीव कौ परम आधार,
जिनहरख समर नित प्रति नवकार जू ॥३२॥

अथ पुन नवकार महिमा कथन सवइया ३१

याकै समरण भयो नाग फीट धरणिंद,
इंद पद लह्यौ सब जाणत संसार जू ।
संबल कंबल बैल तजि निज मन मैल
लही सुरगति सैल लह्यौ भव पार जू ।

अहि फीट फूलन की माल मइ दई फेर,
श्रीमयमती महासती कुल उजवार जू ।
सोवन पुरस सिवकुमार सिद्ध भयो,
ऐसो जिनहरख सु मंत्र नवकार जू ॥२३॥

अथ जीव परिग्रह लोलप कथन सवइया ३१

सदन मै अदन मिलै न कहुं नैकुवार,
पेट पीठ एक कीनी भूख न पछारी कै ।
वैर किधू वैरणी रिणी अनंत अंतक से,
पूत अवधूत करै तातन कुमारि कै ।
बहुत फिरै हैं नाग नकुल खेलैं है फाग,
गेह मांडी चूटे घूसि छछुंदर मारि कै ।
ऐसो परिग्रह जिनहरख न छोरै तोउ
जीव की कठिनताई देखौ धू विचारि कै ।३४।

अथ धर्म परीक्षा कथन सवइया ३१

धरम धरम कहै मरम न कोउ लहै,
भरम मै भूलि रहै कुल रूढ कीजीयै ।
कुल रूढ छोरि कै भरम फंद तोरि कै,
सुगति मोरि कै सुग्यान दृष्टि दीजीयै ।
दया रूप सोइ धर्म तइ कटै है कर्म,
भेद जिन धरम पीउप रस पीजीयै ।

करि कै परिख्या जिनहरख धर्म कीजै,
कसिकै कसौटी जैसै कंचन कूं लीजियै ॥३५॥

अथ ग्रंथ समाप्त कथन सवइया ३१

भई उपदेश की छत्तीसी परि पूर्ण
चतुर ह्वै जे याको मध्य रस पीजीयै ।
मेरी है अलपमति तौ भी मैं कीयौ कवित्त,
कविताह सौ हौ जिन ग्रंथ मांन लीजियै ।
सरस ह्वै है बखाण जोड अवसर जांण,
दोइ तीन याके भया सवइया कहीजीयै ।
कहै जिनहरख संवत गुण ससि परण्य,
कीनी है जु सुणत स्याबास मोकूं दीजियै ।३६।

॥ इति श्री उपदेश छत्तीसी ॥

—०—

दोधक-छत्तीसी

जिण दिन सज्जण वीछड्या, चाल्या सीख करेह ।
नयणे पावस ऊलस्यौ, झिरमिर नीर झरेह ॥१॥

सज्जण चल्या विदेसड़ै, ऊभा मेल्हि निरास ।
हियड़ा मैं ते दिन थकी, मावै नाहीं सास ॥२॥

जीव थकी वाल्हा हता, सज्जनिया ससनेह ।
आडी भुंय दीधी घणी, नयण न दीसै तेह ॥३॥

खावौ पीवौ खेलवौ, कांइ न गमई मुज्झ ।
हियड़ा मांही रात दिन, ध्यान धरूं इक तुज्झ ॥४॥

सयणां सेती प्रीतड़ी, कीधी घणै सनेह ।
दैव विछोहो पाड़ियौ, पूरी न पड़ी तेह ॥५॥

सयणां सेती जीमतौ, बैसंतौ पिण सैण ।
कहियै सैण न वीसरइ, ध्यान धरूं दिन रैण ॥६॥

सुणि सज्जण तुझ नै कहूं, मुझ मन वीसारेह ।
एक वार इक वरस मंइ, हित सूं चीतारेह ॥७॥

थोड़ा बोला घण सहा, नांणै मन में रीस ।
एहा सज्जण तो मिलै, जो तूठै जगदीस ॥८॥

पंजर छइ मुझ पाखती, जीव तुमारै पास ।
राति दिवस दोलौ भमै, (ज्यूं) चंदो भमै अकास ॥९॥

सज्जण तूं मो मन वसै, जिम चकवी मन भांण ।
वीसारूं तुझ नैं नहीं, जां लगी घट में प्राण ॥१०॥

सज्जन केरा गुण घणा, न लहूं अंत न पार ।
ते सज्जण किम वीसरै, आतम ना आगार ॥११॥

सज्जन मीठा बोलड़ा, जेही मीठी खंड ।
आवी नै संभळावता, सीतळ करता पिंड ॥१२॥

मन ऊल्हसतौ माहरौ, देखि सुरंगा सैण ।
ते सज्जण थी वीछड़्यां, झूरण लागा नैण ॥१३॥

सज्जण वैण सुणावता, सीतळ करता गात ।
दैव विछोहौ पाड़ियौ, किम जास्यै दिन रात ॥१४॥

सज्जण मुख देखि करी, पूरवतो मन हांम ।
ते सज्जण थी वीछड़्यां, हिवे जीवणौ हरांम ॥१५॥

सज्जनिया मो चित्त चढ्या, (ज्यूं) चावळ चढै निलाड़ि ।
वाल्हा अेकरसौ वळे, माहिन तिके दिखाड़ि ॥१६॥

चतुराई, छति, मति, उकति, नैण, वैण मुख मिट्ठ ।
अेकणि मोरा चित्त मइं, अवर न क्यां ही दिट्ठ ॥१७॥

सज्जण तै चोरी किरी, किणें पुकारूं जाय ।
हियड़ै लोही कांढि नैं, तन मन लियो छिनाय ॥१८॥

तूं ही मोरी आतमा, तूं हीज मोरो जीव ।
सास तणी परिसासतो, संभारिस्यूं सदीव ॥१९॥

सज्जण संनड़ो मांहरो, दीधौ छै तम हाथ ।

जिम जाणो तिम राखिज्यो,मरण जिवण तम साथ॥२०॥

सज्जण मनड़ो मांहरो, मूक्यो छै तम पास ।
जतन करीनै राखज्यो, मत मेलौ नीरास ॥२१॥

घणूं घणूं कहियै किसूं, कहतां आवै लाज ।
आतमा ना आधार छौ, सज्जनिया सिरताज ॥२२॥

सज्जण तुम सूं वातड़ी, कीधी छै दोय च्यार ।
ते संभारी जीव सूं, एहिज मुझ आधार ॥ २३ ॥

जे सूं मननी प्रीतड़ी, ते सज्जण परदेश ।
हियड़ा कांई फाटै नहीं, जीवी कहा करेस ॥२४॥

हियड़ा भीतरी तूं वसइ, अवर न जाणै सार ।
कै मन जाणै माहरो, कै जाणै करतार ॥२५॥

सूतां सपनां में मिलै, जो जागूं तो जाय ।
चित्त वसतां सज्जणां, इण परि रयण विहाय ॥२६॥

सैणां साथै प्रीतड़ी, कीधी सुख नै काज ।
सुख सपनां ज्यूं वह गयौ, दुख लीधौ तइ काज ॥२७॥

रे चतुरंगी चोरड़ी, तैं मन लीधौ चोरि ।
राख्यो आपण वस करी, बांध्यौ गुणनी डोरि ॥२८॥

वीसरियां न वीसरइ, चीतारियां दहदंति ।
सज्जण हियड़ै वसि रह्यो, सुपनै आय मिलंति ॥२६॥

सज्जण सेती गोठड़ी, जो मेलै करतार ।
(तो)कांई बिछोहो पाड़ियौ, कांई दुख दियौ अपार॥३०॥

सज्जण हियड़ै वसि रह्या, नयणे नवि दीसंति ।
जमवारो किम जावसी, मुझ मन सवळी चिंत ॥३१॥

नमणा खमणा बहु गुणा, कंचन जिम कसियांह ।
एहा सज्जण माहरै, हीयड़ा में वसियांह ॥३२॥

सज्जण सेती गोठडी, जे मेलै जगदीस ।
हित सूं हियड़ा ऊपरै, तउ राखूं निसदीस ॥३३॥

सज्जण तूं मो वालहो, जेहो वाल्हो दाम ।
आठ पहुर हियड़ा थकी, कदे न मेलूं नाम ॥३४॥

सज्जण थया विदेसड़इ, क्यूं करि मिलियै जाइ ।
दैव न दीधी पांखड़ी, न मिलइ कोइ उपाइ ॥३५॥

मुख मीठा दीठा गमइ, अमी भर्‌या दोय नैण ।
सज्जनिया सालै नहीं, सालै सज्जन वैण ॥३६॥

सयण संदेसा आपवो, सैगूं माणस साथि ।
आणि नै ते मो भणी, आपै हाथो हाथि ॥३७॥

दोधक-छत्तीसी रची, सैणां हंदै काज ।
हेत प्रीत कागळ लिखी, मोकळिजो जसराज ॥३८॥

(श्री अगरचंद नाहटा रै संग्रहसूं)

*

-: बारह मास रा दूहा :-

पीउ न चलो पदमिणी कहै, आयौ मगसिर मास ।
चहुं दिसि सीत चमकियो, वाल्हा हियै विमास ॥१॥

ऊनवियो[1] उतराध रो, पाळो पवन सू[2] जोय ।
पोख मास में गोरड़ी, कदे न छंडै कोय[3] ॥२॥

माह महीनै सी पड़ै, इणि रिति चले वलाय ।
ऊंडै पड़वै पोढियै, कामणि कंठ लगाय[4] ॥३॥

फागुण मास वसंत रित, रीत[5] सुणि भरतार ।
परदेसां री चाकरी, जाइ[6] कुण गमार ॥४॥

चतुर महीनें चेत रै, हुओ ज चलणहार ।
तुंग कसै तुरियां तणां, साथीडां सिरदार ॥ ५ ॥

पिउ वैसाखे हालियो, सैणा सीख करेह ।
ऊभी झूरै[7] गोरड़ी, डब डब नैण भरेह ॥ ६ ॥

लू बाजै दिणयर तपै, मास अतारौ जेठ ।
आंख्यां पावस उल्लस्यौ, ऊभी मेड़ी हेठ ॥७ ॥

---

(१) उल्हरीयो उत्तर दिसा (२) सयोग (३) जोग (४) रुकाय (५) सुण भोगी (६) चाले (७) धी खडहड पडी ।

पीउ मोसै परदेसड़ै, आयो मास असाढ़ ।
निसनेही[8] परिहरि गयो, गोरी सूं करि गाढ ॥८॥

सैयां[9] श्रावण आवियो, उमहिं[10] आयो मेह ।
चमकण लागी बीजली, दाझण लागी देह ॥९॥

भाद्रवड़ौ भरि गाजियो, नदी ए खलक्या नीर ।
बावहियो[11] पिउ पिउ करै, घरि[12] नहिं नणदल वीर ॥१०॥

आसू मास विदेस पीउ, विरह लगावै बाळ ।
सेजडियां विस घोलियां, मंदिर हूआ मसाण ॥११॥

काती कंत पधारिया, सीधा वंछित काज ।
घरि दीपक उजवाळिया, गोरंगी जसराज ॥१२॥

—पनरह तिथि रा दूहा—

* पड़िवा पहिलै पक्खड़ै, कर सूती सिणगार ।
अजेस नायौ वल्लहौ, गोरंगी भरतार ॥१॥

---

(८) दु ख दे पापी हालियो (९) सखि हे (१०) उमडि (११) पापहीओ (१२) वली नणदल रा वीर ।

* अन्य प्रति में प्रारंभ के ६ दोहे निम्न प्रकार से हैं:—

पडिवा पीउ हालीओ, मइ हालंतौ दीठ ।
मनड़ो ज्याही सु गयौ, नैण वहोड्या निट्ठ ॥१॥

बीज ज आज सहेलियां, उगो चद मयंद ।
दुनिया वदे चंद नै, हुं वदू प्रीय चद ॥२॥

बीज स आज सहेलियां, बाळौ ऊगौ चंद ।
दाड़िम जेहा दंतड़ा, सेज न रम्यौ कंत ।।२।।

तीज स आज सहेलियां, तीजड़ियां तिहवार ।
गोरी सोहै आभरण, काजळ कुंकुमहार ।।३।।

चौथ चमक्कौ लाइऐ, दे चूना सुं चित्त ।
आवै धण रौ वालहौ, जोवै घर रौ वित्त ।।४।।

पांचम आज सहेलियां, पांचे वांध्या ठाण ।
उकणीया केकाण ज्युं, करै पलाण पलाण ।।५।।

छट्ठ छड़ा छड़ जोवता, पिउ पाटण परदेश ।
चंपा जाण महक्किया, चंगा माहू देश ।।६।।

सातम दिन तौ[1] वडलियौ, किम वउलेसी रैन ।
नयणे नावै नींदड़ी, सालै घट में सैण ।।७।।

सखीया तन सिणगार सजि, खेलौ सावण तीज ।
मो मन आमण दू मणो, देखी खिवंती वीज ।।३।।

चौथी भगवति पूजता, आवै वहुली रिद्धि ।
जो प्रीतम घरि आवसी, चोथि करिस प्रीत वृद्धि ।।४।।

पाचमि आज सहेलिया, आई एहवै वंचि ।
तन मन जीवन नीद सुख, प्रीतम ले गयौ पच ।।५।।

छट्ठी सहेली साहिवौ, छाय रह्यौ परदेस ।
झुरि झुरि पजर हुइ रही, वालि जोवन वेस ।।६।।

१. जो,

आठम हूवा आठ दिन, प्रीउ वीछड़ियां आज ।
प्राण हुवै जो प्राहुंणौ, तो हिज राखै लाज ॥८॥

सखी सहेली सांभलौ, मैं मन काहल छाड़ ।
नव दिन कीधा नवरता, प्रीतम हंदी चाड ॥९॥

सखी सहेली साहिवौ, आइ मिलै भर बाथ ।
जो पूजूं परमेसरी, दसराहौ पिउ साथ[2] ॥१०॥

सहियां आज इग्यारसी, म्हैं तो आज[3] व्रतीक ।
करिस्यां तोही पारणौ, मिलसी[4] वर तहतीक ॥११॥

बारस आज सहेलियां, ऊगा बारह भांण ।
जाणूं साहिब आविया, तीन्हा तुरी पलांण ॥१२॥

ते रस तेरह वही गया, अजे न लाभै थाग ।
माथै देहे[5] हत्थड़ा, ऊभी जोऊं माग ॥१३॥

चउदस खेलै चांद्रणी, सुखिया लोग सदीव ।
म्हैं तौ वाली आखडी, खेलेवा विण पीव ॥१४॥

पूनिम पूरा प्रेम सूं, घरे पधार्या राज ।
मृगनयणी उच्छव करै, पिय[6] कारण जसराज ॥१५॥

॥ इति पनरह तिथ रा दूहा संपूर्ण ॥

—०—

२. दिन, ३. खरा, ४. प्रीउ मिलसी, ५. दीयै, ६. प्रीउ,

श्री शत्रुंजय तीर्थ स्तवन

ढाल—गोडी मन लागउ ॥ एहनी ॥

शत्रुंजय यात्रा तणी, मो मन लागी धांखरे । म्हारउ मन मोह्यउ ।
नयणे देखी डूंगरउ, पवित्र करिसि हुं आंखिरे ॥१ म्हा.॥

सिद्ध क्षेत्र कहीयइ इहां, सीधा साधु अनंत रे । म्हा० ।
वली अनागत सीझिस्यइं, भाखइ इम भगवंत रे ॥२ म्हा.॥

इणि गिरि ऊपरि देहरा, सोहे जिम सुरलोक रे । म्हा.
दीठां तन मन ऊल्लसइ, पातक थायइ फोक रे ॥ ३ म्हा.

मूरति मूल नायक तणी, सुन्दर रुप निहालि रे । म्हा.
हीयड़े हरख मावइ नहीं, जिम बहु जल परनाल रे ॥४म्हा.

बीजा पणि जिनवर तणा, देवल देवविमान रे । म्हा.
धन्य जिणि एह करावीया, वंछित दीयण निधान रे ॥५म्हा.

सिवा सोम जी साहनउ, चउमुख नयण सुहाय रे । म्हा.
च्यारि मूरति एक सारिखी, खामी नहीं जिहां काइ रे । ६म्हा.

प्रतिमा अदबुद नाथनी, पूजीजे चित लाइ रे । म्हा.
केसर चंदन बहु घसी, कीजइ निरमल काय रे ॥७ म्हा.

ए गिरि नउ महिमा घणउ, कहता नावे पार रे । म्हा.
धन धन जे जात्रा करइ, छहरी ने विस्तार रे ॥८ म्हा.

उतकंठा मुझ नइ घणी, भेटण श्री गिरिराय रे । म्हा.
कहइ जिनहरख प्रापति विना, किणि परि दरसण थाइरे ॥९

—०—

श्री विमलाचल आदिनाथ स्तवः

ढाल— मोतीना गीतनी

श्री विमलाचल ऋषभ निहाल्या, पूरव कृत सहु पाप पखाल्या ।
माहरउ मन मोह्यउ रिखभ जी माहरउ मन मोह्यउ ॥
मन मोह्यउ जिम चंद चकोरी, मन मोह्यउ जिम ईश्वर गोरी ।मा०।
हियडुँ हेजइ अधिक भराणुँ, जनम सफल धन दिवस विहाणुँ ।१।

वाल्हेसर मुझ दरसण दीधुं, मानव भवनउ मइ फल लीधुं। मा०।
पोतानउ प्रभु सेवक जाणी, करुणासागर करुणा आणी । २ मा०।

सूरति मूरति मोहणगारी, दीठां हरषइ सुर नर नारी ।मा०।
तइं वसि कीधउ त्रिभुवन सारउ, तुं तउ परतखि कामणगारउ ।३मा.

जाणुं अहनिसि चरणे रहीयइ, प्रभु आगलि निज सुख दुख कहियई
वे कर जोड़ी सेवा कीजइ, सिवपुरना अविचल सुख लीजई।४मा०।

परम सनेही पर उपगारी, पर दुख भंजण जन सुखकारी ।मा०।
मुझनइ कुरम दृष्टि निहालउ, मात पिता बालक नइ पालउ।५मा०।

राति दिवस हीयड़ा मां धारुं, नाम थकी आतम निस्तारुं ।मा०।
चरण कमल नी सेवा देज्यो, मुझ विनतड़ी सारे लेज्यो ॥६मा०॥

जात्र सफल ए थाजो म्हारी, साहिब जी कीधी छइ ताहरी । मा०।
अरज सुणउ श्री आदि जिणंदा, द्यउ जिनहरष परम आणंदा ।७मा.

॥ इति श्री आदिनाथ स्तव ॥

श्री विमलाचल मण्डन रिषभनाथ स्तव

ढ़ाल—कोइलउ परबत धुंधल लउरे लो ॥ एहनी ॥

श्री विमलाचल गुण निलउ रे लो,
जिहां श्री रिखभ जिणंद रे । जात्रीड़ा ।
शिखर ऊपरी सोहइ भला रे लो, जिम एरावण इंद रे ॥जा.१श्री॥
दरसण जेहनउ देखतां रे लो, हियड़उ हरषित होउ रे । जा. ।
मन विकसइ तन उलसइ रे लो, नयण ठरइ वारु दोइ रे॥जा. २॥
जोइ रहियइ सामहउ रे लो, नयणे नयण मिलाइ रे । जा.।
तउहि त्रिपति न पामीयइ रे लो, सूरति सरस सुहाई रे ।जा.३श्री।
पुन्य प्रवल पोतइ हुवइ रे लो, तउ पामी जइ संग रे । जा० ।
जेहनइ संगइं उपजइ रे लो, नव नव रंग अभंग रे । जा.४श्री ॥
सुन्दर रुप सुहामणउ रे लो, देखी मोहइ मन्न रे । जा० ।
वाल्हउ लागइ वाल्हउ रे लो, जिम लोभी नइ धन्न रे ।जा०५श्री।
प्रभु चरणे चित लाइयइ रे लो, निशि दिन रहीयइ पासिरे ।जा०।
खासी खिजमति कीजियइ रे लो, तउ पुगइ मन आसरे ।जा०६श्री।
साहिब नी सेवा थकी रे लो, लहिये लील विलासरे । जा० ।
फूल तणी संगति थकी रे लो, तेल लहइ जिम वासरे ॥जा०७श्री॥
सोम न भरी मोटां तणी रे लो, थईयइ तुरत निहाल रे । जा० ।
जनम मरण संसार ना रे लो, टालइ सगला सालरे ॥जा०८श्री॥
नाभिनंदण चंदण जिसउ रे लो, मरुदेवा नउ जातरे । जा० ।
भेटिजइ जिनहरख सुं रे लो, भावइं करी विख्यात रे ॥जा०९श्री॥

—०—

श्री शत्रुंजय मंडन श्री आदिनाथ स्तवः

ढाल—आज माता जोगिणि ने चालउ जो वाजईयइ ।। एहनी ।।

श्रावक सहु कोइ आगलि धर्म तणा जे धोरी ।
मधुर गीत गाती गुणवंती, पाछलि थई सहु गोरी रे ।।१।।
आज माहरा आदीसर नइ, इणि परि वांदण चाल्या ।
शत्रुंजयनी पाजइ चढतां, पाप कर्म सहु पाल्या रे । आ. ।
तातत्ता थै गंध्रप नाचइ, गुहिरउ मादल गाजइ ।
ताल कंसार तणी वली जोडी, रमक झमक तिहां वाजइ रे ।।२।।
जोता नाटारंभ जुगति सुं, अरिहंत चरणे आया ।
म्हारा प्रभु नु दरसण देखी, परमाणंद सुख पाया रे ।।३ आ.।।
प्रेमइ त्रिण्ण प्रदक्षण देई, मूल गंभारइ पइसी ।
अम्हे चैत्य वंदण तिहां कीधउ, श्रीजिन सनमुख बइसी रे ।४आ.।
हिवइ श्रावक द्रव्य स्तव विरचइ, तजी राग ने रोष ।
न्हाई धोई पहिरि धोतीया, मुख बांधी मुहकोस रे ।। ५ आ.।।
केसर कपूर अने कस्तूरी, चंदन घसी उछांहइं ।
भरी कचोली हाथे लेई, आवइ मंडप माहे रे ।। ६ आ. ।।
करी पखाल अंग प्रभु जी नइ, पूजक श्रावक भावइं ।
अंगी चंगी रची कुसुमनी, अलंकार पहिरावे रे ।। ७ आ. ।।
तीन लोकना स्वामि आगलि, धूप दीप दीपावइ ।

पछइ करे भावस्तव भगते, ध्यान साहिबरउ ध्यावे रे ॥८आ. ॥
तिमज श्राविका विधि सूं पूजइ, प्रभु प्रतिमा अति नीकी।
बाली भोली रंग रसाली, ते पिरिण सहु घइ टीकी रे ॥९ आ.॥
जिन मूरति जिन सरिखी बोली, मूरख संसय लावे।
मूरति देखि रिषभ जी केरी, यादि रिषभ जी आवइ रे ॥१०॥
घणुं घणुं प्रभु रंगइ राच्या, सहुनी आस्या सीधी।
इम चैत्री पूनिम दिन यात्रा, कवि जिनहरप कीधी रे ॥११ आ.

॥ इति श्री शत्रुञ्जयमडन श्री आदिनाथ स्तव ॥

श्री शत्रुञ्जय महातीर्थ स्तवन

ढाल–पालीताणु नगर सुहामणुं रे जाज्यो। रूडी २ ललता सरनी पालि।

म्हांरा साहिबा रे, सोरठ देश रलीयामणउ रे जोज्यो ॥
पालीताणइ नगर उछाह सुं रे जोज्यो,आव्या२ पुन्य पसाय।म्हां०।
शत्रुंजय शिखर सुहामणउ रे जोज्यो,
ललित सरोवर निरखीयउ रे जोज्यो,हीयड़ले हरख न माय।१म्हां
सत्ता वावि सोहामणी रे जोज्यो, निर्मल सीतल नीर ॥म्हां। से॥
तीहां थकी पाजइ चड्या रे जोज्यो, पामेवा भवनउ तीर।म्हां२से
विचिमइ कुंड रलीयामणां रे जोज्यो,वीसामा वली रूड़ा पंच।म्हां
गिरि मूले नेमि पादुका रे जोज्यो, वांद्या छोड़ी खलखंच। ३म्हां
बीजे गढ आव्या सुखे रे जोज्यो, दीठी वाघणी पोलि। म्हा.।
ऊभउ साधु सुकोसलउ रे जोज्यो, नमतां हुई रंगरोल। ४ म्हा.

अनुक्रमि मांहे आवीया रे जोज्यो,दीठी चवरी नेमि जिणंद । म्हां.
मोक्ष बारी मां नीसर्या रे जोज्यो, हूअउ मन मांहि आणंद ।५म्हां
पूरव दिसि साम्हा रह्या रे जोज्यो, दीठा २ श्री आदिनाथ । म्हां
मन विकस्युं तन ऊलस्युं रे जोज्यो, थया अम्हे परम सनाथ । ६
भाव पूजा भली कीधी रे जोज्यो, खरतर वसही निहालि । म्हां.
सहस्र कूट भगतइं नम्या रे जोज्यो, भागा सहुं जंजाल । ७ म्हां.
राइणि तणि पगला भला रे जोज्यो, प्रभुजीना सुविशाल ।म्हां.
पगलां गणधर ना नम्या रे जोज्यो, पाप गया ततकाल । ८ म्हां.
देवल संहु जुहारीया रे जोज्यो, भेट्या गणधर पुंडरीक । म्हां.
भावी तिहां बहु भावना रे जोज्यो, कीधी मुगति नीजीक । म्हां.
बाहिरि नीकलीया हिवइ रे जोज्यो, पूज्या अदबुदनाथ । म्हां. से
सिवा सोमजी नइ देहरइ रे जोज्यो, चउमुख शिवपुर साथ । १०।
मरुदेवा माता गज चड़ी रे जोज्यो, सांतिसर जिन सुखदाय ।म्हां.
पांचे पांडव निरखीया रे जोज्यो, द्रुपदी कुंती माय । ११ म्हां.
सूरज कुंड ऊपरि थई रे जोज्यो, वली गया उलखा झोल । म्हां.
सिद्धसिला सिधवड वली रे जोज्यो,देखी गरुया दंदोल ।१२म्हां.
संवत् सतर अठावनइ रे जोज्यो, फागण वदी बारस दीस । म्हां.
तीरथ यात्रा कीधी भली रे जोज्यो, पूगी मननी जगीस । १३म्हां.
जनम सफल कीधउ आपणउ रे जोज्यो, जीवित जनम प्रमाणजी ।
गिरिवर दरसण थाज्यो वलीरे जोज्यो,कहइ जिनहरष सुजाण १४

॥ इति श्री शत्रुञ्जय महातीर्थ स्तवन ॥

श्री विमलाचल मंडण श्री आदिनाथ स्तवन

राति दिवस सूतां जागतां, मुझ मन एह ऊमाहउ ।
जाणुं श्री रिसहेसर भेटुं, ल्युं मानव भव लाहउ ॥ १ ॥
भावसुं श्री विमलाचल जईयइ, भव भव ना पातक परिहरीयइ ।
पवित्र सुथिर मन थईयइ ॥ भा० ॥
ए तीरथ गिरुअउ गुण आगर, ए सरिखउ नहीं कोई ।
ऊपरि साधु अनंता सीधा , कर्म तणी जड़ खोई ॥ २ भा० ॥
समवसर्या आदीस्वर स्वांमी , पूरव निवाणुं वार ।
उत्तम थानक ए जांणी नइ, लेई बहु परिवार ॥ ३ भा० ॥
पुंडरीक गणधर इहां सीधा, तिणि पुंडर गिरि नाम ।
चैत्री पुनम यात्रा करीयइ, लहीयइ अविचल ठाम ॥ ४ भा० ॥
कर्म शत्रु जीपेवा कारण, शत्रुंजय भेटीजइ ।
डगलइ डगलइ पातक नासइ, दोइगति दूरइ कीजइ ॥ ५ भा०॥
जिन शासन तीरथ छइ बहुला, तिणि मां ए सिरताज ।
सहुअंइ तीरथ सैल मिली नइ, पद दीधउ गिरिराज ॥६भा०॥
विधि सुं जउ गिरि यात्रा कीजइ, गिरि देखी हरखीजइ ।
दान सुपात्रइं तिहां जउ दीजइ, करम कठिन छेदीजइ ॥ ७भा० ॥
व्रतधारी ने सचित प्रहारी, एक आहारी थईयइ ।
भूमि संथारी समकित धारी, निज पदचारी जईयइ ॥ ८ भा०॥
सामायक पड़िकमणुं करीयइ, तउ भावसायर तरीयइ ।
वाटइ सुगुरु संघातइं चलीयइ, तउ भव माहि न फिरीयइ ॥६भा०॥

सात छठि चउविहार करइ जे, दोइ अट्टम सुविवेक ॥
लाख गणइ नवकार भावसुं । ते करइ भवनउ छेक ॥१०भा०॥
मोहणगारउ तीरथ सारउ, देखीनइ ऊमहीयइ ॥
ए डूंगर थी अलगा कहीयइं, पाणी वल नवि रहीयइ ॥११भा०॥
रिषभ जिणेसर नयणे देखी, जुगतइं करइ जुहार ॥
पूजइ जे हित सुं जिनवर नइ, ते लहइ सुक्ख अपार ॥ १२भा०॥
जिन दरसण थी पाप पणासइ आगलि शिवपुर राज ।
कहइ जिनहरष विमलगिरि यात्रा, थाज्यो मुगति ने काजि।भा.१३।

इति श्री विमलाचल मंडण श्री आदिनाथ स्तवनं ।

श्री शत्रुंजय मंडण श्री रिषभदेव स्तवन

ढाल—जाटणीना गीतनी

श्री विमलाचल मंडण रिषभ जी, म्हारी विनतड़ी अवधारी ।
आव्यउ हूं प्रभु चरणे ताहरे , मुझ नइ भवसायर थी तारि॥१श्री॥
तुं करुणाकर ठाकुर मांहरउ, तुं माहरउ सिर ताज ।
दरसण देखेवा हुं आवीयउ, ऊमाहउ धरि मन मइं आज ॥२श्री॥
दरसण दीठउ मीठउ प्रभु तणउ, नीठउ सगला भवनउ पाप ।
आठ करम अरीयण थया दूवला, टलस्यइ जनम मरण संताप।३।
दीनदयाल कृपाल कृपा करी, दीजइ मुझनउ अविचल राज ।
आप समान करउ सेवक भणी, जिम वाधइ तुझ लाज ॥ ४श्री ॥
तुं समरथ साहिब सिर माहरइ, हुं जउ पासुं दुक्ख कलेस ।
तउ प्रभु नइ छइ लाज विचारिज्यो, सेवक लाज नही लवलेस ।५।

सेवक जाणी आस्या पूरवउ, सहु सुं निज संपति नउ सीर ।
अवगुण देखी छेह न राखवइ, गरूआ जेह गंभीर ॥६श्री॥
परम सनेही तुं परमातम, दउलति दायक तुं दीवाण ।
तुं तउ माहरा सिरनउ सेहरउ,तुं तउ माहरउ वल्लभ प्राण॥७॥
भव भव माहे मइ भमता थकां, पाम्या चउगति भ्रमण अपार ।
भ्रमण निवारउ तारउ साहिबा, तुम नइ दाखुं वारो वार ॥८श्री॥
सोवन वरण सरुप सुहामणउ, पांचसइ धनुप शरीर ॥
आउ चउरासी पूरव लखनउ, निर्मल गुण प्रभुना जिम खीर॥९॥
श्री शत्रुंजय गिरि महिमा निलउ, मरुदेवा उअरइं अवतार ।
नाभि कुलांवुज दिनकर सारिखउ, जुगला धरम निवारण हार ।१०
सूरति मूरति प्रभुनी जोवतां, नयणे अधिक सुहाइ ।
राति दिवस जाणुं पासइ रहुं, सेवुं प्रभुजी ना हुं पाय ॥११॥
मन मधुकर तुझ चरण कमल रसइं, होय रह्यउ लयलीण ।
पाणी वल पिणि न रहइ वेगलउ, दूरि रहइ तउ थायइ खीण ।१२
संवत सतरइ पचतालइ समइ, मून इग्यारस दिन सुविहाण ।
कहइ जिनहरष विमलगिरि भेटीयउ,यात्रा चड़ी माहरी परमाण।१३

॥ इति श्री शत्रुञ्जय मंडण श्री रिपभदेव स्तवनं ॥

श्री शत्रुञ्जय मंडण श्री आदिनाथ लघु स्तवन

ढाल—जीहो मिथला नगरी नउ राजीयउ—ए देशी

जी हो आज मनोरथ माहरा, जी हो सफल थया जिनराय ।
जी हो आज दशा जागी भली, जी हो भेट्या प्रभुना पाय ॥१॥

विमलगिरि मंडण रिषभजिणंद, जी हो नयणे मूरति जोवतां ।
जी हो पाम्यउ परमानंद ।वि॥

जी हो ऊमाहउ वहु दिन तणउ, जी हो आज चड्यु परमाण ।
जी हो दीठउ मीठउ साहिबउ, जी हो त्रिभुवन नउ दीवाण ।२वि।

जी हो रूप अधिक रलीयामणउ, जी हो नयणे अधिक सुहाइ ।
जी हो मूरति मां कांइ मोहणी,जी हो मन मेल्हणी न जाइ ॥३वि॥

जी हो तुं करुणा-सागर सही, जी हो हुं करुणा नउ ठाम ।
जी हो मुझ ऊपरि करुणा करी, जी हो आपउ सुख विश्राम ।४वि।

जी हो तुझ मूरति दीठां पछी, जी हो अवरन आवइ दाइ ।
जी हो पाच रयण जउ पामीयउ,जी हो तउ किम काच सुहाइ ।५वि।

जी हो समरथ साहिब तु लह्यउ, जी हो भय भंजण भगवंत ।
जी हो चरणे करिसुं चाकरी, जी हो लहिसुं सुक्ख अनंत ।६वि।

जी हो मरुदेवा नउ वालहउ, जी हो नाभि नरिंद मल्हार ।
जी हो शत्रुंजय नउ राजीयउ, जी हो मुगति रमणि उर हार ।७वि।

जी हो सुरतरु सुरमणि सारिखउ, जी हो वंछित पुरण हार ।
जी हो तिणि तुझ नइ सेवइ सहु,जी हो दीसइ एह विचार ॥८वि॥

जी हो धन दीहाड़उ धन घडी, जी हो धन वेला धन मास ।
जी हो भेट्या मइं जिन हरखस्युं, जी हो पूगी मननी आस ।९वि।

॥ इति श्री शत्रुंजयमंडण श्री आदिनाथ लघुस्तवन ॥

शत्रुञ्जय-स्तवन

ढाल—साधु गुण गरुआरे ।।ए देशी

श्री विमलाचल गुण निलउ मन मोह्यउ रे,
जिहां सीधा साधु अनंत । शत्रुंजय मन मोह्यउ रे ।
तीरथ नही ए सारिखउ ।म। वीजउ कोई गुणवंत ।। १ श ।।
विधि सुं जे यात्रा करइ ।म। ते करइ कुगति नउ छेद ।श।
सात आठ भवमां सही ।म। ते मुगति लहइ द्रू वेद ।।२श।।
वारह परसद आगलइं ।म। श्री सीमंधर कहइ एम ।श।
शत्रुंजय यात्रा तणउ ।म। प्रभु पुन्य कहइ धरि प्रेम ।।३श।।
पुन्य विमणुं कुंडल गिरइं ।म। नंदीश्वर द्वीप थी होइ ।श।
रुचक त्रिगुण फल पामीयइ ।म। चउ गुण गजदंते जोइ ।।४।।
तेह थी पुन्य त्रिमणुं हुवइ ।म। जंबू विरखइ मन आणी ।श।
छगुणुं खंडइं धातकी ।म। पुक्खर वावीस वखाणी ।।५।।
सात गुणउ कनकाचलइ ।म। वली श्री सम्मेत गिरिंद ।श।
सहस गुणउ फल तिहां लहइ ।म। सांभलिज्यो इंद नरिंद ।।६श।।
लाख गुणउं फल पामीयइ ।म। अंजण गिरि केरि यात्र ।श।
दश लक्ष अष्टापद गिरइं ।म। पुन्यइ करइ निरमल गात्र ।।७श।।
कोडि गुणुं फल पामीयइ ।म। शत्रुंजय भेट लहंत ।श।
एह थी अधिकउ को नही ।म। कहइ सीमंधर भगवंत ।।८श।।
यात्रा छहरि पालतां ।म। भावइ करिस्यइ नर नारि ।श।
कहइ जिनहरप सदा सुखी ।म। तरिस्यइ लहिस्यइ भवपार ।।९श।।

इति श्री शत्रुंजय स्तवन।।

श्री शत्रुञ्जय स्तवन

।।ढाल।। हीडोलणानी ।। ए देशी ।।

आज मंइ गिरिराज भेट्यउ, शत्रुंजय सिरदार ।
साधु सीधा जिहा अनंता, कहत नावइ पार ।
विमल गिरि वर नमइ सुर वर, तीन भवन विख्यात ।
पाप ताप संताप नासइ, विधि सुं जउ करीयइ जात।।१।।
मनमोहनां माइ भेटीयइ विमल गिरिंद ।
सचित प्रहारी पादचारी, एक आहारी होइ ।
समकित धारी भुंइं संथारी, ब्रह्मचारी जोइ ।
करइ पड़िकमणुं निरंतर पूजइ जिन शुभ भाय ।
अवर आरंभ कोइ न करइ, दुरगति तेह न जाइ ।।२म।।
एक जीभ एहनउ सुजस कहतां, कदी नावइ पार ।
ए डुंगरउ मनमोहन गारउ, देखतां सुखकार ।
जिम २ निहालुं पाप टालुं, हीयइ हरख न माइ ।
एह थी किम दूरी रहीयइ, दीठड़ां आवइ दाइ ।।३म।।
जिणिऊपरइ श्री रिखभ जिनना, देहरा दीपंत ।
गगन सुं जाणे वाद मांड्यउ, दंड धज लहकंत ।
सुर भुवन सरिख चित्त मोहइ, देखतां आनंद ।
मांहि त्रिभुवन नाथ सोहइ, नाभि नृपति कुलचंद ।।४म।।
मूरति मोहन नी अधिक दीपइ, कांति झाक झमाल ।
जोअतां सीतलथाइ लोयण, टलइ पातक जाल ।।

सीस सोहइ मुगट सुघटउ, कान कुंडल दोइ ।
एक जाणे चंद्र मंडल, एक दिनकर द्युति होइ ॥ ५म ॥
उर हार एकावली विराजइ कनकमाल विशाल ।
बांहेत सोहइ बहिरखा, वरयउ तिलक सुंदरभाल ।
अंग चंगी अंगीया अति, जटित कटि कणदोर ।
फल्यउ फुल्यउ जाणि सुरतरु, देखी नाचइ मन मोर ॥ ६म ॥
मन आस पूरइ दुरित चूरइ, होइ कोड़ि कल्याण ।
नव निधि पासइ रहइ उलासइं सुजस झलकइ भाण ।
स्वामि नामइं सुगति पामइ, अवरनी सी वात ।
ए सकल तीरथ नाथ समरथ, जय २ त्रिभवन तात ॥७ म॥
पूरव निवाणुं वार प्रभु जी, कीयउ इहां विश्राम ।
रायण हेठइ समवसरिया, पवित्र करिवा ठाम ।
धन धन्न भरथ जिहां शत्रुंजय, कहइ सीमंधर स्वामि ।
भविक जन नइ तारिवा, जिनहरष करइ गुण ग्राम ॥८॥

इति श्री शत्रुंजय स्तवनं

श्री शत्रुंजय मंडण श्रीरिषभदेव स्तवन

॥ढाल॥ म्हारा आतमराम किणि दिन शेत्रुंज जास्युं । ए देशी॥

वंदु रिषभ जिणंद विमलाचल नउ वासी ।
विमलाचल नउ स्वामि नमिसुं, हीयडइ धरिय उलासी ॥ १वं ॥
कंचण काया धनुष पांचसइ, लंछण वृषभ सुहासी ।
आऊषु प्रभुजी नउ कहीयइ, पूरव लाख चउरासी ।२वं।

ऊंचउ परवत अनुपम सोहइ, अपर जाणि कैलासी ।
साधु अनंता इणि गिरि सीधा, सिद्ध अनंत निवासी ।३वं।
सुरति प्रभुनी अधिक विराजइ, सूरज ज्योति प्रकासी ।
जिम २ नयणे हरि करि निरखुं, तिम २ रिदय विकासी ।।४वं।।
केसर चंदन मृग मद मेली, जिनवर पूज रचासी ।
ते त्रिभुवन मइं पूजा लहिस्यइ, त्रिभुवन कमला दासी ।।५वं।।
भाव धरी डूंगर जे फरसइ, दुरगति तेह न जासी ।
रोग सोग भय भूत भयंकर, नामइं जायइ नासी ।।६वं।।
पाजइ चड़तां ऊलट आणी, जे प्रभुना गुण गासी ।
भव भव ना पातक थी तेहनउ, आतम निरमल थासी ।।७वं।।
शत्रुंजा नउ संघ चलावइ, यात्रा करइ निरासी ।
चउगति ना भय भ्रमण निवारइ, छेदइ भवनी पासी ।।८वं।।
धन धन नर-नारी शत्रुंजय, आवी रहइ उपासी ।
छहरी पालइ पाप पखालइ, लहइ जिनहरष विलासी ।।९वं।।

इति श्री शत्रुंजय मडन श्री रिषभदेव स्तवनं

विमलाचल मंडन श्री रिषभदेव स्तवनम्

।। ढाल।। रसीयानी ।। एदेशी ।।

रिषभ जिणेसर अलवेसर जयउ, श्रीशत्रुञ्जय रे नाथ । मोरा प्रीतम
चालउ जइयइ रे प्रभुनइ पूजिवा, पावन करीयइ रे हाथ ।मो१रि।।
ए तीरथ नउ महिमा अति घणउ, कहतां नावइ रे पार ।मो।
समवसर्या जिहां प्रथम जिणेसरु, पूरव निवाणुं रे वार ।मो२रि।

नेमि विना त्रेवीसे जिन चढ्या, ए गिरि पुन्यनी रे रासी ।मो।
अजित जिणेसर शाँति जिन सोलमा,इणि गिरि रह्या रे चउमासि।मो
खरतर वसही मूरति मन गमइ, पूजा करीयइ रे जास ।
सहस्रकूट नमीयइ बहु भाव सु', पूगइ मननी रे आस ।मो४रि।।
अष्टापद ना देव जुहारीयइ, पगलां रायणि रे हेठि ।मो।
पगलां नवलां गणधरनां भलां, तेहनी करीयइ रे भेटि ।मो५रि।।
गणधर श्रीपु'डरिक जुहारीयइ, बीजा पिणि बहु रे देव ।मो।
मोटी मूरति अदवुद नाथनी, तेहनी करीयइ रे सेव ।।मो६। रि।।
चउमुख प्रतिमा च्यारी सुहामणी, शिवा सोमजी नइ उद्धार ।मो।
उलखा भोल चेलण तलावड़ी, सिधवड़ घणइ रे विस्तार ।मो७।
ए तीरथ सरिखउ जग को नही, सीधा साधु अनंत ।मो।
तारइ ए तीरथ संसार थी, जिनवर एम कहंत ।। मो०८ रि० ।।
अधिक विराज्या गिरिवर ऊपरइ , नाभि नृपति ना रे नंद ।मो।
मरुदेवा नउ रे अंगज भेटइयइ, द्यइ जिनहरष आनंद ।।मो६।।

इति श्री विमलाचल मडन श्री रिषभदेव स्तवनं

श्री शत्रुञ्जय स्तवनम्

ढाल ।। वीर वखाणी राणी चेलणा जी एहनी ।।

विमलगिरि तीरथ भेटीयइ जी, मेटीयइ भव तणा पाप ।
आपदा दूरि निवारीयइ जी, तारीयइ आतमा आप ।। १वि ।।
ए गिरि नउ महिमा घणउ जी, एक जीभइं न कहवाय ।
सुरपति सहस जीभइं कहइ जी, तउ पिणि कह्यउ रे न जाइ ।२वि।

हिंसक जे हतीयारड़ा जी, पातकी जे नर होइ ।
ए गिरि दरसण फरसणइं जी, सुगति पामइ सही सोइ ॥३वि॥
एह तीरथ समउ को नही जी, जोवतां त्रिभुवन मांहि ।
अनंत तीर्थंकर इम कहइ जी, नवनिधि नाम थी थाइ ॥४वि॥
भरथ तणा धन्य आदमी जी, शत्रुंजय दरसण पामि ।
सफल करइ भव आपणउ जी, कहइ सीमंधर सामि ॥५वि॥
सिद्धि इणि गिरि अनंता थया जी, वली हुस्यइ काल अमाण ।
एह गिरि राज छइ सास्वतउ जी, ज्ञानी वदइ इम वाणी ॥६वि॥
जेह विधि सुं करइ यातरा जी, छहरी पालइ धरी भाव ।
कहइ जिनहरख नर नारि नइ जी, भव जलधि तारिवा नाव ।७वि।

इति श्री शत्रुंजय स्तवन

श्रीविमलाचल मंडण श्री चतुमुंख रिषभदेव स्तवन

॥ ढाल—मारू राग ॥

खरतर वसही आदि जिणंद जुहारीयइ रे ।
शत्रुंज गिरि सिणगार, चउगति रे २ आवागमण निवारीयइ रे ।१।
ऊलट भावधरी नयणे निति जोईयइ रे ।
चउमुख प्रतिमा च्यारि, भवना रे २ पातक कसमल धोईयइ रे ।२।
सुंदर मूरति सूरति अधिक सुहामणी रे ।
दीठां जायइ दुक्ख, साता रे २ थायइ मन माहे घणी रे ॥३॥
आशापूरण सुरतरु सुरमणि सारिखउ रे ।
उपगारी अरिहंत, ताहरी रे २ जोडि न को ए पारिखउ रे ॥४॥

अवर सुरासुर ध्यावइ जे तुझ अवगणइ रे।
तृष्णातुर मति हीण, गंगा रे २ कांठइ ते कूई खणइ रे ॥५॥
अमृत फल तजि हंस करइ किंपाक नी रे।
विस पीयइ अमृत छोड़ि, सुरतरु रे २ कापइ आशा आकनी रे॥६॥
मंदमती कुमती सठ परिहरि पाचनइ रे।
देखी झलहल ज्योति, गाढउ रे २ गांठइ बांधइ काचनइ रे॥७॥
ऐरापति सारीखउ गइंवर परिहरी रे।
खर बांधइ घरवार, रूडउ रे २ आवइ ऊकरड़ी चरी रे ॥८॥
मोटा साहिब सु' रीसाई रहइ रे।
जे ल्यइ रांक मनाइ, तेतउ रे २ रांक तणी सोभा लहइ रे ॥९॥
कंचण नाखी मूरख पीतल आदरइ रे।
मिथ्याती मतिमंद,तुझ नइ रे २जे तजि अवर धणी करइ रे ।१०।
शिवा सोमजी रूपजी साह सभागीया रे।
न्याति भली पोरवाड़, एहवा रे२ देवल जिणे करावीया रे ॥११॥
अभिनव जाणे वीजउ शेत्रु'जय अवतर्यउ रे।
शिव सुख तणउ उपांय,महीयल रे २ समरथ ए तीरथ कयु'रे।१२।
नवउ करावइ जिन गृह निज द्रव्यइ करी रे।
ते पहुँचइ सुर लोक, वाणी रे २ महानिसीथइं ऊचरी रे ॥१३॥
पुन्य तणउ खातउ बांधइ ते आदमी रे।
त्रोडइ कर्मना वर्ग, मुझ मन रे २ साची सद्दहणा रमी ॥१४॥
रिषभ जिणेसर विमलाचल नउ राजीयउ रे।

चउमुख त्रिभुवन नाह, महिमा रे २ जेहनउ त्रिभुवन गाजीयु रे ।१५।
राज रिद्धि संपद रमणी इह लोकनी ।
मांगु नही महाराज, मुझ नइ रे २ द्यउ संपद शिवलोकनी रे ॥१६॥
साचउ साहिब मइं आदरीयउ परीखनइ रे ।
खोटा दीधा छोड़ि, तारउ रे २ निज सेवक जिनहरष नइ रे ॥१७॥

इति श्री विमलाचल मंडण श्री चतुर्मुख रिभपदेव स्तवनं

शत्रुञ्जय आदिनाथ नमस्कार

प्रथम जिणेसर आदिनाथ शत्रुंजय मंडण,
पाप ताप संताप मरण जामण दुख खंडण,
सुख पूरण सुरतरु समान सेवक नइ स्वामी,
मरुदेवा नउ अंगजात नमीये सिरनामी ।
नाभिराय कुलवर कमल दीपावण दिणराय ।
वंस इषांगइं सोहतउ प्रणमइ सुरपति पाय ॥ १ ॥
करम खपावी जिण वरिंद केवल जव पामइ,
समवसरण सुर रचइ ताम प्रभु नइ सिर नामइ,
अणवाया वाजित्र कोडि वाजइ नभ मंडल,
तीन छत्र प्रभु धरे सीस आवी आखंडल ।
चामर वीजई देवगण दीयइ मधुर उपदेश ।
मीठउ लागे सहु भणी साकर थकी विसेस ॥ २ ॥
अतिसय च्यारे जनम थकी प्रभुजीनइ थायइ,

करम खप्या थी वलि इग्यार अतिसय कहिवाये,
देव तणा कीधा विसेस अतिसय उगणीस,
सर्व मिल्यां जिनराय तणा अतिसय चउत्रीस।
सुरज कोडि थकी घणु ए केवल ग्यान प्रकास।
द्यउ सेवा जिनहरख ने सफल करउ अरदास ॥ ३ ॥

॥ इति शत्रुञ्जय आदिनाथ नमस्कार ॥

शत्रुञ्जय अद्बुदनाथ स्तवन

ढाल—नंद्या म करिज्यो कोई पारिकी रे ॥ एहनी ॥

अद्बुदनाथ जुहारीयइ रे, कांई शेत्रुंजनउ सिणगार रे ।
सुंदर रूप सुहामणउ रे, वारू नखसिख अवल आकार रे ॥१॥
मोटी रे मूरति सूरति जोवतां रे,म्हारा मनथी मेल्हणी न जाय रे ।
नयणे लागी तुझ सूं प्रीतड़ी, वाल्हा देखी२ सीतल थाय रे ॥२॥
धन कारीगर तेहना रे, कांई सोनइ मढीयइ हाथ ।
जिणि मूरति एहवी घड़ी रे, धन थाप्या अद्बुदनाथ रे ॥ ३ अ ॥
ऊंचा रे इग्यारे पावडी ए चडी रे, वारू तिलक वणावइ सीस रे ।
एहवी रे मूरति किहां दीठी नहीं रे, आज दीठी पूगी जगीस रे।४।
जोयां रे हीयडुं म्हारुं ऊलसइ रे,जाणुं अहनिशि देखुं ताहरु रूपरे
पलक न रहीयइ तुझ सुं वेगला रे, ते तउ जाणइ तुंही सरूप रे ।५
माहरां रे वंछित साहिब पूरवउ रे,हुं तउ वीनती करूं करजोडि रे ।
भवबंधण मांहे पड्यु रे, हिवइ तेहथी मुझ न छोड़ि रे ।६अ.।

चरण न मुंकुं हिवइ हुं ताहरा रे, साहिबीयानी करिसुं सेव रे ।
कहइ जिनहरष भवो भवे रे, म्हारइ तुं वाल्हेसर देव रे ।७अ.।

इति श्री शत्रुञ्जय अद्बुदनाथ स्तवनं

श्री शत्रुंजय आदिनाथ स्तवनम्

सुणि सत्रुंजयना सामी रे।मनमोहन जी। पुन्यइ तुझ सेवा पामीरे।
मुझ नयण कमल उलसीया रे ।म। दीदार निहालण रसीया रे ।म।
तुं तउ मुझ मन मोहणगारु रे ।म। तुं तउ मुझ नइ लागइ प्यारउ रे
हुं तु राति दिवस संभारूं रे ।म। तुझ दरसण हीयड़उ ठारूं रे, २म
तुझनइ हुं कदीय न भूलइ रे ।म। निसि दिन हीयड़ा मे भूलइ रे ।म।
तुं तउ समता रसनउ दरीयउ रे।म।गुण रयण अमोलिक भरीयउरे३
तोरी सूरति अजब विराजइ रे ।म। इंद्रादिक देखि लाजइ रे ।म।
एहवउ किहां रूप न दीसइ रे ।म। जेहनइ देखी मन हीमइ रे ।४।
तुझ पासइ मंत्र ठगोरी रे ।म। सहुना तुं चितल्यइ चोरी रे ।म।
नयणे एक वार निहालइ रे ।म। न वीसारइ ते किणि कालइ रे ।५।
तुझ नाम तणइ बलिहारी रे ।म। वाल्हेसर तो परिचारी रे ।म।
कहतां तउ लाज मरीझइ रे ।म। पिणि आप बराबरि कीजइ रे ६म
श्री नाभि नरिंद कुल दीवउ रे ।म। मरुदेवा सुत चिरजीवउ रे ।म।
सेवक जिनहरष निवाजउ रे ।म। जस पामउ त्रिभुवन ताजउ रे ।७।

इति श्री शत्रुञ्जय आदिनाथ स्तवन

—०—

श्री शत्रुञ्जय मंडण श्रीऋषभदेव स्तवन

ढाल—मुख नई मरकलडइ ।। एहनी ।।

विमलाचल तीरथ वासी जी, मन रा मानीता ।
तुझ दरसण लील विलासी जी ।। म ।।
तुझ मुख राकापति सोहइ जी ।। म. ।।
सुर नर नारी मन मोहइ जी ।। म. १ ।।

जाणुं प्रभु पासे निति रहियेजी।म।प्रभु चरणकमल निति महीयइजी
जउ महिरि साहिबनइ आवइजी,तउ साची प्रीति लगावइजी ।२म।
हितनयणे सनमुख निरखइजी ।म। सेवक देखिनइ हरखइजी ।म।
सुसनेही नेह कहावइजी, पोतानइ पासि रहावइजी ।।३म।।
आपण सूं जे हित राखइजी।म।दीन वयण आगलि रही भाखइजी
तेहनइ नविछेह दिखालइजी, मोटा प्रीतड़ली पालइजी ।।४म।।
तुझ सरिखा उपगारीजी ।म। उपगार करइ हितकारीजी ।।म।।
गुणवंत हुवइ गुण ग्राहीजी ।म। तेह सुं मिलियई ऊमाहीजी ।५म।
ऊमाहउ सफलऊ कीजइ जी ।म। मनवंछित प्रभु सुख दीजे जी ।
सुखना ग्राहक सहु कोई जी ।म। तुम नइ कहीयइ गुण जोइजी ।६
सेवक ने स्वामि निवाजउजी ।म। भव भवनी भावठि भाजउजी ।म।
जिनहरख मनोरथ पूरउजी ।म। चित चिंता सगली चूरउजी ।७म।

।।इति श्री शत्रुञ्जय मडण श्री रिखभदेव स्तवनं ।।

—.०.—

विमलाचल मंडन आदिनाथ स्तवन

❀ ढाल ❀

श्री विमलाचल सिखर विराजइ, अनुपम आदि जिणंद ।
युगला धरम निवारणउ, मरुदेवा केरउ नंद ॥ १ ॥
सनेही अरज सुणीजइ वे, अरे हां रिखभजी अरज सुणीजइवे ॥
करुणा सागर गुण वइरागर, नागइ नमइ अनेक ।
महीयल महिमा ताहरी गावइ, मन धरिय विवेक ॥ २ स. ॥
तुं दुख भंजण गंजण अरियण, रंजण भवियण लोक ।
भाग संयोगई भेटीयउ, मेटउ हिवइ भवना सोक ॥ ३ स ॥
पर उपगारी तुं सुखकारी, अधिकारी अरिहंत ।
सूरति देखी ताहरी, मुझ मन लागऊ एकंत ॥ ४ स ॥
बहुत दिवस मइ सेवा कीधी, तुझ साथइं मन लाइ ।
तउ पिणि प्रभुजी ताहरि, मइं मउज न पामी काइ ॥ ५ स. ॥
साहिबउ मुझ आस न पूरउ, जउ न करउ बगसीस ।
तउ पिणि माहरही तुं धणी, वाल्हेसर विसवावीस ॥ ६स. ॥
साचा पाच सरिखा साजन, खोटा काच न थाई ।
पालइ पूरि प्रीतड़ी, खल खंच न राखइ काइ ॥ ७ स. ॥
सेवा करतां धरतां हीयडइ, तउही न सीझइ काज ।
सोचि विचारि जोइज्यो तुझ, नइ वइ ए लाज ॥ ८ स. ॥
मन वंछित पूरउ दुख चूरउ, सेवक सुं धरि नेह ।
कहई जिनहरख कृपा करउ, आपउ अविचल शिव गेह ॥ ६ स.

॥ इति श्री विमलाचल मंडण आदिनाथ स्तवनं ॥

श्री आदिजिन वीनती आलोयणा स्तवन

सुण जिनवर सेत्रुंजा धणी जी, दास तणीं अरदास ।
तुज आगल वालक परेजी, हुं तो करूं वेखास रे जिनजी ।
मुझ पापी ने तार ।
तूं तो करुणा रस भर्यो जी,तुं सहुनो हितकार रे जिनजी ।१।
हुं अवगुणनो झर······गुण नो नहीं लवलेश ।
परगुण पेखी नवि शकुं जी, केम संसार तरेस रे जिनजी ।।२मु.।।
जीव तणा वध में कर्या जी, वोल्या मृपावाद ।
कपट करी परधन हर्याजी, सेव्या विषय सवादरे जिनजी ।३मु.
हुं लंपट हुं लालची जी, कर्म कीधां केई कोड ··· ···।
त्रणभुवनमां को नहीं जी, जे आवे मुज जोड रे जिनजी ।।मु४।।
छिद्र परायां अहनिशे जी, जोतो रहुं जगनाथ ।
कुगति–तणी करणी करीजी,जोड्यो तेह शुं साथरे जिनजी।५मु.
कुमति कुटिल कदाग्रही जी, वांकी गति मति तु······ ।
वांकी करणी माहरी जी, शी संभलावुं तुभ्भ रे जिनजी ।६मु।
पुन्य विना मुज प्राणिउं जी, जाणे मेलुं रे आथ ।
उंचां तरुवर मोरीयां जी, त्यांही पसारे हाथ रे जिनजी ।७मु.।
विण खाधां विण भोगव्यांजी, फोगट कर्म वंधाय ।
आर्त्त ध्यान मिटे नहींजी, कीजे कवण उपायरे जिनजी ।।८मु।।
काजल थी पण शामला जी, मारा मन परणाम ।
सोणा मांही ताहरूं जी, संभारूं नहीं नाम रे जिनजी ।.९मु.।।

मुग्ध लोक ठगवा भणी जी, करूं अनेक प्रपंच ।
कूड कपट वहु केलवी जी,पाप तणो करूं संच रे जिनजी ।मु१०
मन चंचल न रहे किमे जी, राचे रमणी रे रूप ।
काम विटंमणशी कहुँजी,पडीश हुँ दुरगति कूप रे जिनजी ।११मु।
किश्या कहुं गुण माहराजी, किश्या कहुं अपवाद ।
जेमजेम संभारूंजी हियेजी, तेम तेम वधे विखवाद रे जि. ।१२।
गिरूआ ते नवि लेखवेजी, निगुण सेवक नी वात ।
नीच तणे पण मंदिरे जी, चंद्र न टाले जोतरे जिनजी ।।मु.१३।
निगुणो तो पण ताहरो जी, नाम धरावुं रे दास ।
कृपा करी संभारजो जी, पूरजो मुज मन आस रे जिनजी ।मु१४
पापी जाणी मुज भणी जी, मत मूको विसार ।
विष हलाहल आदर्योजी, ईश्वर न तजे तासरे जिनजी ।१५मु।
उत्तम गुणकारी हुवे जी, स्वार्थ विना सुजाण ।
करसण चिंते सरभरे जी, मेह न मांगे दाण रे जिनजी ।१६मु ।
तुं उपगारी गुणनिलो जी, तुं सेवक प्रतिपाल ।
तुं समरथ सुख पूरवाजी, कर माहरी संभाल रे जिनजी ।१७मु।
तुजने शुं कहिये घणो जी, तुं सहु वाते जाण ।
मुजने आजो साहिवाजी,भव भव ताहरी आण रे जिनजी ।१८मु
श्री शत्रुञ्जय राजियो जी, मारु देवी नो नंद ।
कहे जिनहरष निवाजज्यो जी, देज्यो परमानंद रे जिनजी १९मु

इति श्री आदिजिन वीनती आलोयणा स्तवन

सोवनगिरि आदिनाथ स्तवन

प्रथम जिणेसर प्रणमीयै रे, वाल्हा सोवनगिर सिणगार रे।
लागी २ प्रभु सुं प्रीत अपाररे, म्हांरे २ तुं हिज प्राण आधार रे।
दीजे २ मुझने सुख सिरदार रे,कीजे २ मुझसुं प्रभु उपगार रे।१।
साहिबो सेवो रे सुखकार। महिमा थारी रे महियलै रे वाल्हा।
देवल नित गहगाट रे, नीको नीको अजब बण्यो थारो घाट रे।
आवै आवै नर नारी घाट रे, नाचे नाचे रंग मंडप चौ नाट रे।
पांमै पांमै शिव नगरी नौ वाट रे ॥ २ ॥
अन्तरजाम मांहरा रे वाल्हा, एक सुणो अरदास रे।
पूरो २ माहरा मननी आसरे, मुझनें मुझनें प्रभुजी नो वेसास रे।
दीठा२ हियडै मधि उल्हास रे, जाणूं २ मेल्हीजे नहीं पास रे।३।
दीठां ही दौलत हु देवे वाल्हा, पूजे वंछित कोड़ रे।
सेवे सेवे जे तुझने करजोड़ रे, जावे नावे तेहनैं काइ खोड़ रे।
थारी२कोण करे प्रभु होड़रे,साहिव मुझनैं भव वंधनथी छोड़रे।४।
मूरत मोहण वेलड़ी रे वाल्हा, रलिया लो तुझ रूप रे।
सोहे २ प्रभुजी अधिक सरूप रे, दीये २ सुन्दर वदन अनूप रे।
जोतां २ जायै ?लद दुख धूपरे,माने माने मोटा सुरनर भूप रे।५।
मात पिता प्रभु तुं धणी रे वाल्हा, तुं ही जीवन प्रांण रे।
वाल्हो२ माहरौ तुं दीवाणरे, हुंतो प्रभुजी सीसधरूं तुझआंण रे।
तूं तो जाणे सगलवात सुजाणरे भव२माहरा तुं हिज देवप्रमाणरे।६
अरज सफल कर माहरा रे वाल्हा, सफल करो मन खंत रे।

भेट्यो भेट्यो भय भंजण भगवंतरे, चूरो२ सगली माहरी चीत रे।
दीजे मुझने सुख अनंत रे, चरणे लाग्युं इम जिनहरख कहंत रे।

इति श्री आदिनाथ स्तवन

विमलाचल मंडण आदिनाथ स्तवन

अम्मां मोरी सांभल वात हे।
अम्मां मोरी श्री विमलाचल–तीरथ भेटिये हां, हांजी।
कीजै गिरमल गात हो।
अम्मां मोरी दुरगत ना दुख दूरे मेटीयै हो ॥ हां जी ॥१॥
सेत्रुंजे तीरथ सार हे, सीध अनंता सीधा ऊपरै हे हांजी।
भेटे जे नर नार हे, नरक अने तिरजंच तस टरै हे हांजी ॥२॥
सांम्हा भरता पाव दे, पाप कदे मिट जाये आपदा हे।
हांजी दीठां तीरथ राव हे, पांमीजै मन मानी संपदा हे ॥३॥
हांजी हीयडै हरख न माइ हे,चहिरी पालुं घर थी निकल हे।
हांजी पालीतणै जाइ हे,ललित सरोवर झालुं मन रली हे।४।
हां जी निरमल होइ शरीर हे, आइ जिणेसर को सर पूजियै हे,
हांजी त्रूटै करम जंजीर हे, भाव वणे जिनराज जुहारिहै हो।५।
हांजी वलि पूजुं मन रंग हे, राइण हेठल पगला प्रभुतणा हो।
हांजी खरत्तर वसही सुरंग, अदवुदनाथ जुहारुंप कलाप।६।
हांजी पांडव माही ठांण रे, टुंक निहालुं सुरदेवा तणो हो।
हांजी सिववारी सहिनांण हे,सिधवड़ देखण हरख हियौ घणौ।७

हांजी पूरव निज मन कोड हे, आउं विमल गिरि।
करि नीकी जातड़ी हो, हांजी मन सुध बेकर जोड़ि हे,
कहे जिनहरख गिणुं सफली घड़ी हे हां जी ॥८॥

॥ इति श्री आदिनाथ स्तवनम् ॥

श्री आदिनाथ बृहत् स्तवनम्

ढाल— चंद्रायण नी

सरसति सामिणि पाय नमुं रे, ज्ञान तणो दातारो।
श्री जिनवदन निवासिनी रे, व्यापि रही संसारो।
व्यापि रही सगलइ संसार, समरंता अज्ञान निवारइ।
गुणगाउं जिनवर मन भावइइं, सरसति सामिणि तुज्झ पसायइं।१
रिषभजी जी रे, मोरा साहिब तुं सिरताज, पार उतारीयइ रे।
मुझ आपउ अविचल राज, भव दुख वारीयइ रे आं.।
तुं सिद्ध खेत्र विराजीयउ रे, मुगति पुरी नउ रायो।
ताहरा गुण गावा भणी रे, मुझ मन उलट थायो।
मुझ मन उलट थाइ सदाई, श्रीजिन भगति हीयइ मुझ आई।
जामण मरण भीति हिवइ भागी, सिद्धि नायक सुं जउ लयलागी २
गुण गाऊं किम ताहरा रे, हूं तउ मूंढ गंवारो।
घूहड़ बालकस्युं कहइ रे, केहवउ छइ दिनकारो।
केहवउ जइ दिन करस्युं जाणइ, ताहरा गुण कुण मूढ़ बखाणई।
बुद्धि बिना कहउ किणि परि कहिचइ, ताहरा गुण नउपार न लहीयइ३
जे नर अंजल सूं मिणइ रे, चरम सायर नउ नीरो।

जीपइ जे नर गति करी रे, प्रलय काल समीरो ।
प्रलय समीर चलइ गति जे नर, हाथे ऊपाड़इ मन्दिर गिरि ।
चरणे नभ मारग अवगाहइ, ते नर तुझ गुण कहिवा चाहइ ।४।
मुझ मति सारू ताहरा रे, गुण गाउं जगदीसो ।
काले वाल्हे माहरे रे, मत मन धरीज्यो रीसो ।
मत मन धरीच्यो रीस सनेही, तुझ उपरि वारूं मुझ देही ।
तुं साहिव हुं दास तुमारउ, मुझ सूं ए संबंध विचारउ ॥ ५ ॥
ताहरा गुण तउ ऊजला रे, जिम निरमल गोखीरो ।
गंगा जल जिम निरमला रे, वहु मोलिक जिम हीरो ।
वहु मोलिक जिम हीरा निरमल,आसू चंद किरण सम उज्जल ।
सेवक रिदय कमल विचि सोहइ,ताहरा गुण सहुना मन मोहइ ।६
तुं चेतन गुण आतमा रे, तुं निगुंण निरलेपो ।
अकल सकल परमातमा रे, घट घट तुज्झ विक्षेपो ।
घट घट मध्य रह्यउ तुं व्यापी, तइ सहु सृष्टि तणी थिति थापी ।
तुं संकल्प विकल्प विवर्जित, चेतन अष्ट कर्म दल तर्जित ॥७॥
तुं शंकर शंकर थकी रे, तु ब्रह्मा ज्ञानीशो ।
ध्येय रूप धाता तुम्हे रे, तुं पुरुषोत्तम ईसो ।
तुं पुरुषोत्तम विष्णु विधाता, तुं जगनायक तुं जग त्राता ।
पुरुष प्रवर पुंडरीक सुं जाणुं, शंकर मूर्ति त्रिमूर्ति वखाणुं ॥८॥
तुं शिव नारी सिर तिलउ रे, तु शिव नारी कंतो ।
तु शिव नारी भोगवइ रे, अविचल सुक्ख अनंतो ।

अविचल सुक्ख सरोवर झीलइ, पातक तिल घाणी परि पीलइ ।
तुं निकलंक निसंक निरंजन, शिवनारी देखेवा अंजन ॥ ६जी ॥
रतिपति हठ मठ भंजवा रे, तुम दूअउ गजराजो ।
भव दुख अंवुधि बूडतारे, तुं जगनाथ जिहाजो ।
तुं जगनाथ अनाथ नउ स्वामि, निर्ममता धर तुं वहु नामी ।
तुं कमलाकर तुं परमेश्वर, रतिपति रूप परम परमेश्वर ॥१०॥
वाणी रूप वखाणीयइ, वाणी अमीय समाणो ।
वाणी प्राणी बूझवइ रे, वाणी गुणनी खाणो ।
वाणी गुणनी खाण वखाणी, मीठी जाणे साकर वाणी ।
वाणी सुणी हरखइ भव्य प्राणी, एहवी वाणी मइ प्रभु जाणी ।११
वारह परपद आगलइ रे, तुं आपइ उपदेसो ।
सघन घनाघन जिम श्रवइ रे, भागइ दुक्ख कलेसो ।
भागइ दुक्ख कलेश सहूना, बूझइ वाल वृद्ध नर जूना ।
त्रिभुवन लोक कलायर नाचइ, वारह परषद इणि परि राचइ ।१२
ताहरि वाणी सांभली रे, बूझइ नहीं नर जेहो ।
ते जाणे पशु सारिखा रे, अगन्यानी नर तेहो ।
अगन्यानी नर तेह कहीजइ, तुझनइ देखी जे नवि भीजइ ।
वहुल संसारी ते जाणीजई, ताहरी वाणी सुणि नवि रीजइ ।१३।
मइ तुझ वाणी पुरवइ रे, सुणीय हुखइ वहु वारो ।
पिणि आदर कीधउ नही रे, नाव्यउ भाव अपारो ।
नाव्यउ घणुं संसार अनंतउ,वाणी न सुणी रह्यउ भमंतउ ।१४।

समकित नाव्यउ साहिबा रे, पाम्यउ नही जिन धर्मो ।
उदय मोहनी कर्म नइ रे आव्या संसय भर्मो ।
संसय भर्म मिथ्यातइं पडीयउ, कुगुरु कुदेवइ तिहां बहु नड़ीयउ ।
करणी कीधी जेह कृपाल, समकित पाखइ जाणि पलाल ॥१५॥
तुं तारइ तउ हुं तरुं रे, नही तउ तरिवउ दूरो ।
बांह विलंबण दीजीयइरे, भवसायर भरपूरो ।
भवसायर मां भमतु राखउ, नरकादिक गति मां मति नांखउ ।
दीन दयाल दुखी हुं दीणउ, तारउ तउस्युं जाइ तुम्हीणउ ।१६।
मोटांनी सेवा थकीरे मोटा थईय इनाहो ।
रूंख प्रमाणइ वेलड़ीरे, पामइ वृद्ध अगाहो ।
पामइ वृद्धि जिसउ नर सेवइ, फूल तणी संगति तिल लेवइ ।
तउ फूलेल सहुआदरीयइ, मोटानी संगति थी तरीयइ ।१७।जी।
अपराधी मुझ सारिखउ रे, कोइ नहीं संसारो ।
दुख पीड़्यु मीड़्यु थकउ रे, अरज करूं वार वारो ।
अरज करूं तुझ सरिखउ दाता, दीसइ अवर न कोई त्राता ।
बगसि बगसि हिवइ करुं निहोरउ अपराधी हुं साहिब तोरउ ।१८।
अपराधी तार्या घणां रे, भय भंजण भगवंतो ।
मुझ वेला यंइ विचारणा रे, कांइ करउ गुणवंतो ।
कंइ करउ गुण वंत विचार, निगुणानी पिणि करिसउ सार ।
वयणेस्युं कहीयइ महाराज,निगुणा नी पिणि तुम नइ लाज।१६।
हिवइ तुझ वाणीमुझ रुचीरे, जिम साकर सुं दूधो ।

खरउकरी सहु सद्दहुंरे, सद्दहणा छइ सुद्धो ।
सद्दहणा छ्री मन माहे, हुं तरिस्युं तुझ चरण संबाहे ।
मुझ आधार एतउ छइ सांई, हिवइ मुझ पार ऊतारि गोसाई ।२०।
अंतरजामी माहरारे, दाखूं दीन दयालो ।
आंखडी ए आणी या लीए रे, मुझ सनमुक्ख निहालो ।
मुझ सनमुक्ख निहालउ नयणे, वार वार स्युं कहीयइ वयणो ।
अलवेसर तुं परउपगारी, अंतरजामी जाउं बलिहारी ॥२१॥जी॥
निरधारां आधारा तुं रे ,निवलां नइ बल तुज्झो ।
नाथ अनाथां नाथ तुं रे, राखउ भमतो मुझो ।
राखउ मुझनइ चउगति भमतउ, जामण मरण तणा दुख खमतउ ।
करि उपगार हिवइ हुं थाकउ, दे आधार त्रिजग तुम्ह साकउ।२२।
शत्रु ऊपरि खीजइ नही रे मित्र उपरि नहिं रागो ।
न्यायइं नीरागी कह्यउ रे, साचउ तुं वीतरागो ।
साचउ तुं वीतराग कहावइ, माया ममता दूरि रहावइ ।
विषय तणा सुख मूल न चाखइ, शत्रु मित्र स्युं समता राखई ।२३।
सुर नर काम विडंबीयारे, पड़ीया नारी पासो ।
दासतणी हरिरोल वइरे, खिणि मेल्हइ नही पासो ।
खिणि मेल्हइ नही पासइं खूता, लाज गमी जग माहि विगूता ।
स्वामी तुम्हें नारी वसि नाव्या, सुरनर सहुयइ नारि नचाव्या ।२४।
हुं बलिहारी ताहरीरे, तुं मुझ जीवन प्राणो ।
प्राण सनेही माहरा रे मिथ्या रयणी भाणो ।

मिथ्या रयणी भाण सरीखौ, कुमति कवच भेदण सर तीखौ ।
तुं जग माहे महिमा धारी, हुं बलिहारी स्वामि तुम्हारी ।२५।
मोहन मूरति ताहरीरे मुझ आतम आधारो ।
अवर न दीसइ के हमारे, जिन मुद्रा आकारो ।
जिन मुद्रा जिन माहे दीसइ, देखत ही मुझ तन मन हींसइ ।
करम्म भरम्म सहु भय भागउ, मोहन मूरतिस्युं चित लागउ ।२६।
मरु देवानउ लाडलउरे, नाभि न रिदं मल्हारो ।
मुगति पुरीनउ राजीयउ रे, दउलति नउ दातारो ।
दउदति नउ दातार कही जइ, एहतणी निति आणवंही जइ ।
निज मानव भव सफलउ कीजेइ, मरु देवा नंदन सलहीजइ ।२७।
सिद्धि भुवन जलनिधि शशीरे, अतिपद मास कुमारो ।
कीधा जिन चद्राउलारे, राय धण पुरहि मझारो ।
राय धणपुर चउमासउ कीधउ, जिनवर स्तविरसना फल लीधउ ।
दुःख भंडार संसारन भमिसुं, सिद्धि भुवन जिन हरपइ रमिसुं ।२८।

श्री आदि नाथ स्तवनम्

॥ढाल॥ नीदडली वइरिणी हुइरही ॥एहनी॥

रिषभजिन भावइं भेटीयइ, मेटीजइ हो भव भव ना पाय ॥रि॥
जेहनइ नामइ सुख पामीयइ, जायइ जायइ हो दुख ताप संताप ।१।
पुगइ पुगइ हो मन वंछित आस रि लहीयइ २होसुख लील विलास ।
जिणि जुगला धरम निवारीयउ, जिणि थापी हो जगनी सहुनीति।
निज राज्य देई सउपुत्र नइ, दान वरसी हो दीधउ भली रीति ।२।

संयम लीधउ मनरंगस्युं सुर सुर पति हो कीधउ उच्छवसार ।रि।
चउ मुष्टी लोच करी चल्या, प्रभुनइ नहीं हो पड़ि बंध लिबार।।३।।
निज करम खपावी घातिया, पाम्युं पाम्युं हो प्रभु केवल ग्यान ।।
देवे समव सरण रचना करीं,वारइ परषद हो आवीं सुणिवा वाणि।४।
तिहां संघ चतुर्विध थापीयउ, चउरासी हो थाप्या गणधार ।।रि।।
बहु वरस लगइ चारित्र पाली,जग जीवन हो पहुता मुगति मझारि।५
पहिलउ राजा पहिलउ यती, भिक्षा चरहो पहिलउ कहवाया ।।रि।।
पहिला पिणि कहीयइ केवली,वलीकहीं यइ हो पहिला जिन राय ।६
पांच नाम थया ए प्रभु तणां,सोहइ हो कंचण हो प्रभु वरण शरीर ।
जिन हरष कहइ करजोड़ि नइ,कीजइ मुझसुं हो निज संपति सीर७।

।। श्री आदिनाथ स्तवनम् ।।

ढाल—आघा आम पधारउ पूजि, अमघर वहिरण वेला ।।एहनी।।

आदि जिणेसर आज निहाल्या,टाल्या पातक भवना ।
सुद्ध थयउ आतम हिवइ माहरउ, करिसुं प्रभुनी स्तवना ।।१।।
मनड़ु माहरउ मोह्यउ जि रिषभ जिणेसरसामी ।
युगला धरम निवारण तारण,करम कठिण क्षयकारी ।
दरसण दीठां दउलति थायइ, जय जय जग उपगारी ।।२।।
करुणासागर गुण वयरागर नागर प्रणमे पाया ।
सुविधे सतर प्रकारी पूजा,करे सुरासुर राया ।।३।।
कंचन वरण सुकोमल काया,मूरति अधिक विराजइ ।
अलप संसारी प्रभु सुं राचइ, वहुल संसारी भाजइ ।।४म।।

सुन्दर छबी प्रभुजीनीं देखी, जेहनीं प्रीति न जागइ ।
भारी करमा ते जाणी जइ,तेहना दुख किम भागइ ॥५म॥
पर उपगारी तुम परमेसर, स्वारथ विणि निस्तारइ ।
तउ पिणि मूढ अधम मिथ्याती,तुझनइ रिदय न धारइ ॥६म॥
अवर देव मुझ दीठा नंगमइ, जे बहु अवगुण भरीया ।
भाग संजोगे मुझने मिलीया, साहिब गुणना दरिया ॥७म॥
नाभिराय मरुदेवा नंदन, कीरति त्रिभुवन सोहइ ।
कहइ जिनहरष हरष सूं जेता, भवियण जण मनमोहइ ॥८म॥

॥ इति ॥

आदि नाथ स्तवनम्

राग—राम गिरी

आदि जिन जाउं हुं बलिहारी ।
रिदय कमल मेरो कमल ज्युं उलस्यउ,सूरति नयणनिहारी ॥१॥
सुर सुरपति नरपति सब मोहे, मूरति मोहण गारी ।
सीतल नयण वयण प्रभु सीतल, सीतल कांति तुम्हारी ॥२आ॥
प्रभु कइ अंग विराजत सुन्दर, अंगीया अति सिणगारी ।
देखि देखि उलसत मेरी छतियां, अंखियां अमृत ठारी ॥३आ॥
युगला धरम निवारण जग गुरु, ईति अनीति निवारी ।
समता भजि संजम क्युं राचे, तजि माया संसारी ॥४आ॥
करम आठ काठ ज्युं जारे, सुक्ख अनंत लह्यारी ।
कहत जिनहरष सुगति पद दीजइ तुम हउ पर उपगारी ॥५आ॥

श्री आदिनाथ स्तवन

ढाल—प्रथम भीरावण दीठउ ॥ एहनी ॥

रिषभ जिणसर स्वामि, चरण नमुं सिरनामी ।
युगला धरम निवारण, भवदुख सायर तारण ॥१॥
वीनतड़ी अवधारु, जामण मरण निवारउ ।
तुं तउ करुणा नउ सागर, तुं प्रभु गुणमणि वागर ॥२॥
तुझ मूरति मन मोहइ, कनक वरण तनु सोहइ ।
ममता मोह निवायु, तइ समता रस धायु ॥३॥
तुझ दरसण दुःख भागइ, वाल्हउ सहु नइ तुं लागइ ।
तुं मुझ अंतर जामी, नामइ नव निधि पामी ॥४॥
धन-धन मरुदेवा माता, जिणि त्रिभुवन पति जाता ।
प्रगट्यूं त्रिभुवन दीवउ, जगनायक चिरजीवउ ॥५॥
सेवा सुरपति सारइ, देसण तन मन ठारइ ।
तुं प्रभु मोहण गारउ, तइ मन मोह्यउ हमारउ ॥६॥
बलिजाउं साहिब तोरी, आस्या पूरउ नइ मोरी ।
घणु घणु तुमने स्युं कहीयइ, तुमथी शिवपद लहीयइ ॥७॥
चाहइ चंद्र चकोरा, मेहागम जिम मोरा ।
चकवी दिनकर चाहइ, तिम मन मिलिवा उमाहइ ॥८॥
तुम्हे म्हारा मानीता ठाकुर, हुं तउ तुम्हारउ छुं चाकर ।
मुझ जिनहरष संभारउ, मत साहिबजी वीसारउ ।६।

❀ इति ❀

श्री आदिनाथ स्तवनं

ढाल—श्रावक लखमी हो खरचीयइ ।। एहनी ।।

म्हारा मनना मान्या रे साहिबा, निज सेवकनी अरदास रे ।
सांभली श्रवने करुणा करी, पुरउ मुझ मननी आस रे ।।१।।
म्हारा सिर नउ रे तुं तउ सेहरउ, म्हारा आतमनउ आधार रे ।
सेवक जाणी पोता तणउ, अलवेसर करि उपगार रे ।।२ म्हा।।
सुर सगला ही मइ मुंकीया, कांई पवन तणी परिजोइ रे ।
दुःख भांजइ जे दुखीयां तणा, तुझ पाखइ अवरन कोइ रे ।।३।।
करुणा कीजइ मुझ उपरइं, तुं तउ करुणावंत कृपाल रे ।
तुम नइ वइ हिवइ हुं दासवुं, दुखियांनी लाज दयाल रे ।।४।।
तुम चइ काइ कुमणां न थी, भरीयार ऋद्धिसिद्धि भण्डार रे ।
मुझ वेला कठिन थई रह्या, तेस्या माटइ करतार रे ।।५।।
तारइ बेड़ी जिम बूडतां, भीषण दरिया माहि रे ।
तिम भवसायर माहे पडियां, साहिब तारउ कर साहि रे ।।६।।
साहिब जी सु गुणाछउ तुम्हे, हुं तउ निगुणउ तुस तोल रे ।
तउही पिणि मुझनइ तारिस्युउ, निज विरुद निहाली अमोल रे ।७।
दीणा दीणा सुणि बोलना, भेदी जइ किम हीव जेह रे ।
ते साहिब नइ स्युं कीजीयइ, परिहरीयइ दूरइ तेहरे ।। ८ म्हा।।
संसारी सुर सहु स्वारथी, निगुणाति तउ निस नेह रे ।
दुरजन सारीखा दीसता, खिणि मांहि दिखालइ छेह रे ।।म्हा९।।
गुणनइ अवगुण जोवइ नही, गरु आ जे गुणे गंभीर रे ।

पर उपगारी तुझ सारीखा, आपइ अविचल सुख सीर रे ॥१०॥
उत्तमनी अविहड़ प्रीतड़ी, जगनायक प्रथम जिणंद रे ।
कर जोड़ी कहुं मुझ दीजीयइ, जिनहरख अचल आणंद रे ॥११॥

आदिनाथ स्तवन

ढाल—१ थेतउ अगलारा खडिया आज्यो, राय जादा सहेली
सहेली लाइज्यो राजि ॥ एहनी ॥

म्हेतउ साहिबां रे चरणे आया, सुख ताजा सनेही हो देज्यो राजि ।
म्हेतउ वाल्हांरा दरसण पाया ।सु.। म्हांरइ अमीयांरा पावस वूठा ।
म्हारा पातक गया अपूठा ॥ १ सु० ॥
नीकउ साहिबांरउ रूप विराजइ ।सु। दीठां भवतणी भावठि भाजइ ।
थांरी सूरति अधिक सुहावइ ।सु। देखी हीयड़लइ हरख न मावइ ।२
थेतउ भगतांरा अंतरजामी ।सु। थानइ वीनती करां सिर नामी ।सु.।
थांसु अलगा म्हांनइ कांइ राखउ।सु।मीठा साहिब मीठड़उ भाखउ ३
मोटा छेह न दाखइ किवारइ ।सु। मोटा आपणउ विरुद संभारइ ।
मोटारी मोटीमति छाजइ ।सु। मोटा लीयां मूंको करता लाजइ॥४॥

ढाल—२ वाटका वटाऊ वीरा राजि,वीनती म्हारी कहीयो जाइ,अरे कहीयो
जाइ । अब पके दोऊ नीबूअ पके, टपक टपक रस जाइ ॥ वी. एहनी ॥

प्राणरा वाल्हेसर म्हांरा एक वीनती, म्हारी मानिज्यो राजि ।
अरे मानिज्यो राजि ।
थे तउ पर उपगारी छउ हितकारी,सफल करे ज्यो म्हांरा काज ।५
वंछित दीजइ विलंब न कीजइ,लीजइ २ जस जगमांहि ।।वी. प्रा.॥

मो मन लागउ चोलतणी परि, थांसु प्रभु अधिक उछाहि ॥६वी.
कामण कीधउ मन हरि लीधु, हिवइ तुझ विणि न सुंहाइ ।वी.प्रा.।
जाणुं प्रभु पासइं रहुं उलासइं, चरण कमल चितलाइ ।७वी. प्रा.।
गुण रा दरिया थे छउ भरीया, अधिक अधिक सुख होइ । वी.प्रा.।
राजि निवाजउ मुझ दुख भाजउ, अधिक अधिक सुख होइ ॥वी.८।
सेवा सारूं सुख घउ वारू, मकरि मकरि हिवइ ढील ॥ वी. प्रा. ॥
भाणा (?) खड़हड़ न खमी जाये, मेल्हउ मत अवहील ॥९वी.प्रा.॥

ढाल—३ तंबूडारी बूंवट बूकइ हो चमरा, साहिबा लेज्यौ राजिंद लेज्यो । झिर मिर झिरमिर मेहां वरसइ, राजिंद रूडउ भीजइ ।।तं।। एहनी

प्रभुजी नइ सुरपति ढालइ हो चमरा, साहिब सोहइ राजिंद सोहइ ।प्र.।
सुरगिरि परिमाणु सुचि जलधारा, जोयंतां मनमोहइ ॥ १०प्र. ॥
सिंहासण मणिरयणे जडीया, ता परि स्वामि विराजइ ॥ प्र. ॥
जाण कि काया छवि कंचणसी, उदयाचल रवि छाजइ ॥११प्र.॥
सुरनर असुर नमइ पाय प्रभु के, आणी भाव अपारा ॥ प्र. ॥
मिलि मिली नृत्य करइ इंद्राणी, सफल करइ अवतारा ॥१२॥
ठकुराई अधिकी जिनजी की, देखण हीयडउ हींसइ । प्र. ।
करुणानिधि की होइ कृपा जउ, परतखो नयणे दीसइ ॥१३॥

ढाल—४ केता लख लागा राजा जी रइ मालीयइजी, केता लख लागा गढा री पोलिहो । म्हारी नणदीरा वीरा हो राजिंद ओलभउजी ।एहनी।

मोरउ मनमोह्यउ प्रभुजी रा रूप सुंजी,
देखि देखि मेंह घटा जिम मोर हो ।
म्हांरा मनडा रा मान्य वाल्हेसर सांभलउ जी ।

हुं तउ थाहरु दास निरास न मेल्हिज्यो जी ।
सेवक नइ तउ कहिवा नउ छइ जोर हो ॥१४म्हां॥
बालक पिणि मागइ मा पासइ रोइनइ जी ।
बीजउ कोई बालकनउ नही प्राण हो ॥म्हां॥
सेवक नइ देखी नइ दीन दया मणा जी ।
पूरउ पूरउ आस विलास सुजाण हो ॥म्हां१५॥
थांहरइ तउ टोटउ नही किण ही वात रू जी ।
थांहरइ तउ भरीया छइ रिद्धि भंडार हो ॥म्हां॥
जीवन जी कीजइ जउ निज मन मोकलउ जी ।
खरच न वइसइ एक लिगार हो ॥म्हां१६॥
केता गुण कहुं एकणि जीभडी जी ।
केता करूं थांहरा वखाण हो ॥ म्हां ॥
देवाधिप थांहरा गुण न कही सकइ जी ।
तउ बीजउ कुण गुण नउ दाखइ प्रमाण हो ॥१७म्हां॥

ढा— ५ आठ टके कंकणउ लीयउ री नणदी । थरकि रह्यउ मोरी बाह ।ककणउ मोल लीयउ ॥ एहनी ॥

रूप वण्यउ थांहरउ भलउ रे जिनजी, थिरकि रह्यउ थिरथंभ ।
मो मन लागि रह्यउ ।
अरे जइसइ चुंबक लोहा रीति । मो मन लागि रह्यउ ।
नाभिनंदन सुं प्रीतडी रे जिनजी, चित रही लाग असंभ ।१८मो.।
राति दिवस हीयडइ वसइ रे । जि। जिम चकवी मनभाण ।मो.।
तुझ पासइ काई मोहणी रे ।जि। ताहरइ वसि थया प्राण ।१९मो. ।

श्री विमलाचल राजीयउ रे । जि । तुं त्रिभुवन दीवाण । मो. ।
मन २ तुम्ह सुं प्रीतडी रे ।जि। थाज्यो मोरा जीवन प्राण ।२०मो.।
मरुदेवा नउ लाडलउ रे । जि । रिषभ जिणेसर राजि । मो. ।
माहरी एहीज वीनती रे ।जि.। कहइ जिनहरख निवाजि ।जि२१।

आदिनाथ स्तवन

ढाल—थारी महिमा घणी रे मंडोवरा ॥ एहनी ॥

विमलाचल साहिब सांभलउ, जगनायक रिखभ जिणंद हो ।
दाखविसुं मननी वातडी, हीयडइ धरि परम आणंद हो ॥१वि॥
आज जनम सफल थयउ माहरउ,आज सफल थया मुझ नइंण हो ।
मानइं भेट्या श्री रिखभजी, आज सफलथया दिन रइंण हो ॥२॥
सामण डाल्युं प्रभुजी तणा, सनमुख देखी रहुं रूप हो ।
मन मोह मगन राची रह्यउ, एतउ मूरति देखि अनूप हो ॥३वि.॥
तुम्ह पासइ छइ काई मोहणी, मुझ नयण थई रह्या लीण हो ।
चंपक लोहा जिम मिल गया, विणि दिठां थायइ दीण हो ॥४वि॥
मइं मन दीधूं छइ माहरूं, तुमनइ लेज्यो संबाहि हो ।
पोता नइ चरणे राखिज्यो, लेखवीज्यो पांचां माहि हो ॥ ५ वि ॥
ताहरा सेवक तुम्हनइ तजी, जास्यइ अणपूगी आस हो ।
इणि वातइं लाज नही रहइ, जोज्यो प्रभु रिस्य विमासी हो ।६वि।
एतला दिन तुम सुं अबोलणउ, जाणीजइं मइं कीध हो ।
तिणि कापनको माहरउ सरूयुं ,तुम्हे पिणि काई मउज न दीधहो ।७

जे राचइ पिणि विरचइ नही, ते साथइं मिलीयइ धाइ हो।
राचीनइ जे विरची रहइ, तिणि सुतउ मिलइ वलाइ हो ॥८वि॥
राज सुगति तणउ तुम्हे भोगवउ, कुमणा नही किणि ही वात हो।
अमनइ मूं क्या वीसारनई, रिसहेसर एसी धात हो ॥ ९ वि ॥
पोताना गुण जोई करी, करिज्यो जिम रुडुं थाइ हो।
लेखविज्यो सहुनइ सारिखा, मन भ्रांति म धरिस्यउ कोई हो।१०।
हित नयणे साम्हउ जोइज्यो, एतलइ मुझ लाख पसाव हो।
जिनहरष सेवक सुखीया करउ, एतला मइ सगलउ भाव हो।११।

धुलेवा आदि-जिन-स्तवन

राग-काफी ताल पजाबी

जिन तेरी छाय रही हैं, महिमा जग अभिराम ॥जि०॥
नाभि नृपति मरुदेवी को नंदन, धुलेवे जग धाम ॥१ जि०॥
विपति विडारण भक्ति उधारण, तारण त्रिभुवन श्याम ॥जि.२॥
तुम दरशन मुझ चित नित वसियो, ज्यूं लोभी मन दाम ॥३॥
महर निजर निहारो मेरे साहिब, पूरो वंछित काम ॥ जि.४ ॥
श्री जिनहरष सुरिंद के साहिब, आतम तो विसराम ॥ जि. ५ ॥

शत्रुञ्जय स्तवन

अवला आखै सगलां साखै, प्रीतम मुझ वीनती सुणौ।
चालौ श्री विमलाचल भैटण, सफल जुमारौ कीजै आपणौ ॥१॥
तुरत कारीगर खातीडा तेडावौ, वहिली घड़ावौ पातली।
दोय सोरठिया वलद जोतावो, इतरी पूरो मन रली ॥२॥

मारग चलतां छहरी पालौ, टालो मनसा पाप नी ।
सचित त्रिधार थन भूल न कीजै, ले लाहो लक्ष्मी छतां ॥३॥
थावच्चो सेलग शुक मुनिवर, पांडव वलभद्र जाणीयै ।
साधु अनंता उपरि सीधा, तिण सिद्ध क्षेत्र वखाणीयै ॥४॥
पूर्व निनांणु वार प्रथम जिन, इण गिरि आई समोसर्या ।
श्रीमुख पंडुरगिरी गुण गावै, श्रीमंधर जिन गुण भर्या ॥५॥
जिम कुंजर मांहे ऐरापति, देवां मांहि सुरपती ।
तिम सेत्रुंजो तीरथ मांहे, जिम सतियां सीता सती ॥६॥
सुकलीणी गुणलीणी भाखे, कीजे हो प्रीतम जातडी ।
जिण वेला ऊजलगिर भेटीस, ते जिनहरष सफल घडी ॥७॥

आदिनाथ सलोको

प्रणमुं सरसति सुमति दातारो, हंस गमण पुस्तक वीणा धारो ।
नाम लीयां दिन होइ सवाडो, आदि जिणेसर कहिस्युं पवाडो ॥१॥
पूरव देस देसां सुं लहीजै, नगरी विनाता नाम कहीजै ।
तास धणी छौ नाभि नरिंदो, राज करै तिहां अभिनव इंदो ॥२॥
मुरदेवा मांन घणै पटराणी, रूपै दीदार जांणै इन्द्राणी ।
सेज सुहांली मंदिर सूती, सुपन लहै दूसात सपूती ॥३॥
गैवर धोरी सादूलो लच्छी, दाम सिसी रवि धजा अपूछी ।
कुंभ पदमसर उदधि सरालै, रतन तणो ढिग अगनि निहालै ॥४॥
जागी मरुदेवा सुपन लहंती, राइ कन्है गई हरख धरंती ।
सुपन कह्या फल नाभि प्रकासै, अंगज निजघर होसी इम भासै ॥५॥

गरभतणी थिति पूरी जी हूई, जनम्या रिषभ जिण हरख्या सकोइ।
छपन दिसाकुमरि मिलि गायौ, चौसठि सुरपति अचल न्हवायौ।६।
माता मरुदेवा लूण उतारै, थारै दरसण रै जाउँ बलहारै।
आवो कीकाजी गोद हमारी, पूत बलईयां ल्युं नित थारी ॥७॥
माइडी साम्हो देखि नान्हडीया, आज रीसांणा किणसुं जी लडीया।
पाईं सोवण में बाजे घूघरीया, मात सनेही गावै हालरीया ॥८॥
सैसव घर तरुणायौ जी आयो, राज तणौ पद रिख जी पायो।
नाभि नरेसर हिव वड़ दावै, रिपभ विवाह करै परणावै ॥९॥
सुभ दिन सुभ मुहूरत सुभ वारो, वांभण थप्यो लगन उदारो।
पंच सवद धुरि मंगल वाजै, ढोल निसांणे अम्बर गाजे ॥१०॥
वेह वणाइ मांडी जी चंवरी, लाडिली आई अभिनव कुमरी।
षोडस तण सिनगार वणाया, मांडणा कर पग रूडा मंडाया।११।
कोर जुगल इक साड़ी पहिरावी, पहिरण चरणा सोहे सवाई।
सोवन चूडलो वांह विराजै, रतन जडित कंचू उर छाजै ॥१२॥
हार जडित मणि कंचण माला, कांने कंचण थड़ कहरती उजवाला।
नाक सोवन ची लछ लहकै, काजल नयणां संग गहकै ॥१३॥
तिलक सोहै सिर गुंथी जीवणी, सुनंदा सुमंगला सारंग नैणी।
गीत भीणै सुर कामिणी गावै, विप्र तिहां हथलेवो जोड़ावै ॥१४॥
च्यार फेरा विध सेती जी फिरिया, रिषभ जिणेसर परण उतरीया।
गौरी जी गावै तोडरमल जीतौ, वीवाह हुऔ सबलै वहीतौ ॥१५॥
भरत प्रमुख सौ दीकरा हुआ, वांटि नै देस दीया जू जूआ।

दांन संवच्छर तिण खिण दीधौ, आदि जिणेसर संयम लीधौ।१६।
करम खपाई केवल पायौ, समवसरण तिहां देवे रचायौ।
वारह जी परिषद आगलि भाखै, धर देसण जग नायक आखइ।१७।
चतुर्विध संघ रिषभ जी थापै, त्रिभुवन मांहे कीरति व्यापै।
भवियण नर प्रतिबोध दीयंती, शुभध्यांन मन धरि लाभ लियंति।१८।
आठ करम नौ अंत करी नै, वेला तप केरो लाभ वरी नै।
प्रथम जिणेसर मुगत सिधाया, इम जिणहरखै भलै गुण गाया।१५।

इति श्री आदिनाथ सलोको समाप्त

श्री अजितनाथ स्तवन

ढाल—अलबेला नी ॥

अजित जिणेसर माहरीरे लाल, अरज सुणउ महाराज, सुविचारी रे।
आस करी हुँ आवीयउ रे लाल, पूरउ वंछित काज ॥सु.१अ० ॥
पोताना जाणी करी रे लाल, दीजइ अविचल दान ।सु०।
महिमा वाधइ ताहरी रे लाल, सेवक वाधइ मान ॥सु.२अ॥
अंतरजामी माहरी रे लाल, जउ नहीं पूरउ आस ।सु०।
तउ बीजउ कुण पूरिस्यइ रे लाल, जोज्यो हीयइ विमासी ।सु.३अ।
सेवक दुखीया देखिनइ रे लाल, नावइ महिर लिगार ।सु०।
तउ ते दुख स्युं भांजिस्यइ रे लाल, स्युं करिस्यइ उपगार ।सु.४अ।
पाम्या नउ फल तउ सही रे लाल, जे दीजइ निज हाथ ।सु०।
संची कोइ न ले गयुं रे लाल, जग जीवन जगनाथ ॥सु.५अ॥
प्रभु लोभी हुं लालची रे लाल, किम चालिस्यइ कहउ एम ।सु.।

लीधा विणि रहिस्युं नही रे लाल,जाणउ तिम धरु प्रेम ।।सु.६।।
हुं तउ सेवक ताहरउ रे लाल, जगजीवन जगदीस ।सु०।
तुझ नइ छोडी साहिबा रे लाल,अवर न धारूं सीस ।।सु.७अ।।
तुं प्रभु करुणा रस भर्युं रे लाल,हुं करुणा नउ ठाम ।सु०।
जिम जाणउ तिम राखिज्यो रे लाल,माहरइ तुमस्युं काम ।।सु.८अ।।
जउ तुझ नाम हीयइ वस्यउ रे लाल,तउ जाग्यउ मुझ भाग ।सु.।
सा पुरुसां नी संगतइं रे लाल, लहीयइ सुख सोभाग ।।सु.९अ।।
इकतारी कीधी खरी रे लाल, मइं साहिब तुम साथि ।सु०।
भव भव तुं मुझ वालहउ रे लाल,भवभव तुं मुझ नाथ ।।सु१०अ।।
साहिब सफली कीजीयइ रे लाल, सेवकनी अरदास ।सु०।
कहइ जिनहरख मया करी रे लाल,दीजइ सिवपुर वास ।सु.११अ।

श्री तारंगा मंडण अजितनाथ स्तवन

ढाल—अल वेलानी

मन मां हुंस हुंती घणी रे लाल,धरतउ अंग उमेद,गुणवंता रे ।
भावइं श्री भगवंतनी रे लाल, जात्र करूं द्रूवेद ।।गु.१।।
तारंगइ रंगइं करी रे लाल, भेट्या अजित जिणंद ।गु०।
जनम जीवित सफलउ थयउ रे लाल,आज थया आणंद ।गु.२ता.।
मन विकस्यउ तन उलस्यु रे लाल,हीयडइ हेज विशेष ।गु०।
नयण कमल विकसित थयउ रे लाल,प्रभु मुख सिसिहर देखि ।गु.३
पाम्यउ दरसण ताहरू रे लाल,हुं थयुं आज निहाल ।गु.।
समकित मुझ निर्मल थयउ रे लाल, भागउ मिथ्या साल ।गु.४।

आंखडीए अलजउ हुंतउ रे लाल, चाहंतां मइ दीठ ।गु.।
जनम सफल थयुं माहरउ रे लाल, पाप गया सहु नीठ ।गु.५।
आठ पहुर आगल रही रे लाल, सेऊं ताहरा पाय ।गु.।
तउ ही थाक चडइ नही रे लाल, ऊजम विमणु थाय ।।गु.६ता.।।
देव अवर तु छइ घणा रे लाल, ते सहु दीठ सदोष ।गु.।
दोष रहित तुं गुण भर्युं रे लाल, न्यायइ पाम्यउ मोख ।गु.७।
तिणि कारण हुं ताहरइ रे लाल, सरणइ आयउ आज ।गु.।
सु नजर करि धरि प्रीतडि रे लाल, पूरउ वंछित काज ।।गु.८ता.।।
संसारी सुख सुं नही रे लाल, माहरइ कोई काज ।गु.।
हुं मांगुं करजोडि नइ रे लाल, आपउ अविचल राज ।।गु.९ता.।।
तुझ मूरति मन मोहणी रे लाल, रहीयइ सनमुख जोई ।गु.।
तउ ही लोयण लालची रे लाल, भूख्या त्रिपति न होइ ।।गु.१०।
निज सेवकनी वीनती रे लाल, वाल्हेसर अवधारि ।गु.।
कहइ जिनहरख कृपा करी रे लाल, चउगति भ्रमण निवारि ।११।

श्री संभवनाथ स्तवन

।। ढाल ।।

निशि दिन हो प्रभु, निशि दिन ताहरउ ध्यान,
हीयडा हो प्रभु हीयडा थी तुं नवि टलइ जी ।
परतखि हो प्रभु परतखि न मिलई आई,
सूतां हो प्रभु सूता हो सुपना मां मिलइ जी ।।१।।

ते निसि हो प्रभु ते निसि सुख में जाई,
दरसण हो प्रभु तुझ देखी करी जी ।
हीयडउ हो प्र० हेज भराई,तन मन हो प्र. आंखडीया ठरीजी।।२।।
सूधइ हो प्र. मन सुध भाव, सेवा हो प्र० कीजइ ताहरी जी ।
तउ तुं हो प्र. करुणा आणी, आस्या हो प्र० पूरइ माहरीजी।।३।।
ताहरइ हो प्र. तउ नव निद्धि,कुमणा हो प्र०नही किणी वातरीजी ।
लहीयइ हो प्र. सुखनी वृद्धि,ताहरी हो प्र. सुनजर हुइ खरीजी ।४।
सहुनउ हो प्र० तुं रखवाल, तारक हो प्र. तुं त्रिभुवन तणउजी ।
भवदुख हो प्र. माहारा टालि, तुमने हो प्र. स्युं कहीयइ वणउजी।५।
मोटा हो प्र. न दीयइ छेह, जाणी हो प्र० सेवक आपणा जी ।
राखइ हो प्र. निवड सनेह, मोटां हो प्र. गुण मोटां तणाजी ।।६।।
त्रीजउ हो प्र. संभवनाथ, सेना हो प्र. नंदन वंदीयइ जी ।
पूजी हो प्र० प्रभुना पाय, कहइ जिन हो प्र. हरख आणंदीयइजी ।७।

संभवनाथ स्तवन

ढाल—रसीयानी

सुखदायक संभव जिन सेवीयइ,भेली अधिकउ रे भाव । मोरा आतम
त्रिकरण सुध प्रभुस्युं चित लाईयइ, चूकी जइ नहीं रे चाव ।मो.१
जेहनइ नामइ तन मन ऊलसइ, दउलति दीठां रे थाइ । मो० ।
भेट्यां भावठि भाजइ भव तणी, सेव्यां सहुं दुख रे जाइ ।मो. २ सु.।
दास निरास न मूंकइ आपणा, पूरइ वंछित काज । मोरा० ।
मोटा ते मन राखइ सहुतणा, अधिक वधारइ रे लाज ।।मो. ३।।

आशा लूधा आवइ आदमी, ताहरी करिवा रे सेव ।मो.।
सेवा थी आशा सगली फलइ, तुं जग मोटउ रे देव ।।मो.४सु।।
लोक सहु कलि जुगना स्वारथी, स्वारथ राचइ रे देखि । मो. ।
तुं स्वारथ सहुको ना पूरवइ, तिणि तुझ अधिकी रे रेख ।।मो.५।।
अण तेड्या आवइ सुर नर घणा, नापइ केहनइ रे ग्रास ।मो०।
तउ पिणि राति दिवस चरणे रहइ, खिणि मेल्हइ नही रे पास ।६।
मोहन मूरति अनमिष जोवतां, त्रिपति न नयणे रे होइ ।।मो०।।
घणा दिवसना भूख्या लालची, हरषित थायइ रे जोइ ।मो.७सु.।
गुणवंता साहिवनी चाकरी, कीधी अहली रे न जाइ । मो० ।
पाथरसीनी पिणि सेवां कीयां, कांइक फल प्रापति रे थाइ ।मो.८।
चिंतामणि पाहण पिणि पूरवइ, सेवा करतां रे रिद्धि । मो० ।
तउ प्रभु सेवाथी अचरज किसउ, लहीयइ अविचल रे सिद्धि ।६।
एक तारी करि रहीयइ एह सुं, धरियइ एहनी रे आण । मो. ।
दास निवाजइ तउ पोतातणा, हेजइं न पडइ रे हाणि ।।मो.१०।।
सेना राणी राय जितारि नइ,- निरमल कुल अवतंस । मो० ।
कहइ जिनहरख हरख हीयडइ धरी, सोह वधारण रे वंस ।सो.११।

श्री सुमतिनाथ स्तवन

ढाल—तप सरिखउ जग को नही ।। एहनी ।।

अरज सुणाउ जिन पांचमां, साहिव दीन दयाल हो, जिनवर ।
निज सेवक जाणी करी, करुणा करउ क्रिपाल हो, जिनवर ।१अ.।
हुं चउगति दुख पीडीयउ, तुझ चरणे महाराज हो । जि० ।

आव्यउ ऊमाहउ धरी, पीडि गमउ रहे लाज हो ।।जि. २अ. ।।

सेवक ऊपरि स्वामि नी, मीटी भली जउ होइ हो । जि० ।
तउ दुसमण ते सांमहउ, देखि सकइ नही कोइ हो । जि. ३ अ.।

राग द्वेष मोटा अरी, आठ करम बलवंत हो । जि० ।
विषय कषाय करइ दुखी, जीपावउ अरिहंत हो ।। जि० ४ अ.।।

भावठि भागी भवतणी, थया अकरमी देव हो । जि०।
मुझने पिणि तुझ सारिखउ, करउ कहुँ नित मेव हो ।। जि०५।।

दास निवाजइ आपणा, साहिबनी ए रीति हो । जि० ।
सेवक ते साहिब तणे, चरणे राखइ प्रीति हो ।। जि० ६ अ०।।

सुरनर नारी तुझ भणी, सेवइ कोडा कोडि हो । जि० ।
माहरइ साहिब एक तुं, अवर नही तुझ जोडी हो ।।जि०७ अ.।।

तुं ठाकुर त्रिभुवन तणउ, सहु को ना भांजइ दुख्य हो । जि० ।
मुझ मांहे खोडि किसी, जे आपउ नही सुख्य हो ।।जि० ८ अ.।।

मोटां नइ कहतां थकां, आवइ मनमां लाज हो । जि० ।
पिणि मांगु छुं लाजतऊ, मुगति तणउ द्यउ राज हो ।।जि.९अ.।।

तेहवउ कोई दीसइ नही, जे भांजइ भव भीडि हो ।जि.।
कहेतां लागइ कारिमउ, कुण जाणइ परपीडि हो ।जि.१०अ.।।

पर पीडा जग गुरु लहइ, समरथ भंजण हार हो ।जि.।
भव भव थाज्यो तेहनउ मुझ जिनहरख आधार हो ।।जि.११अ.।।

—XXX—

चंद्रप्रभ-स्वामि-स्तवन

ढाल-फागनी

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी शिवगामि अवधारि,
भव दुख वारक तारक सार करउ करतार ।
चंद्रवरण सुख करण धरण जगमइ जस वास,
सेवकनी मन संचित वंछित पूरउ आस ॥१॥
तुं सुखदायक नायक सुरनर सेवइ पाय ।
समता सागर गुण आगर संपूरित काय ॥
वदन सदन अमृत अमृत सूं ओपम जास ।
देखी नयण चकोर मोर जिम खेलइ रास ॥२॥
अठम चंद्र तणी परि सोहइ भाल विशाल ।
नयण कमल दल सुंदर निर्मल गुण मणि माल ॥
तुं साहिब हुं सेवक सेव करुं कर जोडि ।
चरण ग्रह्या तुम चा अमचा भव बंधण छोडि ॥३॥
चउरासी लख पाटण भमीयउ गमीयु काल ।
दुक्ख अनंत सह्या न कह्या जाये प्रतिपाल ॥
मोटा ते सहु जाणइ ज्ञान प्रमाणइ वात ।
कहतां पार न लहीये कहीयइ जउ दिन राति ॥४॥
अरज करूं छुं एक विवेक हीया मइ आणि ।
द्यउ सेवा ताहरी प्रभु माहरी एहिज वाणि ॥
अवर न मागुं किम ही जिम ही तिम ही आपि ।

अविचल सुख नी सीर धीर माहरा दुख कापि ॥५॥
जग पालक तुझ आगलि बालकनी परि बोल ।
बोलुं छुं पिणि ते नवि थायइ बोल नी टोल ॥
हासा मेइ पिणि हसतां रमतां कहीयेइ जेह ।
पोता ना जाणी मावीत्र प्रमाणइ तेह ॥६॥
चंद्रपुरी नयरी महसेन नरेसर तात ।
लंछण चन्द्र विराजइ राजइ लखणा मात ॥
स्वामि तुम्हारउ देह धनुष एक सउ पंचास ।
तुं ठाकुर भव भव जिन हरख निवाजु दास ॥७॥

अनन्त–प्रभु–स्तवन

राग—काफी

मैं तेरी प्रीत पिछानी हो प्रभु, मैं तेरी प्रीत पिछानी ।
मन की बात कही तुझ आगल, तो भी महर न आणी हो प्रभुजी।मैं१।
हिरदे नाम लिख्यो मति गहिलो, डरपूं पीवत पानी हो ।
आहू न आदर कबहूं पायो, ऐसी मोहबत जानी हो प्रभुजी ॥मैं२॥
सुपने ही से दर्शन नहीं दियो, अब तुटेगी तानी हो ।
कहे जिनहर्ष अनंत प्रभु, मोकुं दीजे निज सहनाणी हो ॥मैं३॥

श्री शांतिनाथ–स्तवन

ढाल—मुझ हीयडउ हेजालुअउ, एहनी

शांति जिणेसर वीनती, सांभलि माहरी रे एक ।
तुझ विणि किणि आगलि कहुं, तुं साहिब सुविवेक ॥१शां॥

ज्ञानी दानी तुं सुख तणउ, जाणइ परनी रे पीडि ।
सरणे आव्यउ हुं ताहरइ, भांजउ भवनी रे पीडि ॥२शां॥
दुख कहीयइ हीयडा तणउ, उत्तम माणस जोइ ।
जिणि तिणि आगलि बोलतां, सहु मां हासी रे होइ ॥३शां॥
तुझ सरिखउ जग को नहीं, करुणावंत कृपाल ।
सेवक ने सुख आपिवा, तुं सुर वृत्त रसाल ॥शां४॥
तारक तुं त्रिभुवन तणउ, गावइ सहु जसवास ।
जस साचउ करि आपणउ, पूरउ सेवक आस ॥५शां॥
पारेवउ भव पाछिलइ, राख्यउ देई निज काय ।
गरभ रही प्रभु माय नइ, शांति करी जिनराय ॥६शां॥
दीत्ता अवसर सहु तणा, दरद्र गम्या देई दान ।
ति मांगुं द्यउ एतलउ, साहिब अविचल थांन ॥७शां॥
विस्वसेन कुलकज दिन मणी, अचिरा मात मल्हार ।
लंछण मिसि जिन हरप सुं, सेवइ मृग गुण धार ॥८शां॥

शांतिनाथ-स्तवन

ढाल—ऊभी भावलदे राणी अरज करइ छइ एहनी ॥

मनरा मानीता साहिब वंछित पूरउ,भव भव केरि भावठि चूरउ हो ।
अचिरा ना हो नंदन म्हांरी अरज मानेज्यो ।
सांभलि महिमा थारे चरणे हूँ आयउ नयणे देखि नइ मइ सुख पायउ
शांति जिणेसर थे तउ म्हांरा वालेसर,थासुं म्हे प्रीति लगाइ हो ।अ
प्रीति लागइ छइ साहिब चोल मजीठी,अति घणुं मुझने लागइ मीठीहो

राति दिवस थे तउ मनमांहि वसीया,थे गुणवंता गुणना रसीया हो।
मन मधुकर थारइ गुण मकरंदइ, रमि रहीयउ आणंदइ हो ॥३अ॥
थांहरइ पासइ जाणुं निसिदिन रहीयइ,सुख दुख वातां कहिये हो।अ
इम करतां जउ किम ही रीझई, तउ मन मउज लहीजे हो ॥४ अ॥
हुं रागि पिणि तु तउ नीरागी, प्रीति चलइ किम आवी हो।अ।
खड़गतणी धारा छै सोहिली, प्रीति पालेवि दोहिली हो ॥५अ॥
थां सरिखा जे हुइ उपगारी, छेह न द्यइ सु विचारी हो।अ।
मीठे वचने देई दिलासा, पूरइ सगलीं आसा हो ॥६अ॥
मोटां री ए रीति भलाइ, सेवक करे सवाइ हो।अ।
तउ जिनहरख सुजस जग वाधइ, निज आतम गुण साधइ हो।७अ

श्री शांतिनाथ स्तवन

॥ ढाल—मुझ सूधउ धरम न रमीयउ रे । एहनी ॥

सोलम संतीसर राया रे, पंचम चक्रवर्ति कहाया।
प्रणमइ सुरपति जसु पाया रे, मृदु लंछण कंचण काया रे ॥१॥
मन मोहन त्रिभुवन सामी रे, जगनायक अंतरजामी।
प्रभु नामइ नव निधि पामी रे, प्रणमुं अह निशि सिरनामी ॥२॥
नयणे प्रभु रूप सुहायइ रे, निरखंता पाप पुलायइ।
दुख दोहग निकट न आवइ रे,जउ भाव भगति सुं ध्यावइ ॥३॥
बीजा छइ देव घणाई रे, तेहथी नवि थाइ भलाई ।
जिनराज मुगति सुखदाई रे, अधिकी प्रभुनी अधिकाई ॥४॥
सुर तरु नी सेवा कीजइ रे, तउ वंछित फल पामीजइ।

माध्यम तरु जउ रोपीजइ रे, शुभ फल नी आशा कीजइ ॥५॥
मृगराज गुफा सेवीजइ रे, मोती गयदंत लहीजइ ।
कूकर घरमांहि रमीजइ रे, तउ हाड चरम निरखीजइ ॥६॥
जिन नमतां जिन पद आपइ रे, खिण मांहि करम जड़ कापइ ।
अन्य देव तणइ बहु जापइ रे, निज पिंड भरायइ पापइ ॥७॥
सहु जीव तणउ हितकारी रे, पारेवउ जीव उगारी रे ।
जगमां कीरति विस्तारी रे, दाता माहे अधिकारी ॥८॥
माय गरभइ मारि निवारी रे, कीधी जिणि शांति विचारी ।
शांति नाम कह्यउ नर नारी रे, ते देव तणइ बलिहारी ॥९॥
महीपति विश्वसेन मल्हारो रे, अचिरा उअरइ अवतारो ।
महीयल महिमा भंडारो रे, त्रिभुवन ठाकुर सिरदारो ॥१०॥
जिन दरसण थी दुख जायइ रे, जिन दरसण दउलति थायइ ।
जिनहरख सदा गुण गावइ रे, जिन सुपसायइ सुख पावइ ॥११॥

श्री नेमिनाथ–स्तवन

॥ ढाल—नायका नी ॥

समकित दायक सोलमारे, सांभलि अरज सुजाण रे ।सांतिसर।
ताहरउ नाम सुहामणउ रे लाल, वाल्हउ जीवन प्राण रे ॥सां१तुं॥
तुं जगमोहण वेलड़ी रे लाल, मोह्या सहु राय राण रे ।सां।
इंद्र चंद्रादिक मोहीया रे लाल,सीस धरइ तुझ आण रे ॥सां२तुं॥
सोवन वरण सुहामणु रे, काया धनुष चालीस रे ।सां।
लंछण मिसि सेवा करइ रे लाल,हिरण चरण निसि दीस ॥सां३तुं॥

मार उपद्रव टालीयउ रे, देश मां थइ सांति रे ।सां।
शांति कुमर माता पिता रे लाल,नाम दीयउ धरी खांति रे ।।सां४तु ।।
जग पूजइ पग ताहरा रे, हीयड़इ धरिय उलास रे ।सां।
सफल मनोरथ तेहना रे लाल, पामइ लील विलास रे ।।सां५तु ।।
सुरतरु सुरमणि सुरगवीरे, एक भवी घइ सुक्ख रे ।सां।
तुं भव भव सुख पूरवइ रे लाल,टालइं सघला दुक्ख रे ।।सां६तु ।।
तुं सरणइ राखइ सहू रे, तुं प्रभु सहु नउ नाथ रे ।सां।
हुं पिणि सरणइ ताहरइ रे लाल, मुझ नइ करउ सनाथ रे ।।सां७तु ।।
भव चक्र मांहे हुं भम्यउरे, पाम्या दुक्ख अनंत रे ।सां।
मूंकावउ दुख थी हिवइ रे लाल,कृपा करी भगवंत रे ।।सां८तु ।।
ग्यानी नइ कहीयइ किसुं रे, जे जाणइ सहु भाव रे ।सां।
कहइ जिनहरख कदे सही रे लाल,चतुर न चूकइ चाव रे ।।सां९तु.।।

श्री शांतिनाथ स्तवन

।। ढाल—हाडाना गीत नी ।।

पूरउ म्हारा मनड़ानी आस रे । अचिरा ना नंदा,
विश्वसेन कुल चंदा, आपउ आनंदा ।
शांति जिणेसर सांभली वीनती रे,
त्रिभुवन मइ जसवास रे साचइ ।आ।मन रगइ सुरनर मुनिपती रे ।।१।।
जिम जिम देखुं तुझ दीदार रे,तिम तिम हीयडउ हींसइ माहरउ रे ।
दीठा मइ देव हजार रे, रूप न दीसइ केह मइ ताहरउ रे ।।२।।
मोहणगारउ तुं महाराज रे, कामणगारउ मन मोहि रह्यउ रे ।

अवर विसार्या काज रे ।अ। तुझ नइ जोवा मुझ मन ऊमह्यउरे ।३।
चरण न मेल्हुँ ताहरा हेवरे,।अ।ओलग करि सुं निसदिन ताहरी रे।
भव भव माहरइ तुं हीज देवरे।अ।अरज सुणेज्यो साहिब माहरी रे।४
तुं सहनउ रखवाल रे ।अ।, पालउ टालउ रे विषमा दीहड़ा रे।
नयण सलूणे साम्हउ भाली रे ।अ।करम वयरी रे नासइ वांकड़ारे।५
सरणइ हुं आयउ तुझ नइ ताकि रे,तुं त्रिभुवन नउ छइ उपगारीयउ रे
भमतउ भव माहे रहीयउ थाकि रे,तुझ सरिखु करि मुझ विवहारीयउ रे
तुम नइ स्युं कहीयइ वारंवार रे,तुं सहु जाणइ मन नी वातड़ी रे।
तुं जिनहरख आधार रे ।अ। तुं हीज छइ माहरइ जीवन जड़ी रे।।७

शांतिनाथ–स्तवन

।। ढाल—मरवी ना गीत नो ।।

अचिरा नंदन चंदन सरिखउ, सीतल अधिक सुगंध ।सनेही।
ताप हरइ भव भव दुख केरा, उत्तम सुं संबंध ।।स०१अ।।
चंदन तउ विसहर संसेवित, न घटइ उपस तास ।स०।
साहिबनइ तउ सज्जन सेवइ, खिण मेल्हइ नहीं पास । स०२अ।।
राती रहइ चरणे रस राता, रंगाणा मन जास ।स।
बीजउ न सुहावइ कोइ तेहनइ, जे साचा प्रभु दास ।.स०३अ।।
भमरउ केतकी लीणउ, न गिणइ कंटक पीड़ि ।स०।
तिम मो मन प्रभुजी सुं भीनउ, न वेवइ हो दुख भीड़ि ।।स.४अ।।
सुख दुख मांहे एक सरीखी, साची तेहीज प्रीति ।स०।
प्रीति करीनइ जे नर विरचइ, थायइ तेह फजीत ।।स०५अ।।

ओछा माणस नी प्रीतड़ली, प्रथम अरध दिन छांहि ।स०।
उत्तमनी ढलता दिन जेहनी, पल पल वधती जांहि ॥स०६अ॥
दिल लागउ तुझसुं दिन रयणी, वधती धरिज्यो प्रीति ।स०।
मुझ जिनहरख निवाजउ साहिब, मोटांनी ए रीति ॥स०७अ॥

श्री शांतिनाथ जिन स्तवन

॥ ढाल—सरवर पाणी हुजा मारु, म्हे गया हो लाल राजि । एहनी ॥

शांति जिणेसर साहिबा सांभलउ हो राजि,
आपणा सेवकनी अरदास वारि म्हांरा साहिबा ।
पर उपगारि थांनइ सांभल्यां हो राजि,
चरणे हुं आव्यउ धरीय उलास वारि म्हांरा साहिबा ॥१॥
करुणासागर छउ आगर गुण तणा हो राजि,
माहिर करीनइ मुझनइ तारि वारि म्हांरा साहिबा ।
तुझनइ करुं छुं साहिबा वीनती हो राजि,
जनम मरण ना मुझ दुख वारि, वारि म्हांरा साहिबा ॥२॥
ताहरी तउ सूरति अति रलीयामणी हो राजि,
देखि नइ वाधइ हीयड़इ उलास वारि म्हांरा साहिबा ।
प्रभु मूरति सूं लागि मोहणी हो राजि,
निशि दिन जणु रहीयइ पासि वारि म्हांरा साहिबा ॥३॥
माहरी तउ लागि तुझसूं प्रीतडी हो राजि,
चोलतणी पर रंग न जाइ वारि म्हांरा साहिबा ।
सोम नजरि सुं साम्हउ जोइज्यो हो राजि,

हीयड़उ माहरउ जिम हरखित थाई वारि म्हांरा साहिबा॥४॥
चरण कमलनी चाहुं चाकरी हो राजि,
अवर न चाहुं बीजी वात वारि म्हांरा साहिबा।
मया करी ने देज्यो भूकमणी हो राजि,
पासइ राखेज्यो दिन नइ राति वारि म्हांरा साहिबा॥५॥
सेवक नी जउ भीड़ि न भांजिस्यउ हो राजि,
पूरविस्यउ नहीं मन नी आस वारि म्हांरा साहिबा।
तउ कुण करिस्यइ साहिब चाकरी हो राजि,
तउ किम लहिस्युं जग सावास वारि म्हांरा साहिबा॥६॥
राख्यउ पारेवउ सरणइ आपणइ हो राजि,
आप्यु तेहनइ निरभय दान वारि म्हांरा साहिबा।
मुझनइ तिम सरणइ राखीज्यो हो राजि,
ताहरउ जिन हरखइं राखुं ध्यान वारि म्हांरा साहिबा॥७॥

श्री शांतिनाथ-स्तुति

॥ ढाल—धन धन संप्रति साचउ राजा। एहनो॥

मोहन मूरति शांति जिणेसर, त्रिभुवन नयणाणंद रे।
भेटतां भावठि सहु भाजइ, महिमा एह जिणंद रे॥१मो॥
सुरनर मुनिवर कर जोड़ी नइ, चरणे नामइ सीस रे।
स्वामि नमुं ना सुं रग राता, करि जाणइ जगदीस रे॥२मो॥
शय्यंभव दरसण थी बुझ्यु, मुनिवर आर्द्रकुमार रे।
जाती समरण लहइ मछ जोइ, स्वयंभू रमण मझारि रे॥३मो॥

बोधि बीज पामइ नर नारी, श्री जिन मूरति जोइ रे ।
एहीज शिवपुर नी नीसाणी, अवर न बीजउ कोइ रे ॥४मो०॥
भवसायर तरिवा ने काजे, श्री जिन बिंब जिहाज रे ।
ए ऊपरि संका जे आणइ, तेहना विणसइ काज रे ॥५मो॥
जिन प्रतिमा जिन सरिखी भाखी, श्रीजिन प्रवचन माहि रे ।
साची सद्दहणा मन आणउ, एहीज समकित साहि रे ॥६मो॥
श्री जिनवर जिनवर ना मुनिवर, श्री जिन धर्म प्रधान रे ।
एह सु रंग लगाउ भावउ, दूरि तजउ अज्ञान रे ॥७मो॥
सिद्ध-स्वरूप सु चेतन लायउ, पावउ जिम पद तास रे ।
आवागमण तणा दुख छूटउ, जाइ वसउ प्रभु पासि रे ॥८मो॥
ए त्रिभुवन केरु उपगारी, वारी एहनइं नाम रे ।
हुं जिनहरख न मागु किम ही, मागु अविचल ठाम रे ॥९मो॥

श्री शांतिनाथ–स्तवन

॥ ढाल—वीर वखाणी राणी चेलणाजी, एहनी ॥

गुण गरुअउ प्रभु सेवीयइ जी, करुणासागर सुखकार ।
शांति जिणेसर सोलमोजी, त्रिभुवन तणउ आधार ॥१गु.॥
सकल सुरासर पाय नमइ जी, मुगति पुरि नउ दातार ।
माय अचिरा राणी जनमीयाजी, विश्वसेन नृपति मल्हार ॥२गु.॥
सुन्दर रूप सुहामणउ जी, सोवन वरण सरीर ।
धनुष चालीस प्रभु देहड़ी जी, मेरु तणी परि धीर ॥३गु.॥
अनंत गुण देखि भगवंत ना जी, लंछण मिसि मृग आइ ।

छोड़ि वनवास पासे रह्यउ जी, प्रभु चरणे चितलाय ॥४गु.॥
पांचमउ चक्रवर्ति थयउ जी, पूरव पुन्य प्रकार।
पट् खंड साहिबा भोगवी जी, जिन थया सोलमा सार ॥५गु.॥
मेघरथ राय तणइ भवइ जी, इंद्र प्रसंसा कीध।
सरणागत वच्छल एहवउ जी, कोइ नहीं परसीध ॥६गु.॥
इन्द्र वचन सुर सांभली जी, चिन्तवई चित्त मइ एम।
धरि मनुष्य तणउ किसौ जी, करुं परिखा धरि प्रेम ॥७गु.॥
एक थयउ रे पारेवड़उ जी, थयउ हो लावड़उ एक।
राय खोला माहे विहतउ जी, पड्युं पारेवडु छेक ॥८गु.॥
हीयड़लइ सास मावइ नहीं जी, चल चित्त निरखीयउ राय।
मत मन वीहइं तुं पंखीया जी, तुझ भय कोई न थाय ॥९गु.॥
केमइं आव्यउ रे हो लावड़उ जी, बइठउ राजा तणइ पासि।
वचन कही नृप नइ इसुं जी, सांभलि मुझ अरदास ॥१०गु.॥

॥ ढाल -२- जी हो मिथिला नगरी नउ धणी ॥

जी हो हुं भूखइ पीड़्यउ घणुं, जी हो छूटइ छइ मुझ प्राण।
जी हो एकेड़इं भमतां थकां, जी हो त्रिण्ण दिन थया सुजाण ॥११॥
सुहाकर शांति नमुं चितलाय,
जी हो पारेवउ जिणि राखीयउ, जी हो पोतानी देइ काय।सु.।
जी हो ते माटइ दे मुझ भणी, जी हो माहरउ छइ ए भक्ष।
जी हो पर उपगारी तुं अछइ, जी हो प्राण जाता मुझ रक्ष ॥१२सु॥
जी हो मुझ सरणइ आवी रह्यउ, जी हो किम आपुं तुझ एह।

जी हो प्राण हुस्यइ तउ प्राहुणा, जी हो हत्या लेइसि तेह ॥
जी हो राय कहइ द्युं तुझ भणी, जीहो मेवा ने मिष्ठान।
जी हो जे जे भावइ जे गमइ, जी हो परघल लइ पकवान ॥१॥४
जी हो भाखइ ताम होलावड़उ, जी हो सांभलि नृप अवतंस।
जी हो भावइ नहि मुझ सुंखड़ी, जी हो मुझ आहार छइ मंस ॥
जी हो आमिस तउ न मिले कीहां, जी हो वरतइ म्हारी आण।
जी हो एहनइ दीधउ जोइयइ जी हो ते विणि न रहइ प्राण॥
जी हो एक राखु एक ने हणुं, जी हो इम किम दया पलाय।
जी हो बेनइ राख्या जोईयइ, इणिपरिं चिंतइ राय ॥१७सु॥
जी हो तु मुझ देह नउं आपिसुं, जी हो एहनइ मांस आहार।
जी हो ए पिणि त्रिपतउ थाइस्यइ, जी हो कीधउ एह विचार॥
जी हो तुरत आणाव्यउ त्राजूअउ, जी हो पाली लीधी हाथ।
जी हो एह बराबरि आपिवउ, जी हो सांभलि तुं नरनाथ ॥
जी हो राणी ऊभी वीनवे, जीहो वीनवइ सचिव प्रधान।
जी हो अम्हे शरीर नउ आपिसुं, जी हो एहनइ मांसनउ दान॥

ढाल॥ विमल जिन माहरइ तुम सुं प्रेम ॥ एहनी ३

आवी ऊभवउ आगलइंजी, पोतानउ परिवार।
आमिष आपउ अम्ह तणउ जी, वीनतड़ी अवधारि ॥ २१ ॥
नरेसर तुं मोटउ दातार, तुझ समवड़ि कोइ नहीं जी।
इणि ससार मझारि, नरेसर तुं मोटउ दातार ॥
सहु वांछइ बहु जीवीयइ, मरण न वांछे कोइ।

राय कहइ ए वेदना जी, सहुनइ सरिखी होई ॥ २२ न ॥
हणुं हणाऊँ हुं नहीं जी, केहनइ माहरी देह ।
मुझ काया ना मांस सुं जी, त्रिपतउ करिसुं एह ॥२३ न ॥
पारेवउ एकिणी दिसइ जी, घाल्यु त्राजू माहि ।
निज काया कापी करी जी, एक दिशि धरइ उछाहि ॥२४ न ॥
पारेवउ भारी हुवइ जी, अमिस हलुयउ थाइ ।
चेलेउ भरीयउ मांस सुं जी, तउही ऊँचउ जाइ ॥ २५ न ॥
सहु संकलपी देहड़ीजी, होलावा तुझ काज ।
त्रिपतउ था भक्षण करी जी, तुझ नइ दीधी आज ॥ २६ न ॥
मन मांहे नृप चिंतवे जी, काया एह असार ।
काजइ आवइ केहनइ जी, मोटउ ए उपगार ॥२७ न ॥
जिम तिम करिनइ राखिवाजी, प्राणी केरा प्राण ।
मन वचनइ काया करीजी, करुणा धरम प्रमाण ॥२८ न ॥
अवधिज्ञान निहालीयु जी, निरमल मन परिणाम ।
फटिक तणी परि ऊजरुउ जी, सोनइ न हुवइ स्याम ॥२९॥
काया कापइ आपणी जी, निज हाथइ कुण सूर ।
कुण आवइ पर कारणे जी, निलवट वधतइ तूर ॥३० न ॥

ढाल ॥ वाहनी रही न सकी तिसइजी ॥ एहनी ४

प्रगट थई कहइ देवता जी, माहरी माया एह ।
इन्द्र प्रससा ताहरी जी, कीधी गुण मणि गेह ॥३१॥
सलूणा रे धन-धन तुझ अवतार ।

जणणी तुझनइ जनमीयउजी करिवा पर उपकार
करण परीक्षा आवीयउजी, ताहरी हुं इणिवार ।
श्रवणे सुणीयउ तेहवउजी, दीठउ तुझ दीदार ॥३२ स ॥
चरणे लागी देवताजी, पहुतउ सरग मझारि ।
धन धन मेघरथ नरपतीजी, अभय तणउ दातार ॥३३ स ॥
पूरव भव पारेवडुजी, सरणइ राख्यउ स्वामि ।
तिम सरणागत राखिज्यो जी, मुझनइ अवसर पामि ॥३४॥
निस्वारथ तइं पंखीयु जी, राख्यउ देई देह ।
पर दुख दुखीया जे हुवेजी, जग मइं विरला तेह ॥३५ स ॥
सरणइ आव्यउ ताहरइ जी, हुँ दुखीयउ महाराज ।
भव दुख भाँजउ माहराजी, सारउ वंछित काज ॥३६ स ॥
हुं अपराधी ताहरउजी, कीधा केइ अकाज ।
स्या अवगुण कहुं माहरा जी, कहतां आवइ लाज ॥३७ स ॥
अंतरयामी माहरा जी, तुं सहु जाणइ वात ।
तुझ आगलि कहीयइ किसुं जी, वीतग वात विख्यात ॥३८॥
तु साहिवछे माहरउ जी, दीन-दुखी हुं दास ।
कृपा करी मुझ ऊपरइं जी, आपउ शिवपुरवास ॥३९ स॥

॥ कलस ॥

इम शांति जिनवर सयल सुहकर, चित निर्मल संस्तव्यउ ।
दाता सिरोमणि आप समगिणि, दया मारग दाखव्यउ॥

प्रभु शांति कारण दुक्ख वारण, जगत तारण जगधणी ।
जिनहरख जगगुरु जगत स्वामि, पाप तमहर दिनमणी ॥४०॥

श्री शान्तिनाथ स्तवनं

सांति जिणेसर राया हुं तो प्रहसम प्रणमुं पाया हो ।
जिनवर सांति करौ। जालौर नयर विराजे, भेटंतां भावट भाजे हो॥
सांति करो प्रभु मोरा, गुण गावे श्री सिंघ तोरा हो ।
मूरत मोहणगारी, दीठां हरखे नर नारी हो ॥ २ ॥ जि०
दरसण सो मन भावै, दीवलां री जोत सुहावै हो ।
दीपै तेज दिणदा, मुख सोहे पुनम चंदा हो ॥ ३ ॥ जि०
अणीयाली आंखड़ियां, जाणै कमल तणी पांखड़ियां हो ।
नाक सिखा दीवारी, एतौ लालच घर मनुहारी हो ॥४॥ जि०
जिम जिम मूरत निरखुं, तिम तिम हियड़ै अति हरखुं हो ।
जाणुं प्रभु पास रहीजै, निस दिन प्रति सेवा कीजे हो ॥५॥ जि०
पूरो मुज मन आसा, सेवक नै दीयै दिलासा हो ।
जस लहिसै वड़ दावै, जिनहरख सदा गुण गावै हो ॥६॥ जि०

॥ इति शान्तिनाथ स्तवनानि ॥

श्री मल्लिनाथ स्तवनं

ढाल ॥ सौदागरनी ॥

मल्लि जिणेसर वाल्हा तुं उपगारी सहुनउ छइ हितकारी लाल।
तुझ मुख ऊपरि हुं तउ अहनिशि वारी लाल ॥ म ॥
तुझ दरसण मुझ लागइ प्यारउ.

दरसण देई वाल्हा नयणां नइ ठारउ लाल ॥१म॥
नाम सुणी नइ हीयड़उ हरषित थायइ ।
मिलिवा थांनइरे वाल्हा अधिक ऊमाहइ लाल ॥ म ॥
जांणु चरणे प्रभुजी नइ रहीयइ,
वदन कमल देखी देखी गह गहीयइ लाल ॥२म॥
सुन्दर सूरति लाल अधिक विराजइ,
त्रिभुवन मांहे एहवीकेहती न छाजइ लाल ॥म॥
बारह सूरज लाल निलवट दीपइ,
तेज इंद्रादिक सहुना जीपइ जीपइलाल ॥३ म ॥
मोहन मूरति लाल सहुने सुहावइ,
तुझ गुण मोह्या चरण सीस नमावइ लाल । म ।
दीठा घणाही लाल देवल देवा,
पिणिमन न वहइ तेहनी करतां सेवा लाल ॥४ म॥
तुं तउ अनंता लाल गुणनउ आगर,
तुझ नइ नत नागर तुं तउ सुखनउ सागर लाल । म ।
भव्य रिदियॉबुज लाल तुं तउविभाकर,
ताहरी तउ वाणी लागइ मीठी साकर लाल ॥५ म॥
राति दिवस लाल मनमंइ तुं वसीयुं,
कमल भमर जिम मेल्हइ नहीं रसीयउ लाल । म ।
मोहणगारा लाल मोह लगायउ,
तुझविणि कोई माहरइ चित्त न भायउ लाल ॥६ म॥

कुंभ नरेसर लाल तुं कुल चन्दन,
सिव सुखदायक नायक पाप निकंदन लाल ॥ म ॥
नील वरण लाल शिवपुर स्यन्दन
करई जिनहरख सदा पाय वंदन लाल ॥७॥ म०॥

श्री नेमीनाथ स्तवनं

॥ ढाल—रसियानी ॥

नयण सलूणा हो साहिब नेमजी, सुणि माहरी अरदास । या०।
प्राण सनेही हो प्रीतम माहरा, हुं भव नउरे दास ॥या०प्रा०॥
तुझ दरसण मुझ लागइ वालहउ, जिम चकवीनइरे भाण । या ।
मोहणगारा रे तइं मन मोहीयउ, तो परि वारू रे प्राण ॥या २॥
नयर सोरीपुर अधिक सोहामणु, समुद्रविजयनउ रे ठाम ।या०
शिवादेवी राणी सील सुलक्षणी, उत्तम जेहनउ रे नाम ।या०३
काती मास वहुल वारसि दिनइ, अपराजित थी रे आई । या०।
सिवादेवी कूखइ साहिब अवतर्या, चउद सुपनलह्यां रे माई ।४।
गरभतणी थिति पूरी भोगवी, सात दिवस नव मास । या० ।
जनम्या श्रावण सुदि पांचिम दिनइ, पूगी सहुनी रे आस ।या
प्रभुनइ लेई सुरपति सुरगिरइ, जनम महोच्छव रे कीध । या०
चंदकला जिम वाधइ दिनदिनइ, अनुक्रमि योवन लीध ।या० ।
बाल ब्रह्मचारी विषय ने गंजीयउ, न धर्यु सुखसु रे राग ।या०॥
राजकुंवरि परिहरि राजीमति, आण्यउ मन मइ वइराग । या०॥
वरसीदान देई सयम ग्रह्यु, श्रावण सुदि छठी दीस । या० ।

समता सागर आगर गुण तणउ, राग नहीं नहीं रे रीस ।या०।
चउपन दिन छद्मस्थ पणइ रह्या, सुक्ल हीयइ धरी रे ध्यान ।
मास आसोज अमावस्या दिनइ, पाम्यु केवलज्ञान । या० ।
श्रीगिरनार अचलगिरि ऊपरइ, समवसरण रचयउ रे ताम ।या०
आव्या सुरपति सुरनर सहु मिली, गावइ प्रभु गुण ग्राम । या०
धरमतणी द्यइ जिनवर देसणा, मीठो अमृतधार । या० ।
सांभलता प्रतिबोध लहइ घणा, धरमी जे नरनारि ॥ या० ॥
गणधर अढारह प्रभु थापीया, मुनिवर सहस अढार । या० ।
सहस चालीस अनोपम साधवी, परम पवित्र व्रतधार । या० ।
लाख अधिक उगणोत्तर सहसु सुं, श्रमणोपासक रे जाणि ।या०
त्रिण्ण लाख छत्रीस सहस भली, ए श्राविका गुण खाणि ।या०
सहस वरस आउपु भोगवी, करमतणु करी अन्त । या० ।
उजुआली आठिम आसाढनी, मुगतिपुरी पहुचंत ॥ या० ॥
अजर अमर अक्षय सुख पामीया, पाम्यावली पंचानंत । या०।
मुझनइ पिणि अविचल सुख सास्वता, आपउ श्री भगवंत ।या०
हुं अपराधी निगुणी अविरती, बहु अवगुणनी रे खांणि । या०।
दोस किसाहुं दाखुं माहरा, कहतां आवइ रे काणि ॥या० ॥
करुणासागर तुं भारी खमउ, तुं सहुंनउ प्रतिपाल ॥ या० ॥
माहरी करणी मतसंभारिज्यो, निखरउ पिणि तुझ बाल ॥या०।
पसु छोडाव्यां तइं प्रभु कुरलता, दुखिया देखीरे तेह ॥ या० ॥
तिम मुझनइ पिणि भव बंधण थकी, छोडावउ गुण गेह ।या०

मात पिता तुं मुझ वाल्हउ सगउ, तुं मानी तजरे मीत ।या०।
तुं साजण तुं सयण सखाईयउ, तुझ मुं लागी रे प्रीति ॥या०॥
मुझनइ वल सवलउ छइ ताहरउ, अवर न कोई आधार ॥ या०॥
सोम नजरि करि जोवउ साहिवा, जिम पांमु भवपार ॥ या० ॥

कलश

इम नेमि वावीसम जिणेसर, शिवादेवी नंदणो ।
सुखसयल दायक मुगतिनायक, जगत ताप निकंदणो ॥
जसु सुजस निर्मल प्रवल त्रिभुवन, काम क्रीड़ा खंडणो ।
जिनहरष जुगतइं भाव भगतइं, तव्यउ पापविहंडणो ॥२१॥

श्री नेमिनाथ स्तवनं

॥ ढाल ॥ रामचन्द्र के बाग एहनी ॥

श्री नेमिसर स्वामी, मेरी अरज सुणउ री ।
तुं उपगारी देव, त्रिभुवन सुजस घणउरी ॥ १ ॥
ब्रह्मचारी विख्यात, तुझ सम कोइ नहीरी ।
छोरी राजुल नारि, अपछर रूप सहीरी ॥२ ॥
करुणावंत कृपाल, पसूआं अभय दीयउरी ।
जां प्रतिपई शशि सूर, अविचल नाम कीयुरी ॥३॥
करि करुणा मुझ स्वामि, भवसायर तारउरी ।
जनम मरण के दुक्ख वाल्हेसर वारउरी ॥ ४ ॥
तुम्ह चरणे माहाराज, मन चंचल मोह्यउरी ।
पंकज रस लयलीन, ज्यूं मधुकर सोह्यउरी ॥ ५ ॥

देखण तुझ दीदार, अलजउ अग धरूं री।
तुझ विणि रह्यउ न जाइ, कइसइ दिवस भरूं री॥६॥
आ गिरनार शृंगार, दिनकर ज्यू प्रतपइ री।
नाम मंत्र प्रभु जाप, निति जिनहरष जपई री॥७॥

श्री नेमिनाथ स्तवनं

ढाल—लाछल दे मात मल्हार, एहनी

आज सफल अवतार, दीठउ मइं दीदार।
हेजइ हरषीरे म्हारी आज सलूंणी आंखडी रे जो॥
चितमइ धरतउ चाहि, भेटण श्री जिनराइ।
पूगी माहरी रे आसड़ली, थई सफली घड़ीरे जो॥१॥
जगनायक जगदीस, आण धरूं तुझ सीस।
करुणासायर रे मइ साहिब तुझनइ निरखीयउ रे जो॥
पाप गया सहु दूरि, करम थया चकचूर।
आज हो माहरुरे हीयड़लुं प्रभुजी हरखीयउ रे जो॥२॥
प्राणीनंउ प्रतिपाल, तुं जग दीनदयाल।
तुं यादव ना रे कुलनु साहिब दीवलु रे जो॥
यादव कुल अवतंस, जगसहु करइ प्रसंस।
जीव ऊगारी रे जस लीधउ त्रिभुवन मइं भलउरे जो॥३॥
सनमुख जोवउ आज, महिर करी महाराज।
तुं जगनायक रे सुखदायक जगगुरु नेमजी रे जो॥
हुँ सेवक तुं सांमि, अरज करूं सिरि नामि।

सुख देवानी मनमइ स्यई नाणउ अजी रे जो ॥४॥
राजि म करिज्यो रीस, कहुं छुं विसवा वीस।
निज पद आपरउ रे नवि मांगुं बीजउ हुं सही रे जो ॥
बावीसमा अरिहन्त, भयभंजण भगवंत।
वात हीयानी रे जिनहरषइ तुझ आगलि कही रे जो ॥

नेमनाथ गीत

पाइ परूं विनती करू, बूझूं एक विचार।
प्राण सनेही मांहरौ हो, मनमोहन भरतार ॥१॥
वहिनए नेमि नगीनो फिर गयौ, फिर गयौ क्युं रथ मोरी।
कामणगारो नांहलौ, वासुं प्रीत अपार ॥
इण भवऔहिज वालहो हो, हुं आकी खिजमतगार ॥२॥
अबला विण दूषण तजी, काणौ बहुतैं रोस।
ज्युं आयौ त्युं फिर गयौ हो, दे पसुअन सिर दोस ॥३॥
रहि न सकुं हुं प्रिय विना, ज्युं मछली विण नीर।
राति दिवस मनमें धरुं हो, म्हारां सगीय निणंदरौ वीर ॥४॥
राजल ऊजलगिर चढी, करि मनमें इकतार।
प्रिय पहली मुगत गई हो, कहि जिनहरख सुविचार।
॥ इति श्री नेमनाथ गीतं ॥

नेम राजिमती गीत

ढाल—ऊभी भावलदे राणी०

ऊभीराजुलदे राणी अरजकरे छै, अबकउ चउमासउ घरिकीजैहो।

गढ़ गिरिनार वाला नेमजी चलणन देस्यां, चलण तुम्हारा राजिद
मरण हमारा रहउ रहउ रस लीजे हो ॥१॥ ग ॥
थांहरीतउ सूरति राजिंद म्हाने सुहावे हेकरिसउ महले आवउ हो।
प्रेम अमी रससाहिबा म्हांने पावउ, विरह अग्नि ओल्हावउ हो ॥२
हीयड़उ ऊमाह्यउ राजिदमिलण हमारउ, मेलउ वाल्हेसर दीजे हो
नरभवकेरु राजिद लाहउजी लीजे, दिन दिन जोवन छीजे हो ॥३
म्हेतउ गुन्हउ रे साहिव कोई न कीधउ, विणिगुन्हे कांई छोड़उ हो
प्रेम डोरी रे राजिद इमकिम तोड़उ, जतन करीने जोड़उ हो।
थांसु तउ म्हांरउ राजिन्द तनमन भीनउ, थांसु प्रेमलगायउ हो।
आठ भवांरा साहिब थेम्हांरा वाल्हा, नवमे स्युं मन आयउहो।
खोलउ विछाऊॅं राजिद थांनैमनाऊं, हुंचरणे सीस लगाऊॅं हो।
भोला वालक ज्युं राजिद आड़उ करेस्यां, पिणिम्हे जाणन देस्यां हो
थेतउ म्हांस्युं रे राजिद नेह ऊतार्यउ, पिणि म्हे निकट रहेस्यांहो।
कहे जिनहरष म्हे साथ न छोड़ां, थांसु लाहउ लेस्यां हो ॥७

(संवत् १९९२ ना श्रावण वदी तेरसने वार सनी ना दिवसे। श्री जिनहर्ष कृत स्तवनो तथा स्वाध्यायो पूर्ण करेली छे। दः भोजक (ठाकोर) केशरीचन्द पुनमचन्द, ठे० मदारशाह पाटण।

नेमि राजिमती गीत

ढाल म्हारउ मनमाला मां वसि रह्यु। एहनी ॥

पंथीयड़ा कहेरे संदेसड़ो, म्हारा प्रीतमने तुं जाइरे।
दूषण पाखइ नारी तजी, एतउ दुख हीयड़इ न समाय रे ॥१॥
म्हारु मन जादव मां वसि रह्यु।

नवभवनउ तुझ सुं नेहलउ लागउ जिम चोल मजीठरे ।
पाणीवल मइ तोड़ीदीयो, मुझ मइ स्यउ अवगुण दीठरे ॥२॥
सासुना जाया वालहा, मंदिर आवो एकवार रे ।
कहीये सुखदुखनी वातड़ी, कामणगारा भरतार रे ॥३॥
तुं तउ आछारे बेटा सुसराना, म्हारी वीनतड़ी अवधारि रे ।
मुझने राखउ आपण कन्हइ, रड़ती मू कउ कांइ नारि रे ॥४॥
मुझ नयणे नावे नींदड़ी, म्हारउ जीव धरइ नहीं धीर रे ।
मिलीये तन मन मेली कर, म्हारी सगी नणद रा वीर रे ॥५
वासर तउ जिम तिम वउलिसु, रातड़ियां मालइ सइण रे ।
निसनेही नाह थई गयु मुझ मातउ पावस नइंणरे ॥६॥
वारु गउख सुरंगा मालीया, तुझ विणि लागइ दुखखाण रे ।
तोरण आवी पाछउ वल्यउ, एतउ वागा विरह नीसाण रे ॥
ऊंची गोखइ ऊभी रही, थांरी निस दिन जोउं वाट रे ।
तुं तउ आवि सहेजा साहिबा, जिमथाये मुझ गहगाट रे ॥८
राजुल रंग भर संदेशड़ा, पाठवीया पथी हाथि रे ।
जिनहरप सुपरि संजम ग्रही, सिव पहुंती प्रीतम साथि रे ॥९॥

नेमि राजिमती गीत

ढाल—माखी नी

जब म्हारो साहिब तोरण आयौ हीयडे हरप न माय सांवलीया ।
साहिब रे हूँ साथि चलूंगी, साथ चलूगी तोलारि फिरूंगी ।

साहिबा सुं नेह लगाय, केसरीया साहिब रे हूँ साथ फिरूंगी ॥१॥
जब म्हारौ साहिब फेरि सधायो, दे पसूआं सिर दोस । सां ।
नयण झरइ मोरा बालंभ पाखइ, ज्यु आसू रो ओस ॥ २ ॥
कुण धूतारी कामणगारी, जिण भोलायो म्हारो नाह । सां ।
अष्ट भवां नो नेम नगीनो, तोडि गयो देई दाह । के०॥३॥
किण ही रा कह्यो नेम न सुणिजइ कीजै नही मन सोक । सां ॥
देखि सकइ नहीं नेह परायो, परघर भांजा लोक ॥ ४ ॥
तूं मुझ प्रीतम हूँ तुम नारी, ए आपण री सगाई । सा ।
कहइ जिनहरप राजुल नेमि मिलीया साची प्रीति लगाई । ५ ॥

श्री नेमि राजिमती गीतम्

ढाल—कालहरा रागे

कांइ रीसाणा हो नेम नगीना म्हारा लाल ।
यो परिवार हो, सउं थइ भीना म्हारा लाल ॥१॥
विरह विछोही हो, ऊभी छोड़ी । म्हां ।
प्रीति पुराणी हो, तइं तउ तोड़ी ॥ २ ॥ म्हां ॥
सयण सनेही हो, कुरुख न राखइ । म्हां ।
जे सुकुलीणा हो, छेह न दाखइ ॥ ३ म्हां ॥
नेमि न हुइजइ हो, निपट निरागी । म्हां ।
केहइ अवगुण हो, मुझ ने त्यागी ॥ ४ ॥ म्हां ॥
सासू जायो हो, मंदिर आवउ हो । म्हां ।

विरह वुझावउ हो, प्रेम वणावउ ॥ ५ म्हां ॥
कांइ वनवासी हो, कांइ उदासी हो । म्हां ।
जोबन जासी हो, फेरि न आसी ॥ ६ म्हां ॥
जोवन लाहो हो, लीजइ लीजइ । म्हां ।
अंग उमाहउ हो, सफलउ कीजइ ॥ ७ म्हां ॥
हुं तउ दासो हो, आठ भंवारी । म्हां ।
नवमइ भव पिणि हो, कामिणी थांरी ॥ ८ म्हां ॥
राजुल दीक्षा हो, ल्यइ गहगहती । म्हां ।
कहे जिनहरषइं हो, मुगतइं पहुंतो ॥ ९ म्हां ॥

नेमि राजिमती गीतं

ढाल—पीछोलारी पालि चांपा दोइ मउरीया मोरा लाल,
चापो दोइ मोरीया मोरा लाल । एहनी ।

नाहलीया निसनेह कि पाछा कहां वल्या
म्हांरालाल कि पाछा कहां वल्या म्हारा लाल ।
यादवनी कुलकोड़ि माहे तउ लाजिस्यउ म्हांरा लाल ।
हुं जाणति मनमाहि कि यादव आविस्यइ म्हांरालाल ।
मन गमता मुझ वेसक कि ग्रहिणा ल्याविस्यइ ॥ म्हा० ॥ १ ॥
ग्रहणानी सी वात जउ मिलीया ही नहीं म्हांरा लाल ।ज०।
माहरा मननी आसि कि मनमांहे रही म्हांरा लाल । कि०
जो गुणवंता होइ सु छेह न दाखवे म्हारा लाल सु० ।
मेले तन मन चित कि मुखमीठउ चवइ म्हांरा मु० ॥ २ ॥

पालइ पूरी प्रीति कि जमवारा लगइ म्हारा लाल कि० ।
तुझ सरिखा ठग होइ कि इणि परि ठगइ म्हारा लाल ।
प्रीतम विरह वियोग अगनीनी परिदहइ ॥ म्हा० ॥
वेदन हीयड़ा माहि कि करवत जिम वहइ म्हारा ॥ ३ ॥
पिउ पिउ करूं पुकार बापीहानी परइं । म्हां० ॥
वेगुनही यादुनाथ कि कां मुझ परिहरइ ॥ म्हा० ॥
जो सांचा निज सइंण वइण सफलउ करइ । म्हारा ।
न करे आस्या भंग पातक थी थरहरइ ॥ म्हारा प्रा० ॥
वाल्हा साजन तेह राखइ आपण कन्हइ । म्हारा रा० ।
राजुल कहे जिनहरष मिली जाइ नेमि नइ ॥ म्हा० मि० ५॥

नेमि राजिमती गीतं

ढाल ॥ ऊमादे भटीयाणी ना गीतनी ॥

वीनवइ राजुल बाल, वीनतड़ी अवधारउ हो गोरी रा वाल्हा नेमजी
हेकरिसउ रथवाली, अवगुण पाखइ मुझ नइ हो गोरी रा वाल्हा कांतजी
माछिलड़ी विणि नीर, टलवलती किम जीवइ हो गोरी जोइ नइ
मो मन रहइ दिलगीर, सरवरीयां मइ भरीयो हो गोरी रोइ नइ ॥
काम तणा पंच बाण, मो तनु लागइ हो गोरी रा किम सहुं ।
आकुल थायइ प्राण, अन्तरना, दुख केहनइ हो गोरी हुं कहुं
आठ भवांरउ प्रेम, इम किम दोषी वयणे हो गोरी तोड़ीयइ ।
कतुआरी ना जेम, तांतण टूटानी परि हो गोरी जोड़ीयइ ॥
पंखी पिणि निजनारी, नयणां आगलि राखइ हो गोरी अहनिसइ

वधती प्रीति अपार, एकणि मालइ वे जण हो गोरी जइवसइ ॥
नेमि न थईयइ धीठ, मोटानइ इणिवाते हो गोरी ॥ मेहणी ॥
तुझ सम कोइ न दीठ, जेण पराई जाई हो गोरी अवगणी ॥
राजुल राजकुमारी, अविचल पाली प्रिउ सु हो गोरी प्रीतड़ी।
कहइ जिनहरष विचारी, मुगति महल पावड़ीए हो गोरी जईचढी

श्री नेमिनाथ लेख गीतं

ढाल ॥ ग्मीयानी ॥

स्वस्ति श्रीजिन पय प्रणमी करी, नेमि चरण सुखकार । या०।
प्रीतम पद पंकज रज मधुकरी, लिखितं राजुल रे नारि । या० ।
आंखड़ीया नां वाल्हा रे साहिब सांभलउ, निपट निहेजा रे नाह।
संदेसा मोरा मनना वीनवुं, आवि बुझावउ रे दाह ॥ या० २
अत्र कुसल छे तुझ सुपसाय थी, तुमचा लिखज्यो रे लेख ।या०
जिम सुख सातारे मुझनइ ऊपजे, वारु वचन विसेप ॥ या० ॥
अन्तरजामी रे आतम माहरा, मनना मान्या रे मीत । या० ।
तुझनइ मिलिवारे मुझ मन ऊलसइ, पइलां तरनी रे प्रीति ।४।
कुण जाणइ मोरा मननी वातड़ी, किणिने कहीये रे दुख ।या०
प्राण प्रिया तुम परदेसी थया, अलजउ देखण रे मुक्ख ।।या०।।
हु विरहिणि तुझ पाखइ टलवलु, जिम पाणी विणि रे मीन ।
प्राणेसर विणि कहउ किम जीवीयइ, निसिदिन रहीये रे दीन।
तुमनइ विरह न व्यापे साहिब, कठिण करी रह्या रे चीत ।या०
तुम विरहे मुझ काया परजले, जीवुं केही रे रीति ।। या० ॥

दरसण दीजइ रे प्रीतम करि मया, जिम मुझ नइ सुखथाइ ।या०
जीव सहूना रे पालक तुम्हे थया, तउ कांइ परिहरि रे जाइ ॥
जे सुकुलीणारे कुल किम लाजवइ, पालइ पूरि रे प्रीति ।या०।
लीया मुकी रे ते न करइ कदी, एह सुगुण नी रे रीति ।।या०
एकरि सुं मिलि आवी प्रीतमा, मन ना पूगइ रे कोड । या० ।
मुखड़उ देखुं रे वाल्हा ताहरउ, भाजइ माहरी रे खोड़ि ।।या०।।
अहनिसि आपणसुं राता रहइ, हीयड़इ राखइ रे ध्यान ।या०।।
ते किम साजन सेण उवेखीयइ, दीजइ विमणउ रे मान । या०।।
तुमे माहरा सिरना रे साहिब सेहरा, आतम तणा रे आधार ।या०
हीयड़इ राखुं रे हारतणी परइ, तुम्हे माहरा सहु सिणगार ।या०
सेज सुहाली रे प्रीतम पोढ़ीयइ, करीये मननी रे वात । या० ॥
दाखवीयइ निज सुख दुख तुम भणी, टाढउ थाये रे गात ।या०
सूता सुपना मां आवी मिलइ, जउ जागुं तउ रे जाई ।। या०२
टलवलतां इणि परि प्रीतम पखइ, रयणि छमासी रे थाइ ।या०
लागी प्रीतम प्रीति न तोड़िये, मोटा नइ छइ रे खोड़ि । या०
कतूआंरी नारी ना सूत्र ज्युं, जिम तिम लीजइ रे जोड़ि। या०
कीजइ तउ प्रीतम करि जाणीये, सुगुणा सेतीरे संग ॥ या० ॥
लाखी जउ चीरी हुइ लोवड़ी, तउ ही न छोड़इ रे रंग ।या०।
हुं तुझ पगनी रे प्रीतम पांनही, केहउ मुझमा रे दोस । या० ।
आठ भवां नी रे परिहरि[1] प्रीतड़ी, कां कीयउ इवड़उ रे रोस ।

---

१ तुम्फ-मुम्क

तुमने स्युं लिखियइ प्रीतम घणुं, लिखितां नावे रे पार । या०
माहरी एहीज साहिब वीनती, मुझने लेज्यो रे लार । या० ।
लेख लिख्यउ राजुल श्री नेमिनइ, लह्यां अविचल सुख संग ।या०।
कहे जिनहरष खरा साजन तिके, राखइ साचउ रे रंग । या० ।

नेमि राजिमती गीत

ढाल ॥ उ ढोणी चोरी रे एहनी ॥

स्युं कीधउ इणि जादवइ, मां मोरी रे ।
एतो फिरि गयउ प्रीति लगाय । यादव दिल चोरी रे ॥
मन हरि लीधउ माहरउ मा मोरी रे, प्रीतम विणि रह्यउ न जाय ।
इम बोले राजुल गोरी, या०
इणि धूरत विद्या करी मा० विणि अवगुण कीधउ रोस । या०
धूती मुझ धूतारड़इ मां० देइ पसुआं सिरि दोष ॥२ या०॥
निसनेही सुं नेहलउ । मा । कीजइ तउ दाझइ अंग । या० ।
दीवा के मन में नही । मा । एतउ पड़ि पड़ि मरइ पतंग । या३
चाहंता चाहे नही । मा । सांमलियउ कठिण कठोर ॥ या० ॥
एक पखी करी प्रीतड़ी । मा । लेई गयउ चित चोर । या० ४।
सिगड़ी मेल्ही मुझ हीये । मा । दाझे मोरी कोमल देह ॥या०॥
चइन नही दिन रातड़ि । मा । सालइ निति हीयड़े नेह । या५।
हुं प्रिउ विणि विरहिणी भई । मा । वाल्हइ दीधउ अपमान ।या०।
सूल सरीखी सेजड़ी । मा । घर मन्दिर जाणे रान ॥ या० ६॥

आठ भवांनी प्रीतड़ी । मा। नवमइ पिणि एहिज नाथ ।।या०।।
मुगति महल राजीमती । मा। जिनहरष वणायउ साथ ।।या०७

श्री नेमि राजिमती गीतम्

ढाल ।। नणदल नी ।।

निगुण निरागी नाहलउ हे नणदल ।
नणदल मुझ सु थयउ सरोस मोरी नणदल ।
तोरण आवी फिरि गयु हे नणदल ।
नणदल दोस बिना देई दोस ।। मो १ ।।
नलदल थारउ हे वीरउ
वाइ म्हारी थांहरउ हे वीरईयउ कदि घरि आवइ मोरी नणदल
हुं मन मांहे जाणती हे नणदल
नणदल माणक चड़ीयउ हाथ, मोरी नणदल,
माणक फीटी मणिकलउ हे नणदल
हुइ गयउ कीधी अनाथ ।। मो० २ न० ।।
आठ भंवा री प्रीतड़ी हे नणदल
नवमइ दीधी छोड़ि, मोरी नणदल ।।
राचीनइ विरची गयउ हे नणदल ।
ल्यावउ रुठड़उ वहोड़ि ।। मो० ३ न० ।।
निसदिन झूरूं एकली हो नणदल ।
पिउ पिउ करूं पुकार मोरी नणदल ।।

विरह विछोही दुख भरी हे नणदल ।
गयउ मोरउ प्राण आधार ।। मो० ४ न० ।।
पाली अविहड़ प्रीतड़ी हे नणदल ।
भवना दुख टलीह मोरी नणदल ।।
राजुल नेमि जिनहरष सुं हे नणदल ।
मुगति महल मिलाय ।। मो० ५ न० ।।

नेमि राजुल गीतम्

ढाल ।। जोधपुरी नी ।।

नेमि काइं फिर चाल्यो हो, यादवराय अरज सुणउ ।
म्हांरी अरज सुणेज्योहो, देखण हरख घणउ ।। १ ।।
तुझ मिलिवा तरसइ हो, मनड़उ माहरउ ।
नयणे जल वरसे हो, यादवराय अरज सुणउ ।। २ ।।
कोई खून न कीधउ हो, अवगुण कोइ नही ।
मुझ कांइं दुख दीधउ हो, यादवराय अरज सुणउ ।।३।।
थे तउ मनरा खोटा हो, नेमि जी कांइं थया ।
हुंता गुण मोटा हो, यादवराय अरज सुणउ ।। ४ ।।
तइं तउ छेह दिखाल्यउ हो, वाल्हा विरचि गयउ ।
तइं तउ नेह न पाल्यउ हो, यादवराय अरज सुणउ ।।५।।
तुझ ऊपरि वारी हो, नेमजी आइ मिलउ ।
तुं प्रिउ हूं नारी हो, यादवराय अरज सुणउ ।। ६ ।।

आपण आदरीयां हो, नेमी विरची जई।
हसिस्यइ सहु फिरियां हो, यादवराय अरज सुणउ ॥७॥
मइ तउ जाण्यउ न हुंतउ हो, विरचिसि वालहा।
गिरनारइं पहुंतउ हो, यादवराय अरज सुणउ ॥ ८ ॥
राणी राजुल जंपइ हो, संयम लेइ मिलूं।
जिनहरष पयंपइ हो, यादवराय अरज सुणउ ॥ ९ ॥

नेमि राजमती गीत

ढाल—सूरिजरे किरणे हो राजि माथउ गुथायउ ॥

राजुल विनवे हो राजि, पुन्यइ में पायउ।
मुझ ने छोड़िने हो राजि, फेरि सिधायउ ॥ १ ॥ फेरि० ॥
सिवादे राणी रउ जायउ राजि किणि विलंबायउ।
हरष धरीने हो राजि तोरण आयउ,
मुझने परणेवा हो राजि अधिक ऊमाह्यउ ॥२॥ अधिक ॥
मइतउ तुम तुमसु हो राजि अंग लगायउ,
मन ना मानीता हो राजि तुझ न सुहायउ, ॥ तुझ न० ३ सि ॥
मुगति नारी सुं हो राजि, प्रेम वणायउ।
मुझ सुं अधिकी हो राजि, जाणी नइ नायउ ॥ जा० ४ सि ॥
तेतउ धूतारी हो राजि, भेद न पायउ।
चतुर हुंतउ हो राजि, पिणि तूं ठगायउ ॥ पि० ५ सि ॥
राजुल राणी हो राजि, चित मिलायउ।
व्रत सुं जिनहर्षइ हो राजि, प्रिउनइ वधायउ ॥ प्रि० ६ सि ॥

श्री नेमि राजिमती गीतं

ढाल--थारी तउ खातर हुँ फिरी गुमांनी हंसा, ज्यूं चकवो लांबी डोर ।
डोर रे गुमानी हंसा ज्यु च० एहनी ॥

राजुल कहे रागइं भरी, सनेही हंझा ।
कांइं तु रूठड़उ जाइ, रे सनेही कां० ॥
थांरे कारणि हुं खड़ी । स । मुख जोवा यदूराय, राय रे स० मुख ।१।
वांक दीठउ कोई माहरउ । स । कइ तउ नाईहुं दाइ, दाई ४ रे स० ।
कइतउ रूपइं रूअड़ी । स । मुझ थी दीठड़ी कांइ, काइ ४ रे स०
हुंप्यासी दरसण तणी । स । दरसण दे मुझ आइ, आइ ४ रे स० ।
मुझ विरहिणि नइ वालहा । स । प्रेम अमीरस पाइ, पाइ ४ स० ।३
तुझ विणि मुझ चकवी परइ । स । झूरत रयणि विहाइ ४ रे स ।
मेलउ दे मन रंग सु । स । लूंबी झूंबी रहुं पाय, पाय ४ रे स० ॥
रतन अमूलक जोवतां । स । मुझ नइ मिलियउ आइ, आइ रे स० ।
छेह देई छिटकी गयउ । स । ते दुख गम्यु न जाइ, जाइ ४ रे स ॥५
सु सनेही रूठा हुवइ । स । लीजइ तास मनाइ, मनाइ ४ रे स० ।
मन दीधउ जिणि आपणउ । स । मिलीये तेहने धाइ, धाइ ४ रे स ।
तोरण आवी फिरी गयउ । स । गड़बड़ घणी दिखाइ, दिखाइ रे । स ।
एहवा गुण तुझ माहि छइ । स । तउ तूं कालउ न्याइ, न्याइ रे स
इम कहि राजुल रंग सुं । स । प्रिउ हथ संजम पाइ, पाइ रे स० ।
मुगति गया जिनहरष सुं । स । बेजण सरिखा थाइ, थाइ ४ रे स०

नेम राजिमती गीत

ढाल—लूअर री

हो जी रथ फेरि चाल्या जादुराइ, राजल सहीयां मुख सांभली लाल
हो जी मुरछागति थइ तास, चेत रहित धरणी ढली लाल ॥१॥
हो जी नयणे आंसू धार, जांण पावस उल्हस्यो लाल।
हो जी कहती विरह विलाप, प्रीतम कांइ मुझस्युं फिरयो लाल।२
हो जी अवगुण कोइक दाखि, वाल्हा विरचीजै पछै लाल।
हो जी अबला तजि निरदोष, फिरि चाल्यां शोभा न छै लाल॥३
हो जी मोटौ मोटौ जादव वंश, कांइ लजावै सहिब सांमला लाल।
हो जी निज कुल साम्हो जोइ, कीजै जिम वाधेकला लाल ॥४
हो जी हुं जाणती मन मांही, माहरी समवडि कुण करै लाल।
हो जी समुद्रविजय राय नंद, त्रिभुवनपति मुझनै वरै लाल ॥५
हो जी इवड़ी मन मै आस, हूं करती नेम ताहरी लाल।
हो जी कीधी अपट निरास, हूंस रही मन मांहरी लाल ॥६॥
हो जी पहली प्रीत लगाइ, तैं मुझनै नेम ओलवी लाल।
हो जी हिवै हूं नाइ दाइ, दाइ माई काई नवी लाल ॥७॥
हो जी उत्तम मांणस जेह, झटकि नेम छेहौ दीयै लाल।
हो जी जण जण सेती नेह, करतां भला न दोसीयै लाल ॥८॥
हो जी निपट थयौ निसनेह, प्रीत पुराणी तोड़ी नेम जी लाल।
हो जी तुरत दिखाल्यौ छेह, दूपण विण मुझ नै तजी लाल॥९॥
हो जी सुसरै न दीठी म्हारी लाज, सासूड़ी रै पाए नां पड़ी लाल

हो जी नेमजी न दीठौ म्हारौ रूप,
देवरीयै न चखी म्हांरी सुखड़ी लाल ॥१०॥
हो जी राजल लीधो व्रत भार, प्रिय पहली शिव संचरै लाल।
हो जी पाल्यौ पाल्यो अविहड़ प्रेम, कहै जिनहरख भलीपरेलाल।११

श्री नेमिराजिमती बारमासा गीतं

ढाल ॥ उधव माधवने कहिज्यो ॥

वैसाखां वन मोरिया, मउर्या सहकार।
विरह जगावे कोइली, नहीं घर भरतार ॥ १ ॥
कहिज्योरे संदेसड़उ, जादव ने जाइ।
निसिदिन झूरे गोरडी, गोरी धान न खाई ॥ २ ॥
जेठ तपे रवि आकरउ, दाझे कोमल देह।
विरह दवानल ओल्हवे, प्रिउ विणि कुण एह ॥ ३क॥
आसाढ़इ वादल थया , आयउ पावस मास।
हुं कहु नइ किणिपरि रहुं, एकलड़ी निरास ४ क॥
श्रावण घोर घटा करी, वरसे जलधार।
वापीयड़ा पिउ पिउ करे, पिउ सालइ अपार ॥ ५क॥
भादरवउ भर गाजीयउ, खलक्या जल खाल।
चिहुंदिसि चमके वीजली, जाणे पावक झाल॥ ६ क॥
आसू पाणी निरमला, निर्मल गोखीर।
आवउ प्रीतम पीजीये, टाढ़उ थाइ सरीर ॥ ७क ॥
काती काती सारिखउ, छाती मां जाणे तीर।

परव दीवाली किम करूं, नही नणदी नउ वीर ॥८क॥
मगसिर मास सहेलिया, आव्यउ दुख दइ ण।
पालउ वालइ पापीयउ, आवउ वाल्हा सइंण ॥ ६क॥
पोसइं काया पोसीये, कीजे सरस आहार।
सुईयइ सेज सुहामणी, आणी हेज अपार ॥ १० क ॥
माहइ दाह पड़इ घणउ, वाये सीतल वाय।
सीयाला नी रातड़ी, वाल्हु आवे दाय ॥ ११ क ॥
खेले फाग संजोगिणी, फागुण सुखदाय।
नेमि नगीनउ घरि नही खेलइ मोरी बलाइ॥ १२ क॥
चतुरा चैत्र सुहामणउ, रिति सरस वसंत।
राती कूंपल रूंखड़े, मुलकड़ी ए हसंत ॥ १३ क॥
नयणे आंसू नांखता, वउल्या बारह मास।
निठूर नाह न आवीयउ, जीउं केही आस ॥ १४ क ॥
रागभरी राजिमती, लीधउ संयम भार।
कहे जिनहरप नहेजसू, मिलीया मुगति मझारि॥ १५ क॥

नेमि राजिमतो बारहमास

ढाल वीझारा गीतनी

रांणी राजुल इणपरि वीनवैं, नेम आयौ मगसिर मास रे।
कांइ तोरण थी पाछा वल्यां, कांइ अबला तजीय निरास रें।१।
हुंतो मोही रे साहिब सांमला।
इणि पोस महिने सीपड़े, नेम सीत न सहणौ जाय रे।

मंदिर न सुहावै एकली, वीनतड़ी सुणो यादवराय रे ॥ २ ॥
इम किम करि वोलुं एकली, दुखदायक आयौ माह रे।
कोइ सयण न दीसै एहवौ, मैले मनमोहन नाह रे ॥ ३ ॥
वाल्हेसर सांभलि वीनती, जौ फागुन में नावेस रे।
तौहुं चाचर रै सिसि खेलती, होली मैं झंपावेस रे ॥ ४ ॥
नेम चैत महीनौ आवीयौ, यादवराय लीयौय वैराग रे।
मृगानयणी फाग रमै सखी, नेम तुझ विण कैसो फाग रे ॥ ५ ॥
वैशाखे अम्बवन मोरिया, मौरी सगली वनराय रे।
विरहानल मुझ काया तपै, नेम तुझ विण घड़ी न सुहायरे ॥६॥
लू वाजै तावड़ आकरौ, नेम जेठ सुहावे छांह रे।
आगुलीयां केरी मुद्रड़ी, आतौ आवण लागी वांह रे ॥ ७ ॥
राजुल निज सखियां नै कहै, औतौ आयो मास आसाढ रे।
निसनेही परिहरिनै गयो, इम गोरीसु करि गाढ रे ॥ ८ ॥
श्रावणीयै पावस ऊलस्यो, दुखियां दुखि साले राति रे।
वीजलियां लीये रे झबूकड़ा, तिम विरहिणि दाझे गात रे ।९।
भाद्रवड़ौ वरसे चिहुदिसैं, नेम नदीये खलक्या नीर रे।
कूण सुणै कहु किण आगलै, घरि नहीय नणद रौ वीर रे ॥१०॥
आसू आयौ अलखांमणौ, निरमल जल नदीय निवांण रे।
सासू जायौ आयौ नहीं, इम रहीयै केम सुजाण रे ॥ ११ ॥
काती कता विण कामिनी, वौल्यौ वारह मास रे।
राजुल मन दृढ़ करि आदर्यौ, संयम नेमीसर पास रे ॥ १२ ॥

पाल्यौ नव भव चौ नेहलौ, मिलीया शिवपुरि भलि रीत रे ।
जिनहरख कहे साजन तिके, जे पाले अविहड़ प्रीति रे॥ १३॥

इति श्री नेमि राजीमती स्वाध्याय सम्पूर्ण

नेमि राजिमती गीत

सावण मास घनाघन वास, आवास में केलि करे नरनारी ।
दादुर मोर पपीया रहें, कहो कैसे कटे निशि घोर अंधारी ।
वीज झिलामिल होइ रही, कैसें जात सही समसेर समारी ।
आई मिल्यो जसराज कहैं नेम राजुल कूं रति लागे दुखारी । १

भादव में यदुनाथ गअे, कहो कैसे रहे मेरे प्राण अकेली ।
घोर घटा विकटा करि कैं, वरसे, डरपुं घर मांहे अकेली ।
आगे वियोग की देह दही, मेरी हीम दहे जैसे राज की वेली ।
राजुल कहे जसराज भई सखी, नेम पीया विण में तो गहेली । २

चंद की ज्योति उद्योत विराजत, मुख्य सयोगिणि चितमें पायो ।
पंकज फूले सरोवर मांझि, निरमल खीर ज्युं नीर दिखायो ।
मन्द भयो वरसात दिसु दिसि, पन्थ को कादम कीच मिटायो ।
राजुल भासे निहारे जसा कहे, आसू में सासू को जायो न आयो ।३

कातिग मास उदास भई, रांणी राजुल नेम विना दुख पावे ।
प्राण सनेही सोई जसराज जो रूठे पीयारे कूँ आणि मिलावे ।
वो रही ठोर दिवाली करे, नर दीपक मन्दिर ज्योति सुहावे ।
हूं रे दिवाली करूंगी तबे, मनमोहन कन्त जबे घरि आवे ॥ ४

मास मगसिर आयो सहेली री, सीत अबे मेरो देह दहेगो ।

नींद गई तिस भूख गई, भरतार विना कूण सार न हेंगो।
योवन तो भयो जोर मतंगज, कैसे जसा वश मेरे रहेंगो।
नेम गयो मेरो प्राण रह्यो तो, वियोग की पीर सरीर सहेंगो।५
पोस मैं रोस निवारि के आई, मिल्यो यदुनाथ कृपा करिकें।
किधुं अवगुन मेरे गए कछु देखिकें, कै किसही सूं गए लरिकें।
तुह्म तो सब जांण प्रवीण कहावत, तोरणे आई गए फिरिके।
कहा लोक कहेंगे भले जु भले, जसराज वियोग हीयें खरिकें। ६
माह में नाह गयो चित चोरि के, प्रीति पुरातन तोरिके मोस्युं।
जोर न है कछु नाहस्युं आसी री, नाह वियोग दीयो तन सोसुं।
नाह की प्रीति कसव के गूंग ज्युं, मेरी तो मजीठ युं तोसुं।
कै तो मिलो जसराज यदुपति, कै तो तुम्हारी सेवक होस्युं। ७
फागुण में सखी फाग रमैं, सब कामिनी कन्त वसन्त सुहायो।
लाल गुलाल अवीर उड़ावत, तेल फुलेल चंपेल लगायो।
चङ्ग मृदङ्ग उपङ्ग वजावत, गीत धमाल रसाल सुणायो।
हूं तो जसा न हैं खेलुंगी फाग, वैरागी अज्युं मेरो नाह न आयो।८
चैत महीने में पात झरे द्रुमके सवही फिरि आए न अंहि।
मो तन को सखी वान चल्यो, नहे नेम पीया जव थै जुं गए हैं।
मो थे भले वपरे द्रुमही फिरि, योवन रूप सुरंग लए हैं।
मैं कहा आई कीउ जग में, सुख पायो नहें विधि कष्ट दए हैं।९
मास वैशाख में दाख भई, अरु अम्बन के सिर मोर लगे हैं।
कोकील पीउ पीउ बोलत, पीउ तो मोही कुं दूरि भगे हैं।

राति में उठुं चमकी चमकी कें, नींद न आवत नैन जगे हैं।
कन्त बिना जसराज बिराजी में, कोण दिसी केउ कोउ सगे हैं।१०
जेठ भखं सखी जेठ के वासर, आतपतो रवि जोर तपै हैं।
नाह वियोग दीयो करवत जो, हीयो खराखरि मेरो कपे हैं।
राति रू द्योस लीये जपमाल, पीया जी पीया मन मेरो जपे हैं।
नाथ मिलें तो टलें दुख को दिन, राजुल अैसे जसा विलपे हें।११
बादर तो अब आदर कीनो, अवाज भइ यु घनाघन की।
ऋति पावस जांणिके आअे विदेसी, निवारणि जारि विघातनकी।
मेरो नाथ गयो फिरि आयो नहैं, किसी कुं कहुं बात मेरे मनकी।
दृग नींद गई विणि वींद जसा, गई भूख अउख भई अन्नकी।१२
राजुल राजकुमारि विचारि के, संयम नाथके हाथ गह्यो हें।
पंच समिति गुपत्ति धरी निज, चित्त में कर्म समूल दह्यो हें।
राग द्वेष न मोह माया न हें, उज्जल केवल ग्यान लह्यो हें।
दम्पति जाइ वसें शिव गेह में, नेह खरो जसराज कह्यो हें।१३
॥ इति श्री नेमि राजिमति बारमास समास ॥

नेमीनाथ नो बारेमासो

कहिजो सन्देसो नेम नै, जादवपत नै जी जाय।[1]
निस दिन झूरें गोरड़ी, गोरी धान न खाय ॥ क० १॥
वैशाखे वन मोरीया, मोरी[2] अे सहंकार।

---

१ कहिज्यो रे संदेसड़ो जादवजी नै जाय। २ मोरी सहु वनराय।

विरह जगावै कोइली, नही घर नो भरतार[3] ॥ क०२॥
जेठ तपै अति[4] आकरो, सुहावै ठंडी छांह[5] ।
आंगुलीया री मुंदड़ी, आवण लागी बांह[6] ॥ क०३॥
आषाढ़ बादल हुवा, आयो पावस मास ।
हुं कहो ने किणपरि रहुं, अकेलड़ी निरास ॥ क०४॥
सावण मास[7] सहेलियां, बरसै बहु जल धार ।
बापीयो पीउ-पीउ करै, पीउ सालै अपार ॥ क०५॥
भाद्रवड़ो बरसै भलो[8], नदियां खलक्या नीर[9] ।
चिहुं दिस चमकै बीजली, जाणे पावस[10] झील ॥ क०६॥
आसु पाणी निरमला, निरमल[11] गोहू खीर ।
आवो प्रीतम पीवजो,[12] (पीयां) ठाढो होय शरीर ॥ क०७॥
काती कातर[13] सारखो, छाती मांहे तीर ।
परब दिवाली किम करुं, नहिं नणदल (रो) वीर ॥ क०८॥
मिगसर मास सहेलियां, आया दुखण दैण ।
पालो बाजै पापीयो, नहि[14] बोलो सेण ॥ क०९॥
पोसे काया पोषीयै, कीजै सरस अहार ।
सुइजि[15] सेज सुहामणि, आणी नेह अपार ॥ क०१०॥

---

३ घर नहीं यादव राय । ४ रवि । ५ दाझै कोमल देह । ६ विरह दावानल ते दहै पिव विण उलहवै कुण अेह । ७ घोर घटा करि । ८ भर गाजीयो । ९ खाल । १० पावक झाल । ११ निरमली गो खीर । १२ पीजिये । १३ काती । १४आवौ बाल्हा सैण । १५ पौढो ।

माहे दाड़ो पड़े घणो, वाजै ठाढी[1] वाय।
सीयाला नी शतड़ी, चालो आवै दाय॥ क०११॥
फागुण मास[2] सहेलीयां, फागुण मांनै सुहाय।
नेम नगीनो घर नहीं, खेले मोरी बलाय॥ क०१२॥
चैत चतुर सुहामणौ, रात[3] सरस वसन्त।
राती कूँपल रूखड़े, मुलकाड़ी[4] हसन्त॥ क०१३॥
आंख्यां[5] आंसू नांखती, बोल्या बारहमास।
निखरो[6] नेम न आइयो, तेहनें[7] केहनी[8] आस॥क०१४॥
रंग[9] भरी[10] राजेमती, लीधो संयम भार।
कहे जिनहरख सुजान[11], मेलो[12] मुगति मझार॥ क०१५॥
॥ इति श्रीनेमनाथ राजेमती बारहमासीयो सं० ॥

नेम राजुल बारहमास

सरसति सामिणी वीनवूं, नेम वंदु चोवीसी पाय।
गुरु प्रसादे गाइसु प्रभु, राजल नेमीसर जिनराय॥१॥
नेमीसर वरज्यो अमांरो मान—आंकड़ी
राजुल ऊभी वीनवे नेम! मत जाज्यो गिरनार।
यादवराय! मत जाज्यो गिरनार॥२॥ नेमीसर

---

१ सीतल २ खेलै फाग सँजोगड़ी, फागुण बहु सुखदाय ३ रितु ४ फूली कलियां ५ नयणै आसूं नाखता ६ निठुर नाह ७ जीवूं ८ किणरै ९ राग १० भणी। ११ सहेज सू १६ मिलियां।

प्रीऊ चाल्या पदमणि कहो, नेम ! आयो मगसिर मास ।
चिहुँ दिस सीत चमकीयो, वालम ! हीये विमास ॥३ ॥
हुलराये उतर दिसां, नेम ! पालो पवन संजोय ।
पोस महीनै गोरड़ी, चतुर न छंडे कोय ॥ ४ ॥
माह महीने सी पड़े, नेम ! इण रूत चाले वलाय ।
ऊनी सज्या पोढिये, प्रीउ ! कामिणी कंठ लगाय ॥५॥
फागुण मासे खेलीये नेम ! सुण भोगी भरतार ।
परदेसा री चाकरी, रसीया ! चाले कुंण गमार ॥६॥
चैत मासे चित चोरीयो, नेम ! हुवो चालणहार ।
तंग कशीया नहीं तुरीया तणां, साथे सहस सिरदार ॥७॥
वैसाखे जादव चालीया, नेम ! सयणा सीख करेह ।
ऊभी झूरे राजेमती, टपटप नयण भरेह ॥ ८ ॥
लू वाजे दिणयर तपे, नेम ! मास अकरारो जेठ ।
आशा पावस परीघले, ऊभी गोख मेड़ी हेठ ॥ ९ ॥
चिहु दिश धरा ऊनम्यो, साहेब ! आयो मास असाढ़ ।
दुखदाई यादव चालीयो, गोरी सूं करि गाढ़ ॥ १० ॥
सखीयां तन सणगार कर, प्रीया खेले सावण तीज ।
मो मन तो चमको चढ़े, जेम बादल झबुके बीज ॥११॥
भाद्रवड़ो भर गाजीयो, जीहो नदियां खलक्या नीर ।
रयण अन्धेरी बीहामणी, सहीया घर नहीं नणद रो वीर ॥१२॥
आसो मास विदेश पीउ, मोह विरह लगायो बांण ।

सेजड़ीया विष घोलीया, ख्याली मन्दिर हुवा मसाण ।१३।।
कातिक में कन्तजी पधारसी, नेम सीजसी सघला काज ।
मृगनेणी उछव करे, नेम जादव कारण जसराज ।।१४।।
बारे मास पूरा हुवा, नेम आव्या नहीं नेमनाथ ।
आठ भवा लग अेकठा, नवमे शिवपुर साथ ।। १५ ।।
मोह जंजाल तजि करी, जादव जाय चढ़ी गिरनार ।
प्रभु पासे व्रत आदरी, पुहता मुगति मझार ।।१६।।

राजुल बारमास

दूहो

पीउ[1] चाल्यो हे[2] पदमणी, आयो मिगसर मास ।
चिहुं दिस सीत चमकीयो, वालहा हीये विमास ।।१।।

सवैयो

मगसिर मुहुम भणी प्रीय चालत, सुन्दरि आय अरज करे ।
मनमोहन कन्त विचारीये चितसुं, मुंढ़ भयां नहु काम सरे ।।
इह सेझ सकोमल मन्दिर छोड़ि के, जाय उजाड़ में कोण परे।
यह भांत करे समझावत सुन्दर, वेन न लोपत पाव धरे ।।१।।

दूहो

ऊलरीयो[3] उतराध रो पालो पवन संजोय[4] ।
पोस[5] महीनै गोरीड़ी, कदे न छंड़ै कोय[6] ।। २ ।।

---

१ प्रीतम २ पदमणि कहे ३ उल्हरियो उत्तर दिसा ४ संयोग।
५ पोस मास री गोरड़ी ६ लोग।

सवैयो

असमांण ठंठार पड़ै इण पोसमें, नीर जमैं कूआ वावज केरा ।
चालीयै केम इसी रित मांहि, सू लीजीयै स्वाद छही रित केरा।
देह कूं राखीयै कुंकुंम रंगसी, दुख न दीजीयै वालम मेरा ।
दुलंभ अवतार मनुष्य को जु, हारसी जनम सु होय खवेरा ॥२॥

दूहो

माह महीनै सो पडै, इण रित चलै वलाय[1] ।
ऊंडै[2] पड़वै पोढ़जै, कांमण कंठ लगाय[3] ॥३॥

सवैयो

माह अथाह जलै बन रूंख जु, चालण रित अजु नहीं आई ।
पड़िवैं पत्रि आय पल्यंग समारिकै, पोढीयै कांमण कंठ लगाइ ।
पान लवंग कपूर सोपारी, सनूर वधै निज देह सवाइ ।
अतर कस्तूरी जवादि मंगाय, सुवास चंपेल फुलेल पहराइ ॥३॥

दूहो

फागुण मास वसन्त रित, सुण भोगी भरतार ।
परदेसां री चाकरी चालै[4] कोण गमार ॥४॥

सवैयो

फागुण मास उलासह खेलत, फाग रमै वहु नारि की टोरी ।
लाल कंसाल मृदंग वजावत, लगावत चन्दन केसर घोरी ॥

---

१ वलाइ २ ऊंचा पड़वा पोढनैं ३ लगाइ, ४ जावै ।

लाल गुलाल अबीर उड़ावत, गावत गीत सुहावत गोरी।
नीर सुगन्ध सरीर कु छांटत, रीझत गेह करी जब होरी ॥४॥

दूहो

चतुर महीनो[1] चैत को, पियाजी[2] चालणहार।
तंग कसै[3] तुरीयां तणां, साथै[4] वड़ा सिरदार ॥५॥

सवैयो

चैत्र सुमास वसंत की, रित सजित भये वनराय सवीने।
केल कदम्बक अम्ब सु रायण. नाग पुनाग रहै डंवर कीने॥
उंबरीक दाड़िम श्रीफल खारिक, दाख विदाम विजोर समीने।
फूलत मालती केतकी चम्पक, लीजियै प्रेमल नाह नगीने ॥५॥

दूहो

प्रीउ वैसाखे हालीया[5], सैणां[6] सीख करेह।
ऊभी झूरै गोरड़ो, डब डब नैण भरेह ॥६॥

सवैयो

वैसाख तुरंगम सझे हरि सागत, चरण जड़े उस लोह खभंगे।
हथियार गुरज संभाय वंदूक, तुरस धनुष बरछी विरंगे।
कमर कसे तनवारन लागत, टोप बगतर पैहर सुचंगे।
मांगत सीख सुगोरी कन्या तब, त्रापड़ तुरीय सो जाय असंगे ॥६

१ महीने चैत रे, २ हुयोज, ३ कसिया, ४ साथीड़ा, ५ चल्लियो
६ सयणां,

दूहो

लू वाजै दिणयर तपै, मास अकारो[1] जेठ।
आंख्यां पावस ऊलस्यो[2] ऊभी छाजां[3] हेठ ॥७॥

सवैयो

दिन जेठ तपै निस वासर, ढूं पड़ै इण मास अटारो।
परजले वन रूंख दावानल लागति, जीव अनेकको होत संहारो॥
नीवांण न पावत नीर पंक्षिअन, सूकत गात गिरै तन सारो॥
इण मास देसावर छांड़ि गये, खुवार कर्यो मुझ कन्त जमारो ॥७

दूहो

प्रीउ मोह्यो परदेसड़ै[4], आयो मास असाढ़।
दुख दे[5] पापी हालीयो, कर[6] गोरी सुं गाढ॥

सवैयो

आसाढ़ धड़कत मेह धरा, दिस मंडत कोस नवे खंड जैसी।
करै सिणगार अनूप वसंधरा, रीझत इंद सुभोग लहेसी॥
भरतार बिना हम केम करां, किस आगल वात कहोजीयै जैसी।
आपणो अंगही आप उघाड़त, इजत देहकी दूर रहैसी ॥८॥

दूहा

सहीयां! श्रावण आवीयो, उमटि[7] आयो मेह।
चमकण लागी वीजली, दाझण लागी देह ॥ ९ ॥

---

१ उतारो। २ ऊलरो, ३ मेड़ी, ४ परदेस मे, ५ ले, ६ गोरी सुं कर, ७ ऊमट।

सवैयो

श्रावण मास करी घनघोर, सजोर, सुघोर दमामो वजावत आयो ।
जलधर वरसत चात्रक बोलत, दादुर मोर सजोर करायो ॥
चमकत दांमनी झूरत यांमनी, सालत देह में दुख सवायो ।
कुंकुम काजर मेलत कूंपलि, अंग आभूषण सरव मिटायो ॥६॥

दूहो

भाद्रवड़ो[1] भर गाजीयो[2], नदी खलक्यां नीर ।
बपीयौ[3] पिउ पीउ[4] करै, घरि[5] आवो नणद रा वीर ॥१०॥

सवैयो

भाद्रव वरखत मेह अहोनिसि, निरमल नीर सरोवर भरीया ।
नदी नाल प्रनाल बहै असराल, सुगाल भये सब डूंगर हरीया ।
निरखत नैण सुवैण न बोलत, नाम रिदै अेक प्रीतम धरीया ।
और कछु नवि मांनत देवकुं, दीसत देवल पथर परीया ॥१०॥

दूहो

आसू मास विदेस पीउ[6], विरह लगायो[7] बांण ।
सेझड़ीयां बिस घोलीयो, मन्दिर हुयो[8] मसांण ॥११॥

सवैयो

आसू गयो मोह जोवतां वाटड़ी, नावत कन्त अजेय सहेली ।

---

१ भादवड़ो २ जागीयो ३ बापहीयो ४ पीउ पीउ, ५ सुणे नणद, ६ थीउ, ७ लगावे, ८ भयो ।

सरीर सकोमल होत है पींजर, नीर विना जिम सूकै है वेली।
तरवर तन विराज रहे, कुच लागत है फल दोय नवेली।
भोग सवादी तजया सव आज कै, छाय रह्यो पिय मन्दिर मेली।

दूहो

काती कंत पधारीया, सीधां वंछित काज।
घर[1] दीपक उजवालीयां[2], गोरंगी जसराज ॥१२॥

सवैया

कातिक मास पधारत प्रीतम, नौवत जैत नीसांण घुराअे।
पैसत पोल वंदीजन सेवत, मोती वधावत नैण वराअे॥
वंटत सीरणी नयर अनोपम, गावत मंगल गीत सराअे।
हास्य विनोद करै वेहुं चातुर, सुन्दर हुंस सुं देह पूराअे ॥१२॥

दूहो

इह विधि बारह मास धन, वरने सुकवि विनोद।
विवेक चतुरहि जे सुनै, पांवत परम प्रमोद ॥१३॥
॥ इति श्री बारहमासी दूहा सवैया संपूरणं ॥

प्रभात-वर्णन पार्श्वनाथ स्तवन

राग ललित

जागो मेरे लाल, विशाल तेरे लोयणा।
माता वामा कहे, मेरो जीव सुख लहै।

---

१ मंदर, २ उजवालीयो, ३ बारे मास पूरा थया, पूगी मननी आस
मनमान्या साजन मिल्या, दिन दिन अधिक उल्हास।

उठो पूत भोर भयो, कछु भोयणा ॥१॥
प्राची दिशि सूरज की, किरण प्रगट भई।
घर घर ग्वालणी, विलोवत विलोयणा।
निज निज मैया मै, आय उठी उठी बाल।
आडौ कर करि रहै, मांडि रहै रोयणा ॥२॥
आलस भरे है नैण, बोलत कछु न वैण।
रह्यो नहीं जात मोपै, देख्यां सुख पाइये।
कहे जिनहर्ष निहारो, मेरे प्राणनाथ।
तेरी ही सूरत पर, बलि बलि जाइये ॥३॥

पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ फाग री

अमल कमल दल लोयणा हो, बदन सरोज विकास।
मन मधूकर अटकी रह्यो हो, देखत ही प्रभु पास।
मनमोहन मूरत सांवली हो, अहो पूरण तन मन आस ॥१॥
सुर सकलंकित जग भर्यो हो, कोइ न आवै दाय।
तुझ दरसण फरसण करूं हो, हियड़लै हरख न माइ ॥२॥
साहिब सरजणहार तूं हो, करुणा रस-भंडार।
परम दयाल कृपाल तूं हो, आतम तणा आधारि ॥ ३ ॥
हुं अपराधी मो परे हो, करम नयण निहाल।
जिम तिम करि प्रतिपालियै हो, आपणो बिरुद संभार ॥४॥
गुण कीधै जै गुण करै हो, ए तो जग आचार।

अवगुण ऊपर गुण करै हो, ते विरला संसार ॥ ५ ॥
मुझ पातिक दूरै हरौ हो, तुझ विण अवर न कोइ।
सिखरां जलधर वाहिरौ हो, निरमल कहु किम होइ ॥६॥
दरसण दीजै सांमला हो, पुरसांदाणी पास।
सेवक सुखिया कीजिये हो, कहै जिनहरख अरदास ॥७॥
॥ इति श्री पार्श्वनाथ स्तवंन ॥

पार्श्वनाथ स्तवन

राग काल्हरो

माहरा मन नी वातड़ी जी तुम्ह आगल कहुँ पास जी।
सुसनेही साहिब म्हांरी आस पूरौ जी।
हुँ तो सेवक ताहरौजी, दरसण लील विलास जी ॥१॥
जगगुरु तुम्ह सुं प्रीतड़ी जी, नै कीधी हित जांण जी।
मत विरचौ मुझ सुं हिवै जी, थे छो गुण नी खांण जी ॥२॥
आसा लूधां माणसां नी, आसा पूरै जेह जी।
तेहनी सेवा कीजियै जी, कदेय न दाखे छेह जी ॥ ३ ॥
मुझ मन लागी मोहणी जी, भव पैला ना काइ जी।
तूं मांहरै हियड़ै वसै जी, सेव करूं चित लाइ जी ॥ ४ ॥
वामा अंगज वंदिये जी, आससेण नृपना नंद जी।
मनमोहन प्रभु सेवतां जी, कहै जिनहरख आणंद जी ॥५॥
॥ इति श्री पार्श्वनाथ स्तवनं ॥

पार्श्वनाथ लघु स्तवन

ढाल ॥ पजावी री राग काफी सिन्धु

मूरति मोहणगारी दिट्ठड़ां आवै दाय ।
चरण कमल तइडे सोहियां, मन भमर रह्यो लोभाय ॥१॥
सनेही पास जिणंदा बे, अरे हां सलूणे पास जिणदा वे ।आ०
तूं ही यार सनेही साजन, तूं ही मैडा पीऊ ।
नैणे देखण ऊमहै, मिलवे कूं चाहै जीव ॥ २ ॥ स०
हीयड़ा भीतर तूं ही वसै है, और न कोइ सुहाय ।
सांमलिया वलि मैं जाउं तैंडी, मोहसुं प्रीत लगाय ॥३॥स०
आस असाढी क्युं नही पूरै, करूंअ तुसांढी आस ।
लाज रखोगे आपणी, करिहउ सफली अरदास ॥ ४ ॥ स०
श्री अससेण वामा दा पूता, आसत सपत जहान ।
दीनदयाल मया करउ, जिनहरख धरइ मन ध्यान ॥५॥स०

॥ इति श्री पार्श्वनाथ लघु स्तवन ॥

पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ सोहला नी ॥

मनना मानीता हो साहिब सांभलउ, सेवक नी अरदास ।
तेहनइ दाखवियइ हो हीयड़उ खोलिनइ, जिणि सुं मन इकलास ।१
घणां दीहांरउ हो अलजउ मुझ हुतउ, देखण तुझ दीदार ।
भाग संजोगइ हो मेट्या पासजी, सफल थयउ अवतार ॥२ म॥
धन धन आज दिवस ऊगउ भलउ, मिलीया वाल्हा मीत ।

भव भव ना दुख सगला वीसर्या, वाधी प्रीति प्रतीत ॥३ म ॥
जिणि सुं मन मिलीयउ हो हिलियउ हीयड़लउ,
कलीयउ किणिही न जाइ ।
वलीयउ दिन साहरउ हो आजसुहामणु, फलीयउ सुरतरु पाय ॥४
एतला दिन तुझसुं हो प्रीति बनी नही, तउभमीयउ भव माहि।
प्रीति लगाइ हो मइ तुझ सुं हिवइ, रहिसुं चरण संबाहि ॥५ म॥
पुण्य प्रबलथी हो मेलउ पामीयउ, जेहनउ धरतउ ध्यान ।
मन ऊलसीयउ हो तन मांवइ नही, जिम चातक जल दान ।६।
तुझनइ देखी नइ हो हरख वध्यउ हीयइ, अवर न आवइ दाइ ।
बिंबविराजइ हो थंभण पासजी, मुझ जिनहरख सुहाइ ॥७ म॥

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ प्यारउ प्यारो करती एहनी

सखीरी भेट्या मइं जिनवर आजो, तारण भव जलधी जिहाजो ।
सीधा मनवंछित काजो, पाम्यउ त्रिभुवन नउ राजो हो लाल ।
पासजी मन मोह्यउ, मन मोह्यउ वामानदा ।
आससेण कुल गयण दिणंदा, देखी देखी मुख चंदा ।
लहइ नयण चकोर आणंदा हो लाल ॥ २ ॥
सखीरी प्रभु मूरति देखि सुरंगी, अंगइं फावइ भली अंगी ।
आंखड़ीया अधिक उमंगी, सूरति लागइ अति चंगी हो लाल ।३।
सखीरी जाणुं रहीयइ प्रभु पासइ, पूजं प्रभु चरण उलासइ ।
भव भवना दुकृत नासइ, इम हियड़ामां प्रतिभासइ हो लाल ॥४॥

सखीरी साहिब लागइ मुझ प्यारउ, मेल्ह्यउजायइ नइन्यारउ।
जिम रिद्यकमल विचि धारउ, इम करि निज आतम तारउ होलाल
सखीरी प्रभुना गुण मुझ मनवसिया, निरमल जिमकंचन कसीया।
थायइ जे वेधक रसिया, ते प्रभु संगति ऊलसीयाहो लाल ॥ ६
सखीरी धन धन जे नाह निहालइ, धन धन जे पाय पखालइ।
ते नर समकित उजुआलइ, जिनहरख अमरगति भालइ हो लाल।७

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ छाजइ वइठी साद करुं, हूँ लाज मरूँ, घरि आवउ
क्यूनइ लो, म्हारा राजिंदाजी रे लो ॥ एहनी

मनरा मान्या साहिब मोरा प्रणमुं तोरा पंकज पाय सदाई जो।
म्हांरा राजेसरजी रे लो,
वाल्हा वाल्हेसर पास जिणेसर, थांसुं म्हे लयलाइ लो ॥१ म्हां ॥
साहिब उपगारी छउ हितकारी, नरनारी सहु भाखइ लो। म्हां।
भरीया गुण रा गाड़ा थेतउ, सेवक म्हे तु, कहांछां सगलां साखइलोम्हां
मिलीवारी म्हेहूंसकरां छां, आसधरांछां, आस्यांम्हारी पूरउलोम्हां
कर जोड़ीनइ कहांछां थांनइ, परगट छॉनइ, चिंताचितरी चूरउलो म्हां
म्हे तउथाहरा दास कहावां, छोड़िन जावां, थांहरे चरणेरहिस्यां लोम्हां
सेवकने साहिब रउ सरणउ, ओहीज करणउ, उणथीवंछितलहिस्यांलो
थासुं म्हांरउ चित्त विलूधउ, लागउसूधउ, चोलतणी परिजाणउलो।
थांहरां मनरी वात न जाणां, किसुं वखाणां, पिणिमतचूकउ टांणउलो
अवसर आन्यउ जाणन दीजइ, लाहउ लीजइ, अवसर गयउनआवइलो

सेवकने साहिब साहिब साधारउ,दुख्य निवारउ,जिम दीपउवड़दावइ
मोटाने कहता लाजीजे, पिणिकी कीजइ,मांग्यां विणिनलहीजेलो।
दीजइ हिवइजिनहरख सनेही सुख्य निरेही,कासुंघणउ कहीजइलो॥

पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ लाहउ लेज्यो जी ॥ एहनी

भावइ पूजउ जी, दोहीलउ नर भव पामी।
श्री संखेश्वर सांमी, भावइ पूजउ जी॥ भा॥
भाव भगति सुं सिरनामी, जगजीवन अन्तरजामी।१ भा।
केसर भरीयइ कचोली, सुन्दर सारीखी टोली।
भगती भांभर भोली, पाय नेवरीयां रमझोली॥२ भा॥
टोडर कुसुम चड़ावउ, भावन वहुपरि भावउ। भा।
श्री जिन ना गुण गावउ, जिम भव मांहि न आवउ॥३ भा॥
कृष्णागर अगर सुगन्धा, उखेवउ छोड़ी सहु धन्धा। भा।
पुण्य तणा पड़इ वंधा, पामइ अमरापुर सन्धा॥ ४ भा॥
साहिब सिव सुखदाता, एसुं रहीयइ जउ राता। भा।
पालइ वालक जिम माता, सगली पूरइ सुख साता॥ ५ भा॥
सुन्दर सूरति सोहइ, ए सहुना मन मोहइ। भा॥
ए सम अवर न कोहइ, भव भवना पाप अपोहइ॥ ६ भा॥
साहिब सुगुण सनेही, थायेइ नही निसनेही। भा।
वाल्हेसर मुझ प्रभु एही, जिनहरख वारुं मुझ देही॥ ७ भा॥

पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ ऊभी भावलदे राणी अरज करइ छइ ॥ एहनी

बे कर जोड़ी साहिबा अरज करुं छुं, अरज सेवकनी मानउ हो ।
वामादेना जाया साहिब महिर करीजइ, महिर करीजइ साहिब
वंछित दीजइ प्रगट कहु नही छांनइ ॥ १ वा० ॥

आण तुमारी साहिब हूं सिरि धारूं, चरण तुम्हारा जुहारुं हो ।
आठ करम मुझ वइरी सबला, ते आगलि किम हारुं हो ॥ २ ॥

तुझ सुपसायइ साहिब मुझ कुण गंजइ, तुमसुपसायइ मन रंजइ हो ।
तुम सुपसायइं कोइ आण न भंजइ, तुम सुपसायइ दुखवंजइ हो ॥ ३

सुरतरूनी साहिब सेवा जउ कीजइ,
सेवा मां रहीयइ तउ सुरतरु फल लहीयइ हो ।
तिम साहिब नी साहिबा सेवा जउ कीजइ,
तउ शिवफल पामीजइ हो ॥ ४ ॥

करुणा ना सागर साहिबा गुण वइरागर, तुं तउ पर उपगारी हो ।
जनम मरण साहिबा हुं दुख पीड़यउ, सरणागत सुविचारी हो ।५

ताहरइ तौ सेवक साहिबा छइ लख कोड़ी, सेवा करइ करजोड़ी हो ।
पिणि माहरइ नही कोई तुझ जोड़ी हो वा०, सेवूं आलस छोड़ी हो ।
सेवा साची जउ साहिबा ताहरी थास्यइ, तउ मुझ पातक जास्यइ हो ।
मन जिनहरख साहिब सुं लागउ, भ्रमण सहु हिवइ भागउ हो ।७

पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ समुद्रविजय कउ नेमकुमरजी, सखी थे तउ जाइ मनावउ नइ ।
भोरील्यावउ नै, सावलीया ने समझावउ नइ ॥ एहनी

सहीयर टोली झांभर भोली, सुचि जल पावन थावउ ।
गोरी आवउ नइ, साहिबीया नइ, न्हवरावउ नइ, गोरी आवउ नइ।
पहिरि पटोली सुन्दर चोली, मुख मुहुंकोसम्बन्धावउ नइ ॥१॥
मृगमद सरस कपूर अरगजउ, चन्दण कूँकूँ घसावउ नइ ।
भावसु रंगइं प्रभु कइ अंगइ, अंगीया अवल वणावउ नइ ॥२॥
जाइ जूही चंपक अरु केतकि, टोडर आणि चड़ावउ नइ ।
रतनजड़ित कंचण आभूषण, जिनजी नइ पहिरावउ नइ ॥३॥
काने कुंडल दिनकर मंडल, सीस मुगट सोभावउ नइ ।
सोल सिंगार वणाइ सहेली, आगइ नृत्य करावौ नइ ॥४॥
वामानंदण त्रिभुवनवन्दन, भावइं भावन भावउ नइ ।
लहउ जिनहरख हरख सुं सिव सुख, हित सुं हेत लगावउ नइ ।५।

पार्श्वनाथ स्तवन

राग ॥ वृन्दावनी मल्हार ॥

श्री पास जिणंद जुहारीयइ,
नील कमल दल कोमल काया, देखि हरख वधारीयइ ॥१॥
प्रभु मूरति मन मोहनगारी, रिदयकमल विचि धारीयइ ।
जनम मरण भव-दुख-सागर मइ, आपणपउ निस्तारीयइ ॥२॥
अलख निरंजन अगम अरूपी, अजर अभेद्य विचारीयइ ।

सिद्ध स्वरूप न रूप लखइ कोई, सो साहिब संभारीयइ ॥३॥
सकल समृद्धि रिद्धि कउ दाता, ताकउ जस विस्तारीयइ ।
तउ छिनक मइ ताकी सांनिधि, आवागमण निवारीयइ ॥४॥
अलवेसर परमेसर चित थइं, दास कबइं न वीसारीयइ ।
प्रभु जिनहरख हरख धरि मो परि, वामानंद वधारीयइ ॥५॥

पार्श्वनाथ स्तवन

राग ॥ वसन्त ॥

श्रीपासकुमर खेलइ वसंत, सखीयन टोरी मिलि मिलि हसंत ।
काइ सखी वजावइ मृदंग रंग, कांइ ताल कंसाल वजावइ चंग ।१
चोवा चन्दन पाके तेल, नामइ सिर ऊपरि माचइ खेल ।
कनक सिंगी भरि कूँकूं नीर, परभावती छांटइ पीउ शरीर ।२।
अपणी राणी सूं आणी रीस, तेल सुगन्ध लेई नामइ सीस ।
लाल गुलाब सूं लेपइ गात, अंसुक फूले केसू दिखात ॥ ३ ॥
गंगाजल मे प्रभु करइ केलि, राणी प्रभावती सखी सुमेलि ।
जल क्रीड़ा क्रीड़ा करइ छोरि, भरिबाथ नाथ नांखइ बहोरि ।४।
रामति करि आए वामानंद, सब कुं उपजाए मन आणंद ।
केसर मइ सब गरकाव होइ, जिनहरख वामा लहइ हरख जोइ ॥५।

पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ मोरी दमरी अपूठी ल्याज्योजी, मोरी द० एहनी ॥ राग विहागड़उ ॥

मोरी वीनती एक अवधारउ जी, मो० अन्तरजामी तूं अलवेसर ।
इतनी बात कहुँ प्रभु तोसूं, मोकूं भवदुख सायर तारउ जी ।मो

सेवक जाणि सदा सुख दीजइ, भवकी पीर हरउ न क्यू साहिब।
निज तारक बिरुद विचारउ जी ॥ १ मो० ॥
साच कहुं प्रभुजी तुझ आगइ, तुं साहिब हुँ सेवक तोरउ।
मोरी अरज हिया मां धारउ जी मो० दुख भंजउ दुखीयनकेसाहिब।
धारी प्रीति सुरीति विचारी, प्रभु ईति अनीति निवारउ जी ।२।
नीरागी तूँ देव निरंजन, निर्मोही तूं हुं वहु मोही।
मोकूं नयण सुधारस ठारउ जी, मो० वामा सुत जिनहरख पयंपइ।
कीजे सार विचार न कीजइ, आपणउ सेवक जाणि वधारउ जी ।३

॥ इति श्री पार्श्वनाथ स्तवनं १७५८ वर्षे ॥

पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल—राग मारू

(रूडी रे रुडी रे वारखि रामला पदमिनी रे। एहनी)

सदा विराजै सांमि संखेसरो रे, परतिख पास जिणंद।
त्रिभुवन मांहे मांहे माहिमा महमहै हो, आससेण वामा नंद।१।
रूप अनूप अधिक रलीयांमणो रे, रहिये सनमुख जोइ।
मोहन मुरति नइणे निरखता रे; तनमन तृपति न होइ ॥ २ ॥
राति दिवस हियड़ा मा वसि रह्या हो, ज्यों गौरी गलिहार।
कदेन साहिब मुझनइ वीसरइ हो, वल्लभ प्राण आधार ॥ ३ ॥
माहरइ तो तुम सेती प्रीतड़ी हो, अविहड़ वणी रे सुरंग।
चोल मजीठ तणी परे हो, जनमन होइ विरंग ॥ ४ ॥

मधुकर जिम लोभाणौ मालती हो, आवै लैण सुवास ।
ऊडायो पिण ऊडै नही हो, तिम मुं मन तुझ पास ।। ५स० ।।
अवर सुरासुर दीठा देवले हो, मनमें न माने कोई ।
तृषातुर नर अमृत छोड़िनइ हो, न पीयै खारो रे तोइ ।।६स०।।
जरा उतारी जिम तइं जादवां हो, राखी सगलां री लाज ।
तिम जिनहरख निवाजो मुझ भणी हो, राखो चरणे महाराज ।७।।

।। इति श्री पार्श्वनाथ स्तवनं ।।

पार्श्वनाथ स्तवन

राग-खमाइती

ढाल ।। सोहला री

उछरंग सदा आज हुआ आणंदा, मनरा वंछित सहु मिलिया ।
दुख मेटण जौ भेट्यो दादौ, टेवे जिम पातक टलियां ।।१।।
भागी भीड़ अनेक भवांची, करम तणी थित न रही काय ।
पातक छोड़ गया सहु परहा, जपतां त्रिवीसम जिनराय ।।२।
मन बीजौ कोइ देव न मानै, चितमे कोय न आवै चीत ।
लोही लाख तणी परि लागी, पुरसादाणी सूं सो प्रीत ।३।
आससेण नंदन अतुलीबल, सगले ही देसे परसिद्ध ।
भगतवछल जिनहरष भवोभव, कर जोड़ी सो सरणै कीध ।४।

।। इति स्तवनं पं० दयासिंघ लिखितं ।।

श्री पार्श्व लघु स्तवन

ढाल—थे सौदागर लाल चलण न देस्यु

वयण अम्हारौ लाल हीयड़ै धरीजै,
सेवक ऊपरि साहिब महिर करीजै लाल।
पास जिणेसर लाल अरज सुणीजै,
अरज सुणीजै, अंतर खोलि मिलीजै लाल।
पास जिणेसर वाल्हा—अ०

तुझ विण कोइ लाल, अवरन ध्यावुं,
तुझ विण अवरन हीयड़े रहाउं लाल ॥१ पा०॥
परतिख तूं तौ लाल कांमणगारौ,
तनमन हेरी लीधुं तइं तौ अम्हारो लाल।
अन्न न भावै लाल, पाणी न भावै,
दीठां पाखै रे वाल्हा नींद न आवै लाल।२ पा०।
मैं तो तम साथै लाल प्रीत वणाइ,
प्रीति वणाई तिण में खोटि न काई लाल।
राति दिवस लाल तुझ नै चीतारूं,
सूतां सुपनां में वाल्हा अधिक संभारूं लाल।३ पा०।
हूं तौ राखूं छुं लाल आस तम्हारी,
आस पूरविज्यौ थे छौ पर उपगारी लाल।
जे गिरूआ ते तो छेह न दाखै,
पोता ना जांणी सहुकोना मन राखै।

कृपण थई नइ लाल वैसी जौ रहिस्यौ,
तो जगि माहे सोभा किणपरि लहिस्यौ लाल ।४ पा०।
मनरा रे मोटा लाल थईयइ तो वारू,
सहु माहे जस लहियै करतव्य सारू लाल ।५ पा०।
एहवा निसनेही लाल निपट न होईजइ,
तमनै सहु सेवक सरिखा जाण्या जोईजै लाल ।
नयण सलूणे लाल सनमुख जोवो,
मगज न राखो मनमें सुप्रसन होवो लाल ।६ पा०।
अससेण नृप कुल केरव चन्दा,
वामा राणी ना नंदा आपौ आणंदा लाल ।
तूं जगनायक लाल, तूं जिनचन्दा,
कहै जिनहर्ष तुम्हारा हूं वन्दा लाल ।७ पा० ।
॥ इति श्री पार्श्व लघु स्तवन ॥

पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ मोकली भाभी मोनइ सासरइ ॥

साहिबाजी हो सुगुणा सनेही पास जी ।
म्हांरा आतमरा आधार, म्हारा साहिबाजी हो ॥ सुगुणा ॥
साहिबाजी हो भवसायर वीहामणु, तारक पार तारि ।मो० १।
चरण कमल रस लोभीयउ, मो मन भमर सुजाण । मो० ।
राति दिवस लागउ रहइ, किणरी न करइ काण । मो० २ ।

देव घणा ही सेवीया, पूगी नही काइ आस । मो० ।
हिवइ तुझ पासइ आवीयउ, सफल करउ अरदास । मो० ३ ।
थे उपगारी सिरजीया, करिवा जग उपगार । मो० ।
किसुं विमासी नइ रह्या, वाल्हेसर इणि वार । मो० ४ ।
गुण पाम्यां रउ गारवु; कीजइ नही करतार । मो० ।
गुण तउ तउहीज विस्तरइ, जउ कीजइ उपगार । मो० ५ ।
जे जस लेवा जागिया, ते न करइ नाकार । मो० ।
मांग्यां मुंहु मइलउ करइ, ते कहा दातार । मो० ६ ।
मुझ सारीखउ मंगतउ, तुझ सरिखउ दातार । मो० ।
कोइ नही छइ एहवउ, जोज्यो रिदय विचार । मो० ७ ।
मेहां नइ मोटां नरां, सहु को राखइ आस । मो० ।
आशा जउ पूरउ नहीं, तउ किम लहइ साबास । मो० ८ ।
सुख द्यइ सहु सेव्यां थकां, चिन्तामणि पाषाण । मो० ।
साहिब द्यइ निज साहिबी, तिणिमइं किसउ वखाण ।मो० ९।
वामानन्दन वीनवुं, जगजीवन जगदीस । मो० ।
सेवक सूं सुनजर करउ, द्यउ जिनहरख जगीस । मो० १० ।

पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ वाजइ वइठी साद करइ छु ॥ एहनी

अंतरजामी साहिब मोरा, करूं निहोरा, वंछित आलउ क्यूंनइ लो ।
म्हारा वाल्हेसरजी रे लो ॥

राजि गरीबनीवाज कहावउ, तुम सुं दावउ,
तिणि कहीयइ छइ तूं नइ लो ॥ १ म्हां ॥
तूं जाणइ छइ मननीं वातां,
नव नव भातां, नाम लई स्युं कहीयइ लो।
लज्जा छोड़ी नइ जउ कहीयइ,
मोज न लहीयइ, तउ थाकी नइ रहीयइ लो ॥२ म्हांरा॥
मोटा थायइ जे उपगारी, हीयइ विचारी,
पोताना करि जाणइ लो।
पूरइ पूरी सगली आशा, चित्त विमास्या,
सहु परि करुणा आणइ लो ॥ ३ म्हां ॥
उत्तम देखी नइ राचीजइ, सेवा कीजइ,
तउ संपति पामीजइ लो।
प्राणइं ही तेहसुं पहुचीजइ, जउ झगड़ीजइ,
तउ ही सोह लहीजइ लो ॥ ४ म्हां ॥
ओछा ते तो प्रीति न पालइ, साम्हउ वालइ,
भव-दुख मंइ रझलावइ लो।
माठा देखी दूरइ टलीयइ, जउ अटकलीयइ,
तउ आतम सुख पावइ लो ॥ ५ म्हां ॥
दुखीया ना जउ दुख्य न भंजइ, चित्त न रंजइ,
तउ ते साहिब केहा लो ॥

साहिब नइ सहु कोनी चिन्ता, गुणे अनंता,
राखइ रिती न रेहा लो ॥ ६ म्हां ॥
बारंबार कहता स्वांमी, आवइ खामी,
अमनइ पास जिणंदा लो ॥
भूख्यउ मांगइ मांनइ पासइ, मुख्य विकासइ,
द्यउ जिनहरख आणंदा लो ॥ ७ म्हां ॥

पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ दादउ दीपतउ दीवाण ॥ एहनी

माहरी करणी सुगति हरणी, कहुं तुझ भगवंत रे ।
दुख भांजि भव भव ना दया करि, मुगति रमणी कंति ॥१॥
जिनवर वीनती अवधारि, मुझ नइ भव थकी निस्तारि । जि० ॥
दोहिलउ लाधउ मानुषउ भव, देस आरज पामि रे ।
मइं हारीयउ परमाद नइ वसि, जेम जूअइ दाम ॥ २ जि० ॥
मद मान कादम माहि खुतउ, मोह पडीयउ पास रे ।
पररमणि रस वसि थयउ रसीयउ, किसी सुखनी आस ॥३ जि०
बहु कपट माया केलवी मइ, कीयउ लोभ अनत रे ।
धमधम्यउ क्रोध तणइ वसइ हुं, किम लहुं भव अंत ॥ ४ जि०॥
अति घणउ आलस अंग आण्यउ, मइ धरमनी वार रे ।
वली पाप करिवा थयउ उद्यत, भम्यु तिणि संसार ॥५ जि०॥
बहु ग्रंथ पढ़ि पढ़ि क्रिया करि करि, रीझव्या नर जाण रे।
पिणि माहिलउ मुझ मन न भीनउ, चकमकी पाखाण ॥६ जि० ॥

निज करम हणिवा तप न कीधउ, तप कीयउ जस काज रे।
परभव तणी कांई गरज न सरी, जिम सरद री गाज ॥७ जि०॥
व्रत लेइ भागा दोष लागा, जीव न रह्यउ ठाम रे।
निज दोष कहता लाज मरीयइ, रहइ तुझ थी माम ॥८ जि०॥
बाह्य किरिया कठिण कीधो, ग्रह्यउ व्रग जिम मूंन रे।
नवि कियउ साचउ चित्त चोखइ, खमि त्रिजगपति खूंन ॥९ जि०॥
माहरी करणी निपट निखरि, रुलिसि हूं संसार रे।
पिणि पास जिन मन माहि माहरइ, छइ सबल आधार ॥१० जि०।
जनम दुरगति मरणना दुख, सह्या मइ किम जाइ रे।
जिनहरख राजि निवाजि मुझनइ, मइ ग्रह्या हिवइ पाय ॥११ जि०

पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ वीछीया नी

भयभंजण श्रीभगवंतजी, मनथी रहिज्यो मत दूरि हो।
निशिदिन संभारु तुझ भणी, जिम चकवी चाहइ सूर रे।१।
ताहरइ सेवक छइ अतिघणा, ताहरी राखइ मन आसरे।
मुजनइ ते मांहि संभारीज्यो, हुं पिणि छुं ताहरउ दास रे।२।
तुझ चरणे हूं आवी रह्यउ, मुझनइ तारउ महाराज रे।
जउ सोम नजरि करि जोइस्यउ, तउ रहिस्यइ तुझ मुझ लाज रे।३।
वाल्हा साजन विरचइ नही, अवगुण सेवक ना देखि रे।
रवि मेल्हइ नही पंगु सारथी, जोवउ राखइ प्रीति विशेष रे।४।

उपगारी तूं भारी खमउ, गुण सायर तूं गंभीर रे।
मुझ आठ करम अरि पीड़वइ, छोड़ावउ आवउ भीर रे।५।
जउ साहिबनी सुनजरि हुवइ, तउ भांजुं जमनी फउज रे।
करुणा आणी मुझ ऊपरइं, मनमानी दीजइ मउज रे।६।
तुझ सरिखउ जउ माहरइ धणी, न धरूं केहनी परवाह रे।
सुहुंणा ही मांहि धरूं नही, बीजउ कोई सिरनाह रे। ७।
मुझ नइ तउ आस्या छइ घणी, स्युं कहीयइ लेई नाम रे।
तुझ आगलि कहतां लाजीयइ, पिणि आपउ अविचल ठाम रे।८।
सफली करिज्यो मुझ वीनती, वाल्हेसर वामानंद रे।
श्री पास जिणेसर करि मया, आवउ जिनहरख आणंद रे।६।

पार्श्वनाथ स्तवन

॥ ढाल—ऊंचउ गढ ग्वालेर कउ रे मनमोहना लाल

पास जिणेसर वीनती रे मनमोहना लाल,
करु प्रभुजी सिरनामी हो। जगजीवना लाल,
दरसण द्यउ दउलति हुवइ रे म० पामुं वंछित काम हो।१ ज।
परम सनेही माहरइ रे म० तुझ विण अवरन कोइ हो। ज।
इणि अणीयाले लोयणे रे म० साहिब साम्हउ जोइ हो।२ ज।
आंखडीयां तरसइ घणुं रे म० देखण तुझ दीदार हो। ज।
जउ सेवक करि जाणिस्यउ रे म० तउ करिस्यउ उपगार रे। ३ ज।
उपगारी उपगार नइ रे म० सिरज्या सिरजणहार हो। ज।
पात्र कुपात्र विचारणा रे म० न करइ जे दातार हो। ४ ज।

ताहरउ ध्यान हीयइ धरुं रे म० निरमल मोती हार हो । ज ।
मुझ मन लागी मोहणी रे म० न रहुं दूरि लिगार हो । ५ ज ।
देस्यउ मउज मया करी रे म० तउ जग रहिस्यइ लाज हो । ज ।
नहीं द्यउ तउही आड्उ करी रे म० लेइसि हूं महाराज हो । ६ ज ।
दीठा दुनीया माहि मइ रे म० बीजा देव अनेक हो । ज ।
तुझ सरिखउ कोइ नहीं रे म० जोयउ धरिय विवेक हो । ७ ज ।
अरज सुणि ए माहरी रे म० वामानंद विख्यात हो । ज ।
कहइ जिनहरख निवाजिज्यो रे म० सउ वाते एक वात हो । ८ ज ।

पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ सुबरदे ना गीतनी

सुन्दर रूप अनूप, मूरति सोहइ हो सुगुणा साहिब ताहरी रे ।
चित माहे रहइ चूप, देखण तुझने हो सुगुणा साहिब माहरी रे ॥
मुझ मन चंचल एह, राखुं तुझमइ हो सुगुणा साहिब नवि रहइ रे ।
मुझसुं धरिय सनेह, राखउ चरणे हो सुगुणा साहिब सुख लहइ रे ॥
तूं उपगारी एक, त्रिभुवन माहे हो, सुगुणा साहिब मइ लह्यु रे ।
आव्यउ धरिय विवेक, हिवइ तुझसरणउ हो सुगुणा साहिब संग्रहउ रे ॥
सरणागत साधारि, विरुद संभारी हो सुगुणा साहिब आपणउ रे ।
भवसायर थी तारि, तुझनइ कहीयइ हो सुगुणा साहिबस्युं घणउ रे ॥
साहिबनइ छइ लाज, निज सेवक नी हो सुगुणा साहिब जाणिज्योरे ।
मेलउ दे महाराज, वचन हीयामइं सुगुणा साहिब आणज्यो रे ॥

लाडकोड मांवीत, जो नवि पूरइ हो सुगुणा साहिब प्रेमसुं रे।
तउ कुण राखइ प्रीति, तउ कुण पालइ हो सुगुणा साहिब प्रेम सुं रे।
पास जिणेसर राजि, पदवी आपउ हो सुगुणा साहिब ताहरी रे।
प्रभु जिनहरख निवाजि, अरज मानेज्यो हो सुगुणा साहिब माहरीरे

पार्श्वनाथ लघु स्तवन

ढाल ॥ थे तउ अलगा रा खड़ीया आज्यो रायजादा सहेली हो।
सहेली ल्याइज्यो राजि ॥ एहनी

थांनइ वीनती करांछां राजि, गुणवंता
बलाइल्युं हो बलाइल्युं मानिज्यो राजि।
म्हांरा सफल करेज्यो काज।गु। थाहरा चरणकमलनी सेव।
म्हांनइ देज्यो देवांरा देव ॥१॥
म्हे तउ मेल्ह्यु सहु जग जोइ।गु। थां सरिखउ अवर न कोइ।
उपगारी जे नर होइ।गु। मोटा जग माहे सोइ ॥२ गु०॥
थांहरे चरणे रहुँ लयलीन।गु। जिम जीवन सुं मन मीन।
म्हांरा मनकेरी पूरउ आस।गु। कर जोड़ी करूं अरदास ।३।
मोटा साहिब जे जाण।गु। ते तउ राखइ नही माण।
सेवक ते आप समान।गु। करि राखइ देइ मान ॥४ गु० ॥
थांहरइ सेवक छइ लख कोडि।गु। थांहरी सेवा करइ कर जोड़ि ॥
सेवा सरिखउ द्यउ छउ दान।गु। श्री पास म्हांनइ पिणि मानि ५
थोड़ा मइं घणो जाणेज्यो।गु। म्हारउ कह्यु चित्तमइ आणेज्यो।
बीजउ म्हांनइ क्युं न सुहावइ।गु। जिनहरख परमपद पावइ ॥६ गु॥

पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ महिंदी नी

वामानन्दन वीनवूं रे, द्यउ दरसण महाराज ।
मूरति मन मोह्यउ, थांरी सूरतड़ी सिरदार ॥मू॥
म्हांरा आतमरु आधार मू०
दरसण दीठां मन ठरइ रे, सीझइ वंछित काज ॥१॥
मूरति ताहरी मन गमइ रे, मुरति सुं बहु प्रेम । मू० ।
निसिदिन हीयड़ा मां वसइ रे, लोभी नइ धन जेम ॥२ मू०॥
सुगुण सनेही साहिबा रे, तूं तउ मोहणवेलि । मू० ।
जायइ नही बीजा कन्हइ रे, मुझ मन तुझ नइ मेल्हि ॥३ मू०॥
मन मइं जाणुं ताहरी रे, भगति करूं कर जोड़ि । मू० ।
आठ पहुर ऊभउ थकउ रे, आलस अलगउ छोड़ि ॥४ मू० ॥
पिणि कोइक अन्तराय छइ रे, करि न सकुं तुझ सेव । मू० ।
तुं तउ ही सेवक जाणिनइ रे, देज्यो सुख नितिमेव ॥५ मू०
दीठां देव गमइ नही रे, भरीया जेह कलंक । मू० ।
साहिब तुझ मिलियां पछइ रे, आडउ वलीयउ अंक ॥६ मू०॥
धरणिंद नइ पदमावती रे, पास रहइ तुझ पासि । मू० ।
कहइ जिनहरख सहू तजी रे, ताहरी राखुं आस ॥७ मू०॥

पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ कोइलउ परवत धूधलउ रे लो ॥ एहनी

परम पुरुष प्रभु पूजीयइ रे लो, भाव धरी भरपूर रे । भविक नर

केसर चन्दन कुमकुमइ रे लो, मेली मांहि कपूर रे भ० प० ।१।
कुसुममाल कंठइ ठवउ रे लो, गावउ गुण सुविसाल रे भ० ।
जनम सफल इम कीजीयइ रे लो, लहीयइ सुक्ख रसाल रे भ० ।२।
चरणकमल थी वेगला रे लो, रहीयइ नही एकंत रे ।भ०
नयणां आगलि राखीये रे लो, ए साहिब गुणवंत रे ।। भ०३।।
सूता वइठां जागतां रे लो, धरीय हीयड़इ ध्यान रे भ० ।
एहनउ संग न छोड़ियइ रे लो, आपइ वंछित दान रे भ०।।४।।
एहस्युं एक तारी करी रे लो, रहीयइ एहनइ पासि रे भ० ।
मउड़ी वइगी तउ सही रे लो, आखर पूरइ आस रे भ० ।।५।।
मोटानइ नवि मूंकीयइ रे लो, मोटा खोटा न होइ रे भ०।
मुख मीठा झूठा हीयइ रे लो, दूरइ तजीयइ सोइ रे भ० ।।६।।
साहिब नइ जउ सेवीयइ रे लो, तउ करइ आप समान रे भ०।
नीच निखरनी चाकरी रे लो, लहीयइ पिणि नही मान रे भ०।७।
अश्वसेन वामा कुलतिलउ रे लो, परतखि पास जिणंद रे भ०।
ए साहिब तुठउ थकउ रे लो, द्यइ जिनहरख आणंद रे भ० ।।८।।

पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ।। फागनी

पास जिणेसर तूं परमेश्वर, त्रिभुवन तारणहार ।
चउसठि इंद्र करइ पाय सेवा, सुर नर खिजमतगार ।।१।।
जगजीवन जिन त्रेवीसमउ हो ।
अहो मेरे ललना अश्वसेन नृप-कुल-चन्द ।। ज ।।

अहो मेरे जिनजी वामादे रानी केरउ नंद । ज० अ० ।
नील कमल दल कोमल काया, अनुपम सोहइ रूप ॥
देखत ही तनमन सुख पावइ, हीयड़लइ हरख अनूप ॥२ जा॥
पुरुषादाणी गुणमणि खाणी, राणी प्रभावती कंत ।
निज आतम हित जाणी सेवउ प्राणी, मन निरमल करि एकंत ।३।
वंछित पूरइ दुकृत चूरइ, कलियुग सुरतरु एह ।
सेवक नइ सुखदायक नायक, तीन भुवन गुण गेह ॥ ४ ज ॥
मोहणगारउ सहुनइ प्यारउ, धारउ हीयड़ा मांहि ।
तारउ आतम आपणउ हो, वारउ भव भ्रमण अगाहि ॥५ जा॥
ए साहिब नी सेवा कीजइ, लीजइ नरभव लाह ।
पूजीजइ प्रभु नइ चित चोखइ, होइजइ तउ शिवनाह ॥६ जा॥
पुन्य पसायइ पामीयइ हो, देव तणउ ए देव ।
कहइ जिनहरख न मेल्हीयइ हो, एहनी चरण नी सेव ॥ ७॥

पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ जाटणी ना गीतनी

मुखड़ु दीठु हो ताहरु पासजी, जाणे पुनिमचन्द ।
नयण चकोर तणी परइ, पामइ परम आनन्द ॥ १ मु० ॥
मनमोहन महिमांनिलउ, सोभागी सिरताज ।
प्रभुजी मूरति जोवतां, सीजइ सगला काज ॥ २ मु० ॥
नयण कमल दल सारिखा, अणीयाला अति चंग ।
सुरनर देखी मोही रहइ, जिम पंकज स्युं भृंग ॥ ३ मु० ॥

दीप सिखा जाणे नासिका, दसन मोती नी माल।
अधर प्रवाली ओपीया, अरध निसाकर भाल ॥४ मु० ॥
रूप वण्यउ प्रभुनउ रूअड़उ, ओपम दीधी न जाइ।
चउसठि इंद्र सेवा करइ, पूजइ प्रभुजी ना पाय ॥ ५ मु० ॥
अश्वसेन नृप कुल दीवलउ, वामाराणी नउ नंद।
नील वरण तउ सोहतउ, परतखि सुरतरु कंद ॥ ६ मु० ॥
धरणिन्द नइ पद्मावती, सेवइ चित्त लगाइ।
कर जिनहरख जोड़ी करी, हरख धरी गुण गाइ ॥ ७ मु० ॥

पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ म्हारइ आगणीयइ-हे आवउ सहीया मउरीयउ ॥ एहनी

म्हारा साहिबा सुणि मोरी वीनती, जगनायक प्रभु पास जिणंद।
दरसण दीजइ मुझने हिवइ, जिम थायइ ए तउ परमाणंद । १ ।
थांहरा मुखड़ा ऊपरि वारी साहिबा, थांहरउ मुखडु जाणे पूनिचंद।
आशा करि आव्यउ तुम कन्हइ, उपगारी म्हारी पूरउ आस ॥
सापुरुषा नीं ए रीति छइ, नवि मूंकइ निज दास निरास ।२।
उपगार करण पर कारणइं, सापुरुषे एतउ धर्यु शरीर।
दूहव्या पिणि छेह न दाखवइ, जे गुरुआ गुण जलधि गंभीर ।३।
तुमसुं रहीयइ छइ वेगला, स्युं करीयइ कोइक अंतराय।
आवी न सकुं न मिली सकुं, एतउ दुखड़उ मइ खम्यउ न जाय ।४।
साहिब ने सेवक छइ घणा, सेवा सारइ निति कर जोड़ि।
सहु ऊपरि सुनजरि सारिखी, राखइ तूं मन कसमल छोड़ि ।५।

मनवंछित मूल न आलिस्यउ, करिस्यउ मत कोई उपगार।
पिणि आंखडीए अणीयालीए, मुझ साम्हु जोवउ एक वार।६।
स्युं कहीयइ तुमनइ वली वली, म्हारा मनना मानीता मीत।
जिनहरख सकल सुख पूरवउ, तुम सुं छइ म्हारइ अविहड प्रीति।७।

पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ कलीयउ कलाले मद पीयइ रे, काई साईना रइ साथि रे ॥ एहनी

मन उमाह्यउ माहरउ रे कांई, तुमनइ मिलिवा काज रे।
सेवक सुं लेखवी रे कांई, मुजरउ द्यउ महाराज रे ॥ १ ॥
वामानंदा आपउ नइ रे परम आणंदा, तमनइ रे अरज करु छु एह।
हुं आतुर अलजउ घणउ रे कांई, भेटण तुझ भगवन्त रे ॥
राति दिवस रातउ रहुं रे कांई, खरी धरी मन खंति रे ॥२॥
पूरव भवनी प्रीतड़ी रे कांई, कांइक छइ करतार रे।
तउ लोयण लागी रह्या रे कांई, देखण तुझ दीदार रे ॥३॥
माहरइ मन तूं ही वसइ रे कांई, जिम निरधन धन नेह।
कोइल आंबइ कलरव करइ रे कांई, मोरां मन जिम मेह रे ॥४॥
सेवक नइ संभारिज्यो रे कांई, हितसुं धरिज्यो हेज।
करिज्यो मत तुमनइ कहुं रे कांई, विहुं मामे भाणेज रे ॥५॥
दूहव्यो छेहन दाखवइ रे कांई, मोटा जे मतिमंत।
घासंता गुण द्यइ घणा रे कांई, मलयागर महकंत रे ॥ ६ ॥
कोडि गुन्हा कीधा हस्यइ रे कांई, मंइ मूरख मतिहीण।
पिणि जिनहरख म विरचियो रे कांई, दाखु छुं थइ दीण रे ॥७॥

पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ प्रभाइती रागे

भगवंत भजउ सगला भ्रम भाजइ, अवरतणी सिर म धरउ आण ।
हेक धणी तउ परतखि हुइस्यइ, कोड़ि गमे तउ लहिसि कल्याण ।१।
नागर करुणासागर निति प्रति, भावइ सेव करइ चित मेलि ।
सो साहिब तजि पाचि सरीखउ, सिणियां काच म राखउ मेल ।२।
तवइ नही कोंई त्रिभुवन तारक, जनम मरण भंजण जंजीर ।
सुप्रसन थियउ दीयइ सुख सगला, तुरत पमाड़ै भव जल तीर ।३।
वामानंदण करमविहंडण, पाय नमै नर अमर भूपाल ।
इणरी कोई न बराबरि आवै, बीजा देव बापड़ा बाल ॥४॥
जगगुरु तुझ भामणै जाऊं, अतुलीबल तुं हीज अरिहंत ।
भव भव मुझ हुज्यो पाय भेटा, कर जोड़े जिनहरख कहंत ।५॥

पार्श्वनाथ लघु स्तवन

ढाल ॥ पनिया मारु नी

आज सफल दिन माहरउ, हो साहिबा म्हांरा ।
आंखड़ीया निहाल्यां जिनवर पासजी रे हां जी ॥
दरसण दीठउ साहिबा ताहरउ, हो साहिबा म्हांरा ।
कुमति महेली हिवइ दूरइ तजी रे हांजी ॥१॥
आव्यउ हुं आशा करि नइ ताहरी, हो साहिबा म्हांरा ।
आसड़ीयां पूरीजइ निज सेवक तणी रे हां जी ॥

सीस तुम्हारी आणा मइं धरी, हो० सा० ।
तुंहीज भवो भव माहरइ सिर धणी रे हां जी ॥२॥
साचउ हुं खिजमतगारी रावलउ, हो० सा० ।
चरणा री नइ सेवा दीजइ दास नइ रे ॥
हीयड़उ हेजालू मन ऊतावलु रे हां जी, हो० सा० ।
सेवा नइ करेवा भिजपूर वासि नइ रे हां जी ॥३॥
मोह विलूधउ अग्यानी पणइ हो० सा० ।
मिथ्याती सुर केइ मइं सेव्या हुसी रे हां जी ॥
पार न कोई माहरे अवगुणे, हो० सा० ।
सोम नजर सुं जोवउ मनड़उ हुइ खुसी रे हां जी ॥४॥
ताहरइ तउ सेवक सहु को सारिखा, हो० सा० ।
अधिका नइ वली ओछा प्रभु नइ को नथी रे हां जी ॥
एक नजरि नवि जोवइ पारिखा, हो० सा० ।
ते जिनहरख जाणीजइ आप सवारथी रे हां जी ॥५॥

श्री पार्श्वनाथ स्तवनं

ढाल ॥ थारी महिमा घणी रे मडोवरा ॥ एहनी

म्हारउ मनड़उ मोह्यउ पासजी, थांहरी सुनिजर मूरति देखि हो
लोयण सुरतिमइ चुभि रह्या, जिम कंचण कसवट रेख हो । १ ।
हुँ साहिबरी सेवा करूँ, निसिदिन ऊमाहउ एह हो
सेवा दीजइ प्रभु करि मया, हुं तुझ चरणा री रेह हो । २ ।

करुणासायर करुणा करउ, चाहंता द्यउ दीदार हो,
पाणीथी स्यूं छे पातलउ, इवड़ा जे करउ विचार हो । ३
माहरा मन थी मेल्हुं नहीं, अलवेसर ताहरी आस हो,
निति नाम जपिसि हूं ताहरउ, जा पंजर माहे सास हो । ४
वाल्हेसर विरचीजइ नहीं, माहरा अवगुण अवलोइ हो,
मोटा पिणि जउ विरचइ कदी, तउ तउ ऊथलवा होइ । ५ ।
ओछानी प्रीति एरंड ज्युं, फुलतां न लगावइ वार हो,
सुगुणां री अविहड प्रीतड़ी, आतउ बड़ जेहइ विस्तार हो । ६
बीजउ क्युं ही मागुं नहीं, मुझ आवागमण निवारि हो,
जिनहरख तणो ए वीनती, वामानंदन अवधारि हो । ७ ।

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ फागनी ॥

सकल मंगल सुख संपदा हो, द्यउ मोहि दीनदयाल,
तुं जग सुरतरु सारिखउ हो, सेवक जन प्रतिपाल । १ ।
मनमोहन मूरति पासजी हो,
अहो मेरे जिनजी, अरज सुणउ चितलाय । म० ।
अहो मेरे प्रभुजी, तुम तइं मेरे दुखजाइ । म० । आँ० ।
मुझ मन तुझ चरणे रमइ हो, ज्यों मधुकर अरविंद ।
पलक रहइ नहीं वेगलउ हो, निसदिन अधिक आणंद ।२।म०
प्रभु मुख राकापति वण्यउ हो, मुझ भये नयन चकोर
देखि घटा द्युति देह की हो, नाचत हइ मन मोर । ३ ।म०।

सुन्दर रूप सुहामणउ हो, शोभा वरणी न जाइ,
सुरगुरु पार लहइ नहीं हो, सहस रसन गुण गाइ । ४ ।
नील कमल दल सामलउ हो, अससेन वामानंद हो,
भेट भई जिनहरखसुं हो, दूरि गए दुख दंद । ५ ।

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ अलवेलानी ॥

सुणि सोभागी साहिब रे लाल, एक करूं अरदास । मोरा जीवनांरे ।
सेवक जाणी आपणा रे लाल, पूरउ मननी आस ॥ मो० १ सु॥
च्यारे गति मांहे भम्यउ रे लाल, पाम्यां दुख अनंत । मो० ।
जामण मरण कीया घणा रे लाल, अजी न आव्यउ अंत ॥मो २ सु॥
छोड़ावउ तेहथी हिवइ रे लाल, भयभंजण भगवत । मो० ।
सरणइ आयउ ताहरइ रे लाल, भांजउ भवनी भंति ॥ मो० ३ सु॥
मुझनइ पीड़इ पापीया रे लाल, आठ करम अरिहंत । मो० ।
करम तणउ स्यउ आसरउ रे लाल, जउ पखउ करइ बलवंत॥मो४सु॥
बलवंतउ तुझ सारिखउ रे लाल, कोइ न दीठउ नाह । मो० ।
चरण सरण मइ आदर्यां रे लाल, पाप मतंगज गाह ॥ मो ५ सु ॥
जाइ अवर द्वारांतरइ रे लाल, परिहरि तुझ दरबार । मो० ।
क्षारोदधि जल ते पीयइ रे लाल, करि अमृत परिहार ॥मो६सु॥
सठ हठ मूढ कदाग्रही रे लाल, स्युं जाणइ तुझ मर्म । मो० ।
सहु परि खाते लेखइ रे लाल, भूल्या मिथ्या भर्म । मो० ७ सु ॥
तेहिज तुझनइ लेखवइ रे लाल, जास अलप संसार । मो० ।

बहुल संसारी बापड़ा रे लाल, न लहइ तेह विचार मो ८ सु॥
तूं चिन्तामणि सारिखो रे लाल, बीजा काच कथीर। मो० ।
बीजा सुर पय आकना रे लाल, तुं निरमल गोखीर ॥ मो ९ ॥
तुझ सेवा थी पामीयइ रे लाल, नरसुर शिव सुख सार ।मो।
बीजा सुर थी पामीयइ रे लाल, नरग निगोद अपार ।।मो १०सु॥
अश्वसेन नरपति कुल तिलउ रे लाल, वामोदर सर हंस । मो० ।
प्रभु जिनहरख सदा जयउ रे लाल, तीन भुवन अवतंस ॥ मो० ११सु॥

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ चमर ढलावइ गजसिंघ रउ छावउ महल मा जी ॥ एहनी

सुगुण सनेही साहिब सांभलि वीनतीजी, पर उपगारी पास ।
परतखि हुइनइ हो परता पूरवउ जी, सफल करउ अरदास ॥१॥
अरज सुणीजइ मन मोहन साहिब माहरीजी, आनंद अधिकउ होइ।
सूरति देखुं हो हरखुं हीयड़लइजी, जगगुरु साम्हउं जोइ ॥२सु॥
धरणी निहाली हो सगली पवन ज्यूं जी, जग सहु मूंक्यउ जोइ।
जिणिनइ निहाल्यां हो साहिब वीसरइ, तिसउ न मिलीयउ कोइ॥३अ
एक पखीणी हो प्रीति मतां करउ जी, गरुआ गुणे गंभीर।
माहरउ तउ मनड़उ हो न रहइ तुझ विना जी,
जिम मछली विणि नीर ॥ ४ अरज० ॥
सउज कदे किणि दीजइ मुझ भणीजी, त्रेवीसम जिनराय ।
आसड़ी विलूधा हो इम ही रिष तजउ जी, वातडीयां वउलाय ।५।
अहनिसि ताहरउ हो ध्यान हीयइ वसइ जी, जिम रेवा गजराज ।

खिणि २ सूता हो सुपनइ सांभरइजी, मुझनइ श्री महाराज ॥६अ०॥
माहरइ वाल्हेसर प्रीतम तुं धणीजी, तुंहीज प्राण आधार ।
हरख घणइं जिनहरख संभारिज्यो जी, मत मूंकउ वीसारि ॥७अ०॥

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ सहीया सुलताण लाडउ आवइलउ एहनी

मनरा मानीता साहिब पास जिणंदा, अरज सुणीजइ त्रिभुवन चंदा हो
चरण न छोडुं निशिदिन तोरा, पूरि मनोरथ साहिब मोरा हो॥१॥
तुझ मिलिवा मुझ मन ऊमाहइ, सेवा करेवा चितड़उ चाहइहो।
प्रीतडी तोसुं लागी सनेही, तउ अंतर राखीजइ केही हो॥२म॥
जउ मुझसुं प्रभु प्रेम न धरिस्यउ, अंतरजामी महिर न करिस्यउ हो
तउ मुझ नइ कुण बांहे ग्रहिस्यइ,
मुझ अवगुण लीधइ कुण वहिस्यइ हो ॥३म०॥
आसंगाइत सेवक होस्यइ, ते निज साहिब नउ दिल जोस्यइ हो।
दिल जोईनइ वात कहेस्यइ, तउ तेहनो मरज्यादा रहेस्यइ हो ।४म०।
साची सेवा प्रभुजी रीझइ, हलुअइ हलुअइ कारज सीझइ हो ।
अति उच्छक ते काम विगाड़इ,
हींणउ लोकां माहि दिखाड़इ हो ॥५म०॥
साहिब सुं रहिस्यइ लय लाई, करिस्यइ बीजी वात न काई हो ।
तउ हितसुं तेहनइ वतलाई, देस्यइ वछित मउज सदाई हो॥६म॥
मोटां आगलि घणुं न कहीयइ, करजोड़ी नइ चुप करी रहीयइ हो।
पोतानइ मेलइं दुख कापइ, प्रभु जिनहरख परम सुख आपइ हो ।७म०

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ लाखा फूलाणीनी ॥

परम सनेही पास, वीनती सुणीजइ साहिब माहरी ।
आव्यउ हुं तुझ पास, निरमल कीरति सांभलि ताहरी ॥१॥
तुं सुरतरु साख्यात, वंछित पूरइ भव भव केरड़ा ।
तुं तउ गुहीर गंभीर, सायर जिम बीजा सुर वेरड़ा ॥२॥
पार न लहीयइ जास, गुण नउ तेहवा नरनी संगति भली ।
भार खमइ भुंइं जेम, तेहसुं निवहइं प्रीतड़ली सोहली ॥३॥
जिम तिम कहतॉ बोल, विड़तां पिणि वाल्हा विरचइ नही ।
आदर देई अमोल, आप कन्हइ राखइं हाथे ग्रही जी ॥४॥
निगुणा सेवक होइ, छेह न दाखइ गरुआ तेहनइ ।
वनचर पशु मृग जोइ, चरणे राखी रह्यउ निसिपति जेहनइ ॥५॥
मोटा ते कहवाय, जउ मोटिम मेल्हइ नही आपणी ।
आवउ नावउ हाय, पिणि सुनजर राखइ सेवक भणी ॥६॥
जेहनइ मुंहडइ लाज, ते निज मुख नाकारउ नवि कहइ ।
आवइ सहु नइ काजि, तेहनी संपति जिम नदीयां जल वहइ ॥७॥
आससेण राय मल्हार, वामानंदन जग सोह वधारणउ ।
नील वरण निकलंक, नाग लंछण महिमा प्रभु नउ घणउ ॥८॥
तुं सहु वाते जाण, तुझ नइ स्युं कहीयइ वयण घणुं घणा ।
तूं जिनहरख प्रमाण, पूरि मनोरथ निज सेवक तणा ॥९॥

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ भटियाणी ना गीतनी ॥

आज सफल अवतार, दरसणीयउ मइ दीठउ हो
साहिबीया नयणे ताहरउ ।
अलवेसर अवधारि, भव भव ना मइं कीधा हो सा० पातक आप हरउ १
तूं साहिब हूं दास, आपणडइ ए सगपण हो सा० निश्चल होइज्यो ।
जीभड़ीए जसवास, ताहरउ नइ हुं गाउं हो सा० सुनजर जोइज्यो ॥२॥
वाल्हेसर तुझ नाम, माहरइ नइ ए नीमी हो सा० हीयडा मां वसइ । ।
तुझ सुं माहरइ काम, हीयड़उ नइ हेजालु हो सा० मिलिवा ऊलसइ ।३
मनमान्यउ तूं मीत, माहरी तुझसुं लागी हो सा० अविहड़ प्रीतड़ी
चरणे लागउ चीत, ताहरानइ गुण गातां हो सा० मुझ सफली घड़ी ४
दीठां आवइ दाय, मिलियां नइ सहु भागइ हो सा० मन ना आमला
दुख दोहग सहु जाइ, नाम तणइ बलिहारी हो सा० जाउं सामला ।५।
मत मूंकउ वीसारि, किणि इक आव्यइ अवसर हो सा० मुझ संभारिज्यो
करिज्यो प्रभु उपगार, एतलउ नइ हूं मागुं हो सा० हीयड़इ धारिज्यो ६
सीस धरूं तुझ आण, बीजा तउ किणिहीनइ हो सा० पास नमुं नही
कहइ जिनहरख सुजाण, माहरइनइचित ताहरी हो सा० सेव हुज्यो सही ७

पंचासरा पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ कपूर हुवइ अति ऊजलउ रे ॥ एहनी

पाटण पास पंचासरउ, दीठां दउलति थाइ ।
पातक भव पूरव तणा रे, जपतां दूरि पुलाय रे ॥ १ ॥

भवियण पंचासरउ परतक्ष, एतउ सेवतां सुरवृक्ष रे। भ० ।
प्रभुता जेहनी अति घणीरे, सेवइ सुर नर दक्ष रे ॥ २ भ०॥
प्रभु मूरति मन मोहणी रे, मोहणगारउ रूप ।
जोतां तन मन ऊलसइ रे, सीतल नयण अनूप रे ॥ ३ भ० ॥
हित वच्छल हीयड़इ वसइ रे, जिम लोभी धन रासि ।
वीसांर्युं नवि वीसरइ रे, निशि दिन मन प्रभु पासिरे ॥४ भ०॥
मुख राकापति सारिखो रे, अनुपम दीपइ अंग ।
सोहइ सप्त फणावली रे, लंछण जास भुयंग रे ॥५ भ० ॥
प्रभु नयणे दीठां पछी रे, अवर न आवइ मींट ।
लाल कथीपउ जिणि ग्रह्यउ रे, तेहनइ न गमइ छींट रे ॥६ भ ०॥
अस्वसेन नृप कुल सेहरउ रे, वामा रानी नंद ।
कहइ जिनहरख जुहारतां रे, लहीयइ परमाणंद रे ॥ ७ भ० ॥

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

राग ॥ काफी

प्राण सनेही प्रीतमा, म्हांरी एक अरज अवधारउ ।
सोम नजर करि साहिवा, भव जल निधि पार उतारउ ॥ १ ॥
वीनतड़ी थे सुणिज्यो रे वाल्हा पासजी, म्हांरा मन ना वंछित सारउ
म्हांरा भवना भ्रमण निवारउ, । वी०।
हुं तुझ चरण कमल रसइंरे, भमर तणी परि लीणउ ।
माहरी तुम नइ चींत छइ, कांइ दाखुं छुं हुइ दीणउ ॥२ वी०॥

उत्तम कंचन सारिखा रे, कस पहुंचइ कसीया ।
सोह वधारइ पारकी, कांइ पर घर पिणि वसीया ॥ ३ वी० ॥
सुन्दर सुरति ताहरी रे, दीठां अधिक सुहावइ ।
वीजी सुरति जोवतां, म्हांरी आंखडीयां तलि नावइ ॥ ४वी०॥
जउ तारउ तउ तारिज्यो रे, नही तउ सुनजरि जोज्यो ।
कहइ जिनहरख मया करी, कांइ अमसुं सुप्रसन्न होज्यो ॥५॥वी०

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ ईडर आवा आंविली रे ॥ एहनी

मोहन मुरति जोवतां रे, सीतल थायइ नइंण ।
हीयड़उ मिलिवा ऊलसइ रे, ध्यान धरूं दिन रइंण ॥ १ ॥
जिणंदराय पूरउ वंछित आस, मोरी सफल करउ अरदास ।
हुं तउ भव भव ताहरउ दास, तुझ पास न मेल्हउं पास ।आंकणी।
कोइ केहनइ मन गमइ रे, केहनइ कोई सुहाइ ।
माहरइ मन तुंही वसइ रे, दीठां आवइ दाइ ॥ २ जि०॥
तुझ सरीखा भारी खमा रे, तुझ सरीखा गुणवंत ।
ते सेव्या फल नवि दीयइ रे, तउ वीजा नउ स्यउ तंत ॥३जि०॥
सेवा तेहनी कीजियइ रे, जे सेवा पोसाइ ।
निगुणांनी सेवा कीयां रे, मान माहातम जाइ ॥ ४ जि० ॥
उत्तम आस्या पूरवइ रे, मेल्हइ नही निरास ।
जस जिनहरख ग्राहक हुवइ रे, जिम तिम ल्यइ सावास॥५जि०॥

सम्मेतशिखर पार्श्व जिन स्तवन

तुहि नमो नमो सम्मेतशिखर गिरि। तुहि नमो नमो अष्टापद गिरि।
अष्टापद आदेसर सिद्धा, वासुपुज्य चंपापुरी।
नेम गया गिरनार माँ मुगते, वीर पावन पावापुरी। तु० १
वीसे टूंके वीस जिनेसर, सीधा अणसण आदरी।
जोति सरूप हुआ जगदीसर, अष्ट करम नों क्षय करी। तु०२
पच्छम दिस सेतुंजे तीरथ, पूरव सम्मेत शिखर गिरी। तु०
मोक्षनगर के दोय दरवाजा, भव्यजीव रह्या संचरी। ३ तु०
जग व्यापक जिन जय-जय साहब, पाप संताप काटण छुरी तु०
मोटो तीरथ मोटी महिमा, गुण गावत है सुरा सुरी। ४ तु०
विषम पहाड़ सुझाड़ ही चिहुं दिस, चोर चरड़ रह्या संचरी। तु०
भयकर डूंगर भीम डरावत, देखत देही थरहरी। ५ तु०
संवत् सतरेसै चोमाले, चैत्र सुदी चौथे करी। तु०।
कहे जिनहरख सो वीस टूके, भाव सुं चइत-वंदन करी। ६ तु०
तुही नमो २ सम्मेतशिखर गिरी,

इति सम्मेत शिखरजी रो तवन संपूर्णम्

फलवर्द्धी पार्श्वनाथ वृहद्स्तवन (छंद)

जपि जीहा सरसति सुरराणी, वचन विलास विमल ब्रह्माणी
देव सकल श्री पुरसांदाणी, वदां किति दे अविरल वांणी ॥१॥

पास तणां गुण कहतां परगट, गंज न सकै अरियण गज थट
घणो घणा थायै नित गहगट, कदही चाव न चूके कुलवट ॥२॥
आससेन नंदण अतुली वल, निलवट जिग-मिग नूर निरंमल
अवतरियो कलि सुरतर अविचल, पोस दसम महिमा ले परग्घल ॥३॥
गीत गुणे जिनवर गाइजै, परम प्रवीत प्रमोद पाइजे
लय जगनायक सुं लाइज, थिए जस वास सुथिर थाइजे ॥ ४ ॥
जिनवर तणा जिके गुण जपसी, खिण खिण तासु विकट क्रम खपसी।
तेज दिवाकर जिम जग तपसी, क्रम क्रम राग दोप वंध कपसी॥ ५॥
प्रणमंता मन वछित पावै, पूज करंता वंछित पावै
प्रभु प्रसाद वंछित फल पावे, प्रसन थीयां महीयल जस गावे ॥६॥

दोहा—

पावै प्रणमन्तां प्रघल, रिद्धि सिद्धि नव निधि राज
परमेसर फलवद्धिपुर, लाख वधारण लाज ॥ ७ ॥

मोती दाम छंद

वधारण लाज वड़ो वरीयाम, सदा सुप्रसन्न मिलतो साम ।
वखाणां कीरति देस विदेस, नमो फलवद्धीय नाथ नरेस ॥८॥
कलजुग मानव कोड़ाकोड़ि, जपै जगदीसर वे कर जोड़ि ।
पेलंतर पाव करै न प्रवेस, नमो फलवद्धीय नाथ नरेस ॥ ८ ॥
धरा उर जे नर ध्यान धरन्त, तिकै भवसायर वेग तिरन्त ।
नवेनिध मिदर तासु निवेस, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस ॥१०॥
भलौ अससेण तणै कुल भांण, वामा उर कन्दर सींह वखाण ।
सदा पग आगलि लौटे सेस, नमो फलवद्धीय नाथ नरेस॥११॥

इला मझि एकल मल्ल अबीह, न भूत न देत न लोपै लीह ।
निले फण ओपे सात नगेस, नमो फलवद्धीय नाथ नरेस ॥१२॥
अहो अठ कर्म जड़ा उपाड़ि, विधुंसे नाखि विभाडि विभाड़ि ।
दीपंत लह्यो ते ज्ञान दिणेस, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस ॥१३॥
तरै कृत देवे वप्र तयार, कनक रजत्त रतन्न किंवार ।
दुवादश परषद देविहि देवेस, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस ॥१४॥
चतुर्विध संघ तठै थिर थापि, उभै ध्रम भाख्यो आपो आप ।
खयंकर पातिक नांख्यो खेस, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस ॥१५॥
त्रिहम हुवै तैं कीधा वेद, भला भल तेंहिज जाण्यां भेद ।
कपाली तूंहिज तूं रिक्षीकेस, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस ॥१६॥
जगाव्या लाख चौरासी जीव, समाप्यां त्यां सुख दुःख सदीव ।
रमे जग मांहि निरंजण रेस, नमो फलवद्धीय नाथ नरेस ॥१७॥
प्रगट किया तैं पातिक पुन्न, दुणी में तासु तणा फल दुन्न ।
कठोर दोभाग सोभाग कहेस, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस ॥१८॥
थंभ्यो असमाण प्रभू विण थंभ, इला आधार न कोइ अचंब ।
सहु नर लोक उपाय सुरेस, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस ॥१९॥
उपावे आप खपावे आप, प्रमेसर कोइ न लागै पाप ।
गुन्हा आतम्म किया न गिणेश, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस ॥१०॥
नमो ठग मूरति नाथ त्रिलेप, लगै नही तुझनै कोइ लेप ।
आदेश आदेस आदेस आदेस, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस ॥२१॥

दसे अवतार लीया तैं देव, भवोदधि तारक जाणण भेव।
लखां नही तुज्झ मतो लवलेस, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस ॥२२॥
भणां तुझ केहो दाखवि भेष, अलेख अलेख अलेख अलेख।
जतीश्वर ईशर तुंही जिनेश, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस ॥ २३ ॥
दिखालि कठे किण थानिक देव, सदा अम्ह पास करावो सेव।
छिप्यो हिव जाण्यो केम छिपेस, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस२४
चवां तो आगलि मो मन चाडि,म छाड़ि मछाड़ि मछाड़ि म छाड़ि।
गुन्हा म चितार किसुं जिनहेस, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस।२५
कृपावंत तुहिज कृपाल, दिवाकर निर्मल दीनदयाल।
विपै कुण तुझ लहै विधि वेस, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस ॥२६॥
लोकायक तुझ न भेद लहंत, कथा निज मुक्खि स कोइ कहन्त।
वणो वलि शास्त्रां मध्य त्रणेस, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस ॥२७।
इला असमाण ऊपावन एक, अनेक अनेक अनेक अनेक
आतम अजम्म किया अवसेस, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस॥१८॥
महा रति-रूप सरूप महंत, रजवट रीत सदाइ रहंत।
अहोनिस कोय न चित्त लहेस, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस॥२६॥
जिती भूंय सूरज ऊगै ज्योति, उती भूय कीरत तुज्झ उद्योति
महीधर मेर प्रमांण मनेस, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस ॥ ३० ॥
अलख प्रसिद्ध तुम्हीणा वेइ पंख्य, ... ।
निरंजन नायक लायक नेस, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस॥३१॥
सदारस राता पाए संत, रहंत रहंत रहंत रहंत

कदे उपजंत न कोइ कलेस, नमो फलवद्धीनाथ नरेस ॥३२॥
खिजमति मो करिवा मन खंति, रुड़ा हियड़ै निज नाम रहंत
कहेस्यो नाथ कह्यो सु करेस, नमो फलवद्धीनाथ नरेस ॥३२॥
थरकि भमन्त रहयो हिव थाकि, तरै तुझ पाये आयो ताकि
तिरावित तौ भव सिंधु तरेस, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस॥३४॥
तुम्हींणो दास वंदो हुं तुज्झ, मठेल म ठेल मठेल पगांहु मुज्झ
धणी उर पंकज मध्य धरेस, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस ॥३५॥
खम्या दुख कोडि अम्हां मैं खोडि, वड़ा हिव साहिब दुख विछोड़ि
पुणां तो आगलि कीजै पेस, नमो फलवद्धीयनाथ नरेस ॥३६॥
कलस—नमोनिरंजण नाथ, नमो फलवद्धि नायक

नमो नमो निरलेप, देव सुख सपति दायक ॥
नमो कलियुग नूर, नमो आतम अविनासी
नील वरण तन नमो, नमो विध जाण विलासी

जगवास निवारण नित नमो, नमो सांमि सुप्रसन्न मुदा
'जिनहर्ष' नमो श्री पास जिन, महाराज प्रणमु मुदा ॥३७॥
कीरति कहै स कोय, देस परदेस दिवाजै ।
नवे खंड निज नाम, भूख प्रणमतां भाजै ॥
हय गय पायक हसम, महिल मन्दिर मृग नैणी ।
नीसाणां सिर निहस, देव एहि रिद्ध दैणी ।
भंडार चार भरिया भला, कुमणा मन न रहै किसी ।
'जिनहरख' तुम्ह फलवद्धि विण;इण कलियुग महिमा इसी ॥३८॥

मांण मलण दुख दलण, धरण सुमता धुर धारण।
मयण महण बल मथण, विघन घन लता विडारण।
सामि सरण रस रमण, नमण ग्रभवास निवारण।
दोष दमण अघ गमण, करत जस कीरति कारण।
दीवाण जांण वंछित दीयण, रयण दीह जपि जपि रसण।
'जिणहरख' भुवण फलवद्धि जिन, तरण तेज दीपंत तण ॥३६॥
सकल ज्योति सुविसाल, भृकुटि धनु लोयण भिंमल।
भाण तपै जिम भाल, नाक सिख दीख निरंमल।
अदभुत रूप असंभ, पार कोई कहत न पावै।
उत्पति लहे न आदि, ध्यान धर सहु को ध्यावै।
श्रीसोम सुगुरु सुपसायलै, प्रणमतां प्रभु पय कमल।
जिनहर्ष एम जंपै सुजस, श्री फलवद्धि नायक सकल ॥ ४० ॥

श्री पार्श्वनाथ स्तुति

श्री फलवर्द्धीयपार्श्व स्तवन

ढाल—गौडीचा

दरसण दीजे आपणो हूं वारी, महिर करी महाराज रे हूं वारी लाल
श्रीफलवधिपुर पासजी हूं वारी, लाख वधारण लाज रे हूं वारी लाल
इतरा दिन लग हूं भम्यौ हूं वारी, न लह्यौ ताहरो भेद रे ।हूं वारी
भेद लह्यउ हिव ताहरउ हूं वारी, मन मै थयौ उमेद रे हूं वारी।१
तो विण किण ही औरं सुं हूं वारी, न मले माहरौ चीत रे हूं वारी
भमरो परिहर केतकी हूं वारी, जिणसुं बाधे प्रीति रे ।हूं वारी २
अण दीठा ही मन गमै हुं०, ज्यां सुं प्रीति अपार रे, हुं०

सो कोसै साजन वसै हूं वारी, तउही हियड़ा मझार रे, हूँ०॥३॥
चरणै कीजै चाकरी हूं वारी, मनमै आही हूँस रे, हूँ०
रात दिवस हाजिर रहूँ हूं वारी, कूड़ कहूं तो सूंस रे हूं० ॥४॥
ताहरा सेवक जो दुखी हूं वारी, इण वाते तुझ लाज रे,
सुनजर साम्हो जोइ ने हूं, मीझै वांछित काज रे ॥५॥ हू० द०
जे मोटा मोटे गुणे हूं, तेह न दाखै छेहरे, हूं०
जिम तिम लीये निरवंहै हूं, ओछा न धरै नेह रै ॥६॥ हू० द०
कहितैं कहितैं राज सुं हूं वारी, केही कीजै कांण रे
अम्हे तुम्हीणा ओलगु, भावे जाण म जाण रे ॥७॥ हूं० द०
सूरति मूरति सांमली हूं वारी, एकलमल्ल अवीह रे हूं०
भाव घणै जिन हरख सुं हुं वारी, भेटुं ते धन दीह रे ॥८॥ हूं० द०

इति श्री फलौधी पार्श्वनाथ स्तवन

फलौंधी पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल—वाल्हेसर मुक्त वीनती गौडीचा—एहनी

दरसण दीठौ राज रौ सांमलिया, फलवधिपूर जगदीश रे
सामलिया पास दरसण दीठौ राज रौ०,
कमल कमल जिम हुलस्यो, सामलिया, पूगी आस जगीस रे ।
आज सफल दिन माहरो, आज सफल अवतार रे,
आज कृतारथ हूं हुओ, भेट्यौ सुख दातार रे ॥२॥ सा०
देव घणाई देवले, दीठा कोडा कोडि रे । सा०
पिण मुझ मींट न को चढ़ै, साहिब तुम ची जोड़ रे ॥३॥सा०

गुण ताहरा हियड़ै वस्या, लाग्यो गाने अमोल रे । सा०
लै लागी तुझ नाम सुं, हिवे मिल अन्तर खोल रे ॥४॥ सा०
सिद्ध कि सति नै नम्यां, जे न करै उपगार रे । सा०
निगुण निहेजां कीजियै, ऊभा ऊभ जुहार रे ॥५॥ सा०
प्रारथीया पहिड़ै नही, तिण सुं कीजै प्रीत रे । सा०
प्राण सनेही ओलख्यौ, सा० तूंहिज अविहड़ मीत रे ॥६॥सा०
कामणगारा पास जी, सा० सूरत अजब दिखाइ रे । सा०
तैं मन मोह्यौ मांहरौ, दीठां अधिक सुहाय रे ॥७॥ सा०
देखुं त्युं मन ऊलस्यै, प्रीतम प्रांण आधार रे । सा०
कहे जिनहरख सदा हुज्यो रे, भव भव तुझ दीदार रे ॥८॥सा०

इति पार्श्वनाथ स्तवनं

फलौधी पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल—सदा सुहागण

आज सफल दिन मांहरो रे, भेट्यो जिनवर पास रे लाल
फलवधि नायक गुणनिलौ, पूरै वंछित आस रे ॥१॥
मेरो रंग लागो जिन नांम सुं, ज्युं पट चोल मजीठ रे लाल ।आं०।
अपराधी तें ऊधर्या, आगे ही नर कोड़ रे लाल
एह सुजस सुण आवीयो, भव············॥२॥

(अपूर्ण)

श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवनं

ढाल ॥ चउपाईनी ॥

सकल सुरासुर सेवइ पाय, कर जोड़ी ऊभा सुर राय ।
गुण गावइ इन्द्राणी जास, पणमु श्री संखेसर पास ॥१॥
जेहनइ नामइ नव निधि थाइ, पाप तमोभर दूरइं जाइ ।
महियल मांहि वधइ जसवास, पणमु श्री संखेश्वर पास ॥२॥
लखमी मंदिर थाइ अखूट, रायराणा कोई न सकइ लूटि ।
संपति सदन रहइ थिर वास, पणमुं श्री संखेश्वर पास ॥३॥
सहु को जेहनी मानइ आण, तेज प्रताप वधइ जिम भाण ।
लहियइ वंछित भोग विलास, पणमुं श्री संखेश्वर पास ॥४॥
वीछड़ीयां वाल्हेसर मिलइ, वइरी दुसमण दूरइ टलइ ।
नासइ दुष्ट कुष्ट खस खास, पणमु श्री सखेश्वर पास ॥५॥
जरा उतारी जादव तणी, वाधी कीरति प्रभु नी घणी ।
हरि पूर्यु तिहां संख उलास, पणमु श्री संखेश्वर पास ॥६॥
धरणिधर नइ पदमावती, जेहनी भगति करइ सासती ।
दुख चूरइ पूरइ मन आस, पणमु श्री संखश्वर पास ॥७॥
जेहनी आदि न कोई लहइ, गीतारथ गुरु इणि परि कहइ ।
महिमा ताँ लगी ध्रू कैलास, पणमु श्री संखेश्वर पास ॥८॥
प्रह ऊठी नइ ध्यावइ जेह, दुखीया थाइ नही नर तेह ।
कहइ जिनहरख तास जग दास, पणमुं श्री संखेश्वर पास ॥९॥

संखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ घडलइ भार मरा छा राजि ॥ एहनी

अंतरजामि सुणि अलवेसर, महिमा त्रिजग तुम्हारउ ।
सांभलि आव्यउ हूँ तुम तीरइं, जनम मरण दुख वारउ ॥१॥
सेवक अरज करै छै राजि, मुझनइ शिव सुख आलउ ।आ०।
सहु कोना मन वंछित पूरइ, चिंता सहु नी चूरइ ॥
एह विरुद छइ राजि तुम्हारउ, किम राखउ छउ दूरइ ॥२॥से०।
सेवक नइ विलविलतां देखी, महिर न मन मां धरिस्यउ ।
करुणासागर किम कहिवास्यउ, जउ उपगार न करिस्यउ ॥३॥
लटपट नउ हिवइ काम नही छइ, परतिख दरसण दीजइ ।
धूंआड़इ धीजुं नही साहिब, पेट पड्यां प्रापीजइ ॥४से०॥
श्री संखेश्वर मंडण साहिब, वीनतड़ी अवधारउ ।
कहइ जिनहरख मया करी मुझनइ, भवसायर थे तारउ ॥५॥से०॥

श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ झूवखडानी

वणारिसी नगरी भली, कासी देश मझारि । संखेश्वर पासजी ।
भव्य लोकने तारिवा, लीधउ प्रभु अवतार ॥सं०१॥
वामा उर सर हँसलउ, अश्वसेन राय मल्हार । सं० ।
वंस इख्यागइं ऊपना, त्रिभुवन तारणहार ॥ २ सं० ॥
सागर करुणा रस तणउ, तुं उपगारी एक । सं० ।

सो कोसै साजन वसै हूँ वारी, तउही हियड़ा मझार रे, हूँ०॥३॥
चरणै कीजै चाकरी हूँ वारी, मनमै आही हूँस रे, हूँ०
रात दिवस हाजिर रहूँ हूँ वारी, कूड़ कहूँ तो सूंस रे हूँ० ॥४॥
ताहरा सेवक जो दुखी हूँ वारी, इण वाते तुझ लाज रे,
सुनजर साम्हो जोइ ने हूँ, मीझै वांछित काज रे ॥५॥ हूँ० द०
जे मोटा मोटे गुणे हूँ, तेह न दाखै छेहरे, हूँ०
जिम तिम लीये निरवहै हूँ, ओछा न धरै नेह रै ॥६॥ हूँ० द०
कहितैं कहितैं राज सुं हूँ वारी, केही कीजै कांण रे
अम्हे तुम्हीणा ओलगु, भावे जाण म जाण रे ॥७॥ हूँ० द०
सूरति मूरति सांमली हूँ वारी, एकलमल्ल अबीह रे हूँ०
भाव घणै जिन हरख सुं हुं वारी, भेटुं ते धन दीह रे ॥८॥ हूं० द०

इति श्री फलौधी पार्श्वनाथ स्तवन

फलौंधी पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल—वाल्हेसर मुझ वीनती गौडीचा—एहनी

दरसण दीठौ राज रौ सांमलिया, फलवधिपूर जगदीश रे
सामलिया पास दरसण दीठौ राज रौ०,
कमल कमल जिम हुलस्यों, सामलिया, पूगी आस जगीस रे।
आज सफल दिन माहरो, आज सफल अवतार रे,
आज कृतारथ हूँ हुऔ, भेट्यौ सुख दातार रे ॥२॥ सा०
देव घणाई देवले, दीठा कोडा कोडि रे। सा०
पिण मुझ मींट न को चढ़ै, साहिब तुम ची जोड़ रे ॥३॥सा०

गुण ताहरा हियड़ै वस्या, लाग्यो गाने अमोल रे। सा०
लै लागी तुझ नाम सुं, हिवे मिल अन्तर खोल रे ॥४॥ सा०
सिद्ध कि सति नै नम्यां, जे न करै उपगार रे। सा०
निगुण निहेजां कीजियै, ऊभा ऊभ जुहार रे ॥५॥ सा०
प्रारथीया पहिड़ै नही, तिण सुं कीजै प्रीत रे। सा०
प्राण सनेही ओलख्यौ, सा० तूंहिज अविहड़ मीत रे ॥६॥सा०
कामणगारा पास जी, सा० सूरत अजब दिखाइ रे। सा०
तैं मन मोह्यौ मांहरौ, दीठां अधिक सुहाय रे ॥७॥ सा०
देखुं त्युं मन ऊलस्यै, प्रीतम प्रांण आधार रे। सा०
कहे जिनहरख सदा हुज्यो रे, भव भव तुझ दीदार रे ॥८॥सा०

इति पार्श्वनाथ स्तवनं

फलौधी पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल—सदा सुहागण

आज सफल दिन मांहरो रे, भेट्यो जिनवर पास रे लाल
फलवधि नायक गुणनिलौ, पूरै वंछित आस रे ॥१॥
मेरो रंग लागो जिन नांम सुं, ज्युं पट चोल मजीठ रे लाल।आं०।
अपराधी तें ऊधर्या, आगे ही नर कोड़ रे लाल
एह सुजस सुण आवीयो, भव............॥२॥

(अपूर्ण)

तुझ सरिखउ कोइ नहीं, दीठा देव अनेक ॥ ३ सं० ॥
दुखीयांना दुख तुं गमइ, तुं आपइ नव निद्धि । सं० ।
साची सेवा जे करइ, ते लहइ अविचल सिद्धि ॥ ४ सं० ॥
संकट विंकट सहू हरइ, पालइ विखमी पीडि । सं० ।
जिम साहिव सुप्रसन थइ, भागी यादव नी भीड़ि ॥ ५सं० ॥
जरासिंधु मूंकी जरा, केशव कटक मझारि । सं० ।
जरा सिथल यादव थया, चिंता थई मुरारि ॥ ६ सं० ॥
नेमीसर उपदेशथी, हरि अट्ठम तप कीध । सं० ।
धरिणीपति आणी करी, प्रभुनी मूरति दीध ॥ ७ सं० ॥
स्नात्र करी मन रंग सुं, छाँट्या न्हवण नइ नीर । सं० ।
तुरत जरा ऊतरि गइ, वल बहु वध्युं शरीर ॥ ८ सुं० ॥
हरख धरी हरि हीयड़लइ, पूर्यउ संख प्रधान । सं० ।
नगर अनोपम वासीयउ, संखेसर अभिधान ॥ ९ सुं० ॥
जिनहर हरि मंडावीयु, थाप्या तिहाँ प्रभु पास ।
अतिसय ताहरउ दीपतउ, पूरइ सेवक आस ॥ १० सं० ॥
मुझ पदवी द्यउ आपणी, तउ वाधइ प्रभु सोह । सं० ।
सोभा ल्यउ विणि दोकड़े, स्यउ राखउ छउ मोह ॥ ११सं०॥
सुनिजरि साम्हु जोइस्यु, तउ इतरइ ही लाख । सं० ।
भूत करइ रइ वाकले, जे दुर्वल वल पाख ॥ १२ सं० ॥
नील वरण तनु सोहतु, राणी प्रभावती कंत । सं० ।
नागराय पाए रहइ, पद्मा सेव करंत ॥ १३ सं० ॥

श्री संखेश्वर पासजी, सांभली मुझ अरदास । सं० ।
कहइ जिनहरख हरख धरी, पूरउ मुझ मन आस ॥ १४सं० ॥

श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ वीर विराजै वाडिया सीता ॥ एहनी

सदा विराजै सांम संखेसरै हो, परतिखि पास जिणद ।
त्रिभुवन मांहे महिमा महिमहै हो, आससेण वामा नंद॥१॥स०
रूप अनूप अधिक रलियामणौ हो, रहियै सनमुख जोइ ।
मोहन मुरति सूरति जोवतां हो, नयणे त्रिपत न होइ ॥२॥स०
रात दिवस हियडा मांहे वसै हो, ज्युं गोरी गल हार ।
कदे न साहिब मुझ ने वीसरे हो, वल्लभ प्राण आधार ॥२॥स०
माहरै तो तुम्ह सेती प्रीतड़ी हो, अविहड़ वणी रे सुरंग ।
चोल मजीठ तणी परे हो, जन मन होइ विरंग ॥ ४ ॥ स०
मधुकर जिम लोभाणो मालती हो, आवै लैण सुवास ।
ऊडायाँ पिण ऊडै नहीं हो, तिम मुझ मन तुझ पास ॥ ५ ॥स०
अवर सुरासुर दीठा देवले हो, मनड़ै न मानै रे कोइ ।
तिरखातुर नर अमृत छोड़नैं रे, न पीयै खारो तोय ॥ ६ ॥स०
जरा उतारी जिम तैं जादवां हो, राखी सगलां री लाज ।
तिम जिनहरख निवाजौ मुझ भणी हो, राखो चरणै महाराज ।७।स०

इति पार्श्वनाथ स्तवन

श्री कापरहेडा पार्श्वनाथ वृद्ध स्तवन

ढाल ।। मल्हार री—

वाल्हेसर सुणी वीनती हो माहरा श्री महाराज,
सेवक सुपर निवाज नैं, सारो सगला ही काज हो ।।
जिम वाधै त्रिभुवन लाज हो, भवसायर तूं तो जिहाज हो ।
तुझ भेद लहयो मैं आज हो, साचौ साहिव सिरताज हो,
कापरहेड़ा श्री पास जी ।। १ ।।

महियल महिमा ताहरी हो, कहितां नावै पार ।
चावौ तीरथ चिहुं दिसे, करिवा आवै दीदार हो ।।
हियड़े धर भाव अपार हो, नर नारी कर सिणगार हो ।
गुण गावै राग मल्हार हो, वलिहारी प्राण आधार हो ।।२।।

साहिव सुरतरु सारिखो हो, अधिकी पूरो आस ।
चिंता चूरे चित्तनी, चारु लहिये लील विलास हो ।
अन्तरजामी अरदास हो, करुं हियडै धरिय उल्हास हो ।
नयणे निरखो निज दास हो, भांजो दुख गरभावास हो ।।३।।

दादौ दुनियां दीपतो हो, समरथ त्रिभुवन सांम ।
एकां थापै ऊथपै, एकां विस्तारे मांम हो ।।
भरपूर भंडारे दाम हो, काढ़े सवला तूं काम हो ।
ऊभर भरीयां द्यौ धाम हो, सहुको गावै गुण ग्राम हो ।। ४ ।।

सांम तुम्हारा नाम थी हो, लाभे राज भंडार ।
मणि माणिक मोती घणा, रथ पायक वहु विस्तार हो ।।

हय गय चाकर सिरदार हो, घर धान तणां अंबार हो ।
निरुपम गुणवन्ती नार हो, पुत्र जाणे देवकुमार हो ॥५॥का०
कुमणा न रहे केहनी हो, पामइ सुख भरपूर ।
ताहरा सेवक ताहरी, तिण सेवा करै हजूर हो ॥
जागै तिम पूण्य अंकूर हो, टलि जायै पातिक दूर हो ।
सूरिज जिम वाधे नूर हो, घरि वाजे मंगल तूर हो ॥६॥का०
इहलोक परलोक ना सहु हो, सुख आपे गुण गेह ।
करम सवल दल निरदलै, जिम चक्री करै अरि छेद हो ॥
अजरामर मिंदर जेह हो, सुख पार न कोई अछेह हो ।
जिहां रूप नहीं नहीं देह हो, थापे सिवनारी नेह हो॥७॥ का०
परतो सांम देखालवा हो, पूरेवा गहगाट ।
इलि अवतरियौ आइनै, घड़ियो नहीं किणही घाट हो ।
एतो मुगतपुरी नी वाट हो, दुख दालिद गमण उचाट हो ।
आवै जात्री नौ थाट हो, मांजण निज मन ना काट हो॥८॥का०
'भान भंडारी' भाव सूं हो, सुभ मुहुरत सुभवार ।
देवल सुधि मंडावियौ, ए न चलै किण ही वार हो ॥
नारायण सुजस भंडार हो, जिन मन्दिर कीध उदार हो ।
ताराचंद सुत तसु सार हो, विस्तरीयो वड़ विस्तार हो॥९॥का०
रंगरली परिवार में हो, साम तणै सुपसाय ।
उत्तम कांम किया जिये, तिमहिज वलि करता जाइ हो ॥
नामौ नव खंडे थाइ हो, अरियण आइ लागै पाइ हो ।

श्री पास सदाई सहाय हो, दोहग्म आवै नहीं काय हो ॥ १० ॥
पुर मंडोवर देस में हो, तारण जलधि जिहाज ।
भेटे जे सुभ भाव सूं, ते पावे सिवपुर राज हो ॥
माहरी तुम्हने छै लाज हो, वाचक शांतिहरख सहाज हो ।
जिनहरख कहै महाराज हो, साहिब जी सुपर निवाज हो ॥ ११ ॥

इति श्री कापरहेडा वृद्धि स्तवनं सम्पूर्ण

पंडित दयासिंघ लिखितं श्री बीकानेर मध्ये पारख साह नावराणी, अतापसी तत्पुत्ररत्न पा० सा० सहसमल्ल पठनार्थं ॥ श्री ॥ सम्वत १७३५

कापरहेड़ा पार्श्वनाथ स्तवन

तैं मन मोह्यौ माहरौ रे, होय रह्यो लयलीन । सांवलीया साह
तुझ विण खिण न रही सकूं रे लाल,
ज्यूं जल पाखे मीन रे ॥ १ ॥ सा० तैं०
दरसन दीजै आपणो रे, आपणा सेवक जांण रे । सां० ।
मोटा चिहुं दिस साचवै रे लाल,
हितवच्छल हित आण रे ॥ सां० २॥
सेवक सहु कौ सारिखा रे, लेखवस्यो सुविशेषरे ।
शोभा तोहीज पांमस्यो रे लाल, इणमें मीन न मेखरे ॥३॥सां०
दरसन ना आगू हुवै रे, दरसन तौ दीजै तास रे । सां०
पांणीखी सुं पातलो रे लाल, उपगारी हेव पास रे ॥ ४ ॥ सां०
इण संसार असार में रे, उवरसी उपगार रे । सां० ।
मोटा थी मोटा हुवै रे लाल, इम आखै संसार रे ॥ ५ ॥सां०

अरज करूं सफली हुवै रे, ताहरी वाधै लाज रे । सां ।
फलै मनोरथ माहरो रे, एक पंथ दोय काज रे ॥ ६ ॥ सां०
हुं पिण छुं इक ताहरो रे, सेवक विश्वावीस रे । सां ।
कापड़हेडै पासजी रे लाल, कहे जिनहरख जगीसरे ॥ ७ ॥ सां०

इति श्री कापड़हिड़ा पार्श्वनाथ स्तवन

कापरहेडा पार्श्वनाथ लघु स्तवन

वारी रे रसिया रग लागो ॥ ढाल वीदली ॥

मोरा लाल अंग सुरंगी अंगीया,
कुंकुस[1] चंदण री खोल । मोरा लाल०
आगल नाचै अपछरा, गीतां रा रमझोल ॥मोरा लाल० ॥१॥
पास जिणंद सूं मन[2] लागौ, रंग लागौ चित चोल । मोरालाल आं०
मोरा लाल मूरति मोहण वेलड़ी, दीठां आणंद[3]होइ । मोरा लाल०।
सौ वेला जो निरखीयै, नयणा अत्रिपता[4] तोइ । मोरा लाल ॥२॥
मोरा लाल हियड़ा मांहे वसि रह्यौ, मोहनगारौ नाम[5] ।मोरालाल ।
सूतां[6] ही सुपनै मिलै, सीझै सगलां[7] काम मोरा लाल ॥३॥पा०
मोरा लाल देव[8] घणा ही देवले, दीठा ते न सुहाइ । मोरा लाल।
भमरौ मोह्यौ केतकी, अलविन अरणी आइ ॥ मोरा लाल ॥४॥पा०
मोरा लाल चातक[10] जलधर नै नमै, अवर न नांमे सीस मोरा लाल।

---

१ केसर २ रंग ३ आवै दाय ४ त्रिपत न थाय ५ राज ६ प्रभु ।
७ वंछित काज ८ घर-घर देव अछै घणा, ते मुझ नावै दाय ।
९ रावै १० चातक मन जलधर वसै, अवर न आवै चीत ।

कै तौ रहै तिसालूओ, कै ज्याचै जगदीस ॥ मोरा लाल ॥५॥पा०
मोरा लाल वाल्हेसर निज सेवकां, नयणै जौ निरखंत ॥ मोरा० ॥
इतरै ही सुख संपजै, तन ताढिक उपजंत ॥ मोरालाल ॥६॥पा०
मोरा लाल मोरी आहीज वीनती, दीजै लील[11] विलास ॥मोरा०॥
कहै जिनहरख सदा नमुं, कापरहेडा पास ॥ मोरा लाल ॥७॥पा

इति श्री कापरहेड़ा पार्श्वनाथ लघु स्तवनं

संवत १७२७ वर्षे श्रावण सुदि ९ दिने प० सभाचद लिखितं श्री जैतारण मध्ये ।

(पत्र १ हमारे संग्रह में)

श्री गोडी पार्श्वनाथ स्तवन

पिया सुन्दर मूरत गुण सरी, पिया दीठां अधिक सुहायौ ।
पिया हियड़ौ हरखे हेज सू, पिया भेटण चित ललचायौ ॥१॥
म्हाने दरसन दीजे पासजी, पिया श्री गौड़ीपुर रायौ ।म्हाने०
पिया थांराजो गुण हियड़ै वस्या, पिया मन मेल्हण न जायौ।
पिया तैं कीधी कांई मोहनी, पिया भेटण चित ललचायौ ।।म्हा।२
पिया तुमसुं रहिये वेगला, पिया मुझ पाखै दिन जायौ ।
पिया तुझ दरसन दीसै नहीं, पिया ते पोते अंतरायो ।म्हा०।३
पिया जाणुं मिलीये जाय ने, पिया देखीजै दीदारौ ।
पिया चरणै कीजै चाकरी, पिया धरिये हियड़ा मझारो ।म्हा।४
पिया ताहरै तो सेवक घणा, पिया सेव करै निस दीसो ।
पिया म्हारे सो तुं हीज धणी, पिया व्हालौ जी विसवा वीस ।।म्हा।५

---

११ सफल करो अरदास ।

पिया मेहांजी मोरो प्रीतडी, पिया प्रीत जिसी जल मीनो ।
पिया चंद चकोरा नेहलो, पिया तिम मुझसुं लयलीनो ।म्हा०।६
पिया किम हुं आवुं तुम कन्है, पिया नहीं चरणे वेसासो ।
पिया राजि सखाई जो हुवे, तो पूगे मन आसो ।।म्हा० ।७
पिया घणां दिनां रो अलजयो, पिया मिलवा गौड़ी पासो ।
पिया दरसण दीजै करि दया, पिया देख सहेजा दासो ।म्हा० ।८
पिया मुझ आडो अतर घणौ, पिया किम करि मिलियै आयौ ।
पिया धन वेला जिनहरख सुं, पिया भेटिस थांरा पायो ।।म्हा ।९

श्री गोडी पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल—हु वारी लाल ।।एहनी

श्री गोडीचा पास जी, वाल्हेसर लाल, सुणि सेवक अरदासरे ।वा०
अन्तरजामी तूं अछइ वा०, हुं तुझ दीणउ दास रे ।।१वा०श्री।।
धन मानव जे ताहरउ रे वा०, देखइ निति दीदार हो ।वा०।
भावइ आगलि भावना वा०, सफल करइ अवतार रे।२वा० श्री।
इणि घटतइ खोटइ अरइ वा०, तुं सुरतरु साख्यात रे ।वा० ।
सेवक ने सुख पूरवइ वा०, सहु को कहइ ए वात रे ।।३वा० श्री ।।
राजि गरीब नीवाज छउ वा०, निरधारां आधार रे ।वा०।
दीणा हीणा देखि नइ वा०, तुरंत करइ उपगार रे ।४वा०। श्री।
इह लोकिक सुख नउ किस्युं वा०, आपइ अविचल राज रे ।वा० ।
अधिकउ अतिसय ताहरउ वा०, परतिख दीसइ आज रे ।५वा० श्री
मुझ मन ऊमाहउ घणउ वा०, भेटण ताहरा पाय रे ।वा०।।

वाट विषम वल नहीं पगे वा०, तिणि हूं न सकुं आइ रे ।।वा६ श्री।।
मुझ नइ दरसण दोहिलउ वा०, ताहरउ श्री जिनराय रे।वा०।
एतला दिन आव्यउ नही वा०, तउ कोइक अन्तराय रे।।वा०७ श्री।
तुमनइ स्युं कहीयइ घणउ वा०, तुमे छउ जाण प्रवीण रे ।वा।
यात्र सफल मुझ मानिज्यो वा०, इहांथी चरणे लीण रे।वा०८ श्री।
हुं सेवक छुं ताहरउ वा०, जाणेज्यो निरधार रे ।वा०।
देज्यो निज पद चाकरी वा०, कहइ जिनहरख विचार रे ।वा६ श्री।

श्री गउडी पार्श्वनाथ स्तवनं

ढाल ॥ पहिलउ वधावउ म्हारइ सुसरा रइ हाइज्यो ॥ एहनी

ते दिन गिणिस्युं हुं तउ लेखइ सुलेखइ,
जिणि दिन हो जिण दिन देखिसि सूरति ताहरी जी ।
जोइ रहिस्युं हुं तउ सनमुख प्रभुनइ ।
थास्यइ हो थास्यइ आसड़ली सफली माहरी जी ॥१॥
भाव धरीनइ प्रभुजी ना गुण गास्युं ।
पावन हो पावन करिस्युं माहरी जीभड़ी जी ॥
चैत्यवंदन करि तवन कहीनइ ।
भावइ हो, भावइ जुहांरीसि धन धन ते घड़ी जी ॥२॥
हीयड़इ राखिसि हित सुं नाम तुम्हारउ ।
नवसर हो नवसर हार तणी परइं जी ॥
चोल सुरंगी जिम मींजी भेदाणी ।

ते रंग हो ते रंग भवे न उतरइ जी ॥३॥
प्राणसनेही हो आगलि हीयड़उ खोली नइ ।
कहिस्युं हो कहिस्युं, सुख दुख केरी वातड़ी जी ॥
बे कर जोडी हुं तउ आगलि ऊभउ ।
रहिस्युं हो रहिस्युं लय लाई वासर रातड़ी जी ॥४॥
धन धन जे प्रभु नइ रहइ पासइ ।
धन धन हो धन धन जे ओलग करइ जी ॥
भव भव ना ते तउ पाप पखालइ ।
वंछित हो वंछित ते कमला वरइ जी ॥५॥
गुण रतनाकर ठाकुर गड़ड़ी विराजइ ।
गाजइ हो गाजइ महिमा दह दिशिइं जी ॥
वंछित पूरइ साहिब संकट चूरइ ।
दरसण हो दरसण देखी हीयड़उ ऊलसइं जी ॥६॥
शिव सुख आपउ मुझ नइ पास जिणेसर ।
बीजउ हो बीजउ क्युं मांगुं नही जी ॥
इम जिनहरख कहइ मन रंगइ ।
कीजइ हो कीजइ कह्यउ इतरउ सही जी ॥७॥

श्री गउड़ी पार्श्वनाथ स्तवनं

ढाल ॥ पास जिणद जुहारीयइ ॥ एहनी

गुणनिधि गउड़ी पास जी, मनमोहन महिमा निवासो रे ।
सुर नर नारी सुरेसरु, गावइं भावइं जस वासो रे ॥१॥

परतखि परता पूरवइ, सेवक जन नइ साधारइ रे।
सुरतरु सुरमणि सारिखउ, इणि विषमइ पंचम आरइ रे ॥२गु॥
वाट विषम विषमी धरा, रिण विषम घणउ अवगाही रे।
जात्र करण जगदीसनी, आवइ संघ हीयड़इ ऊमाही रे ॥३॥
प्रभु जात्रा भूला पड़इ, जे विषमी वाट विचालइ रे।
नीलड़इ अस्व चड़ी करी, सेवक नइ वाट दिखालइ रे ॥४गु॥
अष्ट महाभय उपसमइ, प्रभु नामइ पाप पुलायइ रे।
जपतां नाम जिणंदनौ, जिनहरख सदा सुख थायइ रे ॥५गु॥

श्री गौड़ी पार्श्वनाथ स्तवन

॥ ढाल-आसकरण अमीपाल हारे आसकरण अमीपाल
शत्रुजइ जात्रा करइ रे, करइ रे ॥ एहनी ॥

श्री गउड़ीचा पास हांरे, श्री गउड़ीचा अरज सुणि माहरी रे ।अरज।
कीरति त्रिभुवन मांहि हांरे की०, अमूलिक ताहरी रे ताहरी रे॥
दुनियां मइ दीवाण हांरे दु०, तुम्हीणउ दीपतउ रे तु०दीपतउ रे तु०
जालिम अरियण दूठ हांरे जा०, जोरावर जीपतउ रे जो० २ ॥ १॥
आवइ ताहरी जात्र हांरे आ०, घणा संघ ऊमहीरे ऊमहीरे।
केसर चंदन पूज हांरे के०, रचावइ गहगही रे र० गहगही रे ॥
नृत्य करइ मन रंग हांरे नृ०, सुरंगी गोरीयांरे सु०।
वारु वेस वणाइ हां रे वा०, गुणा री ओरीयां रे। २॥ २॥
वाजइ ढोल निसाण हांरे वा०, दमामा दुड़वड़ीरे द० २।
मादल ना धौंकार हांरे मा०, नफेरी चड़वडी रे न० ॥

गावइ मधुरइ साद हांरे गा०, राग नइ रागिणी रे रा० २।
मानइ जनम प्रमाण हांरे मा०, भगति करि प्रभु तणी रे भ०। २॥
चरणे इंद निरंद हांरे च०, सहू आवी नमइ रे स०।
ध्यान धरइ मन मांहि हांरे ध्या०, तिके भव नवि भमइरे भ० ॥
सेवक आप समान हांरे से०, करइ संसय नही रे क०।
पारस संगति लोह हांरे पा०, कनक थायइ सहीरे क० २॥ ४॥
मुझ नइ प्रभु साधारि हांरे मु०, कि जाणी आपणउ रे कि०।
असुभ करम अरिहंत हांरे अ०, दया करी कापणउरे द०॥
अश्वसेन वामा नंद हांरे अ०, मुगति तुमथी लहुंरे मु०।
कहइ जिनहरख निवाज हांरे क०, राजि नइ स्यूं कहुंरे ॥ ५॥

वाडीपुर मंडण पार्श्वनाथ जिन स्तवनं

ढाल ॥झिर मिर वरसे, मेइ हा राजा, परनाले पाणी भरे, म्हारालाल ए देशी॥

साइ धण कहेकर जोड़ी हो व्हाला, दुष्कृत दूर निवारवा। म्हारालाल।
वाड़ीपुर वर पास हो व्हाला, जइये आज जुहारिवा॥ म्हा०। १
पूगे मन नी आस, हो व्हाला, परमानद पद पामिये। म्हारालाल।
दुख दोहग जाई नासी हो व्हाला, कर्म कठिन अरि दामिये॥म्हा।२
सरणागत प्रतिपाल हो व्हाला, वामानंदन वालहो। म्हारा लाल।
दादो दीनदयाल हो व्हाला, चरणकमल एहनाग्रहो। म्हारा०।३
भेटीजै भगवन्त हो व्हाला, दरशन देखीजै सदा। म्हारा लाल।
भांजै मननी भ्रांति हो व्हाला, आवै नहीं कोई आपदा॥म्हा० ४॥
नित प्रति धरिये आण हो व्हाला, जो सिर उपर एहनो। म्हारालाल।

तो जग मगे जस भाणु हो म्हाला, ज्योति जगामग तेहनी ।म्हा०लाल

ढाल ॥ (२) नागा किसुनपुरी, तुम विन मढिया उजर परी ।

एहवो पास जिनेसर देव, मन शुद्ध कीजै एहनी सेव ।
मीठी अमृत जिसी, प्रभुजी छवि मोरे मनडे वसी ।
अवर गमे नहीं मुझने किसी, मीठी अमृत जिसी ।
नील कमल दल कोमल काय, विषहर लंछन सेवे पाय ॥६॥मी०॥
अणियाला देखी नैण सुरंग, हारि गया वन मांहि कुरंग ।मी०।
जिम जिम देखु प्रभुजी नुं रूप, तिम तिम हिवडे हर्ष अनूप। मी०।७
प्रभुजी ने चरणे लागी रहै, ते तो मोज सही सुं लहै ॥ मी० ॥
मोटा मूके नहींय निरास, दास तणी पूरे मन आस ।८ मी० ॥
सेवा कीजै गुणवंत तणी, सो मनवंछित द्ये ते भणी । मी०।
सब सगला में वाधै लाज, सोम नजरि करै सारे काज ॥मी०॥
साहिबजी जो सुनिजर होय, अन्तर दुख व्यापै नहीं कोय ।मी०
सामो जोवे थई खुशियाल, तौ खिण मांहि करे निहाल॥१०मी०

ढाल ॥ (३) केसरिया मारु म्हाने सालू लाज्यो जी सागानेर नो जी
चीणपुरा नी चीर जी । केसरीया—एहनी ॥

चरणे चित लागी रह्यो जी, जिम मधुकर अरविन्द ।
केसरिया साहिब म्हाने मौज देजो जी ।
पलक रहे नहीं वेगलौजी, मोह्यो गुण मकरन्द जी ।के० ॥११॥
रात दिवस हियडे वसोजी, जिम लोभी धन रासि जी ।के०।
परतिख कांईक मोहनी जी, दीसे छै तुझ पास जी ।के०१२॥

सेव्या देव घणो घणा जी, पिण न सर्यो को काज जी ।के०।
चरण सरण हिवै ताहरै जी, मैं कीधा महाराज जी ॥के०॥१३
मन ना तन ना दुख गया जी, प्रभु मुझ साम्हो जोइ जी।के०
भव भावठ भंजन भणीजी, तुझ विण अवर न कोइ जी ॥ के०१४
तुझ सेवा थी पामिये जी, सुख सम्पति धन राश जी ।
परम शिव सुख पामिये जी, एक पंथ दोई काज जी ॥के०१५.

॥ ढाल ४ माखीना गीतनी ॥

म्हांरां साहिब रा हुं चरण न मेल्हुं, मैं पाम्या हिव नीठ जी ।
भव मांहि भमता वहु दुख खमतां, चिरकाले प्रभु दीठ जीवन जी।१६
श्रीवाड़ीपुर पास सुहावो, पास सुहावतो पूजन आवो केसर चदनमेलि
कस्तुरी घनसार कुसुम सुं, भाव सुरंगौ भेलि, जीवन जी० ।श्री०१७
व्हाला नौ दर्शन देखतां, जे सुख हिये होई जीवन जी ।
ते जाणे मुझ आतमां, अवर न जाणै कोई जीवन जी ॥श्री०१८
मुझ मन साहिवजी सुं लीनो, चोल मजीठौ रंग जीवन जी ॥
उतार्यो उतरे नहीं, किमहिं अंगो अंग जीवन जी ॥श्री०१९॥

ढाल ५ ॥ हरणों जब चरे ललना ॥ एहनी ॥

एतला दिवस भूलो भम्यो ललना, लला हो तुझ विन श्री जिनराय॥
वाड़ी पास जी ललना ।
निगुण साहिब सेव्या घणा ललना, लला हो आस न पूगी कांय ॥२०
दूर टली हिव मूढ़ता ललना, लला हो दूर टल्यो मिथ्यात ।
ज्ञान दीपक पूगो हिये ललना, लला हो जाणी भांति न भांति ॥२१

सुगुण साहेब मैं ओलख्यो ललना, लल्लाहो भयभंजन भगवंत ।
सरसुं मेरू पटंतरो ललना, लल्लाहो आप कनै अरिहंत ।वा० २२
काज नहीं राज रिद्धि सुं ललना, लल्लाहो रमणी भोग विलास ॥
निज पद केरी चाकरी ललना, लल्लाहो देज्यो करूँ अरदास २३
कर जोड़ी करूं वीनती ललना, लल्लाहो लेखवीजो मुझ दास ।
नव निधि पामी एतले ललना, लल्लाहो सफल हुसे मुझ आस। २४
कलस—इम पास जिनवर सकल सुखकर, श्री वाडीपुर मंडणो ।
मैं शाह-पाडे थुण्यौ भावै, दुरित दुःख विहंडणो ॥
अश्वसेन नंदन मात वामा, उदर हंस विराज ए ।
जिनहर्ष पास जिणंद जगगुरू, भव-समुद्र जिहाज ए ॥ २५ ॥

॥ इति ॥

श्री वाडी पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ वीछीया नी ।

मन मोहन मूरति जोवतां, मुझ नयणे त्रिपति न थाइ रे ।
जाणुं आठ पहुर ऊभउ थकउ, कर जोड़ी सेवुं पाय रे ॥१॥
वाल्हउ लागइ वाड़ी पासजी, पाटण मां सोहइ अजीत रे ।
हीयड़उ हीसइ मिलिवा भणी, काइ पइलांतर नी प्रीति रे ।२।
निसि दिन माहरा मन मां वसइ, वाल्हेसर ताहरउ नाम ।
एहीज मुझनइ आधार छइ, जपतउ रहुं आठे जामरे ॥ ३ वा ॥
भवसायर मां भमतां थका, मइं तउ पाम्यां दुक्ख अपार रे ।

आव्युं सरणइ हूँ ताहरइ, मुझ नइ हिवइ दुत्तर तारि रे ॥४ वा॥
उपगारी जे भारी खमा, गरुआ जे गुणे गंभीर रे।
ते साथइं करीयइ प्रीतड़ी, दुख भांजे आवइ भीर रे ॥ ५ वा० ॥
ताहरी समवड़ी जे कीजीयइ, तेहवउ तउ कोई न दीठ रे।
तिणि कारणि तुं मुझ वालहु, रंग लागउ चोल मजीठ रे ॥६॥
पोतानी कीरति राखिवा, वली राखेवा निज लाज रे।
'जिनहरख' मया करी मुझ भणी, आपउ शिवपुर नउ राज रे ॥७॥

श्री वाडी पार्श्वनाथ स्तवनं

ढाल ॥ आजनइ वधावउ हे सहीयर माहरइ ॥ एहनी

आजनइ मइं भेट्या हो वाड़ीपासजी, शिवरमणी सिणगार।
सुंदर सोहइ हो मूरति प्रभु तणी, दीठां हरख अपार ॥ १ ॥
सदा सुरंगा हो मुलकड़ीया हसइ, विकसित वदन खुस्याल।
वेपरवाही हो साहिब सेवतां, खिणि मां करइ निहाल ॥ २आ० ॥
हरि करि निरखुं हो मूरति लोयणे, रोम रोम उलसंत।
प्रीति पुराणी हो आज प्रगट थइ, जाणुं छुं एकत ॥ ३ आ० ॥
हीयड़इ ऊमाहउ हो मिलिवा अति घणउ, चरणे लागउ चीत।
मुखड़उ देखेवा हे आखां अलजई, आ काइ नवली रीति ॥४॥
देव घणा ही हो दीठा देवले, मुद्रा जेहनी रूद्र।
ए जिनवर नी हो मुद्रा जिन कन्हइ, सीतल सरल अक्षुद्र ॥५आ॥
एकण दीठा हो तन मन ऊलसइ, एक दीठा न सुहाइ।

लहणा दइंणा हो कारण जाणीयइ, नयणे तुरत लखाइ ॥६॥
माहरइ तउ तुम सुं होइणि भव पर भवइं, थाज्यो निवड़ सनेह ।
प्रभु जिनहरख सदा संभारिज्यो, रिखे दिखाड़उ छेह ॥ ७आ० ॥

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवनं

ढाल ॥ विणजारा नी ॥

मन मोह्यु रे श्री चिंतामणि पास, जुगतइ जई जुहारीयइ ।म।म।
करीयइ निज अरदास, प्रभु आगलि दिल ठारीयइ ॥म १ म॥
मोहन मूरति एह, रिदय कमल विचि राखीयइ । म । म ।
धरियइ निवड़ सनेह, भावइ प्रभु गुण भाखीयइ ॥म २ म॥
ए त्रिभुवन नउ देव, एहथी कोई न आगलउ । म । म ।
सारउ एहनी सेव, मुगति रमणि नइ जइ मिलउ ॥ म ३ म ॥
लहीयइ समकित माल, साहिब ना सुपसाय थी । म । म ।
भव भव करइ निहाल, नासइ सहु दुख एह थी ॥ म ४ म ॥
एहनउ जोतां रूप, मन विकसइ तन ऊलसइ । म । म ।
न पड़इ दुरगति कूप, जेहनइ मन प्रभुजी वसइ ॥ म ५ म ॥
नयण कमल दल जास, वदन चंद निरमल कला । म । म ।
देखी लील विलास, गाईजइ गुण निरमला ॥ म ६ म ॥
अश्वसेन कुल अवतंस, वामानंदन वंदीयइ । म । म ।
करइ जिनहरख प्रसंस, करम कठोर निकंदीयइ ॥ म ७ म ॥

श्री विजय चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ रसीयानी ॥

विजय चिंतामणि पास जुहारीयइ, प्रह ऊगमतइ रे सूरि। गुण रसीया
मधुर सुरइं प्रभुना गुण गाईयइ, भाव हीयइ धरी रे पूर ॥गु० १॥
वंछित पूरण सुरतरु सारिखउ, रतन चिंतामणि रे एह ।गु०।
कामगवी सुर-कुंभ ऊपम धरइ, धरिये तेहसुं रे नेह ॥गु० २॥
नयण चकोर तणी परि ऊलसइ, देखि प्रभु मुख चंद । गु० ।
एक पलक पिणि न रहइ वेगला, मोह तणइ पड्या रे फंद ॥गु० ३ ॥
ए प्रभु नइ छइ दास घणुं घणा, सेवइ अहनिसि रे पाय ।गु०।
सेवक नइ तउ साहिब एक छइ, अवर न आवइ रे दाय ॥गु० ४॥
पाच तजी कुण काच भणी ग्रहइ, गज तजि खर ल्यइ रे कुंण ।
कंचण तजी कुंण पीतल संग्रहइ, घन तजि कुंण ल्यइ रे लूण ॥५॥
अवर सुरासुर नी सेवा करइ, कुण तजि त्रिभुवन रे नाथ ।गु०।
ए साहिब जउ तूसइ तउ सही, आपइ अविचल रे आथि ॥६॥
एक चित जउ एह सुं राची रहइ, राखइ आपण रे पासि ।गु०।
पिणि साचइ मन न हुवइ चाकरी, तउ किम पूगइ रे आस ॥७॥
सेवक काचउ पिणि साचउ धणी, किम ऊवेखइ रे तेह ।गु०।
सिशिधर जोइ सिसिलउ राखी रह्यउ, सुगुण दाखइ रे छेह ॥८॥
वामा कूखि सरोवर हंसलउ, आससेण कुल अवतंस । गु० ।
चाचरीयइ प्रभु अचल विराजीया, करइ जिनहरख प्रसंस ॥९॥

श्री कलिकुंड पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ महाविदेह खेत्र सुहामणउ ॥ एहनी

श्री कलिकुंड जुहारीयइ, हीयड़इ धरिय उलास लाल रे ।
जेहनइ दरसण पामीयइ, अविचल लील विलास लाल रे ॥१श्री॥
प्रभु दीक्षा लेइ करी, अप्रतिबंध विहार लाल रे ।
कादंबरी अटवी विचइ, कलिगिरि अति विस्तार लाल रे ॥२॥
कुंड सरोवर सोहतउ, तिहां आवी काउसग कीध लाल रे ।
हाथी महीधर आवीयउ, जल पीवा सुप्रसीध लाल रे ॥३श्री॥
प्रभुनइ देखी पामीयउ, जातीसमरण ज्ञान लाल रे ।
सरवर जल न्हाई करी, धरतउ निरमल ध्यान लाल रे ॥४श्री॥
अनुपम कमल लेई करी, प्रभुजी पासइ आइ लाल रे ।
देइ तीन प्रदक्षणा, प्रभु पग पूजी जाइ लाल रे ॥५श्री॥
सुर आवी पूजा करइ, नाटक करइ अपार लाल रे ।
करकडू चंपा धणी, वांदण आवइ तिवार लाल रे ॥६श्री॥
विचर्या जिनवर तिहां थकी, जिनप्रतिमा सुर कीध लाल रे ।
नव कर ऊभी काउसगइं, नृप पूजी फल लीध लाल रे ॥७श्री॥
राय कराव्यउ देहरउ, प्रतिमां थापी मांही लाल रे ।
वंछित पूरइ लोक ना, पातक दूरइं जांहि लाल रे ॥८श्री॥
कलिकुंड तीरथ ते थयउ, पहुवी मांहि प्रसिद्धि लाल रे ।
कलिकुंड पास पसाउलइ, लहीयइ रिद्धि समृद्धि लाल रे ॥९श्री॥
तेह करी तिहां मरी करी, थयउ तीरथ रखवाल लाल रे ।

परता पूरइ सेवकां, प्रभु सेवक प्रतिपाल लाल रे। ॥१०श्री॥
दरसन थी दउलति हुवइ, नांमइ नासइ पाप लाल रे।
भयभंजण प्रभु भेटतां, मिटि जायइ भवताप लाल रे ॥११श्री॥
ध्यान हृदये राखीयइ, लहीयइ नवे निधांन लाल रे।
कहइ जिनहरष जुहारतां, दीपइ अधिकइ वान लाल रे ॥१२श्री॥

श्री अझाहरा पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ दीव ना गरबा नी ॥

पो दसमी दिन जाया जगगुरु जोइ जो।
अश्वसेन नंदन सुरतरु सारखउ रे जो ॥
जेहनी आदि न जाणइ कलियुग कोई जो।
जूनी मूरति एहीज परतखि पारिखउ रे जो ॥१॥
तूं साहिब नइं हुं छुं ताहरउ दास जो।
प्रीतड़ी पालेज्यो वाल्हा पासजीरे जो ॥
मइ राखी छइ ताहरी मन मइं आस जो।
आसड़ली पूरवता कांइ नथी अजी रे जो ॥२॥
ऊमाहउ मिलिवा नउ एहवुं थाइ जो।
जाणुं नइ हूं दरसण देखुं ताहरउ रे जो ॥
मुझ मन मधुकर, मोह्यउ पंकज पाय जो।
आज दिवस धन भेट्यउ पास अझाहरउ रे जो ॥३॥
तुं माहरा मन नउ मानीतउ मीत जो।
आतम नउ आधार सनेही तुं अछइ रे जो ॥

माहरी छइ साहिबजी तुमनइं चींत जो।
तुझ पाखइ वाल्हेसर माहरइ को न छइ रे जो ॥४॥
मइं कीधा छइ भव भव कर्म कठोर जो।
किम कहिवायइ ते तउ कहतां लाजीयइ रे जो ॥
हुं अपराधी पग पग ताहरउ चोर जो।
महिर करीनइ माहरा भवदुख भाजीयइ रे जो ॥५॥
पोताना सेवकनी प्रभु नइ लाज जो।
सेवक नइ तउ लाज जनमका ए वात नी रे जो ॥
नयण सलूणे जोज्यो सनमुख राजि जो।
हुं बलिहारी स्याम मनोहर तात नी रे जो ॥ ६ ॥
ते आगलि कहीयइ जे थाइ अयाण जो।
जाण भणी स्युं कहीयइ जे जाणइ सहू रे जो ॥
भव भव थाज्यो ताहरी आण प्रमाण जो।
सिवपुर ना सुख जिम जिनहरख लहुं बहु रे जो ॥७॥

श्री पंचासरा पार्श्वनाथ स्तवन

परम तीरथ पंचासरउ, जिहां सोहइ पास जिणंद हो।
कर जोड़ी सेवा करइ, पदमावती नइ धरणिंद हो ॥ १ प० ॥
प्रभु मूरति देखि करी, मोरउ मन पामइ उल्लास हो।
जिम केकी घन देखि नइ, मन हरषित थायइ तास हो ॥ २प० ॥
मूरति नयणे जोवतां, चित चंचल थायइ लीन हो।

सोभा सायर मइं सदा, एतउ झीलि रह्यउ मन मीन हो ॥३प॥
प्रभु मुख चंद निहालतां, नाचइ मुझ नयण चकोर हो।
पलक न अलगा रहि सकइ, लागी लागी प्रीति सजोर हो ॥४प॥
मुझसुं साहिबजी करि मया, राखीजइ आप हजूर हो।
निज सेवक जाणी करी, माहरा मन वंछित पूरि हो ॥५प॥
ताहरउ सेवक अवर नी, जउ सेवा करिस्यइ राजि हो।
मन आसा अणपूजतां, ते जोज्यो केहनइ लाज हो ॥६प॥
संवत आठ वोड़ोतरइ, चावड़ वणराज नरिंद हो।
पाटण मांहे थापीया, श्रीश्रीशीलंग सूरिंद हो ॥ ७ प ॥
कमठ तणउ हठ चूरीयउ, पावक थी काढ्यॅु फणिंद हो।
श्रीनवकार सुणावीयउ, दरसणथी थयउ धरणिंद हो ॥ ८ प ॥
राति दिवस सेवा करइ, आतम उपगारी जाणि हो।
साप भणि सुरपति कीयउ, करुणा-निधि करुणा आणी हो ॥६प॥
रिदय-कमल विचि भांहरइ, प्रभु भमर करइ झंकार हो।
मुझ मानससर मइ-रमइ, तुं हंस तणइ आकार हो ॥१०॥
तुझ तीरथ छइ जागतउ, तुझ तीरथ सबल प्रताप हो।
तुझ तीरथ महिमा घणउ, मेटइ भव पाप संताप हो ॥११प॥
पुण्य प्रबल पोतइ हुवइ, ते भेटइ तीरथ एह हो।
दुख भागइ सहु तेहना, पामइ सुख संपति तेह हो ॥१२प॥
पास जिणेसर जग जयउ, वामा अससेन मल्हार हो।
प्रभु ना चरण जुहारतां, जिनहरख सदा सुखकार हो ॥१३प॥

श्री चारूप पार्श्वनाथ स्तवन

ढाला ॥ चादा करिलाइ चाद्रणउ ॥ एहनी

श्री चारूपइं पासजी, मनमोहन साहिब दीठउ रे ।
मन विकस्यउ तन उलस्यउ, पूरव भव पातक नीठउ रे ॥१श्री॥
जनम सफल थयउ माहरउ, आज पुण्य दशा मुझ जागी रे ।
आज सुकृत फल पामीयउ, जउ भेट्यउ सरवसु त्यागी रे ॥२श्री॥
लोयण मुझ लागी रह्या, प्रभु मूरति देखि सुरंगी रे ।
जाणुं विछड़ीयइ नही, मूरति लागइ चित चंगी रे ॥३श्री॥
ए साहिबनी चाकरी, कर जोड़ी निसिदिन कीजइ रे ।
भाव भागति इक चित थइ, मन वछित तउ पामीजइ रे ॥४श्री॥
मोटानी सेवा कीयां, निष्फल किम ही नवि जायइ रे ।
सोम नजर राखइ सदा, फल प्रापति सारू थायइ रे ॥५श्री॥
साहिब नइ देखी करी, हितस्युं मुझ हीयड़उ हीसइ रे ।
परतखि छइ काइ मोहणी, पासइ रहीयइ निसि दीसइं रे ॥६श्री॥
धरणींद ने पदमावती, कर जोड़ी सेवा सारइ रे ।
सेवक नइ सानिधि करइ, जिनहरख सकल दुख वारइ रे ॥७श्री॥

श्री भटेवा पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ बिंदली नी ॥

मूरति प्रभुनी सोहइ, सुर नर मुनिजन मन मोहइ हो । पास भटेवउजी.
तेजइ दिनकर दीपइ, रागादिक वयरी जीपइ हो ॥१पा॥
पास भटेवउ सेवउ, कृष्णागर धूप उखेवउ हो । पा० ।

केसर सखर घसावउ, मृगमद घनसार मिलावउ हो ।।पा।।
परघल पूज रचावउ, आगलि भली भावन भावउ हो ।।२पा।।
सुरतरु सुरमणि सरिखउ, हरि करि निज नयणे निरखउ । पा ।
मुख दीठां दुख जायइ, भव भव ना पाप पुलायइ हो ।।३पा।।
दउलति दायक दीठउ, मुझ नयणे लागइ मीठउ हो । पा ।
सफल थयउ ऊमाहउ, लीधउ नरभव नउ लाहउ हो ।।४पा।।
वहु दिवसे मुझ मिलीयउ, दुख दोहग दूरइं टलीयउ हो ।पा।
जिम जिम वदन निहालुं, तिम तिम समकित उजुआलुं हो ।।५पा।।
हीयड़इ हेज न मायइ, दूरइं खिण इक न रहायइ हो । पा ।
प्रीति पूरव भव केरी, लागी तुझसुं अधिकेरी हो ।।६पा।।
आज मनोरथ फलीयां, आज थयां माहरइ रंग रलीयां हो ।पा।
जात्र चड़ी सुप्रमाणइ, जिनहरख भलइ इणि टाणइ हो ।।७पा।।

श्री कंसारी मंडन पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ।। नींदड़ली वइरणि हुइ रही ।। एहनी

कंसारी पास अरज सुणउ, कर जोड़ी हो कहुं प्राण अधार ।कं।
तुझ मूरति मुझ हीयडइ वसी, सुकुलीणी हो मन जिम भरतार ।। १कं।।
मनवंछित आशा पूरवइ, दरसण थी हो दुख जायइ दूरि ।कं।
साचइ मन साहिब सेवतां, सुख संपति हो थायइ तुरत हजूरि ।। २कं।।
वाल्हेसर मुजनइ वालहउ, लागइ लागइ हो जिम चकवी भाण ।कं।
जाणुं अहिनिसि अनमिख लोयणे, देखुं दरसन हो उलसइ मुझ प्राण। ३
पाणीवल न रहुं वेगलउ, तुझ सेती हो हुं तउ निसि दीस ।कं।

पिणि पोतइ मुझ पातक घणा, किम थायइ हो सेवा जगदीस ।४कं।
निसनेही सुं लागउ नेहलउ, झूरि मरीयइ हो इमही एकंग ।कं।
दीपक मन नइ जाणइ नही, पड़ि पड़ि नइ हो मांहि मरइ पतंग ।५कं।
साहिब सेवकनी चाकरी, नवि जाणइ हो मन मांहि । कं ।
बगसीस किसो परि तउ करइ, किम थायइ हो सफली मन चाहि ।६कं
पिणि थायइ जे भारी खमा, सहुकोनी हो पूरवइ मन आस ।कं।
अधिका ओछा नवि लेखवइ, तुझ सारिखा हो उपगारी पास ॥७कं॥
अपराधी हुँ प्रभु ताहरउ, मुझ मांहे हो छइ अवगुण कोडि ।कं।
अवगुण जोई अवहीलतां, मोटा नइ हो छइ मोटी खोडि ॥८कं॥
तुमनइ स्युं कहीयइ वलि वलि, सहु वाते हो तुम्हें जाण प्रवीण ।कं।
जिनहरख मनोरथ पूरवउ, तुम चरणे हो मनड़उ लयलीण ॥९कं॥

श्री नारंगपुर पार्श्वनाथ स्तवन

राग-वेलाउल

श्री नारंगपुर वर पाशजी, म्हारी वीनतड़ी अवधारि ।
भव दुख भांजउ माहरा, तूं तउ पर दुख भंजणहार हो ॥१श्री॥
हां जी मूरति मां काई मोहणीजी, नयण अधिक सुहाइ ।
साहिब तुझ दीठां पछइ, कोइ बीजउ नावइ दाइ हो ॥२श्री॥
हां जी पोताना जाणी करी जी, निशि दिन राखइ पासि ।
सकल मनोरथ पूरवइ, तेहना थई रहीये दासरे हो ॥३श्री॥
हां जी जे दुख भांजइ आपणाजी, तेहने कहीये दुक्ख ।
निसनेही निरमोहीयां, तेस्युं आलइ कहउ सुक्ख हो ॥४श्री॥

हां जी उत्तम नी सेवा कीयांजी, उत्तम गुण द्यइ तेह।
पारस संगत्ति लोहड़ौ, थायइ कंचण गुण गेह हो ॥५श्री॥
हां जी तुझ चरणे हुं आवीयउ जी, निज गुण द्यउ भगवंत।
माहरो आहीज वीनती, वार वार करूं गुणवंत हो ॥६श्री॥
हां जी परउपगारी तूं सहोजी, वामा सुत विख्यात।
आशा पूरउ माहरी, जिनहरख कहइ ए वात हो ॥ ७श्री ॥

श्री नारंगपुर पार्श्वनाथ स्तवन

ढाल ॥ एसा मेरा दिल लागा रे जिन्हा रे म्हारा लाल लोभीडा सुजाण
एसा मेरा दिल लागा ॥ एहनी

मूरति तेरी मोहनगारी, देख्यां होत उलास।
चित चरणै मोही रह्यउ रे, पलकन छोडुं तोरउ पास ॥१॥
तोसुं मेरा दिल लागा राजिंद म्हांरे
मोरा लाल नारंगपुर प्रभु पास। तो० मे०।
हुं सेवक तुं साहिब मेरा, तुं मेरा सुलताण।
अंतरजामी आतमारे, तुं मेरा दिल दा दीवाण ॥२तो॥
हित सुं हीयड़ा वीचि रहाउं, प्रभु गुण मुगतामाल।
प्रभु कीरती गाउं सदा रे, पामुं सुख सुविसाल ॥३तो०॥
किसहीकी न धरुं तमा, किसही न नामुं सीस।
आस तुम्हारी हूं धरुं रे, करि अविचल बगसीस ॥४तो०॥
तिणिकी सेवा कीजीयइ, जिण कइ मन मइं साच।
झूठे सुं क्यां राचीयइ रे, परिहरियइ ज्युं काच ॥५तो०॥

उत्तम सेती प्रीतड़ी, कीजइ तउ सुख होइ।
जनमंतर पहिड़इ नही रे, अपयश न कहइ कोइ ॥६तो०॥
साहिब सुनजर थइ लहुं, भवसायर कउं पार।
कहइ जिनहरख निवाजीयइ रे, कीजइ प्रभु उपगार ॥७तो०॥

श्री पाली मंडन नवलखा श्री पार्श्वनाथ स्तवनं

ढाल ॥ तु तउ म्हारा साहिबा रे गुजराति रा ॥ एहनी

साहिबा वेकर जोड़ी वीनवूं, साहिबा वीनतड़ी अवधारि कि।
तुं तउ म्हारा साहिबा रे श्रीपासजी, साहिबा सेवक सुपरि
निवाजीयइ, साहिबा, आपणउ विरुद संभारि कि ॥ तुं १ ॥
साहिबा सूरति ताहरी निहालतां, साहिब नयण ठरइ मुझ दोइ कि।तुं
मुझ हीयड़ो हरखइ हेजसुं।सा। तुझ मुख सनमुख जोइ कि॥२तुं सा॥
राति दिवस हाजिर रहुं।सा। चरणे रहुं लपटाइ कि॥सा। तुं॥
आठ पहुर ऊभउ थकउ।सा। सेव करूं चितलाइं कि॥३तुं सा॥
माहरी तुझसुं प्रीतड़ी।सा। अविहड़ वणी बहुं भांति कि।तुं सा।
तेतउ कदी न ऊतरइं।सा। जउ युग जाइ अनंत कि॥४तुं सा॥
माहरा वंछित पूरवउ।सा। जिम पामउ सावासि कि। तुं सा।
पालीमंडण नवलखा।सा। जिनहरख सफल अरदास कि॥ ५ तुं

नींबाज—श्री पार्श्वनाथ स्तवन

राग ॥ सारग मल्हार ॥

नयर नीबाजइं दीपतउ रे, परतखि पास जिणंद।
सूरति मूरति मोहणी लाल, दीठां होइ आणंद ॥ १ ॥

साहिब पासजी हो वाल्हा पासजी हो, दरसण नीकउ राजि ।आं०
तूं तारक त्रिभुवन तणउ रे, तूं त्रिभुवन दीवाण ।
सुरनर राय राणा सहु लाल, सीस धरइ तुझ आण ॥ २ सा ॥
तूं माहरइ जीवन जड़ीरे, तूं मुझ प्राण आधार ।
तुझ नइ चाहु अहनिसइ लाल, जिम कोयल सहकार ॥३सा ॥
जे दिन जायइ माहरा रे, तुझ पाखइ जिनराज ।
ते सघला अकीयारथा लाल, जेम सरद री गाज ॥४सा॥
वीसार्यु नवि वीसरइ रे, निसिदिन आवइ चीत ।
जलधर चातकनी परइ लाल, लागी माहरी प्रीति ॥५सा॥
तुझ चरणे मन माहरु रे, लागउ रहइ दिन राति ।
फाटइ पिणी फीटइ नहीं लाल, पड़ी पटउलइ भाति ॥६सा॥
अस्वसेन कुल सेहरउ रे, वामा उर सिणगार ।
कहइ जिनहरख निवाजीज्यो लाल, करिज्यो माहरी सार ॥७सा॥

अठोत्तर सौ पार्श्वनाथ स्तवनं

ढाल—गीता छंद री

श्रीखंभाइत पास नमु सदा, श्रीचिंतामणि राधणपुर मुदा ।
बड़ली पाटण मारग पुर पहू, ईडर कंसारीपुर सुख वहू ।
सुख वहू वीवीपुर संखेसर, आसाउल पंचासरै
अहमदावादे विमलगिर, देवके पाटण मातरै,
गिरनार वेलाउल हसोरे, दीव बीजापुर वरे ।
वड़नगर पाल्हणपुर धंधूकै, धवलकै तारापुरे ॥१॥

देवगिरै जूनैगढ़ वंदियै, उजेणी अंतरीख आणदीयैं
झंझूंवाडे श्री मोहड़ ए, अहिछत्ता मथुरा कलकुंड ए।
कलकुंड मोजावद जवनपुर आगरै राजग्रही।
दहथली रावण कुक्कड़ेसर, जगत सहु आवै वही ॥
पालीयतांणै भीनमालै, पारकर गोड़ी धणी।
रतलाम नागद्रह असोझर, छवट्टण महिमा घणी ॥२॥

ढाल—वीवाहला री

श्रीपुर गोयल सुलखणपुर नवखंड कुंतीपुर जांणीयै ए
पुंजपुर राणपुर कुंभलमेर, मांडवगढ जास वखाणियै ए
उदयपुर, सिवपुरी, अलवरगढ, फलवद्धि सोवनगिरै गाईयै ए
नागपुर, जोधपुर, जेसलमेर, मरोठ, नाडूल सुख पाईयै ए ॥३॥
मेलगपुरवर अगम अज्ञाहरो, चित्रकोटे वलि सादड़ी ए
समेल, मगसी किरहोर, वाड़ीपुरे बीझपुर, वंदिये अणघड़ी ए
नवयनगर, चोरबाड, भडकौल, प्रभु मंगल मंगलौरै करु ए
विगत,वाडोदरे,जुगत जीराउलै, चतुर चारुपे तिम जिणवरूए ॥४॥

ढाल—फाग री

सेरीसे तिमरी नमु ए वरकांण महेवे
घंघाणी जोजावरे ए सुरतर वर सेवे।
ओसोपे पाली जयौ ए वीलाड़े सामि
तिल धारै हथणाउरे ए सेवूं सिर नामी ॥ ५ ॥
इन्द्रवाड़े आबू जयो ए, मुरवाड़ जिणेसर।

साचौरे संमेतसिखर, पोसी वंदेसर,
सोझत नै भीमालियो ए चवलेर चवीजै ।
कापरहेडे, मेड़ते ए दिनप्रति प्रणमीज ॥६॥

कलस

इम अठोत्तर सो गांम, नयर पुर ठाम ।
थुणिया त्रिकरण सुध, पास जिणेसर नाम ॥
गणिवर श्रीसोम सुखाकर पूरो आस ।
जिनहरख करै कर जोड़ि ए अरदास ॥
॥इति अठोत्तर सौ स्थान नाम गर्भित पार्श्वनाथ स्तवन सम्पूर्ण॥

—o—

श्री पार्श्वनाथ दशभव गर्भित स्तवन

ढाल ॥ अलवेलानी ॥

पोतनपुर रलीयामणु रे लाल, सुरपुर नुं अवतार । सुविचारी रे
अरविंद राजा गुण निलउ रे लाल, राज्य करइ गुणधार॥सु० १पो॥
निज परजा पालइ सुखइं रे लाल, सहुं कोनी करे सार । सु ।
मरुभूति तिहां ब्राह्मण वसे रे लाल, राजा नउ अधिकार॥सु२पो॥
कपट रहित धरमातमा रे लाल, जेहना सरल परणाम । सु० ।
उपगारी सहु लोक नइ रे लाल, सहु विद्या गुण धाम ॥सु३पो॥
सुख भोगवइ गृहवास ना रे लाल, निज नारी संयोग ।सु०।
आउखूं पूरण करी रे लाल, ते पहुतउ परलोग ॥ सु४पो ॥
बीजइ भव हस्ती थयउ रे लाल, वारू लक्षणवंत ।सु।

रूप अति रलीयामणु रे लाल, वन माहे विलसंत ॥ सु० ५ पो॥
अरविंद नृप संध्या समइ रे लाल, देखी अभ्र स्वरूप । सु० ।
वैराग्यइ दीक्षा ग्रही रे लाल, पंच महाव्रत रूप ॥सु६पो॥
समेतशिखर यात्रा भणी रे लाल, चल्या अरविंद साध ।सु।
सर तीरइं काउसग कर्युं रे लाल, धरतउ चित्त समाधि ॥सु७पो॥

ढाल २ ॥ कता मोनइ डूगरीयउ देखालि रे ॥ एहनी

मरुभूति नउ जीव हाथीयउ, पीवा आव्युं सर नीर रे ।
संघ निहाली घणुं कोपीयउ, नाठा सहु धर्युं नही धीर रे ॥८म॥
राजरिषि अरविंद मुनिवरु, अवधिज्ञानी अणगार रे ।
हस्ती प्रतइं प्रतिबोधीयउ, देइ उपदेश विचार रे ॥९म॥
गज भणी ततखिण ऊपनउ, जातीसमरण सुभ ज्ञान रे ।
श्रावक व्रत मुनिवर कन्हइ, आदर्यां देई बहुमान रे ॥१०म॥
साधु अरविंद ना पाय नमी, गज गयउ आपणी ठाम रे ।
तिर्यंच पणे व्रत पालीया, रिदय धरतुं मुनि नाम रे ॥११म॥
काल कीधउ तिणि गजपति, सहस्रारइं ऊपनु देव रे ।
तृतीय भव एह जाणउ सही, सुर सुख भोगवइ हेव रे ॥१२म॥
गज तणउ जीव तिहां थी चवी, खेचर किरणवेग नाम रे ।
पुत्र थयउ रे राजा तणउ, रूप अभिनव जाणे काम रे ॥१३म॥

ढाल ३ ॥ कंता तंबाखू परिहरउ ॥ एहनी

मंदिर लावण्य गुण तणउ, नारि परिणी सुखकार । मोरा लाल
राज्य पाम्युं निज बाप नूं, भोगवइ विषय अपार ॥मो१४मां॥

गुरु नी देसणा सांभली, पाम्यउ संवेग सार । मो ।
राज्य तजी दीक्षा भजी, अप्रतिबंध विहार ।। मो० १४मं ।।
तप जप संयम खप करइ, ल्यइ सूझतु आहार । मो० ।
आउ पूरण अणसण करी, चउथउ भव अवधारि ।।मो१६मं।।
मरुभूति नउ जीव ऊपनउ, बारमे अच्युत नाम । मो ।
देवलोके थयउ देवता, चढतइ पुन्य प्रमाण ।। मो१७मं ।।
बावीस सागर आउखउ, सुख भोगवइ अपार । मो ।
एतउ भव थयउ पांचमउ, सांभलिज्यो नर नारि ।।मो१८मं।।
तिहां थी तेह चवी करी, पश्चिम महाविदेह । मो० ।
वज्रनाभ राजा थयउ, रूप यौवन गुण गेह ।।मो१६मं।।
राज्य तजी व्रत आदर्यउ, पाले निरतीचार । मो ।
दुक्कर बहुतर तप करइ, पालइ सुध आचार ।। मो २० मं ।।
अरस निरस आहार सूं, काया कीधी खीण । मो ।
अंतइ संलेहण करी, छठउ भव सुप्रवीण ।। मो २१ मं ।।

ढाल ४ ।। रसीयानी ।।

साधु समाधि मरीनइ ऊपनउ, मध्य ग्रैवकइ रे देव रे । भविका
सातमउ भव जाणउ मरुभूति नउ, तिहां थी चवीयउ रे टेव रे ।भा२२।।
खेत्र विदेहइं आवी अवतर्यु, चक्री सुवर्णबाहु नाम रे । भ ।
षट् खंड राज्य लीला सुख भोगवी, दीक्षा लीधी रे तामरे ।भ२३सा
छठ अठम आदिक बहु तप करइ, सेवइ थानक रे वीस रे ।भा
विचरे गाम नगर पुरवर वनइं, परीसह सहइ रे बावीस ।।भा२४स

कालइं मुनिवर कालधरम कर्यउ, अष्टम भव थयउ रे एह रे ।भ।
दसमे देवलोकइं जइ ऊपनउ, प्राणत नामइं तेह रे ।।भ२५सा।।
नवमइ भव सुर ना सुख भोगवी, तिहां थी चवीयउ ते तेह रे ।भ।
दसमे भव थया पास जिणेसरु, पुण्य प्रबल फल रे एह रे।।भ२६सा।।

ढाल ५ ।। गिरि थी नदिया ऊतरइ रे लो ।। एहनी

वाणारिसी नगरी भली रे लो, अश्वसेन नाम नरिंद रे । रंगीला
वामादे तसु रागिनी रे लो, सीलवती गुण वृंद रे ।। रं२७वा।।
तसु कूखइं प्रभु ऊपना रे लो, चैत्र वहुल चउथि दीस रे ।रं।
चउद सुपन दीठा रागिनी रे लो, निसि भर परम जगीस रे।।रं२८व
गरभ दिवस पूरा थया रे लो, जनम्या पासकुमार रे । रं० ।
पोस असित दशमी निसा रे लो, छपन कुमारी सार रे ।।रं२९वा।।
जनमोच्छव करिने गइ रे लो, आव्या चउसठि इन्द्र रे । रं० ।
स्नात्र कर्यु मेरु ऊपरइं रे, पाम्यु अधिक आणंद रे ।।रं३०वा।।
राजा पुत्रोच्छव करी रे लो, नाम दीयुं प्रभु पास रे । रं० ।
नील कमल काया भली रे लो, अहि लंछण पग जास रे।।रं३१वा।।
रूपइ प्रभु रलीयामणा रे लो, दीठां उलसइ कायरे । रं० ।
सउ वेला जउ देखीयइ रे लो, तउ ही त्रिपति न थाय रे।।रं३२वा
मुख छवि राका चंदलउ रे लो, नयण कमल अनुहार रे । रं० ।
चंपकली जेही नासिका रे लो, अधर प्रवाली सार रे।।रं३३वा।।
दंत मोती हीरा जड्या रे लो, नख सिख सुंदर घाट रे । रं०।
नव कर काया जेहनी रे लो, दीठां हुइ गहगाट रे ।।रं३४वा।।

ढाल ६ ॥ यिदलीनी ॥

अपछर प्रभु नइ रमावइ,मठ इश्वर हालरउ गावइ रे।कीका मन मोह्यउ
मनमोह्य मोहणगारा, तुझ दरसण लागइ प्यारा रे ॥३५की॥
नयणे तुझ सूरति दीठी, साकर थी लागइ मीठी रे। की।
तुं जीवन प्राण अम्हारइ, तुझ नाम तणइ वलिहारइ रे ॥३६की॥
आवउ वामादे ना लाल, अमने तुम्हे लागउ वाल्हा रे। की।
तुमने देखी हित जागइ, दीठां भूखड़ली भागइ रे ॥३७की॥
तोरी सूरति अधिक सुहावे, बीजउ कोई दाय न आवइ रे।की।
एक देवी कड़ीए चड़ावइ, एक नाटक प्रभुनइ दिखावइ रे॥३८की॥
कर जोड़ी प्रभु ने आगइ, एक अपछर पाए लागइ रे। की।
माय नी कूखड़ली ठारी, कीरति त्रिभुवन विस्तारी रे॥३९की॥
अम स्वामी तुम नइ सेवइ, तुम आगलि अगर उखेवइ रे।की।
तुं तउ राजा त्रिभुवन केरउ, नमतां न हुवइ भव फेरउ रे॥४०वी॥
प्रभुजी ने लेई इन्द्राणी आपइ, ल्यउ वामा राणी आपइ रे।की।
ए वाई कुमर तुमारउ, वसी कीधउ चित्त हमारउ रे॥४१की॥
मूक्यउ खिणि एक न जायइ, एहनउ अलजो न खमायइ रे।की।
अपछर पहुती निज ठामइ, हिवइ पासकुमर वृधि पामइ रे॥४२की॥

ढाल ७ ॥ रे जाया तुझ विणि घडी रे छ मास ॥ एहनी

अनुक्रमि योवन पामीयुं जी, परिणी राजकुमारि।
विषय तणा सुख भोगवी जी, कीधउ तसु परिहार॥ ४३ ॥

जगतगुरु सांभलि मुझ अरदास।
तू त्रिभुवन नुं राजीयउ जी, पूरउ माहरी आस ।ज०।
पोस वहुल इग्यारसे जी, लीधउ संयमभार।
करम खपावी घातिया जी, उज्जल ध्यान संभारि ।४४।
चउथी अंधारी चैत्रनी जी, पाम्युं केवलज्ञान।
समवसरण देवे रच्युं जी, बारह परषद मान ॥ ४५ ज ॥
संघ चतुर्विध थापीयउ जी, सहु नइ करि उपगार।
समेतशिखर अणसण कीयु जी, साधु तणे परिवार ॥ ४६ज ॥
श्रावण सुदि आठिम दिनइ जी, प्रभु पहुता शिवपास।
सेवक जाणी राखीवउ जी, अमनइ पिणि निज पासि ॥४७ज॥
आससेन नृप कुल तिलउ जी, वामा राणी जात।
धरणीपति पद्मावती जी, सेव करइ दिन राति ॥ ४८ ज ॥
भव भव माहरइ तू धणी जी, ताहरउ मुझ आधार।
तुझ विणि केहनइ नवि नमुं जी, मैं कीधी इक तार ॥४६ज॥
हुं भमीयउ भवमां घणुं जी, तुझ विणि जगदानंद।
चरण-सरण हिवइ ताहरा जी, द्यउ जिनहरख आणंद ॥५०ज॥

—०—

श्री पार्श्वनाथ दोधक छत्रीशी

पास चरण चितलाइ, गुण गाइसि गौरव करे।
पवित्र करिसि सुपसाय, आतम अससेण रावउत ॥ १ ॥

साहिब करिस्ये सार, निखरी वारि निवारिस्यइ ।
सिव सुख देस्ये सार, अगणित अससेण रावउत ॥ २ ॥
करां निहोरउ नाथ, वामा-सुत सुणि वीनती ।
अविचल मोनइ आथि, आपउ अससेण रावउत ॥ ३ ॥
वपु ताहरउ विशेष, वणीयउ सुत वामा तणा ।
ओपम किति अलेस, आखां अससेण रावउत ॥ ४ ॥
मानव नयण मिथ्यात, घण अंधारइ घूमियां ।
तुं रवि त्रिभुवन तात, उदयउ अससेण रावउत ॥ ५ ॥
भांजउ भव री भीति, सेवक ने राखउ सरण ।
अरज करां इणि रीति, अहनिसि अससेण रावउत ॥६॥
जिन पामीयउ जिहाज, वहतां भवसागर विचइं ।
हिचइ मेल्हुं नहीं महाराज, अलगउ अससेण रावउत ॥७॥
दोषी मोटा दोइ, मदन अनइ ममता मिले ।
मो संतापइ सोइ, अटकउ अससेण रावउत ॥ ८ ॥
धावे जम री धाड़ि, मो केड़इ मछराइती ।
पाकड़ि पाड़ि पछाड़ि, आती अससेण रावउत ॥ ९ ॥
तपीयउ पावक ताप, श्रीनवकार सुणावीयउ ।
सुरपति कीधउ साप, ऐ ओ अससेण रावउत ॥ १० ॥
पांणी मांहि पखांण, तइं तार्या त्रिभुवन धणी ।
तिको दीठउ राणों राण, अचरज अससेण रावउत ॥ ११ ॥
रुघपति राखी रेख, लंकागढ़ लिवरावीयउ ।

चाध्यु महण विशेष, ऐ ओ अससेण रावउत ॥ १२ ॥
जरासेन जर जाल, मेल्हि जादव मुरछित किया ।
तइं दीधउ ततकाल, ऊजम अससेण रावउत ॥ १३ ॥
तुंहीज जाणइ तूझ, नर वीजउ जाणे नही ।
गुपत तुम्हीणउ गूझ, कुण आखइ अससेण रावउत ॥१४॥
करवा वरि करतार, लाधी लीला लाड़ीलइ ।
पासी आथि अपार, अगणित अससेण रावउत ॥ १५ ॥
सुख पाम्यां रउ सार, सुख जउ दीजइ सेवकां ।
ऊगरिस्यइ आचार, इलि पुड़ अससेण रावउत ॥ १६ ॥
सुर सुरपति सुख सार, महिर करे आपे मुगति ।
दुनियां में दातार, तुं अधिकउ अससेण रावउत ॥ १७॥
कमठासुर करि कोप, वारद जदि वरसावीयउ ।
अंजणगिरि री ओप, तुं ओप्यउ अससेण रावउत ॥१८॥
वरसाव्यउ जदि वारि, कमठ असुर कोपइं करे ।
तास हुई तरवारि, अंगइं अससेण रावउत ॥ १६ ॥
कांपइ थरहर काय, दुख सांभलि दुरगति तणा ।
मो सरणइ महाराय, राखउ अससेण रावउत ॥ २० ॥
जगनायक जगदीस, जगतारण तुं जनमीयउ ।
त्यारइ पूगी जगत जगीस, अधिकी अससेण रावउत ॥२१॥
कासुं करिस्ये काल, जालिम जम करिस्ये किसुं ।
राजन मो रखवाल, आछइ अससेण रावउत ॥२२॥

जकड्यु मोनइ जोइ, वे वंधण मइ वाप जी ।
सटकइ कापउ सोइ, आखां अससेण रावउत ॥२३॥
पारस तणे प्रसंग, कंचण होइ कुधातु पिणि ।
नीच न ह्वइ क्युं नग, उत्तम अससेण रावउत ॥२४॥
जनम मरण दुख जोर, पीडयुं भव भव पापीए ।
नीगमि करुं निहोर, आरति अससेण रावउत ॥२५॥
जिणि जिणवर री जाइ, काने ही न सुणी कथा ।
तिके वहिरा हुवइ बलाइ, अंगइं अससेण रावउत ॥२६॥
जे जिण मन्दिर जाइ, प्रभु पाए नमीया नहीं ।
तिके पर नर सेवइ पाय, ऊभा अससेण रावउत ॥२७॥
प्रभु पूजेवा पाय, नर तीरथ न गया जिके ।
तिके पर आगलइं पुलाय, अचरज अससेण रावउत ॥२८॥
सामल वरण सरीर, घेघूंबी जाणे घटा ।
मो मन मोर सधीर, उलसे अससेण रावउत ॥२९॥
मन कीधउ महाराज, पिणि मन पसरे माहरउ ।
राखउ चरणे राज, आपण अससेण रावउत ॥३०॥
श्रुतवल नहीं सरवंग, कही तिसी न हुवइ क्रिया ।
पहुंचे केम अपंग, ऊंचउ अससेण रावउत ॥३१॥
सुख मंइ परम सनेह, जउ कीजइ जगदीस सूं ।
नर वीजां सूं नेह, ऊखर अससेण रावउत ॥३२॥
छिटकि न दाखइ छेह, जग मइं तुझ सरिखा जिके ।

अगनि सरीखो आकरो सखी, बाली सब वनराय रे।
पोयण टाढें कमलाइ रे, दगला[1] दोटी सुं भाय रे।
पावक नो ताप सोहाय रे, निशदिन तनु शीत न जाय रे।७। इ०

फागुण फगफगिओ हवे सखी, आयो फाग[2] वसंत।
नारी गीत सोहामणां सखी, गावै मन उलसंत रे।
खेले नर नारि अनंत रे, चूआ चंदण महकंत रे।
चिचें लाल गुलाल उडंत रे, भला चंग मृदंग वाजंत रे।८। इ०

चैत्र सुहावो आवीओ सखी, वाया ऊना वाय।
सीतल सीय पाछां पड्या सखी, सूर किरण अकलाय रे।
सीतल छायाइं सहु जाय रे, चोबारा गोख सुहाय रे।
दिन ताप रयण सीत थाय रे, कुंपल मेल्ह्या वनराय रे।९। इ०

तड़कौ लागे आकरौ सखी, आयौ मास वैशाख।
नान्ही कैरी आंब नी[3] सखी, लूंब रही केइ लाख रे।
मोहरी वन दाड़म द्राख रे, ताढ़ा जल पांणी दाखि रे।
झीणी इक तारा राख[4] रे, बीजा दीधा सहु नांखि रे।१०।इ०

जेठे जेठा दीहड़ा सखी, जोर तपै जग भांण।
राति स्वप्न सिरखी थई सखी, भुंइ थइ अगनि समान रे।
पाणी विना छूटै प्राण रे, खलकै लू तावड़ि खांणि रे।
राणी नां कांकण परांण[5] रे, ते ढीला थाए निरवांण रे।११।इ०

---

१ डगला म्होटी सोहाय रे २ मास ३ आंबिली ४ माखि ५ पाण

आसाढो भरि ऊनयो[1] सखी, वादल छायो सूर ।
पुहवी तन टाढो[2] थयौ सखी, आतप नाठो दूरि रे ।
गड़[3] हड़ोआ मेघ गड्ड़[4] रे, भीनी धरती भरपूर रे ।
नीला धरती अंकुर रे, वसुधा प्रगटाणो नूर रे ।१२। इ०
वारहमास मांहि सांभरे सखी, अह निशि पास जिणंद ।
अश्वसेन कुल सेहरे[5] सखी, वामा राणी नो नंद रे ।
सेवे जस पास फणिंद रे, खिजमति करे चोसठ इंद रे ।
परतिख तू सुरतरु कंद रे, आले[6] जिनहर्ष आणंद रे ॥१३॥ इ०

॥ इति ॥

श्री पार्श्वनाथजी की घग्घर नीसाणी

सुखसंपतिदायक सुर नर नायक, परतिख पासजिनंदा है।
जाकी छवि कांति अनोपम ओपित, दीपत जाण दिणंदा है ।
मुख ज्योति झिगामिग झिग मिगमिग, पूरण पूनम चन्दा है ।
सब रूप सरूप वखाणहि भूपत, तूं ही त्रिभुवन नंदा है ॥१॥
करुणासागर लोक सवे मिल, जाका जस्स थुणंदा है ।
तेरी खिजमत्ति करे इकचित्त सुं, तो सेवक धरणिंदा है ।
तैं जलता आग निकाल्या नाग, किया वड़भाग सुरिंदा है ।
तो चरणां आय रह्या लपटाय, कला अति केलि करंदा है॥२॥
इक दिन्न महारन्न वन पंचागनि, तापस ताप तपंदा है ।

---

१ उनम्यो २ ताढौ ३ घरहरिया ४ गरूर ५ तिलौ ६ सदा ।

निति निति वधतउ नेह, राखइ अससेण रावउत ॥३३॥
नयणां रउ ही नेह, सापुरुषां रउ सुख दीये।
राखइ नहीं मन रेह, उत्तम अससेण रावउत ॥३४॥
प्रीति सूँ प्रीति प्रमाण, मिटे नहीं मोटां तणी।
पड़ी राय पाखाण, अविचल अससेण रावउत ॥३५॥
जंपे इम 'जसराज' वास वसावउ आपणइ।
मांगू छूं महाराज, इतरउ अससेण रावउत ॥३६॥

—:०:—

पार्श्वनाथ बारहमास

राग—मल्हार

श्रावण पावस ऊलस्यो सखी, झिरमिर वरसे मेह रे।
चमके वीज दसो दसें सखी, दाझे विरही देह रे।
साले नित निविड़ सनेह रे, सांभरीआ व्राहाला तेह रे।
अलगा परदेशी जेह रे, ते पणि आव्या निज गेह रे ॥१॥
इणि रिति मुझ पासजी सांभरे ॥टेर॥
भाद्रवो भरि[1] गाजीओ सखी, मांडी घटा घनघोर।
वापीहड़ो पीउ पीउ करे सखी, मधुरा बोले मोर रे।
दादुर निशि पाड़े सोर रे, खलक्या जल पावस जोर रे।
गड़गड़े नदीआ चिहुं ओर रे, झड़ि लागो भागो रोर रे ।२।इ०

---

१ भल

आसो वरसे सरवड़े सखी, स्वाति नक्षत्र मझार रे।
मोती सायर नीपजे सखी, मोंघा मूल अपार रे।
सखी चंद-किरण सुखकार रे, जनि[1] विरह जगावणहार रे।
पोयण सर मांहिं हजार रे, फूली निरमल जल सार रे ॥३॥ इ०
काती (अे) छाती शीतली सखी, सुभक्ष अने सुगाल रे।
परव दीवाली आवीउं सखी, घरि घरि दीपक माल रे।
परघल पकवान रसाल※ रे, हिलि-मलि खेले वर बाल रे।
सोहग सुंदरि सुकमाल रे, सहु माणे[2] सुख रसाल रे ।४। इ०
वासर लघुताइ पामीओ सखी, मागसर चमक्यो सीत।
सुंदर पाणी सोयलां सखी, पावक साथइ[3] प्रीत रे।
आवे दक्षण आदीत रे, ताढ़िक व्यापी बहु रीत रे।
मन काहल[4] छोड़ी भीत रे, मलीया निज चोखे चित्तरे ।५। इ०
पोस सरोस थयो घणो सखी, सीत पड़े ठंठार।
पालो वाले पापीओ सखी, जाणे अङ्ग अङ्गार रे।
न खमाये इक्क लगार रे, (नर) मंदिर[5] निवात मझार रे।
मिलि मिलि पोढे नर नारि रे, इम सफल करे जमवार रे ।६। इ०
माह महीनो आवीओ सखी, वाया ठाढ़ा× वाय।

---

१ जिन २ बिहुँ मानै ३ सौ थइ ४ काउल छूटी नीत रे ५ नर मंदिर वाय मझार रे

※ नेवज भरिया बहु थाल रे

× शीतल

फल फूल आहारी दुद्धाधारी, अल्प आहार लियंदा है।
सब भेद सन्यासी रहे उदासी, अविनासी ध्यावंदा है।
दिसी च्यारां दीठी वलै अंगीठी, सूरज ताप तपंदा है ॥३॥
महिमा बद्धारी सब नर नारी, जाकू आय नमंदा है।
ऐसी सुण वत्तां धरिय उकत्तां, पुत्तां पास जिनंदा है।
वामादे अक्खै कुणतो पक्खै, मेरा हंस पूरंदा है।
तिहां चालो पुत्तां जिहां अवधुत्तां, जोगारंभ जगंदा है ॥४॥
जननी मन आसा पूरण पासा, ऐरापति सझंदा है।
गल घूंघरमाला जाण हेमाला, दंताला ओपंदा है।
वर वीर घंटाला मद मतवाला, झोलाले झलकंदा है।
पंचरंगी पक्खर सझी सक्खर, ढालां सुं ढलकंदा है ॥ ५ ॥
धतकारे धत्ता मत्ता अंकुस, मावत शीस दियंदा है।
गंगा तट आये खड़े रहाए, प्रभु ज्ञानी अक्खंदा है।
रे रे अभिमानी तप अज्ञानी, पावक जीव जलंदा है।
तिहां फाड़ दुफाड दिखाले लकड़, वेउ[1] फणधर नागंदा है ॥६॥
नवकार सुणाया सुर पद पाया, तापस जस घटंदा है।
तिण किया नियाणा तप खजाणा, कोडी सट्टे वेचिंदा है।
हुय के क्रोधातुर आतुर सो, कमठासुर धर उपजंदा है।
अश्वसेन सुतन महाराज विषयदुख, जाणत आप तजंदा है ॥७॥
पंचमुट्ठि लोच किया आलोच, मनसुं सोच अफंदा[2] है।

---

१ नागण अर नागिंदा है, २ निश्चल ध्यान धरंदा है।

प्रभु अप्रतिबंध विहार कियो तब, रन वनवास वसंदा है।
उपशम अणगारे काउसग्ग मझारे, कमठासुर दाव लहंदा है।
वड़ा असुराणा वली हेराणा, पिछाणति लोक धुखंदा है ॥८॥
करिआ[1] तस क्रोध विचार विरोध, महा अभिमान धरंदा है।
चाउल मतवाली नीली काली, वायु महा वाजिंदा है।
रवि किरणां कोट रही रजओट, दिवाकर तेज छिपंदा है।
करि घोर घटा विकटा उमटी, अरू बीजू गाजंदा है ॥ ९ ॥
गरडाटा वाटां सुणिया घाटां, ऐरापति लाजंदा है।
हुआ अकाला धुर वरसाला, बीजलियां खिवंदा है।
मोटी धारा सुं आरांवासुं, यों[2] अंबु वरसंदा है।
चल्ले जल खाला नदियां नालां, हेमाला हालंदा है ॥ १० ॥
दरियाव उलट्टां केतो फुट्टा, पाणी नहि मावंदा है।
दिगपाल दहल्लां धरिय उत्थल्लां, खोणीपति खिसंदा है।
वडा पाहाडां झंगी झाडां, सझांडां ढाहंदा है।
समुदां हंदी रेल[3] वहंदी, जाणक जग रेलंदा है ॥ ११ ॥
बहु वासर वूठ्ठा जाण कि रूठा, जूठा मन असुरिंदा है।
तेवीशम राया वन में पाया, काउसग्ग कहा करंदा है।
उवसग्गा हंदी कौल करंदी, पाछा नहिं मुडंदा है।
धरि मन में ध्याना क्रोध न माना, निश्चल ध्यान धरंदा है ॥१२॥
प्रभु नासां तांई नदी आई, तोहि नहीं खोभदां है।

---

१ भरि, २ ऊंचासु, ३ वेल चलंदी।

देवाचल जेसा धीरपएसा, पावस पीड़ सहंदा है।
तिण अवसर वरदां धरणीधरदां, आसण वेग चलंदा है।
तिण अवधि प्रयुंजी दीठे प्रभुजी, तन मन अति उलसंदा है॥१३॥
तिहां पदमावता देवी आदि सकत्ती, हिल[1] मिल वेग वहंदा है।
हुय के हेराला वैठ विमाना, पावां आय लगंदा है।
फण नाग हजारां कर विसतारां, छत्तर ज्युं छावंदा[2] है।
ले आपण खंधे प्रेम निबंधे, पूरव प्रीत सुखंदा है॥१४॥
इन्द्राणी नारी सब सिणगारी, जोबन अंग झिलंदा है।
राकापति वयणी मिरगानयणी, सुंदर रूप सोहंदा है।
अणियाला कज्जल झलके विज्जल, खूब बणाव बणंदा है।
नक वेसर नत्थां लाल सुकत्थां, विच मोती झलकंदा है॥१५॥
ओढण पाटंबर झीणी अंबर, आभूषण झलकंदा है।
उर कञ्चु कसियां तन उल्लसियां, कामघटा चहरंदा है।
पहिरण तन खूवां हरियां लूवां[3], सोलेही सोहंदा है।
कटि मेखल कडियां सोनें जड़ियां, विच हीरा झलकंदा है॥१६॥
घमके घूग्घरीयां पाए धरियाँ, पग नेवर रणकंदा है।
लेझांझर ताला ताल कंसाला, पखावज वाजंदा है।
कुहकै करनालां वीच रसालां, जंगी ढोल घुरंदा है।
वाजे सरणाई सखरी घाई, नगारा रोडंदा है॥ १७ ॥
पउमा वैरूट्टा आण उलट्टां, नाटिक मिल नाचंदा है।

---

१ वैस विमांन २ मोहंदा ३ दूबा।

तत्ता थेई थइ तत्ता भापंता डंडारसभेद रमंदा है ॥
दिन-त्रिक वितीता तोही न वीता पावस जल पसरंदा है ।
धरणीपति जाण्या ज्ञान पिछाण्या कमठासुर कोपंदा है ॥१८॥
नागंदा पत्ती आंख्यां रत्ती कित्ती रीस भरंदा है ।
रे मूढा धिट्ठा चित्त विणट्ठा क्यु नाहीं समझंदा है ॥
साहिब बलवंता जोर अनंता तूं तो नहिं जाणंदा है ।
ए खिमा सागर* गुणके आगर तीनुं लोक नमंदा है ।१९।
असमांन खमाए रीस भराए एह काइ त्ररजंदा है ।
कित्ती बहु गल्लां पड़े दहल्लां धड़हड़दे धूजंदा है ॥
धरणेन्द्र डरायो तब ते आयो पावां वेग लगंदा है ।
कर जोड़ खमाया सीस नमाया जगनायक जिणचंदा है ।२०।
तूं साहिब सच्चा तो गुण रच्चा, मेरा दिल खुलंदा है ।
ते रीस न धरियां क्षिणहीं विरियां, तूं ही अचल गिरंदा है।
कमठासुर कित्ती बहु विनत्ती, निज अपराध खमंदा है ।
सुरपति सिधाये निज घर आये, प्रभु के गुण समरंदा है ॥२१॥
सुध संजम पाले दोष निहाले, तब केवल उपजंदा है ।
सम्मेतशिखर पर चढ़के ऊपर, सिद्धपुरी पोहचंदा है ।
तेरी कीरत्ती जग ऊपती, पार न को पावंदा है ।
तूं सच्चारक्खे भेदपरक्खे, गुमानी मोडंदा है ॥ २२ ॥
तूं अंतरजामी तूं बहुनामी, सुरनर सेव करंदा है ।
तूं दिवाणा तूं खूमाणा, तूं मोजी मकरंदा है ।

तू अल्ला पीर फकीर मुसाफिर, तूं जोगी तूं जिंदा है।
तूं काजीमुल्लां मरद अटल्ला, तूं ही शेप फरींदा है ॥२३॥
तैं उपाया धंदे लाया माया में मुलकंदा है।
त बूढ़ा बाला मद मतवाला, तूं पक्का बाजंदा है।
तूं कच्चा कवला सबतें सबला, सच्चा मझरहंदा है।
बाबा गोसांई भेद न पाई, भीड़ पब्यां आवंदा है ॥ २४ ॥
तूं नारायण जोगपरायण, माधव तू ही मुकंदा है।
तूं कवलाधारी तूं अवतारी, तूं देवादेवंदा है।
तूं एकाथप्पे एकउथप्पे, अति निज सुध थापंदा है।
तो देवलमझां लोक तिसंझां, सीरणिया वाटंदा है ॥ २५ ॥
गुणगीत पयासे कीरत भासे, झीणं स्वर गावंदा है।
कालागुरू अगरसुं मलयागर, धूपेड़ा धुखंदा है।
कुंकुंम कसतुरी केसरपूरी, चंदन सुं चरचंदा है।
मरूआ मचकुंदा फूला हंदा, टोडर कंठ ठवंदा है ॥ २६ ॥
चँपागुलाबां भरीय छाबां, परमल तिहां वासंदा है।
कसबोई चंगी रचीये अंगी, फूलां वीच फावंदा है।
आभूपण धरियां तन ऊपरियां, कुंडल कान झिगंदा है।
सूरत सोहंदी मूरत हंदी, दीठां नेण ठरंदा है ॥ २७ ॥
तेरी बलि जाउं मोजां पाउं, विनती तूं हि सुणंदा है।
क्या कत्थूं गल्लां हुकम अदल्लां, समकित मन उलसंदा है।
सिद्धांदावासा तिहांरहासा, तुझ सेवक विलसंदा है।

घग्घर निसांणी पास वखाणी, गुण जिनहर्ष कहंदा है ॥२८॥
इति श्री पार्श्वजिन घग्घर निसाणी सम्पूर्ण।

श्री महावीर जिन स्तवनम्

देसी—तमाखू विनजारे की

त्रिभुवन रामा चौवीसम जिनचंद, म्हाने दिनमणिसरखा रे।
साहिब म्हारां सुख धणी रे, म्हारां राज ॥ त्रि० ॥ १ ॥
ध्यायक के तुम ध्येय, ज्ञान नयन सुं देख्या रे।
साहिब मारा सुखकरू रे, म्हारां राज ॥ त्रि० ॥ २ ॥
दीठां आवे दाय, भव सागर तिरिया रे।
साहिब मांरा सुखकरू रे, म्हारां राज ॥ त्रि० ॥ ३ ॥
समतानंत अनंत, संशय गुण सुं टलिया रे।
साहिब मांरा अघहरू रे, म्हारां राज ॥ त्रि० ॥ ४ ॥
अभिनव ज्ञायक रूप, ज्ञान दिवाकर शोभे रे।
साहिब मांरा शम धणी रे, म्हारां राज ॥ त्रि० ॥ ५ ॥
लोकालोक विशाल, प्रसर निरन्तर राजे रे।
साहिब मारा लंछन हरि रे, म्हारां राज ॥ त्रि० ॥ ६ ॥
सरागी सविकार देव सकल ने पेख्या रे।
साहिब मारा रूप सुं रे, म्हारां राज ॥ त्रि० ॥ ७ ॥
ते नवि आवै दाय, जन्म पवित्र करि लेख्या रे।
साहिब मारां जिन भूप सुं रे म्हारां राज ॥ त्रि० ॥ ८ ॥
सेवा नो फल भाव, शुद्ध कर मुगति लेवे रे।
साहिब मारा (जिन) हरख सदा रे म्हारां राज ॥ त्रि० ॥ ९ ॥

———

श्री महावीर जिन स्तवन

ढाल ॥ कृपानाथ मुझ वीनती अवधारि ॥ एहनी

सुणि जिनवर चउवीसमा जी, सेवक नी अरदास ।
तुझ आगलि बालक परइ रे, हुं तउ करूं वेखास रे ॥१॥
जिनजी अपराधी नइ रे तारि,
तुं तउ करुणा रसभर्यु जी, तुंउ सहुनइ हितकार रे ॥ जि० ॥
हुं अवगुण नउ ओरड़उ जी, गुण तउ नही लव लेस ।
परगुण देखी नवि सकुंजी, किम संसार तरेसि रे ॥ २ मु० ॥
जीव तणा वध मइं कर्यां जी, बोल्या मिरखावाद ।
कपट करी परधन हर्यां जी, सेव्या विषय सवाद रे ॥३मु०जि०॥
हुं लंपट हुं लालची जी, करम कियां केई कोड़ि ।
तीन भुवन मइं को नही जी,जे आवइ मुझ जोड़ि रे ॥मु०४जि०॥
छिद्र पराया अंह निसइ जी, जोतउ रहुं जगनाथ ।
कुगति तणी-करणी करी जी, जोड्यउ तेहसुं साथरे॥॥मु०५जि००
कुमति कुटिल कदाग्रही जी, वांकी गति मति मुझ ।
वांकी करणी माहरी जी, सी संभलाउ तुझ रे ॥ मु० ६ जि० ॥
पुन्य विना मुझ प्राणीयउ जी, जाणइ मेलू आथि ।
ऊंचा तरुअर मउरीया जी, तांह पसारइ हाथ रे ॥मु०७जि०॥
विणि खाधां विणि भोगव्यां जी, फोकट करम बंधाय ।
आरति ध्यान टलइ नही जी, कीजइ कवण उपाय रे मु०८जि०॥
काजल थी पिणि सामला जी, माहरा मन परिणाम ।

सुहणाही मइं ताहरउ जी, संभारु नही नाम रे ॥ मु० ९ जि० ॥
मुगध लोक ठगवा भणी जी, करूं अनेक प्रपंच ।
कूड़ कपट बहु केलवी जी, पाप तणउ करूं संच रे ॥मु० १० जि०॥
मन चंचल वसि नवि रहइ जी, राचइ रमणी रूप ।
काम विटंवण सी कहुँ जी, पड़िसुं दुरगति कूपरे मु० ११ जि०॥
किसा कहुं गुण माहरा जी, किसा कहुं अपवाद ।
जिम जिम संभारु हीयइं जी, तिम वाधइ विषवाद रे ॥मु० १२ जि॥
गुरुआ ते सवि लेखवइ जी, निगुण साहिब नी छोति ।
नीच तणइ पिणि मंदिरइं रे, चंद न टालइ जोति रे ॥मु० १३ जि०॥
निगुणउ पिणि ताहरउ जी, नाम धराउं दास ।
कृपा करी मुझ ऊपरइं जी, पूरउ मन नी आस रे ॥मु० १४ जि०॥
पापी जाणी मुझभणी जी, मत मूंकउ रे निरास ।
विष हलाहल आदर्यो जी, ईश्वर न तजइ तासरे ॥ मु० १५ जि० ॥
उत्तम गुणकारी हुवइ जी, स्वारथ विना रे सुजाण ।
करसण सींचइ सर भरइ जी, मेह न मांगइ दाण रे ॥मु० १६ जि०॥
तुं उपगारी गुण निलउ जी, तू सेवक प्रतिपाल ।
तुं समरथ सुख पूरिवा जी, करि माहारी संभालि रे ॥मु० १७ जि०॥
तुझनइ स्युं कहियइ घणुं जी, तूं सहु वाते जाण ।
मुझनइ थाज्यो साहिबाजी, भव भव ताहरी आण रे ॥मु० १८ जि०॥
सिद्धारथ नृप कुल तिलउ जी, त्रिसला राणी नंद ।
कहइ जिनहरख निवाजिज्यो जी, देज्यो परमानंद रे ॥मु० १९ जि।

श्री चतुर्विंशति जिन स्तवनं

ढाल ॥ तीरथ ते नमुं रे ॥ एहनी

रिखभ अजित अभिवंदीयइ, चिर नंदीयइ रे।
संभव सुख दातार, जिन चउवीसे नमुं रे ॥ १ ॥
अभिनंदन जिन पूजीयइ, नवि धूजीयइ रे।
सुमति पदमप्रभु पाइ ॥ जि ॥ २ ॥
श्रीसुपास चंदप्रभ सदा, प्रणमुं मुदा रे।
नवमउ सुविधि जिणंद ॥ ३ जि ॥
सीतल सीतल लोचन, भव मोचन रे।
श्रेयंस श्री वासुपूजि ॥ ४ जि ॥
विमल अनंत सुख दीजीयइ, जस लीजिये रे।
सेवक राजि निवाजि ॥ ५ जि ॥
धर्म शांति जिन सोलमउ, कुंथु नित नमउ रे।
अर अरिहंत महंत ॥ जि ६ ॥
मल्लि मुनिसुव्रत वीसमउ, एकवीसमउ रे।
नमि नमि त्रिकरण सुद्धि ॥ जि ७ ॥
श्री नेमिश्वर पासजी, दुरमती तजी रे।
वीर नमुं चित लाइ ॥ जि ८ ॥
चउवीसे जिन गाईयइ, सुख पाईयइ रे।
रिद्धि सिद्धि नव निद्धि ॥ जि ९ ॥

चउवीसे सिवगामीया, मइ पामीया रे।
तारण तरण तरंड ॥ जि १० ॥
प्रात समय संभारीयइ, दुख वारीयइ रे।
कहइ जिनहरख जिणंद ॥ जि ११ ॥

चतुर्विंशति जिन बोधक नमस्कारः

श्री नाभेय नमुं सदा, सिवरमणी भरतार।
प्रणमंतां पातक टलइ, नाम थकी निस्तार ॥ १ ॥
अजित अजित कंदर्प जित, कंचण वरण शरीर।
जितशत्रु विजया कुलतिलउ, गुण सायर गंभीर ॥ २ ॥
मुगति महल पाम्यउ सहल, वंछित फल दातार।
ध्यान धरी निति ध्याईये, संभव जिन सुखकार ॥ ३ ॥
अभिनंदन चंदन सरस, सीतल जास वचन्न।
सांभलतां सुख ऊपजे, टाढक व्यापइ तन्न ॥ ४ ॥
सुमति सुमति दायक सदा, टाले कुमति कलेस।
दुख्यहरण कंचणवरण, कीरति देस विदेस ॥ ५ ॥
पाप गमण विद्रुम वरण, भवजल निधि बोहित्थ।
पद्मप्रभ पद प्रणमतां, थाये भव सुकयत्थ ॥ ६ ॥
तारउ सेवक करि कृपा, सत्तम सामि सुपास।
भव भावठि भाजउ हिवइ, आपउ सिवपुर वास ॥ ७ ॥
जेहवउ आसू पूनिमइ, सिसिहर निर्मल होइ।

चंद्रप्रभ तउ तेहवउ, दोष न दीसइ कोइ ॥ ८ ॥
विधि सुं वंदु सुविधिजिन, दीपइ कंचण काय ।
पिता सुग्रीव नरेसरु, रामा माय कहाय ॥ ९ ॥
थायइ हीयडउ देखतां, सीतल सीतलनाथ ।
तपति मिटइ भव भव तणी, मुगतिपुरी नउ साथ ॥ १० ॥
उपगारी इग्यारमउ, सुखकर श्री श्रेयंस ।
कनक वरण तारण तरण, मुगति सरोवर हंस ॥ ११ ॥
वासुपूज्य वसुपूजि सुत, जणिणि जया सुनंद ।
चरणकमल सेवा थकी, लहीये परमाणंद ॥ १२ ॥
विमल विमल मति ध्याइयइ, पातक दूरि पुलाइ ।
जिम आदीत उदय थया, रयणि तिमिर मिट जाइ ॥ १३ ॥
निज तन मन निर्मल करी, नमीये स्वामि अनंत ।
मन वंछित फल पामीये, लहीये सुख्य अनंत ॥ १४ ॥
धर्म धुरंधर धर्म जिन, भानु नरिंद मल्हार ।
चित चरणे जउ राखीयो, तउ तरीये संसार ॥ १५ ॥
शांतिकरण श्रीशांति जिन, विश्वसेन अचिरानंद ।
कंचण काया सोलमउ, तोडइ भवना फंद ॥ १६ ॥
कुंथु जिणेसर जगतपति, जगनायक जिनचंद ।
जगतारण जग उद्धरण, जगगुरु जगदानंद ॥ १७ ॥
श्री अरिहंत अढारमउ, अरिगंजण अरनाथ ।
चरण कमल रज सिर धरी, थइये परम सनाथ ॥ १८ ॥

मल्लि जिणेसर मुझ मिल्यउ, रहिसु हिवइ पगसाहि ।
साहिबनी सेवाथकी, भमुं नही भव मांहि ॥ १९ ॥
मुनिसुव्रत जिन वीसमउ, वीसामा नी ठाम ।
सुख(ल)हीयइ दहीयइ करम, करीयइ जउ गुम ग्राम ॥ २० ॥
परम प्रमोदे पूजीयो, नमि जिनवर चित लाय ।
सकल पदारथ पामीये, भव भवना दुख जाय ॥ २१ ॥
श्री नेमिसर निति नमुं, यादव कुल अवतंस ।
धन-धन नीरागी पुरुष, जग सहु करइ प्रसंस ॥ २२ ॥
अश्वसेन वामा सु तन, नील वरण जित मार ।
सुरपति कीधउ नागनइ, संभलावी नवकार ॥ २३ ॥
चरम जिणेसर चरण जुग, नमीये धरी उलास ।
कीरति कमला पामीये, अविचल लील विलास ॥ २४ ॥
भाव भगति सुं वंदिये, चउवीसे जिन चंद ।
लहीयइ हेलइ मुगति पद, कहे जिनहरष मुणिंद ॥ २५ ॥

—०—

चउवीस जिन स्तवनं

ढाल ॥ वीर जिणेसर नी ॥

प्रथम जिणेसर रिखभनाथ गणधर चउरासी ।
सहस चउरासी साधु नमुं छेदइ जम पासी ॥
बीजउ अजित जिणंद चंद गणधर पंचाणु ।
मुनिवर गुण निधि प्रभु तणा ए लाख वखाणुं ॥ १ ॥

त्रीजउ संभव गणधरु ए एकसउ बीडोत्तर।
लाख दोइ मुनि पाय नमुं सम दम संयमधर॥
सउ सोलोतर गणधरा ए अभिनंदन केरा।
तीन लाख रिषिवर नमुं ए टालइ भव फेरा॥ २॥
सुमति जिणेसर पांचमउ ए एकसउ गणधार।
तीन लाख वलि ऊपरइं ए मुनि वीस हजार॥
पदमप्रभना गणधरा ए एक सउ नइ सात।
त्रिण्ण लाखनइ त्रीस सहस मुनिवर विख्यात॥ ३॥
स्वामि सुपास नमुं सदा ए पंचाणुं गणधार।
त्रिम लाख अति रूअडा ए गुणवंता मुनिवर॥
चंद्रप्रभ जिन आठमउ ए त्र्याणुं गणनायक।
लाख अढाई गाई ए प्रभुना मुनि लायक॥ ४॥
सुविधिनाथ नवमउ नमुं ए गणधर अठ्यासी।
संयम धारीं दोइ लाख सुर शिवपुरवासी॥
दसमउ शीतल सुखकरु ए गणधर एक्यासी।
लाख एक सुविवेक महारिषिवर सुविलासी॥ ५॥
इग्यारम श्रेयांस तणा गणधर बावत्तरि।
लाख चउरासी साधु नमुं मन वच क्रम सुध करि॥
वासुपूज्य वसुपूज्य तणउ छासठि गणधारी।
सहस बहुत्तरि प्रभु निग्रंथ प्राणी उपगारी॥ ६॥
विमल जिणेसर तेरमउ ए गणधर सत्तावन।

अडसवि सहस यती नमुं ए करि थिरनिज तनमन ॥
नाथ अनंत नमंत सहु गणधर पंचास ।
छासठि सहस महाव्रती ए पूरवइ मन आस ॥ ७ ॥
धरम जिणेसर पनरमउए अड़तालिस गणधर ।
चउसठि सहस यतीवरा ए समता गुण सागर ॥
शांति शांतिकर सोलमउ ए गणपति छत्रीस ।
प्रणमुं छासठि सहस साधु मनधरीय जगीस ॥ ८ ॥
कुंथु जिणेसर स्वामि तणा गणधर पणतीस ।
साठि सहस मुनिवर नमुं ए चरणे निसि दीस ॥
अट्टारम अरनाथ तणा तेत्रीस गणाधिप ।
सहस पंचास महाव्रती ए प्रणमइ सुर नर नृप ॥ ९ ॥
गणधर अठावीस कह्या मल्लिनाथ तणा सहु ।
सहस चालीस साधु जास महीयल महिमा वहु ॥
मुनिसुव्रत जिन वीसमउ ए गणधर अट्ठार ।
त्रीस सहस मुनि गाईयइ ए शिव सुख दातार ॥ १० ॥
एकवीसम नमिनाथ साथ सत्तर गणधार ।
वीर सहस संयम धरा ए षट काय आधार ॥
इग्यारह गणनाथ कह्या नेमीसर केरा ।
सहस अठारह साधु नमुं निति ऊठि सवेरा ॥ ११ ॥
त्रेवीसम प्रभु पासनाह गणधर दस कहीया ।
सोलह सहस मुनि सांभलि ए मनमइं गह गहीया॥

चरम नाह महावीर तणा नव* सुभ गणधार ।
संयमधर सिर सेहरा ए मुनी चउदहजार ॥ १२ ॥
आवशक दाखव्या ए जिन मुनि गणधार ।
प्रह ऊठि निति गाईयइ ए करी भगति अपार ॥
लहीयइ सुर नर मुगति तणा अनुपम सुखसार ।
कहइ जिनहरख सदा हुवइ ए घरि घरि जय जय कार ॥ १३ ॥

चउबीस जिन बीस विहरमान च्यारि सास्वत जिन नाम स्तवनं

ढाल ॥ चउपईनी ॥

रिखभनाथ सीमंधर स्वामि, पाप पणासइ जेहनइ नामि ।
अजितनाथ युगमंधर देव, सुरपति नरपति सारइ सेव ॥ १ ॥
श्रीजउ संभव बाहु जिनंद, प्रणम्यां लहीयइ परमाणंद ।
श्री सुबाहु अभिणंदन नमुं, भव भव केरा फेरा गमुं ॥ २ ॥
पंचम जिनवर सुमति सुजात, हीयडामांहि वसइ दिन राति ।
छठउ पदमप्रभु जिनराय, श्री स्वयंप्रभ प्रणमुं पाय ॥ ३ ॥
श्रीसुपास पूरइ मन आश, रिखभानन तारइ निज दास ।
चंद्रप्रभ जिनवर आठमउ, अनंतवीर्य भवीयण निति नमउ ॥४॥
सूरप्रभ श्रीसुविधि जिणेस, जपतां भागइ सयल कलेश ।
दसमउ सीतलनाथ विशाल, चरण न मुंकुं हुं चिरकाल ॥ ५ ॥
इग्यारम वज्रधर श्रेयंस, जग सगलउ जसु करइ प्रसंस ।
चंद्रानन बारम वासुपूजि, चउसठि इंद्र करइ निति पूज ॥ ६ ॥

---

* ग्यारह

चंद्रबाहु श्री विमल जिनंद, सेवंता प्रभु सुरतरु कंद।
स्वामि भुजंगम नाथ अनंत, तूठा आपइ सुक्ख अनंत ॥ ७ ॥
धर्मनाथ ईश्वर जगदीस, भाव भगति सुं नामुं सीस।
सोलम शांति नेमि प्रभु नमउ,, हेलइं मुगति रमणि सुं रमउ ॥८॥
कुंथुनाथ नमीयइ वीरसेन, सकल कर्मनी हणीयइ सेन।
महाभद्र अर अढारमउ, नमउ जिम भव नवि भमउ ॥ ६ ॥
देवयशा नमीयइ मल्लिनाथ, मुगतिपुरीनउ एहीज साथ।
अजितविर्य मुनिसुव्रत पामि, हीयड़इ धरिस्युं त्रिभुवन स्वामि १०
रिखभानन जिनवर नमिनाथ, एहीज माहरइ अविचल आथि।
नेमि बावीसम श्रीवर्द्धमान, सेवक नइ आपइ निज थान ॥११॥
चंद्रानन त्रेवीसम पास, आराध्यां पूरइ मन आस।
वारिषेण वंदु महावीर, धीरम मेरु जलधि गभीर ॥ १२ ॥
ए चउवीस वीस जिनराय, च्यारिं मिल्यां अठतालीस थाय।
ध्यावइ जे मन धरिय उलास, कहइ जिनहरख सफल भव तास १३॥

—०—

चौवीस जिन स्तवन

ढाल ॥ चउपईनी ॥

पहिलउ प्रणमुं आदि जिणंद, बीजउ अजितनाथ जिणचंद।
त्रीजउ जिनवर संभवनाथ, अभिनंदन चउथउ नाथ ॥ १ ॥
सुमतिनाथ प्रणमुं पाँचमउ, पदमप्रभ छठउ निति नमउ।

श्री सुपास जिनवर सातमउ, चंद्रप्रभ नमीयइ आठमउ ॥२॥
सुविधिनाथ नवमउ जिनराय, दसमुउ शीतलनाथ कहाय ।
श्री श्रेयांस जिन इग्यारमउ, श्री श्री वासुपूजि बारमउ ॥३॥
विमलनाथ नमीयइ तेरमउ, अनंतनाथ कहीयइ चउदमउ ।
धर्मनाथ पूजुं पनरमउ, शांतिनाथ समरुं सोलमउ ॥ ४ ॥
कुंथुनाथ कहियइ सतरमु, श्री अर जिनवर अढ़ारमउ ।
मल्लि जिणेसर उगणीसमउ, मुनिसुव्रत महीयइ वीसमउ ॥५॥
श्रीनमि नमियइ इकवीसमउ, श्री नेमीसर बावीसमउ ।
पार्श्वनाथ कहि त्रेविसमउ, महावीर वलि चउवीसमउ ॥ ६ ॥
ए चउवीसे जिनवर नाम, प्रह ऊठी निति करूं प्रणाम ।
हेलइ जायइ भवना पाप, सहु जिनहरख टलइ संताप ॥ ७ ॥

श्री चउवीस जिन स्तवनं

ढाल ॥ जटणीना गीतनी ॥

चउवीसे जिनवरना पायनमुं, पामुं भवसायर नउ पार ।
मोटांनइ नामइ वंछित मिलइ, लहीयइ मुगति तणासुख सार ॥१॥
नयरी अयोद्धा रिखभ जिणेसरु, नाभिपिता मरुदेवा माय ।
लंछण वृषभ सुरूप सुहामणउ, अहनिसि सेवे प्रभुना पाय ॥२च०॥
अजित अयोद्धा नयरी नउ धणी, जितशत्रु विजया राणी नंद ।
गज लंछण कंचण तनु दीपतउ, नयणे दीठां परमाणंद ॥३च॥
त्रीजउ श्री संभवजिन गाईयइ, सावत्थी नयरी अवतार ।
सेनाराणी माय लंछण तुरी, वंश जितारि तणउ शृंगार ॥४च०॥

श्री अभिनंदन चंदन सरिखउ, नगरी विनीता संवर तात ।
माय सिधारथा उअरइं ऊपना, वानर लंछण जगविख्यात ॥५च०॥
सुमति सुमतिदायक जिन पाँचमउ, नयरी विनीताकेरउ राय।
मेघपिता मायडी जसु मांगला, लंछण क्रौंच रह्यउ प्रभुपाय ॥६च०।
माय सुसीमा धरनृपकुलतिलउ, पदमप्रभ कोशंबी जात ।
कमल विमल लंछण रलियामणु, हीयडइ धरीयइ प्रभुदिनराति ।७च।
स्वामि सुपास जिणेसर सातमउ, पृथिवीनंदन तात प्रतिष्ठ ।
स्वतिक लंछण कंचण देहडी, नगरी वणारिसीराय विशिष्ठ ।८च।
चन्द्रपुरी चंद्रप्रभ आठमउ, महसेन लखणा नउ अंगजात ।
लंछण चंद्रकला संपूरीयउ, चरण कमल पूजीजइ प्रात ॥९च०॥
रामाय सुग्रीव सुतनु नमुं, नवमउ सुविधि जिणेसर देव ।
काकंदी नयरी प्रभु जनमीया, लंछणमगर करइ पाय सेव ॥१०च॥
दसमउ सीतलनाथ नमुं सदा, दृढ़रथ नंदा उयरइ हंस ।
जनम नगर भद्दलपुर जाणिये, श्रीवच्छ लंछण कुलअवतंस ॥११॥
विष्णु पिता विष्णुश्री मायडी, इग्यारमउ जिन श्रीश्रेयांस।
सीहपुरी नयरी रलीयामणी, पडगी लंछण करइ प्रसंस ॥१२च॥
श्री वसुपूज्य पिता वासुपूज्यनउ, जणणी जया कहीजइं जास।
चंपानयरी नउ प्रभु राजीयउ, लंछण महिष मनोहर तास ॥१३च॥
विमल जिणेसर नमइ तेरमउ, कृतवर्म श्यामाराणी माय ।
लंछण जास वराह विराजतु, कांपिलपुर केरु राय ॥१४॥

ढाल ॥नदूर हुवइ भति ऊमहु रे ॥ एहनी

अनंतनाथ जिन चउदमारे, सिंहरथ सुयशा माय ।
पुरी विनीता नउ धणी रे, सींचाणउ प्रभु पाय रे ॥ १५ ॥
भविका सेवउ जिन चवीस ।
चउवीसे शिवगामीया रे । जगनायक जगदीसरे ।भ०।
भानु माहीपति सुव्रता रे, जणणी धर्म जिणंद ।
रतपुरीनउ राजीयउ रे, वज्र लंछण गुण वृंद रे ॥ १६भ० ॥
अचिरा राणी जनमीयउ रे, विश्वसेन नृप मल्हार ।
हथिणाउर मंतीसरुरे, मृग लंछण सुखकार रे ॥ १७भ ॥
श्री राणी सूर रायनउ रे, सतरमु श्री कुंथुनाथ ।
गजपुर प्रभुता भोगवइ रे, लंछण छाग सनाथ रे ॥ १८भ ॥
देवीसुदर्शन कुलतिलउ रे, अर जिन प्रणमुं पाय ।
नगर नागपुर जनमीयउ रे, नंद्यावर्त्त कहाय रे ॥ १९भ ॥
मिथिला मल्लि जिणेसरु रे, कुंभ प्रभावती पुत्र ।
लंछण कलश सुहामणउ रे, त्रिभुवन राखइ सूत्र रे ॥ २० ॥
श्री मुनिसुव्रत वीसमउ रे, पद्मावती सुमित्र ।
राजगृहनउ राजवी रे, लंछण कूर्म पवित्र रे ॥ २१ ॥
श्री नमि मिथिला राजीयउ रे, वप्रा विजय सुतन्न ।
चिह्न नीलोत्पल जेहनइ रे, लगी रहउ सुप्रसन्न रे ॥२२भ ॥
समुद्रविजय शिवा मायडी रे, सोरीपुर उतपन्न ।
लंछण संख विराजीयउ रे, नेमीसर भन धन्न रे ॥ २३भ ॥

जनम पुरी वाणारिसी रे, अश्वसेन वामा जात ।
लंछण नाग सेवा करइ रे, पास जिणंद विख्यात रे ॥२४भ॥
क्षत्रीकुंडइ जनमीया रे, चउवीसमा महावीर ।
सिद्धारथ त्रिशला तणउ रे, लंछण सीह सधीर रे ॥२५भ॥
सुविधि चंद्रप्रभु ऊजला रे, पद्म वासुपूज्य रक्त ।
कृष्ण नेमि मुनि नीलडा रे, मल्लि पास सुरभक्त रे ॥२६॥
सोलस कंचण सारिखा रे, ए चउवीस जिणंद ।
पूजंतां पातक टलइ रे, सेव्या सुरतरु कंद रे ॥ २७भ ॥
सिद्धिपुरी ना राजीया रे, मोहन महिमावंत ।
सेवा देज्यो तुम तणी रे, इम जिनहरख कहंत रे ॥ २८भ ॥

चौवीस जिन स्तुति

राग—ललित

जप रे तुं चौवीसे जिनराया ।
रिषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमत पद्मप्रभु पाया ॥ १ ॥
श्री सुपास चंद्प्रभु सांमो, सुविध शीतल सुखदाया ।
श्रेयांस वासुपूज जिननायक, विमल कनक दल काया ॥२॥
(स्वाम) अनंत धर्म सांत कुन्थ कहि, अरि मल्लिनाथ कहाया।
मुनसुव्रत नमि नेम पार्श्व प्रभु, श्री महावीर सुहाया ॥३॥
सुरनर मुणि जन रहत अहोनिस, चरण कमल लपटाया ।
भाव भगत जिनहरख हरख सूं, चोवीसे जिन गाया ॥४॥

इति चौवीस जिन स्तुति

श्री चौवीस जिन स्तवन

ढाल—गौड़ी

पहिलो आदि जिणंद, सुरिंद नमें जसु पाय।
नाभि पिता मरुदेवी, मात विख्यात कहाय।
अजित अजित जिणराज, विराजत सुगुण सुजाण।
जितसत्रु विजया देवी, सुसेवित राणो रांण ॥ १ ॥
संभवनाथ सनाथ, सुरासुर सारे सेव।
राइ जितारि सुसेनां, जननी जासु कहेव।
अभिनन्दन ससि चंदन, सीतल निरमल काय।
संवर तात कहात, सिधारथ राणी माय ॥ २ ॥
सुमति सुमति दातार, जगत आधार अजीत।
मेघ महीधर दीपति, मंगला मात वदीत।
पद्मप्रभु छट्ठो जन, तारक वारक दुक्ख।
धर धरणीधव सधव, सुसीमां सतीयां मुख्य ॥ ३ ॥
सत्तम श्रीय सुपास, तात प्रतिष्ठित सारी।
चन्द्रप्रभु महसेण, लखमणा जस सुखकारी ॥ ४ ॥
सुविध जिनंद सुग्रीव, रामा मात वखाणी।
सीतल दृढरथ तात, नंदा सीयल सयाणी ॥ ५ ॥
श्रेयांस विसन नरिन्द, माता विष्णु कहीरी।
वासपूज्य वसपूज्य, जननी जया सहीरी ॥ ६ ॥

ढाल कुंवरवारी

विमल विमल मति गाइये, कृतवर्म स्यामामात । जिणेसर वंदीये
अनंत अनंत महिमा धरू, सिंहसेन सुजसा विख्यात ॥७॥
धरमनाथ जिन पनरमो, भानु सुवरता जाणि ।
शांतिनाथ जिन सोलमो, विश्वसेन अचिरा वखाणि ॥८॥
कुंथुनाथ जिन सतरमो, सूर पिता श्री माय ।
अट्ठारम अरि गाइयै, देवी सुदर्शन लाय ॥९॥

ढाल चूनड़ी री

मल्लीनाथ उगणीसमो, नृप कुंभ प्रभावती दाख रे ।
मुनिसुव्रत सांमी सेवीयै, श्री सुमित्र सुपद्मा भाख रे ॥१०॥
जिन चौवीसै भवियण नमो, निज मन-वच-क्रम थिर राख रे ।
नमि इकवीसमो निरखीयो, राय विजय वप्रा नितसेव रे ।
बावीसमो नेम जाद्वधणी, श्रीसमुद्रविजय शिवादेवि रे ॥११॥
पुरसादाणी पासजी, अश्वसेण वामा सुनदीत रे ।
महावीर सिद्धारथ कुलतिलौ, त्रिसला जग उत्तम रीत रे ॥१२॥

कलस

इय सकल जिनवर सुजस सुखकर, नमत सुर नर मुनिवरौ,
दुख हरण तिहुअण सयण रंजण, आस पूरण सुरतरो ।
श्रीसोम गणिवर सीस आखे, सुजस विसवा वीसए
जिनहरख भव जल तरण तारण, तरी जिन चोवीस ए ।१३॥

श्री सीमंधर जिन स्तवन

श्रीसीमंधर साहिबा, वीनतड़ी अवधार लाल रे।
परम पुरुष परमेसरू, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री १ ॥
केवलग्यान दिवाकरू, भांगे सादि अनंत लाल रे।
भासक लोकालोक को, ग्यायक गेय अनंत लाल रे ॥ श्री २ ॥
इन्द्र चन्द्र चक्कीसरु, सुर नर रहे कर जोड़ लाल रे।
पद पंकज सेवे सदा, अणहुंते इक कोड़ लाल रे ॥ श्री ३ ॥
चरण कमल पिंजर वसे, मुझ मन हंस नितमेव लाल रे।
चरण सरण मोहि आसरो, भव भव देवाधिदेव लाल रे ॥श्री४॥
अधम उधारण छो तुमे, दूर हरो भव दुःख लाल रे।
कहे जिनहरष मया करी, देज्यो अविचल सुक्ख लाल रे ॥श्री५॥

अथ सीमंधर जिन स्तवन

पूर्व विदेह पुखलावती, जयो जगपती रे।
श्री सीमंधरस्वामी, अहसम नित नमुं रे ॥ १ ॥
जगत्रय भाव प्रकाशता, भवि प्रतिबोधता रे।
उपगारी अरिहंत, अहसम नित नमुं रे ॥ २ ॥
धन्य नयरी धन्य ते नरा, धन्य ते धरा रे।
विचरै जिहां जिनराज, अहसम नित नमुं रे ॥ ३ ॥
धन्य दिवस धन्य ते घड़ी, देखसुं आंखड़ी रे।
भक्त वच्छल भगवंत, अहसम नित नमुं रे ॥ ४ ॥

महर निजर अवधारजो, पतित उधारजो रे।
जिनहरख घणें ससनेह, प्रहसम नित नमुं रे ॥ ५ ॥

श्री सीमंधर जिन स्तवन

चार्दालया की

चान्दलिया सन्देसो जिनवर ने कहे रे, इतरो काम करे अविसार रे।
बारे परखदा जिनवर ओलगेरे, श्री सीमन्धर जग आधार रे।१।
सोवनवर्ण शरीर सोहामणोरे, मोहन मूर्ति महिमावन्त रे।
जग में सुजस घणो सहुको जपैरे, भेटिस ते दिन धन्य भगवन्त रे ॥२॥
साहिब दुःख अनन्ता में मह्यारे, हूं भमियो गमियो छुं भवआल रे।
शरणे राखेजे निज सेवकारे, तो विन कोइ न दीनदयाल रे॥३॥
इतरा दिवस लग भूले थकेरे, सेव्या तो होसी सुर केइ एक रे।
ते अपराध खमीजो माहरो रे, मोटा तो बगसे खून अनेक रे॥४॥
हिवे इकतारी कीधी एहवी रे, तो विण अवरां नमवा सूंसरे।
सुरतरू फल छोडी ने तूसने रे, खावानी केम आवे हूंस रे॥५॥
हियड़ तो नेह घणो हेजालवो रे, जावे आवे करिवा प्रीत रे।
सम विषमी पिण न गणें वाटड़ी रे, नवल सनेही नवली रीत रे ॥६॥
मनड़ो चंचल मुझ तनु आलसी रे, कर्म कठिन सवली अन्तराय रे।
पाप कीया केई भव पाछला रे, मन मेलुं किम मेलो थाय रे॥७॥
चालेसर सांभले मुझ विनती रे, म्हारे तुं तुहिज साजन सैणरे।
हियड़ा भीतर तुं वासो वसै रे, ध्यान धरूं समरूं दिन रैण रे ॥८॥
कोई केहने मन मां वसे रे, कोई केहने जीवन प्राण रे।

म्हारे तो तो विन को नहीं रे, जिनजी भावे जाण म जाण रे।।९।।
नयण निरखिस मूरति ताहरी रे, ते दिन सफल गणीस महाराज रे।
सैंमुख करसूॅं प्रभु मुख वातड़ी रे, छोडी पर निज मनची लाज रे।१०
देव न दीधी मुझ ने पांखड़ी रे, उडी मिलुॅं जिणजी तुझ आयरे।
मन रा मनोरथ मन मां रह्या रे, किण आगल कहुं चितलाय रे।११।
तारे तो मुझ पाखे ही सरे, पण म्हारे तो तुझ विन नहीं सरंत रे।
जलधर सारे मोरा बाहिरा रे, मेह विना किम मोर रहत रे।।१२।।
चॉंदो गगन सरोवर प्राहुणो रे, दूर थकी पिण करे विकाश रे।
जे जिहां के मन में वसैरे, तेह सदाई तेने पास रे।।१३।।
दूर थकी जाणेजो वन्दना रे, म्हारी प्रह उगमते सूर रे।
महिर करी ने सेवक उपरै रे, मुझ ने राखो राज हजूर रे।।१४।।
केइक प्रपंच[1] हो साहिब सुं करे रे, करतां न आवे मन में काण रे।
श्रीसीमन्धर तुम जानो सही रे, श्रीसोमगणि जिनहर्ष सुजाण रे।१५

—०—

श्री सीमंधर स्वामि स्तवन

ढाल ।। माखीनी ।।

श्री सीमंधर सांभलउ, सेवकनी अरदास। जिणंद जी
महिर धरी मुझ ऊपरइं, राखउ आपणइ पास ।। जि० १ श्री० ।।
तुम संगति थी पामीयइ, उत्तम गुण जिनराय ।जि०।
चंदन संगति तरु रहइ, ते पिणि चंदण थाय ।। जि० २ श्री ।।

---

१ पड़वल

उपगारी भारी खमा, तेहनै सहुनी इ लाज। जि०।
विरुयां ही विरचइ नही, जेम कनक वृखराजि ॥ जि०३श्री ॥
निगुणउ साहिब जेहनउ, तास न पूगइ आस। जि०।
तुझ सरिखा जेहनइ धणी, ते किम फिरइ निरास ॥ जि०४श्री ॥
तुं साहिब सिर माहरइ, पाप मतंगज गाह। जि०।
हिवे सुपनइ ही नवि धरूं, हुं केहनी परवाह ॥ जि० ५ श्री ॥
कुंथु जिणंद अर आंतरइ, जनम्या जगदाधार। जि०।
मुनिसुव्रत नमि आंतरइ, लीधउ संयम भार ॥ जि०६श्री ॥
उदय देव पेढाल नइ, अंतर शिवपुर वास। जि०।
पूरव लाख चउरासी नउ, आउखउ सुविलास ॥ जि०७श्री ॥
सत्यकी माता जनमीयउ, श्रेयांसराय मल्हार। जि०।
कंचण काया झिगमिगइ, परण्या रुकमणि नारि ॥जि०८श्री॥
आडा डूंगर वन घणा, विच नदियां भर पूर। जि०।
दरीयउ पिणि भरीयुं जलइं, आउं केम हिजूर ॥ जि०९श्री ॥
पूरि मनोरथ माहरा, जग नायक जिनराज। जि०।
स्युं जायइ छइ तुम तणउ, देतां शिवपुर राज। जि०१०श्री।
विरुद गरीब नीवाज नउ, तुं जिनहरख विचारि जि०
अवर न मागुं हुं किसुं, आवागमण निवारि ॥ जि०११श्री ॥

श्री सीमंधर स्वामि स्तवन

ढाल ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ एहनी

सामि सीमंधर मोरइ मन वस्यउ जी, सुंदर सुगुण सुजाण।

अंतरजामी अंतर लहइ जी, त्रिभुवन भासतउ भाण ॥१सा॥
कनक मनोज कमठ कस्यउ जी, तेहवउ वरण शरीर ।
जोवतां पाप भव भव तणा जी, जाइ जिम थल थकी नीर ॥२सा॥
धन्य ते नयण चकोरडाजी, पेखीयइ प्रभु मुख चंद ।
जनम सफल निज कीजीयइ जी, रोपीयइ पुण्यतरु कंद ॥३सा॥
स्वामि गुण वागुरा विस्तरी जी, भविक मन मृग पड़इ पास ।
जनम मरण तणा पास थी जी, नीसरइ ताहरा दास ॥४सा॥
समवसरण मध्य वइसिनइ जी, मालवकौसक राग ।
देसणा मधुर सुर उपदिसइ जी, जे सुणइ तेहनउ भाग ॥५सा॥
दुःख सहुं च्यारि गति मां भमुं जी, सेवतउ काज अकाज ।
जोइज्यो रिदय विचारी नइ जी, ते प्रभु केहनइ लाज ॥६सा॥
साहिब लोभ न कीयउ तदा जी, सहु भणी आपतां दान ।
नाथ अनाथ तुमचइ नथी जी, द्यउ मुझ निर्मल ज्ञान ॥७सा॥
कारिमा सुख तणइ कारणइ जी, राचि रह्या मन मूढ ।
ताहरी भगति नवि आदरइ जी, पड्या अग्यान नी रूढ ॥८सा॥
पांचमइ काल इणि भरतमां जी, नवि मिलइ केवली कोइ ।
स्वामी तुम्हें पिणि वेगला जी, किम मन धीरज होइ ॥९सा॥
मन तणी वात किणिनइ कहुं जी, तेहवउ को नही जाण ।
जिणि तिणि आगलि दाखतां जी, लोक हासी वरि हाणि ॥१०॥
भव भव मांहि भमंता थकां जी, कीधला करम कठोर ।
दाखवुं स्या तुम्ह आगलइ जी, पग पग ताहरउ चोर ॥११सा॥

निरगुण तउ पिणि ताहरउ जी, मेल्हिज्यो मतां वीसारि ।
अवर आधार मुझ को नथी जी, ताहरउ एक आधार ॥१२सा॥
स्वामि थोडइ घणउ मानिज्यो जी, चरण कमल तणी सेव ।
कहइ जिनहरख मुझ आपिज्यो जी, वीनती करूं नितिमेव ॥१३॥

—०—

श्री सीमंधर स्तवन

ढाल ॥ ऊलालानी ॥

आज मनोरथ फलिया, सुपनइ साहब मिलिया ।
भाग्य सयोगइ ए दीठा, भव भवना दुख नीठा ॥१॥
पाप गया सहू दूरइ, जिम कसमल नही पूरइ।
पुन्य दशा हिवइ जागी, प्रभुजो सुं लय लागी ॥२॥
नीरंजन निरमोही, निर्मल तुझ काया सोही ।
कचण वरण शरीर, सायर जेम गभीर ॥३॥
मेरुतणी परि धीर, करम विदारण वीर ।
समता रस नउ तुं दरीयउ, अनंत गुणे करी भरीयउ ॥४॥
प्रभुजी नी सूरति सोहइ, सुर नर ना मन मोहइ ।
अपछरा प्रभुजीइ आगइ, नाटक करइ मन रागइ ॥५॥
त्रिगढा माही विराजइ, कनक सिंघासण छाजइ ।
सुरपति चामर ढालइ, मोह मिथ्या मति टालइ ॥६॥
वारह परषदा आवइ, निज निज ठाम सुहावइ ।
चउमुख धर्म प्रकाशइ, सहु को नइ प्रतिभासइ ॥७॥

कुमती ना मद गंजइ, कुमति कदाग्रह भंजइ ।
धरमी ना मन ठारइ, संसय दूरि निवारइ ॥८॥
नयणे जेह निहालइ, ते निज पातक गालइ ।
धन धन ते नर नारी, जे भेटइ गुण धारी ॥९॥
नामइ नव निधि लहीयइ, दरसण देखी गह गहीयइ ।
जनम सफल निज कीजइ, मुगति तणा फल लीजइ ॥१०॥
इम प्रभुना गुण गाया, सुपना मां सुख पाया ।
दरसण द्यउ प्रभु मुझनइ, परतखि कहुँ छुं हुं तुझनइ ॥११॥
सीमंधर जिनरायस, प्रणसुं प्रहसम पाया ।
मुझ नइ सेवक थापउ, प्रभुजी निज पद आपउ ॥१२॥
श्रेयांसराय मल्हार, सत्यकी उअर अवतार ।
लंछण वृषभ सुहावइ, गुण जिनहरख सुं गावइ ॥१३॥

—०—

वीस विहरमाण नाम स्तवन

सीमंधर पहिलउ जिनराय, जुगमंधर बीजउ कहवाय ।
त्रीजउ वंदू बाहु जिणद, चउथउ स्वामि सुबाहु दिणंद ॥१॥
पंचम जिनवर नमुं सुजात, स्वयंप्रभ छठउ त्रिजग विख्यात ।
रिखभानन नमीयइ सातमउ, अनंतवीर्य अरिहंत आठमउ ॥२॥
सूरप्रभ नवमउ सिरदार, श्री विसाल दशमउ गुणधार ।
वज्रधर प्रणमुं इग्यारमउ, चतुर चंद्रानन जिन बारमउ ॥३॥
चंद्रबाहु नमिसुं तेरमउ, श्री भुजंग जपिसुं चउदमउ ।

श्री ईश्वर पनरमउ पवित्र, सोलमउ नेमिप्रभ सुचरित्र ॥४॥
सतरम वीरसेन वंदीयइ, अढारम महाभद्र सुख दीयइ ।
देवजसा जिन उगणीसमउ, अजितवीर्य वंदु वीसमउ ॥५॥
विचरइ विहरमाण ए वीस, महाविदेह माहे जगदीस ।
भव भव चरण सरण तेह तणा, ल्यु जिनहरख सदा भामणा ॥६॥

श्री वीस विहरमाण जिन स्तवनं

ढाल ॥ श्री नवकार जपउ मन रगइ ॥ एहनी

विहरमाण प्रणमु मन रंगइ, महाविदेह मझारि री माई ।
जंगम तीरथ धर्म कहंता, समवसरण सुखकार री माई ॥१वि॥
सीमंधर पहिलउ परमेसर, जगनायक जगदीस री माई ।
युगमंधर जगमइं जयवंता, भेटु ते धन दीस री माई ॥२वि॥
त्रीजउ वाहु जिणंद जुहारू, पूरइ मननी आस री माई ।
भावइ स्वामि सुवाहु नमु निति, महीयल महिमा जास री माई ॥३॥
प्रात सुजात नमु जिन पंचम, पंचम गति दातार री माई ।
श्री स्वयंप्रभ समता सागर, जगगुरू जगदाधार री माई ॥४॥
रिखभानन आनन निरखंतां, भागइ कोडि कलेस री माई ।
अनंतवीर्य अरिहंत अतुल वल, कदि नयणे निरखेसि री माई ॥५॥
नवमउ श्रीसूरप्रभ स्वामी, अतिसयवंत उदार री माई ।
श्रीविसाल सुविसाल त्रिजग जस, प्रणमइ सुरनर नारि री माई ॥६॥
इग्यारमउ वज्रधर महिमाधर, सेवइ इंद नरिंद री माई ।
चंद्रानन वारम चंद्रानन, परतखि सुरतरु कंद री माई ॥७वि॥

चंद्रबाहु चरणे चितलाऊं, पाउं शिव सुख जेम री माई।
स्वामि भुजंगम जंगम तीरथ, धरीयइ तेह सुं प्रेम री माई॥८॥
ईश्वर जगदीश्वर अपरंपर, अविचल तेज प्रताप री माई।
सोलसमउ नेमप्रभ समरुं, नासइ पाप सताप री माई ॥६॥
वीरसेन वंदु (दुख छंडुं) आणंदुं, मंडुं शिवपुर वास री माई।
महाभद्र अढारस जिनवर, आपइ लील विलास री माई ॥१०वि॥
देवयसा सुदसा देखंतां, जायइ भवना दुक्ख री माई,
अजितवीर्य जित कर्म प्रबल दल, नित निरखीजइ सुख्य री माई।११
विहरमाण वीसे सुखदाई, विचरंता विख्यात री माई।
भविक लोक नइ धरम पमाडइ, कंचण वरण सुगात री माई ॥१२॥
लाख चउरासी पूरव आउ, धनुष पंचसय देह री माई।
कर जोडी वंदुं त्रिकरणसुं, धरि जिनहरख सनेह री माई ॥१३वि॥

जिन स्तवन

भजि भजि रे मन तुं दीनदयाल, पतित उधारण जन प्रतिपाल।भ
समरण करतां टूटइ पाप, सकल मिटइ भव भ्रमण संताप ॥१भ॥
तारणतरण हरण दुख कोड़ि, सुर नर नाग नमइ कर जोड़ि।भ।
तुरत उतारइ करम कलंक, जामण मरण न होइ आतंक ॥२भ॥
अपराधी ऊधरीया केइ, सुगति महल मां धरीया लेइ।भ।
पाउ ग्रहइ रहइ जे प्रभु ओट, जमची अंग न लागइ चोट ॥३भ॥
आरति भंजण आपो आप, धणी सदाई करइ धणीयाप।भ।
कहइ जिनहरख करण वगसीस, जगनायक जय जय जगदीस।४भ

सिन्धी भाषामय गीत

ढाल—घघरा ढोला

तूं मैडा पीउ साजनां वे, तूं मैंडा सिरताज साजन मैंडा।
हूं तैडी वर नारियां वे, अस्सां हिलिमिलि आज ॥ सा० १ ॥
मोही मोही रे सुजाण हुं तो मोही, तेरी सूरत पै वलि जाऊं।सा०आं।
चित्त असाडा लालची वे, लालचिदे वसि जाइ।सा०।
लालच तैडा जीउंदा वे, पेम अमीरस पाइ ॥ सा० २ मो० ॥
हुंण मैंडै हीयडै वसै वे, ज्युं गोरी दे हार। सा०।
अस्सां नालि सुं अखियां वे, चितदा चोरणहार ॥सा०मो०॥
तोस्युं पीउ परदेसीयां वे, राख्यां दिल विच प्रीत। सा०।
तै गल्लां वहु कित्तियां वे, झूठी दिल दा मीत ॥ सा० ४मो० ॥
प्रीति तुम्हांसुं रक्खीयै वे, जे रत्ता दिल मांहि। सां०।
आखंदा जिनहरख सुं वे, औरां सुं मिलणा नांहि ॥सा०५मो०॥

———

पद संग्रह

(१) विमलाचल ऋषभदेव

राग—वन्यासिरी

लागइ लागइ हो विमलाचलनीकउ लागइ।
जहां श्रीरिषभजिणंद विराजइ, भेट्यां भव दुख भाजइ हो।१ वि०
साधु अनंत अन्त करि भव कुं, सीधे सुणियत आगइ।
नइंनन देखतहीं सब जनकइ, हियरइ समकित जागइ हो ॥ २वि०
शिव सुख साधक हइ आराधक, निति निति नमीयइ रागइ।
कर जोरी जिनहरख प्रभुपइं, बोधि बीज फल मागइ हो ॥ ३वि०

(२) विमलाचल यात्रा उत्सुकता

राग—रामगिरी

सखी री विमलाचल जांणु जईयइ।
प्रथम नाथ जगनाथ की भावइं, विधि सुं पूज रचईयइ। १स०
मन, वच, काय पवित्र निज करिकइ, निति प्रति प्रभु कुं नईयइ।
जाके दरसण पातक न रहे, वंछित फल पईयइ ॥ २ स०
यु तीरथ समरथ तारण कुं, देखि खुसी मन हुईयइ।
कहइ जिनहरख भेटि गिरिवर कुं, नरभव लाहउ लईयइ ॥ ३स०

(३) नेमि राजुल

राग—सोरठ

नेमि काहे कुं दुख दीनउ हो।
छोरि चले मोहि अहि कंचुरी ज्युं, कुण अवगुण मंइ कीनउ हो ॥१ने०
तुमसुं नेह पुरातन मेरउ, चरणं मन लहइ लीनउ हो।
हूं कंचण की मुंदरि तापरि, तुं तउ अजब नगीनउ हो ॥ २ने०
विरह संतावत निसि दिन मोकुं, अंतर ताप पसीनउ हो।
राज़ुल कहइ जिनहरख पियाके, गुणसुं दिल रहइ भीनउ हो ॥३ने०

(४) नेमि राज़ुल

राग—देवगधार

पियाजी आइ मिलउ इक वेर।
चरण-कमल की खिजमति करिहुं, होइ रहुंगी ज़ेर ॥ १पि०
आइ छुरावउ अपणी प्यारी, मदन लई हइ घेरि।
आण तुम्हारी सिरपरि धरिहुं, ज्युं मालाकउ मेर ॥ २पि०
मो वपरि कुं काहे मारण, झाली हइ समसेर।
कहइ राज़ुल जिनहरख विरहिणी, चिहुं दिसी रही मग हेर ॥३पि०

(५) नेमि राज़ुल

राग—सोरठ

पावस विरहिणी न सुहाइ।
देखि विकटा घटा घन की, अंगमंइ अकुलाइ ॥ १ पा०
नीर धारा तीर लागइ, पीर तन न खमाइ।

गाज की आवाज सुणिकेइ, चित्त मांझि डराइ ॥ २ पा०
सवद चातकी जहर सुणिकै, जीउ निकस्यउ जाइ ।
नेमि विणि जिनहरख राजुल ज्यासिनो मुरझाइ ॥ ३ पा०

(६) राजुल विरह

राग—देवगंधार

सखी री चंदन दूरि निवारि ।
मेरइ अंग आगि सउ लागत, खत ऊपरि मानु खार ॥१स०।
कुसुम माल व्याल सी लागत, फीके सब सिणगार ।
चंद चंद्रिका मो न सुहावइ, जरि हइ अंग अपार ॥२स०।
सेज निहेजी हुं दुःख पाऊं, सीतल पवन न डारि ।
पिय विण सुख जिनहरख सबइं दुख, कहिहइ राजुल नारि ॥३स०।

(७) राजुल विरह

राग—वेलाउल

मो पइ कठिन वियोग की, सही जात न पीर ।
सखी री कोइ उपाय हइ, धरीये मन धीर ॥१मोपे॥
भूख पिपासा सब गई, भयउ सिथल शरीर ।
विरह घाउ हियरउ फटइ, जइसइं जूनउ चीर ॥२मो०॥
हुं विरहिणि परवसि भई, जरी पेम जंजीर ।
राजुल जिनहरखइं मिले, भयउ सुख सुं सोर ॥३मो०॥

(८) विरह

राग—मल्हार

सखी री घोर घटा घहराइ ।
प्रीतम विणि हुं भई इकेली, नइणां नीर भराइ ॥१स०॥
देखि संयोगिणि पिउ संग खेलत, सोल सिंगार बनाइ ।
मन की वात रही मनही मइं, मनही मइं अकुलाइ ॥२स०॥
धन वैयारी प्यारी प्रिउ की, रहत चरण लपटाइ ।
मो सी दुखणी अउर जगत में, कहत जिनहरख न काइ ॥३स०॥

(९) विरह

राग—सोरठ

अब मइं नाथ कबइ जउ पाउं ।
पाइ धाइ कइ जाइ लगु तउ, उर परि हित सुं रहाउं ॥१अ०॥
वार वार मुख करूं विलोकन, छोरि कहां नहीं जाउं ।
झालि रहुं प्रीतम के अंचरा, प्रीति सुरंग बनाउं ॥२अ०॥
हुइ आधीन दीन सुं बोलुं, खिजमतिगार कहाउं ।
तम मन योवन सरवस दइहुं, जउ जिनहरख लहाउं ॥२अ०॥

(१०) विरह, प्रीति निषेध

राग वेलाउल

काहु सुं प्रीति न कीजइ, पल पल तन मन छीजइ ।
प्रीति कियां जीउ परवसि हुइहइं, झुरि झुरि वृथा मरीजइ ॥१का०॥

नइंना नींद न भूख पियासा, देखण कुं तरसीजइ ।
विकल होत इत उत भटकत है, सुख दे के दुख लीजइ ॥२का०॥
स्यांम होत कंचण सी काया, निति आधीन रहीजइ ।
कहइ जिनहरख जाणि दुख कारण, सुगुरु वचन रस पीजइ ॥३का०॥

(११) महावीर गौतम

राग केदारउ

हो वीर, काहे छेह दिखायउ ।
हुँ तुझ सेवक परम भगत हुं, अविहड़ नेह लगायउ हो ॥१वी०॥
तइं जाणउ पासव पकरेगो, बालक ज्यों परचायउ ।
एक पखीकरी प्रीत परमगुरु, मैं यूं हीं दुख पायउ हो ॥२वी०॥
निसनेही सूं नेह न कीजइ, उपसम मनमइं आयउ ।
गौतम केवलज्ञान लह्यउ तब, गुण जिनहरखइं गायउ हो ॥३वी०॥

(१२) जिन दर्शन

राग—रामगिरी

सखी री आज सफल जमवारउ ।
प्रभु निरखे अज्ञान मिट्यु तम, भयउ अंतर उजुआरउ ॥१स०॥
सुंदर मूरति सूरति अनुपम, देखि कुमति मति छारउ ।
समकित अपणु निर्मल करि कइ, शिव सुख सुं चित धारउ ॥२स॥
समता सागर गुणकउ आगर, लागत है मोहि प्यारउ ।
हुँ जिनहरख हिया में राखुं, साहिब मोहनगारउ ॥३स०॥

(१३) जिन पूजा

राग—वेलाउल

जिनवर पूजउ मेरी माई, सकल मंगल सुखदाई ।जि०।
केसर चंदन अरगजइ, विधि सुं अंगीया वणाई ॥१जि०॥
कुसुममाल प्रभु के उर ठावउ, चितमइ धरि चतुराई ।
भाव भगति सुं जिनगुण गावउ, नावे कुमणा काई ॥२दि०॥
सतर-भेद पूजा जिनवर की, गणधर देव बताई ।
द्रव्यत भावत के गुण लहीकइ, करि जिनहरख सदाई ॥३जि०॥

(१४) प्रभु भक्ति

राग—वेलाउल

प्रभु पद-पंकज पायके, मन भ्रमर लुभाणउ ।
सुंदर गुण मकरंद के, रसमइ लपटाणउ ॥१प्र०॥
राति दिवस मातउ रहइ, तिस भूख न लागइ ।
चरण-कमल की वासना, मोह्यउ अनुरागइ ॥२प्र०॥
सुमनस अउर की सुरभता, फीकी करि जाणइ ।
रहइ जिनहरख उलासमइ, अविचल सुखमाणइ ॥३प्र०॥

(१५) प्रभु भक्ति

राग—धन्यासिरी

भविक मन कमल विबोध दिणंदा ।
नृत्यति नइंण चकोर चतुर द्वइ, निरख निरख मुखचंदा ॥१भ०॥

मोह मिथ्यात मतंगज दारुण, वारण मस्त मयंदा ।
अकलित कोल सबल वलधारी, उच्छेदन भव कंदा ॥२भ०॥
देखि मनोहर मूरति प्रभु की, हरखित इंद नरिंदा ।
देहु चरण की सेव दया करि, लहइ जिनहरख अणंदा ॥३म०॥

(१६) प्रभु शरण

राग—ललित

प्राणपिया के चरण सरण गहि, काहे कुं अउर के चरण गहइ हइ ।
अउर के चरण गहइं थइं अलप सुख, प्रभुके चरण गहइं
सुगति लहइ हइ ॥१प्रा०॥
विरचित अउर वेर नहीं लावत, गुण अउगुण छिन मांहि कहइ हइ ।
प्रभुजी कबहुं न छेह दिखावत, धरणी ज्युं सब भार सहइ हइ ॥२प्रा०॥
समरथ साहिब छोड़िकैं मूरख, रांकन की ढिग कवन रहइ हइ ।
कहै जिनहरख हरख सुखदायक, जनम-जनम के पाप दहइ हइ॥३प्रा॥

(१७)प्रभु वीनति

राग—भैरव

जिनवर अब मोहि तारउ, दीन दुखी हुं दास तुम्हारउ ।
दीनदयाल दया करी मोसुं, इतनी अरज करूं प्रभु तोसुं ॥१जि०॥
तारक जउ जग मांहि कहावउ, तउ मोही अपणइ पासि रहावउ ।जि०
अपनी पदवी दीनी न जाई, तउ प्रभु की कैसी प्रभुताई ॥२जि०
इहलौकिक सुख मेरे न चहिये, अविचल सुखदे अविचल रहिये ।जि०
क्या साहिब मन मांहि विचारउ, प्रभु जिनहरख अरज अवधारउ ॥३

(१८) जिन वीनति

राग—रामगिरी

जिणंदराय हमकुं तारउ-तारउ ।
करुणासागर करुणा करिकइ, भवजल पार उतारउ ॥१जि०॥
दीनदयाल कृपाल कृपाकर, कूरम नइंन निहारउ ।
भगतवछल भगतन कुं ऊपर, करत न काहे विचारउ ॥२जि०॥
इतनी अरज करूं हूँ प्रभु सुं, पदकज थइं मत टारउ ।
कहइ जिनहरख जगत के स्वांमी, आवागमण निवारउ ॥३जि०॥

(१९) जिन वीनति

राग—रामगिरी

कृपानिधि अब मुझ महिर करीजइ ।
दीन दुखी प्रभु सेवक तोरउ, अपणुं करि जाणीजइ ॥१कृ०॥
भवसायर में वहु दुख पायउ, करुणा करि तारीजइ ।
तुम्ह विण कुंण लहइ पर वेदन, उपगारी सलहीजइ ॥२कृ०॥
नइंण सलूंण सनमुख जोवउ, ज्युं जिनहरख पतीजइ ।
प्रभु सेवा फल इतनउ मागुं, बोधि बीज मोहि दीजइ ॥३कृ०॥

(२०) जिन वीनति

राग—रामगिरी

जगत प्रभु जगतन कउ उपगारी ।
अपणे दास धरे वइकुंठ में, भव की पीर निवारी ॥१ज०॥

अइसउ अउर न कोई दाता, सबही कूं हितकारी ।
ताके चरण सरण करि रहीयइ, न भजइ दुरगतिनारि ॥२ज०॥
परम सनेही परदुख भंजन, रंजन मन सुविचारी ।
मीत सोऊ जिनहरख करीजे, शिव सुख कउ उपगारी ॥३ज०॥

(२१) प्रभु वीनति

राग—आशावरी

अबतउ अपणइ वास वसाउ, कहा प्रभु बहुत कहावउ ।अ०
चउरासी लख मांहि वस्युं हूं, वसि वसि छोरे वासा ।
ऊंचे नीचे महल बणाए, देखे बहुत तमासा ॥१अ०॥
दुसमण सो तउ मीत किए मइं, मीत शत्रु करि जाणे ।
तउ सुख कइंसइं होइ गुसाँई, आपा पर न पिछाणे ॥२ज०॥
चोर चुगल धन लूटि लीयउ सब, किणि सुं करुं पुकारा ।
वास कुवास छुराइ कहत हुं, इतना करि उपगारा ॥३अ०॥
दुख पायउ आयु तुम्ह सरणइ, ज्युं जाणउ त्युं कीजो ।
कहइ जिनहरख निरंजन साहिब, सो मागुं सो दीजो ॥४अ०॥

(२२) जिनेन्द्र प्रीति प्रेरणा

राग—रामगिरी

मन रे प्रीति जिणंद सूं कीजइ ।
अउर सुं प्रीति कीयइं दुख पईयइ, ताथइ दूरि रहीजइ ॥१म०॥
करम भरम सब दूरि विडारइ, जनम मरण दुख छीजइ ।

जिणि की प्रीति परमपद लहीयइ, ताहि चरण रस पीजे ॥२म०॥
छेह न दाखइ अंतरज्यामी, साचु सइंण कहीजे।
यउ जिनहरख जगत कूं तारण, अउर देखि मन खीजइ ॥३म०॥

(२३) निरंजन खोज

राग आशावरी

खोजइ कहा निरंजन वोरे, तेरे ही घट में तुं जो रे।खो०
बाहिरी खोज्या कबहुं न लहीयइ, अंतर खोज्यां तुरत ही पईयइ १
खोजत-खोजंत सब जग मूआ, तउ ही उणका काम न हुआ।खो०
ज्युं परतखि घृत में दधिवासा, पावक काठ पाषाण निवासा ॥२खो
ढंढत-ढूंढ़त जगमग मावइ, तुही उण के हाथ न आवइ। खो०
ताकउ भेद होइ सु पावइ, भेद विना कछु गम न लहावे ॥३खो०॥
ज्ञानी सो जिनहरख पिछाणइ, आपही आप निरंजन जाणे॥४॥

(२४) प्रबोध

राग भैरव

ऊठि कहा सोइ रह्यउ, नइंन भरी नींद रे,
काल आइ ऊभउ द्वार, तोरण ज्युं वींद रे।ऊ०।
मोह की गहल मांझि, सोयउ बहुकाल रे,
कछु बूझ्यु नहीं तुं तउ, होइ रह्यउ वाल रे ॥१ऊ॥
बहुत खजीनउ खोयउ, अलप कइ हेतरे,
अजूं कछु गयउ नही, चेतन चेत रे, ।ऊ०।

तरइपुर मांझि वसइ, दूठ च्यारूं चोर रे,
राति घुंस तेरउ धन, लूटइ ठोर ठोर रे ॥२ऊ०॥
काचउ कोट जोर जम-दल लीनउ घेर रे,
काहे बल फोरइ नहीं, गति समसेर रे ।ऊ०।
साहस सधीर धरि, प्रभुता न खोइ रे,
कहइ जिनहरख ज्युं, जइत वार होइ रे ॥३ऊ०॥

(२५) प्रबोध

राग—कल्याण

जोवन ज्युं नदी नीर जात हइ अयाण रे।
काहे फूलि रह्यउ यउ तउ अथिर तुं जाणिरे ।जो०।
जोवन मइ रातउ मदमातउ फिरइ जोर रे।
काम कउ मरोर्यु कछु देखइ नहीं ओर रे ॥१जो०॥
कामिनी सुं चाहइ भोग सकल संयोग रे।
अलप जीवन सुख वहुत वियोग रे ।जो०।
रूप देखि जाणइ मोसौ न को तीन भुंवन रे।
अइसउ अभिमानी तेरी गत हुइगी कउंण रे ॥२जो०
अंजुरी कउ नोर रहइ, कहउ केती वेर रे।
तइसउ धन जोवन न, कोई ता मइं फेर रे ।जो०
भजि भगवंत जोवन कउ लइ लाह रे,
जउ जिनहरख मुगतिकीचाहरे ॥३जो०॥

प्रथम मंगल गीत

॥ ढाल ॥

प्रथम मंगल मन ध्याईये, अरिगंजण अरिहंतो रे।
विषय कषाय निवारीया, भयभंजण भगवंतो रे ॥१प्र०॥
केवलज्ञान दिवाकरू, संसय तिमर गमावइ रे।
बारह परषद माहे बइसिनइ, अमृत वाणि सुणावइ रे ॥२प्र०॥
कनक सिंघासण बइसणइ, छत्र त्रय सिर सोहे रे।
चामर वींजइ सुर ऊजला, भामंडल मन मोहे रे ॥३प्र०॥
वाणी योजन गामिनी, सुणतां दुख नवि व्यापइ रे।
भूख त्रिपा भय उपसमइ, अविचल सिवपद आपे रे ॥४प्र०॥
प्रभु चरणे सुर नर सदा, सेवइ कोडानकोडी रे।
पहिलउ मंगल जिनहरष सुं, नमीये वे कर जोड़ी रे ॥५प्र०॥
इति श्री प्रथम मंगलंगीतं ॥

द्वितीय मंगल गीत

॥ ढाल—माखीना गीतनी ॥

बीजउ मंगल मनि धरउ, सिद्धिपुरीना सिद्ध। भविक नर।
आठ करम अरि क्षय करी, पामी अणंत समृद्धि ॥ १ भ० बी ॥
काया माया जेहने नही, नही कोई रूप सरूप। भ०।
वेद नही वेदन नही, नही चाकर नही भूप ॥ २ भ०बी॥

मुगतिशिला उपरि रह्या, लोक तणइ अग्र भाग । भ० ।
अक्षय सुख आनंद नइं, कोई न पामइ थाग ॥३भ०वी॥
गंध फरस जेह मइं नहीं, नहीं कोई करम नउ लेप । भ ।
गुण इकत्रीसे सोभता, क्षय संसार अछेप ॥ ४भ०वी ॥
सुक्ख अनंता भोगवे, सिद्ध भगवंत निरीह । भ ।
जिणि दिन सिद्ध निहालिसुं, ते जिनहरष सुदीह ॥५भ०वी

इति द्वितीय मंगल गीतं ॥२॥

तृतीय मंगल गीत

ढाल—परि आवउ जी आवउ मउनीयउ ॥ एहनी ॥

हिवे त्रीजउ मंगल गाईये, माल्हंता मुनिवर जेहो ।
समता दरीया भरिया गुणे, तप सुं कीधी क्रिस देहो ॥१हि०॥
पांचे समिते समिता सदा, पांच व्रतना जे प्रतिपालो ।
पांचे इन्द्री निज वसि कीया, षट् काय तणा रखवालो ॥२हि०॥
त्रीजी पोरिसी करे गोचरी, ल्यइ अरस निरस आहारो ।
सइतालिस दूषण टालिनइ, भोजन करे जे अणगारो ॥३हि०॥
धन्ना अणगार तणी परइं, दुक्कर तप करे अपारो ।
बावीस परिसह जे सहे, गुण ज्ञान तणा भंडारो ॥४हि०॥
आपण परि परने लेखवइ, देखालइ शिवपुर वाटो ।
सुध साधु एहवा पाय प्रणमीये, जिनहरख सदा गहगाटो ॥५हि०॥

इति तृतीय मंगल गीतं ॥३॥

चतुर्थ मंगल गीत

ढाल—विमलाचल सिर तिलउ एहनी ॥

चउथउ मंगल निति नमुं, जिनवर भाषित धर्म ।
विनय दया जिन आगन्या, जेहथी त्रूटइ कर्म ॥१च०॥
कलपवृक्ष चिंतामणि, कामधेनु कामकुंभ ।
पुन्य योगइं ए पांमीये, पिणि जिनधरम दुलंभ ॥२च०॥
जेहथी सुरनर संपदा, लहीये सुख भरपूर ।
सी अधिकाई एहनी, थायइ मुगति हजूर ॥३च०॥
जीव तर्या तरिस्ये वली, अतीत अनागत काल ।
वर्तमान कालइं तिरइ, धर्म थकी तत्काल ॥४च०॥
त्रिकरण सुध आराधिस्ये, फलिस्यइ वंछित तास ।
चउथुं मंगल चिरजयउ, कहइ जिनहरख उलास ॥५च०॥

इति चतुर्थ मंगल गीतं ॥४॥

ऋषि बत्तीसी

अष्टापद श्री आदि जिणंद, चंपा वासपूज जिनचंद ।
पावा मुगति गया महावीर, अरिट्ठनेमि गिरनार सधीर ॥१॥
वीस तिथंकर धरीय उमेद, जनम मरण भव बंधण छेद ।
श्री समेतसिखर सिध थया, वीस जिणेसर मुगतें गया ॥२॥
जंबूदीपैं जिन चौवीस, धाइसंडै अडसठि ईस ।
अरध पुष्कर अडसठि कहेस, सत्तरिसय जिन भाव नमेस ॥३॥

सीमंधर जुगमंधर सांम, वाहु सुवाहु नमुं सिर नाम ।
श्री सुजात स्वयंप्रभु देव, रिषभानन प्रणमुं नित मेव ॥४॥
अनंतवीरज सूरिप्रभ जाण, श्री विशाल वज्रधर वखाण ।
चंद्रानन चंद्रवाहु भुजंग, ईसर श्रीनेमिप्रभु रंग ॥५॥
वीरसेन महाभद्र जिणंद, देवजसाऽजितवीर्य दिणंद ।
वीसे विहरमांन जिनराय, प्रह उठी नित प्रणमुं पाय ॥६॥
रिषभानन जिनवर व्रधमांन, चंद्राणण वारसेण प्रधान ।
ए च्यारे प्रतिमा सासती, नंदीसर दीपै छती ॥७॥
जंघा विज्जाचारण साध, भावै प्रणमै धरीय समाध ।
विद्याधर नागिन्द सुरिंद. वंदै च्यारे ई जिण चंद ॥८॥
चौवीसे जिणवर परिवार, साध साधवी ने गणधार ।
सावय सावीय सहूए मिली, प्रह उठी प्रणमुं मनरली ॥९॥
इन्द्रभूति पहिलौ गणधार. अगनिभूति वायुभूति विचार ।
व्यक्त सुधरमा मंडित सामि, मोरीपुत्र अकंपित नामि ॥१०॥
अचलभ्राता नवम प्रकाश, मेतारिज प्रणमिसु प्रभास ।
वीर तणां गणधर इग्यार, कर जोड़ी प्रणमुं सय वार ॥११॥
वंदु प्रसन्नचंद रिपिराय, दसणभद्द प्रणमुं चित लाय ।
साध सुदरसण पूरणभद्र, भद्रवाहु नमिये थूलिभद्र ॥१२॥
अज्ज महागिरि अज्ज सुहत्थि, भद्रगुप्त प्रणमुं सिव सत्थि ।
आरिजरखित नै मेघकुमार, सालिभद्र धन्नो अणगार ॥१३॥
समण सिरोमणि श्री कयवन्न, काकंदी धन्नो धन धन्न ।

अभयकुमार नमुं नंदिषेण, अयमत्तो रिषिवर पुन्यसेण ॥१४॥
करकंडु नमि निगई साध, दुमुह दयानिधि गुणे अगाध।
च्यारे प्रत्येकबुद्ध कहाय, प्रह ऊठी प्रणमीजे पाय ॥१५॥
जंम्बू कूरगडु अणगार, कुम्मापुत्त सुगुण भंडार।
अरहन्नक[1] रिषि व्रत प्रतिपाल, गयसुकुमाल अवंतिसुकमाल ॥१६॥
नमुं इलाचीपुत्र पवित्र, खिमावंत चिलातीपुत्र।
बाहुबल भरहेस मुणिंद, सनतकुमार नमूं आणंद ॥१७॥
रिषि ढंढणकुमार पवित्र, मुनिवर वंदु अज सुनखित्त[2]।
श्री सर्वानुभूय सुजगीस, पनर तिडोतर गोयम सीस ॥१८॥
पुंडरीक गणहर गुणवंत, दिढपहार नमियै दवदंत।
संब पजुन्न अने बलदेव, सागरचंद मुणिंद नमैव ॥१९॥
मेतारिज श्री कालिकसूरि, तेतलीपुत्र नमुं गुण भूरि।
पांचे पांडव अनयाउत्त, धरमरुइ रिख तोसलिपुत्त ॥२०॥
मुनिवर सत्तम[3] कत्ति मुणिंद, पंच कोड़ि सुं दविड़ नरिंद।
विद्याधर नमि विनम मुणीस, खंदक सूरि पंचसय सीस ॥२॥
कपिल महारिषि संजम धीर, हरिकेसीबल पवित्र शरीर।
चित्त मुनीसर नृप इखुकार, भृगु बंभण जसु[4] दुण्णि कुमार ॥२२॥
कमलावई जसा बांभणी, ए छह प्रणमुं महिमा घणी।
संजती मिरगापुत्र महंत; साध अनाथी रिषि गुणवंत ॥२३॥

१—अरणक २ पवित्त ३ सत्तमुकल ४ वसु।

समुद्रपाल रहनेम सुसाह, केसी गोयम गुणे अगाह ।
विजयघोष जयघोष वखाणि, मुनिवर सहु वंदुं सुविहाण ॥२४॥
ब्राह्मी चंदनबाला सती, द्रुपद[1] सुता वलि राजेमती ।
कौसल्या नै मिरगावती, सुलसा सीता पद्मावती ॥ २५ ॥
सिवा सुभद्रा कुंती नमूं, दवदंती नामै दुख गमूं ।
सीलवती पुप्फचूला एह, इत्यादिक नमियै गुणगेह ॥२६॥
अढीदीप मांहे मुनिवरा, हुआ हुसी अछइ गणधरा ।
पंच महाव्रत ना प्रतिपाल, संयमधारी नमुं त्रिकाल ॥२७॥
आणंद गाहावइ कामदेव, चुलणीपिया नमुं सुरादेव ।
चुल्ल सतक न कंडकौलीयो, सद्दालपुत्र कुंभार खोलीयौ ॥२८॥
महासतक नमि नदणीपिया दसम[2] लित्त की पिया थिया ।
एका अवतारी ए दसे, प्रणमीजै हियडै उल्लसै ॥ २९ ॥
बीजाई मुणिवर छै घणा, तेह तणां लीजै भामणां ।
धरमी श्रावक नैं श्राविका, ते पिण प्रणमीजै भाविका ॥३०॥
रिषि-वत्तीसी जे नर गुणैं, भणै भावसुं श्रवणे सुणै ।
रिद्धि वृद्धि पामें गुणगेह, अजर अमर पद लाभै तेह ॥३१॥
उत्तम नमतां लहियै पार, गुण ग्रहतां थायै निसतार ।
जाये दूरि करम नी कोडि, कहै जिनहरख नमूं कर जोड़ि ॥३२॥

॥ इति श्री रिषि वत्तीसी स्वाध्याय ॥

—:०:—

१ द्रौपदी सती २ लुतकी सुखिया थया ।

गौतम, पंचपरमेष्टी २४ जिन छप्पय

सुखकरण दुखहरण, सुजस धारण उद्धारण।
साचवयण मुख रयण, सयण दुज्जण साधारण॥
अमृत रसण उच्चरण, भरण भंडार भलप्पण।
तेज तरणि तिन धरण, आप थप्पण उथप्पण॥
च्यारे वरण वंदे चरण, श्री जिन सासन जयकरण।
जिणहरख सरण टाले मरण, गौतम त्रिभुवन आभरण॥१॥
जपतां गौतम जाप, पाप संताप प्रणासे।
जपतां गौतम जाप, वले लखमी घर वासे॥
जपतां गौतम जाप, जुडइ कामिणि कुलवंती।
जपतां गौतम जाप, अवल कीरत्ति अनंती॥
गौतम जाप जपता जुडइ, सुखदायक सुत उज्जला।
जिनहरख जपै गौतम जिके, तास वधइ जग में कला॥२॥
अष्टापद आपरी, लवधि चढ़ीया लीलागर।
वंदे जिन चउवीस, देव प्रतिबोधि दया कर॥
तापस पनरस त्रिण, पात्र एकण परमाणे।
पहुचाडे पारणउ, दीयउ वलि केवल दाने॥
अठवीस लवधि अंगइ वसइ, वडउ शिष्य श्रीवीर रउ।
जिनहरख जास महिमा जगत्र, सो गौतम तुम जप करउ॥३॥

आदि नमो अरिहंत, सिद्ध बीजइ पद साचा ।
आचारज आचार, पंच चाले सुध वाचा ॥
उत्तम श्री उवझाय, बार जे अंग वखाणइ ।
अढी दीप अणगार जिके, निज किरीया जाणइ ॥
परमेष्टि पंच जपतां प्रलइ-जाइ पाप जूआ जूअइ ।
जिनहरख पत्र परिवार जस, सुख संपति मंगल हुअइ ॥४॥

इणि नवकार प्रभाव हुअउ, धरणिंद सहु जाणे ।
सिवकुमार सौवन्न पुरुष, पाम्यउ तिणि टाणइ ॥
सती श्रीमती साप मिटे, हुई पुष्पमाला ।
संबल कंबल सांड वसे, विम्माण विसाला ॥
भीलडी भील नृप सुख लहे, देव हुआ सहु दुख गयउ ।
जिनहरख पार न लहुं सुजस, श्रीनवकार चिरंजयउ ॥५॥

आदि रिषभ अरिहंत, अजित संभव अभिनंदन ।
सुमति पदम सुप्पास, चंद्रप्रभ कुमति निकंदन ॥
सुविधि सीतल श्रेयंस, वले वासुपूज वखाणुं ।
विमल अनंत धर्मनाथ, सांति जिन सोलम जाणुं ॥
श्रीकुंथुनाथ अर मल्लि जिन, मुनिसुव्रत नमि नेमि भणि ॥
श्रीपार्श्वनाथ जिनहरख जपि, महावीर सुर मुगट मणि ॥६॥

वीश स्थानक स्तवनं

श्री वीर जिणेसर, भाषइ तप अधिकार।
वीसस्थानक सरिखो, तप नहीं कोई संसार॥
ए तप थी तूटै, निविड करम ततकाल।
ए तप थी लहीयै, राज रिद्धि सुविसाल॥१॥
एथी जायै सहू, आधि व्याधि दुख रोग।
एथी सुख लहियै, वंछित भोग संयोग॥
ए तपनो महिमा, कहतां नावै पार।
जे करइ अखंडित, धन तेहनो अवतार॥ २॥
पहिलइ नमो अरि—हंताणं करि जाप।
बीजइ नमो सिद्धाणं, जपतां जायइ पाप॥
त्रीजइ थानक नमो, पवयण मन उलास।
नमो आयरियाणं, चउथइ पद सुविलास॥ ३॥
वली पंचम थानक, गणीयइ नमो थेराणं।
हीयडइ धारउ, छठइ पद उवझायाणं॥
सातमइ 'नमो लोए, सव्व साहूणं' वखाणुं।
नमो नाणस्स आठमइ, थानक गणि सुविहाणुं॥ ४॥
नवमइ चितलाई नमो दंसणस्स गणीजइ।
दसमेइ नमो विणय संप्पन्नाणं प्रणमीजइ॥
इग्यारम ठामइं, नमो चारित्त जपीजइ।

वारम वंभयारीणं, हीयडइ धारीजइ ॥ ५ ॥
नमो किरियाणं, तेरम थानक सुखदाई।
नमो तवसीणं, पद चवदमइ जपि चितलाइ ॥
पनरम ठामइ गोयमस्स, नमो निति ध्यावउ।
जपि नमो जिणाणं, सोलम पद सुख पावउ ॥ ६ ॥
सत्तरमइ थानक, गणीयइ नमो चारित्त।
नाणस्स नमो, अठारम गुण पवित्त ॥
उगणीसम नमो सुयस्स, गुणउ हित आणी।
वीसम गमैइ नमो, पवयण परम कल्याणी ॥ ७ ॥
पहिलइ पद चउवीस, वीचे पनर लोगस्स।
सात त्रीजइ चउथे, छत्रीस गणउ अवस्स ॥
पांचमे दस छठइ, वार सात सत्तावीस।
आठमइ पांच लोगस्स, सतसठि नवम जगीस ॥ ८ ॥
दसमइ दश इग्यारम, पट हीयडइ धारि।
बारमेइ नव तेरमेइ, पचवीस चवदमइ वार ॥
पनरम ठामे सत्तर, सोलमे दस जाप।
इग्यारस तेरमेइ, लोगस्स भजि तजि पाप ॥ ९ ॥
अठारमइ पांच वली, उगणीसमइ एक।
वीसमेइ वीस लोगस्स, गुणीयइ धरी विवेक ॥
एतला लोगस्स नु, करीयइ काउसग्ग।
दुख जनम मरण ना, सहु जाये उवसग्ग ॥ १० ॥

ए वीसे थानक, गणीयइ करि उपवास।
आंबिल एकासण, यथा सगति मति खास।
तिथंकर पदवी, ए तप थी पामीजइ।
दोइ दोइ सहस गुणणइ, जिनहरख गणीजइ ॥ ११ ॥

मौन एकादशी स्तवन

ढाल ॥ वीर जिणेसर नी ॥ एदेशी

सयल जिणेसर पाय नमी, समरी सुयदेवी।
मून इग्यारसि तवन भणुं, गुरु चरण नमेवी ॥
मगसिर सुदि एकादशी, ए कल्याणक धारी।
तीन पंचास थया कहुं ए, सुणीज्यो नरनारी ॥ १ ॥
नगर नागपुर दीपतउ ए, तिहां राय सुदरसण।
देवी राणी गुणवती ए, सहु नइ प्रिय दरसण ॥
चउदे सुहिणे जनमीया ए, अमर नाम कहाय।
रूप अनोपम सोहतउ ए, जाणे कंचण काय ॥ २ ॥
चउसठि इंद्र मिली करी ए, सहुअइ सुर आव्या।
मेरु महीधर ऊपरइ ए, प्रभु नइ न्हवराव्या ॥
करीय महोच्छव माय तणइ, पासइ तेह मल्या।
इंद्र गया निज थानकइ ए, दुरगति दुख ठेल्या ॥ ३ ॥
राज्य तणा सुख भोगवी ए, व्रत अवसर जाणी।

लोकांतक सुर आवीया ए, प्रभु नइ कहइ वाणी ॥
समता रस संपूरीयउ ए, मन निश्चल कीधउ ।
मगसिर सुदि इग्यारसइं ए, जगगुरु व्रत लीधउ ॥ ४ ॥

धीरम मेरु तणी परइं ए, सायर गंभीर ।
कर्म तणी सेना भणी ए, हणिवा महावीर ॥
कर्म च्यारि जे घातीया ए, ते स्वामि खपाव्या ।
केवलज्ञान लह्यउ प्रभु ए, सुर नर तिहां आव्या ॥ ५ ॥

समवसरण रचना करीए, जिन बइठा सोहइ ।
धरम तणी देसण दीयइ ए, सुणता मन मोहइ ॥
संघ चतुर्विध थापीयउ ए, गुणमणि भंडार ।
आऊखं पूरण करी ए, पुहुता मुगति मझार ॥ ६ ॥

॥ ढाल २ अढीया नी ॥

एकवीसमुं जिनचंद, कल्याणक भणुंए, बीजउ संथुणुं ए ॥७॥
मिथिला नगरी राय, विजय नरेस कहवाय ।
वप्रा रागिणी ए, मोटा भागिनी ए ॥ ८ ॥

चउदह सुपन लहाय, हीयडइ हरख न माय ।
जिनवर जनमीया ए, सुर उच्छव कीया ए ॥ ९ ॥
जोवन पहुता जाम, प्रभुजी परण्या ताम ।
राज्य पदवी लही ए, सुख भोगवइ सही ए ॥ १० ॥

अनुक्रमि लीधउ जोग, छंडी सुख संभोग।
परीसह सहु सहइ ए, करम निवड दहइ ए ॥ ११ ॥
मगसिर मास उलास, सुदि इग्यारसि तास।
प्रभु केवल वर्यउ ए, त्रिगढउ सुर कर्यु ए ॥ १२ ॥
तीन छत्र सुर सीस, चामर ढोलइ ईस।
प्रभु देसण दीयइ ए, जाणुं निरखीयइ ए ॥ १३ ॥
श्रावक श्राविका जाणि, श्रमणी श्रमण वखाणि।
गणधर थापिया ए, दुख सहु कापिया ए ॥ १४ ॥
समितसिखर चढि नाह, संलेहण गज गाह।
सिवपद पामीयउ ए, मइ सिर नामियउ ए ॥ १५ ॥

ढाल ३ ॥ इणि अवसर दसउर पुरइ ॥एह नी

कल्याणक तीन, मिथिला नगरी सुर पुरी।
रहइ लोक अदीन, रिद्धि समृद्धि सूं भरी ॥
भरी सुभर कुंभ नरपति, राज्य लीला जोगवइ।
परभावती राणी संघातइं, विषय ना सुख भोगवइ ॥
निसि समइ सूती सुखइं राणी, चउद सुपना ते लहइ।
बहु हरख पामी सीस नामी, राय नइं आवी कहइ ॥ १६ ॥
सुपन पाठक तेडावीया, कुंभराय प्रभाती।
पुत्र हुस्यइ तुम घरि सही, तीन लोक विख्याती ॥
वात विचारी नइ कही एहवी, सांभलि सहु मन मां हरखिया।
स्त्री वेद लेई गरभ आव्या, करम माया ना कीया।

जिन थया नारी एह अचरज, कपट दूरइं परिहरउ ।
जिनराज नी जोइ अवस्था, धर्म चोखइ चित करउ ॥ १७ ॥
दस मसवाडा माय नइ, रह्या गरभ जिणंद ।
मगसिर सुदि इग्यारसइं, जनम्या जिनचंद ॥
सुर सुरपति मन ऊलसइ आव्या, देव देवी आवीया ।
सुरगिरइं लेइ स्वामि उच्छव, करइ भगतइं भावीया ।
वहु भाव भत्तइं एक चित्तइं, गीत नृत्य सुहाईया ।
दीर्घायु इम आसीस देई, माय पासइं ठावीया ॥ १८ ॥
राय करी उच्छव घणउ, दीधउ मल्लि नाम ।
रूप कला गुण आगलउ, त्रिभुवन नउ सामि ॥
मूक्यूँ जाइ न वेगलउ, प्रभु मोह देखी ऊपजइ ।
पट द्वार मोहनघर कराव्यउ, पूतली मांहे सजइ ।
निज पूर्व भव ना मित्र पट नृप, परणिवा सहु आवीया ।
प्रभु कहइ काया असुचि पुदगल, देखि स्युं ऊमाहिया ॥ १९ ॥
प्रतिबोधी निज मित्रनइ, देइ वरसी दान ।
मगसिर सुदि इग्यारसइं, धारी निर्मल ध्यान ॥
संयम लीधउ मन रसइं, नारी नर वे सय सुं,
मल्लि जिन व्रत आदर्यु ।
निति समिति समिता, गुपति गुपता, पाप मारग परिहर्यउ ।
सुभ ध्यान पूरी, कर्म चूरी, मागसिर एकादसी ।
सित लह्यउ केवलन्यान निर्मल, रिद्धि पामी एरिसी ॥ २० ॥

ढाल ४ ॥ गीता छन्दनी ॥

आव्या सुरपति सुर नर मन रली, बारह परखद प्रभु आगलि मिलि।
समवसरण मां बइठा सोहइ ए, सुर नर नारी ना मनमोहइ ए ॥
मोहए मन रूप देखी, मधुर सुर देसण दीयइ।
संदेह मन नो हरइ दूरइ, होयडलइ आणंदीयइ।
उपसमइ वयर विरोध सहुना, त्रिजगपति अतिसय करी।
मिथ्यामती ना मान गालइ, मोह सेना थरहरी ॥ २१ ॥
अतिसय वर चउत्रीस जिणंद ना, करइ सुरासुर प्रभुनइ वंदना।
त्रिण छत्र सिर धारइ देवता, चामर विंजइ उज्ज्वल सोहता ॥
सोहता मरकत वरण जिनवर, मल्लि जिन महिमानिलउ।
उगुणिसमउ जिनराय जगगुरु, कुंभ नरपति कुलतिलउ ॥
फहरइ त्रिभुवन सुजस जेहनउ, आगन्या सहु सिर धरइ।
बूझवइ प्रभु भव्य प्राणी, भवसमुद्र तारइ तरइ ॥ २२ ॥
आगलि बइसइ नारी परखदा, केडइ बइसइ पुरुष तणी सदा।
संघ चतुर्विध प्रभुजो थापियउ, अनुक्रमि आऊखु पूरण कीयउ।
कीयउ पूरउ समित-गिरवर, मुगति नयरी पहुतला।
जिहां नही जामण मरण काया, सुक्ख पाम्या अति भला ॥
पंच कल्याणक थया इम, ऊजली एकादशी।
मास मगसिर तणी भवीयण, मौन रहीयइ ऊलसी ॥ २३ ॥
पाँच भरत पाँच ऐरव्रत जाणीयइ, दस पंचा पंचास वखाणीयइ ॥
अतीत अनागत नइ वर्तमानए, सहु मिल्या दउडसय हुइ ज्ञान ए ॥

ज्ञान सुं जउ ए कल्याणक, दउढसउ आराधीयइ ।
विधइं करीयइ तउ सही सुं, मुगति ना सुख साधीयइ ॥
एवडी मगसिर सुदि इग्यारसि, ए समी बीजी नहीं ।
जिनहरख मौनइग्यारिसी तप, जिन कह्यउ मोटउ सही ॥२४॥

—०—

गौतम स्वामी पच्चीसी

धण पुर गुब्बर गांम, विप्र तिहां निवसै गौतम ।
चवदह विद्या चतुर, अम्हां सम कोय न उत्तम ॥
अङ्ग वड़ो अहंकार, अवर कोइ बीजो आछे ।
पंडित जांण प्रवीण पोहवि सगला मो पाछे ॥
सहुगया हारि वादी सकज्ज, सिद्धाइ जाणै सरव ।
जिनहरख सुजस सो त्रय जगत गोतम गरजै करि गरव ॥१॥
मेलि घणा ब्राहमण, इधक ओझा इधकाइ ।
हवै त्रिवाड़ी व्यास, ज्ञान विण हुआ घणाई ॥
वेद भणैं वेदिया, सहस भुज जाग सझाई ।
स्वाहा मंत्र सबद, ज्वालनल होम जगाई ।
करन्यास करै आहूति करै, दीयण वल देवां दिसे ।
जिनहरख धन्य गिणतो जणम, इन्द्रभूति इम उल्हसै ॥२॥
इण अवसर उपगार, करण आया करुणा कर ।
गोठे केवलज्ञान, हलै साथै सुर हाजर ॥

वजे देव वाजित्र,अंग आदीत उजासै ।
करै देव जयकार, पहर आठे रहै पासै ।
नित आय पाय सुरपति नमै, दिलचा पालंतो दरद ।
जिनहरख रीति इण आवियौ महावीर मोटो मरद ।।३।।
समवसरण सुर रचै, पुहवि योजन प्रमाणै ।
मणि कंचण रूप मय, वडा मुनिराज वखाणै ।
कोसीसा कांगरा, जांणि रवि माल झलकै ।
जोया दुख सहु जाय, वीज ज्युं कांति विलकै ।
सुर असुर नाग नर ओलगे, गयण नीसाणै गाजीयो ।
तिहि बीचि सिंहासण प्रभु तठै, वीर जिणंद विराजियो ।।४।।
आवै मिली अनन्त, सहु सुरलोक थकी सुर ।
प्रभु पय भेटण प्रेम, एक हुँती इक आतुर ।
गयदल मिलै गैणांग, हयां हेखारव हुवीयां ।
एरापति चढि इंद्र, धोम सिहरा ज्युं धुवियां ।
नीसाण नगारे नीहसते, धज बंधी नेजे धजे ।
जिनहरख वीर जिन वांदिवा, समवसरण आवै सजे ।।५।।
गहगहीयो गोतम, देव आवंता देखे ।
समवसरण संचरे, अधम ज्युं गेह उवेखे ।
चित्त ताम चींतवै, भरम मानव तो भूलै ।
पिण सुर किण साझिया, देखि ज्यांरो मन डूलै ।
आइखै कोइ इन्द्रजालियो, आयो एथ आडम्बरी

जिनहरख देव जावै जठे, वातां सगले विस्तरी ॥६॥
इन्द्रभूति ऊठीयो, सींह ज्युं पूंछां पटके।
. ... ।
वरस्यालु वाहला, जेम ड्धको ऊफणियो ।
लोयण कर वे लाल, हेक हाथल भुंय हणियो ।
वादीयां रां भंजण विड़द, जोयो मिलुं जठै तठै ।
जिनहरख गिण गिण गालीया, ओ करढ्ढ रहीयो कठै ॥७॥
मैं जीत मेलवी, वडा कवि ओवट वहता ।
गोड तणा गंजीया, लाख वगसीसां लहता ।
ग्वालेरा गह मेल्हि, पेस ले पाये पडीया।
गुण्डवाणा गालीया, नेस गुजराती नमीया ।
सझीया सयल सोरठरा, माण मेवाडां चो मले ।
जिनहरख अगंजी गंजीया, वादी कोय उठ्यो वले ॥८॥
हाथीलो हीसह्न, ताम गोतम गरज्जे ।
घणा छात्र घूमरे, सबल आडम्बर सज्जे ।
केसरि देख कुरंग, तुरत जेही विधि वासै ।
ऊगमीयै आदीत, पुहवि अन्धकार पणासै ।
तजी प्राण माणंत पुत्रां ससी, अंग पराक्रम त्यां अछै ।
जिनहरख वहस्सै बोलीयौ, नयणै मो दीठो न छै ॥९॥
धमधमीयो करि क्रोध, भुवी कुण करै सरभर ।
हुव करतो हालीयो, प्राण काढुं कर पाधर ।
संख राव पंखवाव, लहे दर तिके भुयंगम ।

मो सिरखै मदमस्त, कवण आसै मांडे क्रम।
छिपि जाय रिखे इन्द्रजालीयो, अथवा न्हासे जाणओ।
जिनहरख तास जीपुं नहीं, तो माता अप्रमाण मो ॥१०॥
हुओ चित्त हेरान, देखि दीदार दहल्ले।
मुरक्रोड़ां मांडणी, भुरज कोसीसां भल्ले।
बैठी परषद बार, आए सुर राव ओलग्गे।
दीयै धरम उपदेस, भवांचा दालिद्द भग्गै।
सखरी सुमिठ वाणी सुरस, गरजे जोजन गामिनी।
जिनहरख रूप जगदीस रो, किना दीपे माणक दिनमणि ॥११॥
ब्रह्मा किना विरंच, वेद करता कि विसंभर।
विसन रूप वाचीजै, धरम धोरि कि धुरंधर।
उदयो कोय अदित, गहल अन्धार गमाडण।
निसिरावगुणो सीतल निपट, सायर जिम गहरो सही।
जिनहरख कोइ अवतार जपि, नर पाधर दीसै नहीं ॥१२॥
ऊभो रहयो अबोल, वीर ले नाम बोलायो।
आव आव दुजराव, वाणि मीठी वतलायो।
कहि मो जाणे केम, नाम तो कदे न सुणीयो।
दीठो नहीं पिण कदे, भगति सों आदर भणीयो।
नर कोण जिको मुझ नोलखे, जाणीतल हुं त्रय जगत।
जिनहरख सुजस गावै सको, पावन हुं हुईज पवित्र ॥१३॥
जाणे छै मो जोर, तेण बीहतो तरज्जे।

काय वलि करसी वाद, देखि दिल भीतर दझे ।
पिण मेल्हु नहीं परति, हिवै वादी हारविसुं ।
मो आगे कुण मात्र, गहमातो गारव सुं ।
अरिहंत सन्मुख ईख नैं, वलि करि जाय न बोलणो ।
जिनहरख अजे बल अटकलुं, जगपति रो जांणपणो ॥१४॥
आछै एक संदेह, मूलगो मो मन माहै ।
दीठा तीन दकार, वेद समरति अवगाहे ।
न पडे तास निरत्त, अरथ रहीयो मो आगै ।
जाणुं तोहिज जाण, भरम जो मन रो भागै ।
कहि अरथ निसंकित मुझ करै, गुरु करि तो मानुं गिणुं ।
जिनहर्ष विन्हे कर जोडिनैं, भगति करैं कीरति भणुं ॥१५॥
अन्तरजामी आप, कथन विण पूछयां कहियो ।
वेद दकार विचार, रहस तो हूंती रहियो ।
दान दया दम देह, अरथ ओहीज छौ इणरो ।
ए तीने आदरो, हठ छोड़ वे हियेरो ।
अन्धार मिट्यो अभिमान चो, माण मोडि मद छोड़िनै ।
जिनहरख चरण जगदीस रा, नमीयो वेकर जोडिनै ॥१६॥
नमो नमो जग नाथ, नमो निरलेप निरंजण ।
नमो नमो निकलंक, नमो भावठि भय भंजण ।
नमो ज्ञान गुण गेह, नमो कुमति जड़ कापण ।
नमो अनड़ उत्थपण, नमो थिर मारग थापण ।

सुख करण नमो असरण सरण, अपराधी नर उधरण।
जिणहरख नमो गोतम जपै, तारि तारि तारण तरण ॥१७॥
प्रभु पय कमल वंदाड़ि, साध चो वेष समप्पे।
आतम व्रत उच्चरे, धरम धोरी थिर थप्पे।
कर थापे सिर कमल, तीन पद श्रवणे तवीया।
वीर सधीर वजीर, ठोड गणधर ची ठवीया।
पूर्व करे चवदह प्रगट, मोटो साध अगाध मति।
जिनहरख सदा मंगलकरण, गोतम गणधर अगम गति ॥१८॥
भणां लब्धि भंडार, सदा सुविनीत सनेही।
सकल जाण शासत्र, कहा मुख ओपम केही।
गिणां प्रथम गणधार, कार नह लोपे कोई।
आप कन्है अणहुंत, अवर केवल अधिकाई।
करजोड़ी एम गोतम कहे, हेल हुसी वैकुंठ विना।
जिनहरख प्रकासो वीर जिन, केवल उपजसी कि ना ? ॥१९॥
वदै ताम महावीर, नेह साकल नांगलीयो।
मो उपर तो मोह, तेण केवल नह कलीयो।
भमिस्युं हुं भव मझि, वीर सहीनाण बतावै।
असटापद आरुहै, परम पद निहचै पावै।
सुप्रमाण वचन करि संचरे, चढीयो असटापद चतुर।
दुय आठ च्यारि जिनहरख दस, धीर हुई नमीया ज धुर ॥२०॥
ऊतरीयो ऊमहे, खांति सुं प्रभु दिस खड़ीया।

पनरहसै त्रय पेखि, पाय सह तापस पड़ीया।
प्रतिबोधे पारणो, जुगति परमांन्न जिमावे।
परवरीयो परिवार, प्रेम सुं लागे पाये।
कर धरूं सोई केवली, किम नहीं मो केवलसिरी।
जिनहरख छेह आपण जइ, विन्हे हुस्यां बराबरी ॥२१॥
जगगुरु वीर जिणंद, मरण जाण्यो मन मांहे।
गौतम मेल्ही गांम, सिद्धपुर आप सिद्धाये।
समाचार सांभले, चित्त मांहे चींतवीयो।
कैरो ही नहीं कोय, लाह विण युं हीलवीयो।
मन माहि जांणीयो मांगसी, केवल हठ करि मो कन्है।
जिनहरख कारिमो नेह करि, वीर समायो छेह वलि ॥२२॥
भलो कियो भगवंत, विटकाग्यो केड़ छोड़ायो।
.... ॥
लारै मो लागमी, राडि करसि के रड़सी।
बालक जिम बोलसी, काइ पालव पाकड़सी।
वालीयो जीव गोतम वलि, वारू ज्ञान विमासियो।
जिनहरख ज्योति जग चक्ख जिम, केवलज्ञान प्रकासीयो ॥२३॥
केवल महिमा कीध, अमर सगला मिलि आया।
आखै तहि उपदेश, अधिक प्रतिबोध उपाया।
वसिया वरस पंचास, भोग गृहवास भोगवीया।
वरस त्रीस बखांण, जुगति संयम जोगवीया।

वलि वरस बार केवल वसे, वरस आऊ सहु वाणवै ।
जिनहरख कहै गोतम जयो, मोख तणा सुख माणवै ॥२४॥
अंगूठै अमृत वसै, मुख मीठी वाणी ।
करै भाव त्यां करै, निमिष मां केवल जाणी ।
निवसै जेरै नाम, कामधेन कलपतर ।
चिंतामणि चित चाहि, आस पूरण अपरंपर ।
श्रीसोम वाणारिस सुख करण, सीस जपै जिनहरख जस ।
गणधार सार गोतम रा, कवित्त पच्चीस किया सरस ॥२५॥

इति श्री गोतम पच्चीसी सम्पूर्ण

नामे नव निध होय, कोइ गंजे नही केवा ।
पिसुण लगै लुलि पाय, नूर वाधे नित मेवा ।
साहण वाहण साज, राज रिधि अधिकी आपै ।
लोक लाज मरजाद, थोक सरला थिर थापै ।
प्रह ऊठी नाम लीधां पछी, लाभ लोभ लखमी मिलै ।
जिनहरख सदा गोतम जपो, विरुवा दुख जायै विलै ॥१॥

गौतम स्वाध्यायः

ढाल ॥ विलसइ रिद्धि समृद्धि मिली ॥ एहनी

मन वंछित कमला आइ मिलइ, दुख दोहग चिंता दूरि टलइ ।
दुसमण लागु नवि कोइ कलइ, गौतम नामइ सहु आसफलइ ॥१॥
दिन प्रति उछरंग सुरंग घणा, निर्घोष पडइ वाजित्र तणा ।

काई न हुवइ घरमाहे कुमणा, प्रहउठी श्री गौतम नमणा ॥२॥
अनमी नर पाए आइ नमइ, असई कीरति जगमांहि रमइ ।
सहु कोनइ जेहनउ सुजस गमइ, गौतम समरइ जे प्रात समइ ॥३॥
हयगय पयदल आगलि चालइ, बलवंता अरीयण दल पालइ ।
काई पीड़ा अंगे नवि सालइ, श्री गौतम सुख संपति आलइ ॥४॥
श्री वीर तणे वचने उच्चर्या, व्रत पंच घणइ उच्छाह धर्या ।
चउदे पूरव खिणमाहि कर्या, अठावीस लबधि भंडार भर्या ॥५॥
चढ़ीया अष्टापद गिरि उपरइ, चउवीस जुहार्या जिण सुपरइ ।
प्रतिबोध्या तापस सय पनरइ, कर फरसइ केवलन्यान वरइ ॥६॥
वसुभूति पिता पुहवी माया, इंद्रभूति नाम प्रणमुं पाया ।
गौतम-गौतम गोत्रइं पाया, कंचण वरणी दीपइ काया ॥७॥
पहिलउ चेलउ श्री वीर तणउ, पहिलउ गणधर पिणि एह गिणउ ।
गुरु ऊपरि जेहनउ प्रेम घणउ, श्री गौतम नउ कीजउइ सरणउ ॥८॥
सुविनीति भली रीतइ विचरइ, सहु प्राणी नइ उपगार करे ।
श्री वीर वचन निज रिदय धरइ, संसार जलधि दुख लहर तिरइ ॥९
सुरपति नरपति सेवा सारे, जसु महिमा भूमंडल सारइ ।
प्रभु जाण जपइ जे दिल सारे, मन वंछित तास तुरत सारइ ॥१०॥
घर घरिणी मन हरिणी लहीये, सुत दरसण देखी गह गहीयइ ।
श्री गौतमना जउ पग महीयइ, दिन-रात सदा सुखमां रहीये ॥११
मन गमता भोजन नित मेवा, घृत घोल तंबोल मिलइ मेवा ।
सुखमाहि झिलइ जिमगज रेवा, गौतमनी जउ कीजइ सेवा ॥१२॥

पहिरण वागा ओढण खासा, सिरि पाग जरी सोहइ खासा ।
घर मंदिर सज्या सुविलासा, तकीया सुकुमाल बिहुं पासा ॥१३॥
गौ कामधेनु वंछित पूरइ, तरु कल्पवृक्ष चिंता चूरइ ।
मणि रयण गमइ दालिद दूरइ, गौतम नामे अधिकइ नूरइ ॥१४॥
गौतम-गौतम जे प्रातः जपइ, तेहना पातक क्षणमाहि कपइ ।
घन करम भरम श्रम विगर खपइ, जिनहरख दिवाकर जिनप्रतपइ १५

श्री सुधर्म्म स्वाध्याय

ढाल ।। श्री नवकार जपउ मन रगइ ।। एहनी

वीर तणउ गणधर पटधारी, नमीयइ सोहम सामिरी माई ।
महिमा सागर गुण वयरागर, लहीये नव निधि नामि री माई ।।१वी।।
गाम कोल्लाक तणउ जे वासी, धम्मिल विप्र सुजाण री माई ।
स्मृति शास्त्र विद्यानउ पाठक, जाणइ वेद पुराण री माई ॥२वी॥
तसु घरि नारि भद्दिला नामइ, तास उअर अवतार री माई ।
चउदे विद्या चतुर विचक्षण, चालइ कुल आचाररी माई ॥वी॥
वरस पंचास तणे पर्यंतइं, वीर पासि तिणि वार री माई ।
आदर मुनि मारग आदरीयउ, पाम्यउ पद गणधाररी माई॥४वी॥
त्रीस वरस प्रभु सेवासारी, छद्मस्थ पणे गुण खाणि री माई ।
वीस वर्ष वर केवल पाल्युं, सत वर्षायु प्रमाण री माई ॥५॥
आठ वरस प्रभु सिव गत केडइ, पाल्युं केवल सार री माई ।
भव्य तणा संसय अपहरतउ, चरण करण भंडार री माई ॥६वी॥

राजगृह नयरइं सिव पहुंता, पाम्या सुख अपार री माई।
कहे जिनहरख नमुं चितलाइ, श्री सोहम गणधार री माई॥७वी॥

श्री इग्यारे गणधर स्वाध्याय

ढाल ॥ प्रभु नरक पडतउ राखीयइ ॥ एहनी

गणधर इग्यारे गाइये, श्री वीर तणा मुख्य सीस रे।
जेहने नामइ सहु सुख लहीये, पूजे सयल जगीस रे॥१ग॥
श्री इंद्रभूति पहिलउ भलउ, गौतम गोत्र पवित्र रे।
बीजउ अग्निभूति प्रणमीजे, जीव सहूना मित्र रे॥२ग॥
वायुभूति त्रीजउ गणधारी, त्रिणे भाई एह रे।
चउथउ व्यक्त चतुर्गति छेदे, धरिये तेहसुं नेहरे॥३ग॥
श्री सुधर्म पंचम गति दायक, वीर तणउ पटधार रे।
मंडित छठे गणधर कहीये, पाम्यउ भवनउ पार रे॥४ग॥
सातमउ मोरीपुत्र कहीजे, श्रुतज्ञानी सिरदार रे।
वीर सीष आठमउ अकंपित, करुणा रस भंडार रे॥५ग॥
नवमुं अचलभ्राता स्वामी, त्राता जीव निकाय रे।
मेतारज दसमउ गण नायक, सुर नर प्रणमे पाय रे॥६ग॥
श्री प्रभास इग्यारमउ प्रणमुं, गणधारी गुणवंत रे।
वीर तणा इग्यारे गणधर, ग्रहसम जेह जपंत रे॥७ग॥
तेह तणइ घर आंगण निवसे, कामधेनु सुरवृक्ष रे।
आपे सुख जिनहरख सुगतिना, ध्यावे जे परतक्ष रे॥८ग॥

इग्यारह गणधर पद

प्रातसमै उठी प्रणमियै, गरुआ गणधार।
वीर जिणसर थापीया, अनुपम इग्यार ॥१॥ प्रात०॥
इंद्रभूति[1] श्री अगनिभूति[2], वायभूति[3] कहाय।
व्यक्त[4] सुधर्मा[5] स्वामिसुं, रहीये लयलाय ॥२॥ ॥प्रा०
मंडित[6] मोरीपुत्रए[7] अकम्पित[8] उल्हास।
अचलभ्राता[9] आखियै, मेतार्य[10] प्रभास[11] ॥३॥ प्रा०
ए गणधर श्री वीरना, सुखकर सुविसाल।
थाहज्यो माहरो वंदणा, जिनहरख त्रिकाल ॥४॥ प्रा०

इति इग्यारह गणधर पदं

पं० सभाचंद लिखितं मुं० श्री किसनदासजी पठनार्थं ॥

श्रुतकेवली पदं

राग—भैरव

श्रुत केवली नमुं प्रह समै, नाम लियंतां पातिक गमै ॥श्रु०॥
प्रभव सिज्जंभव सुख दातार, यशोभद्र उत्तम आचार ॥श्रु०॥
श्री संभूतविजै सुविचार, भद्रबाहु षटकाय आधार ॥श्रु०॥
स्थूलिभद्र ब्रह्मचार विख्यात, षट(६) श्रुत केवली एह कहात ॥श्रु०
मन सुध जपतां भव दुख जात, कहै जिनहरख पवित्र हुवैगात ॥श्रु०॥

इति श्री श्रुत केवली पदम्

—०—

श्री थूलिभद्रमुनि स्वाध्याय

ढाल ॥ जाटणीनी ॥

पिउडा आवउ हो मंदिर आपणे, ऊभी जोऊं थांहरी वाट।
तुझ विणि सूना हो मालीया, तुझ विणि मनमां ऊचाट ॥१पि॥
विणि अवगुण कांइ परिहरी, वालंभ चतुर सुजाण।
हुंतउ थांहरा पगरी मोजड़ी, माहरा जीवन प्राण ॥२पि॥
तुझ विणि निसि दिन दोहिला, जायइ वरस समान।
नयणे आवे नहीं नींदडी, न रुचे दीठा जल धान ॥३पि॥
नेह लगाई ने तुं गयउ, तेह दहइ मुझ गात।
झूरि झूरि पंजर हुं थई, तुझ विणि दुखणी दिन राति ॥४पि॥
एहवा निसनेही कां थया, कां थया कठिण कठोर।
एतला दिन सुख भोगव्या, तुही न भीनी कोर ॥५पि॥
प्रीतम प्रीति न तोडीये, लागी जेह अमूल।
सुगुणा केरी हो प्रीतडी, जाणि सुगंधा फूल ॥६पि॥
दरसण दीजे हो करि मया, ल्यउ जोवन तन लाह।
ए अवसर छे दोहिलउ, हुं नारी तुं नाह ॥७पि॥
नागर सागर गुण तणा, थूलिभद्र आव्या चउमासि।
कोस्या हरिखी मनमां घणुं, सफल थई मुझ आस ॥८पि॥
प्रतिबोधी कोस्या कामिनी, करि चाल्या चउमासि।
धन धन थूलिभद्र मुनिवरु, गुण जिनहरख प्रकासि ॥९पि॥

श्री थूलिभद्र बारमासा गीतं

ढाल ॥ माखीनी ॥

श्रावण आयउ वालहा, वरसे धार अखंड । साहिबीया
इणि रिति सहु को घरि रहइ, घरिणी सुं हित मंडि ॥१सा॥
कोश्या नारी इम कहइ, सांभलि थूलिभद्र नाह ।सा।
विणि अवगुण परिहरि गया, क्यां देई गया दाह ॥सा२को॥
भादरवु गाजे भर्यु, गयण न मावे वीज ।सा।
ऊबट जल नदीयां वहइ, निरखि निरखि मन खीज ॥सा३को॥
आसू आस्या पूरवउ, आ तन मेलउ द्यउ मुझ ।सा।
कठिण वियोग न सहि सकुं, अरज करूं छुं तुझ ॥सा४को॥
काती कंत घर आवीयउ, घरि घरि दीवा ओलि ।सा॥
परव दीवाली तुझ विना, मुझ केहउ रंग रोल ॥सा५को॥
मगसिर मासइं चमकीयुं, टाढउ गाढउ सीत ।सा॥
पूरव प्रीति संभारी नइ, आइ मिलउ मोरा मीत ॥सा६को॥
पोसइ काया सोसवी, सीत न सहणउ जाइ ।सा।
नयणे नावे नींदडी, जागत रयणि विहाइ ॥सा७को॥
माहइं कोमल सेजडी, सूईयइ मिलि मिलि कंत ।
करीये मननी वातडी, पूरवीयइ मुझ खंति ॥सा८को॥
फागुण होली कीजीये, रमीये फाग उलास ।सा।
अबीर गुलाल उडावीये, कीजे विविध विलास ॥सा९को॥
चैत्रइं नव पल्लव थई, सगली ही वणराइ ।सा।

पिणि काया नवि पालवी, निति झूकंती जाइ ॥सा१०कों॥
कोइल करइ टहकड़ा, आव्यउ मास वैसाख ।स।
मउर्या तरुअर आंबला, मउरी वन-वन द्राख ॥सा१२कों॥
जेठ तपइ अति आकरउ, दाझइ मोरी देह ।सा।
मांखण जिम तन परघलइ, टाढउ करि धरि नेह ॥सा१२कों॥
आसाढइ प्रिउ आवीया, आव्युं पावस देखि ।सा।
मन नी मोझ सफली थई, पाय लागी सुविसेस ॥सा१३कों॥
भले पधार्या नाहलीया, पूरेवा मुझ आस ।सा।
संभारी दिवसे घणं, राखउ हिवे प्रिय पास ॥सा१४कों॥
चित्रसाली मुनिवर रह्या, कोसि करइ हावभाव ।सा।
पिणि लागा नही मुनि भणी, काम वचन ना घाव ॥सा१५कों॥
कोस्या वेस्या मंदिरे, करि थूलिभद्र चउमास ।सा।
प्रतिबोधि सुर सुख लह्या, गुण जिनहरख प्रकाश ॥सा१६कों॥

श्री थूलभद्र बारहमास

ढाल ॥ आख्यान नी ॥

प्रथम प्रणमुं मात सरसत, चरण पंकज दोय रे ।
प्रह ऊठि सेवुं भाव आणी, बुद्धि निर्मल होइ रे ॥
जे ज्ञानि हीणा देह खीणा, रहइ दीणा जेह रे ।
सुपसाय माय तणइ नीरोगी, थाय पंडित तेह रे ॥
वाणी विसाला अति रसाला, मात द्यउ सरसत्ति रे ।
हुं गाइसुं रिपि बारमासउ, थुलिभद्र मुनिपत्ति रे ॥

जिणि कोसि नइ प्रतिबोध देइ, शील समकित दीधरे।
धन धन्न ते गुणवंत मुनिवर, नाम अविचल कीध रे॥
असी च्यारि(८४) मिली चउवीसी, नाम रहिस्ये जास रे।
जस नाम निरमल थाय रसना, हीये होइ उलास रे॥ १॥
मास मगसिर सीत चमक्युं, प्रीति तोडी नाह रे।
तुम्हे जाइ सहीयां कंत ल्यावउ, गयउ देई दाह रे॥
जिणि पाछिली निज प्रीति छंडी, लीयउ संयम भार रे।
कोस्यात नारी विरह माती, लोयणे जलधार रे॥
मुझ प्राण न रहइ प्राणपति विणि, प्राण जास्ये ऊडिरे।
तुमने कहु छुं वात साची, जाणिज्यो मत कूड रे॥
मुझ मांहि अवगुण किसउ दीठउ, नाह दीधउ छेहरे।
मुझ प्राण परि राखतउ प्रिउ, किहाँ गयुं ते नेह रे॥
कंत कीधउ कठिण हीयडु, मुझ जाणी पीडि रे।
जउ जाणती हु एह जास्ये, राखती उर भीडी रे॥ २॥
इणि पोस मासे रोस कीधउ, दोष दोषइ कत रे।
तुम्हे सखी पूछउ कंतनइ जई, किसी तमने चिंत रे॥
हु चमकि ऊठु एकली निसि, निरखि जोउ नाथ रे।
तउ नाथ देखु नहीं पासे, भुंइ पड्या वे हाथ रे॥
मइ कदी तुझ नइ पूठि नापी, मुझ देई गयउ पूठि रे।
दुख ताप विरह लगाइ तउ, चलियउ तुं ऊठि रे॥
मुझ एकली नइ सीत व्यापे, काम कापइ अंग रे।

तुझ विनती हुं करूं प्रीतम, राखि रूडउ रंग रे ॥
मुझ देह कोमल कमल दल सम, कठिन वाले हीम रे।
मुझ प्राण थास्ये पाहुणा प्रिउ, कूड कहुं तउ नीम रे।
इणि टाढ मइं किम गाढ़ कीजे, रंग रमीये सेज रे।
थूलभद्र कोशा कहे नारी, हरख मिलीये हेज रे॥ ३ ॥
माह मासें कांइ नासे, राखि पासे नारि रे।
करि कठिन हीयडु गयउ पीयडउ, करू कासि पुकार रे॥
इणि कारिमी करि प्रीति प्रीतम, लोयउ मुझ चित चोर रे।
पिणि एहनउ चित किमि न भीनउ, जाणि पाहण कोर रे॥
हुं जाणती ए कंत मोरउ, एहनीं हुं नारि रे।
पिणि इणि धूतारे मुझ धूती, मै न जाणी सार रे॥
प्रथम पहिली जाणती जउ, प्रीति थी दुख होइ रे।
तउ नगर पडहउ फेरती, मत प्रीति करिज्यो कोइ रे॥
मन ऊपरिलो प्रीति कीधी, माहि कठिण कठोर रे।
दीसतउ सुंदर वदन हसतउ, जिसन पाकुं बोर रे॥ ४ ॥
मास फागुण फरहर्यू सखी, नारी नर उछाह रे।
हुं फाग किणि सुं रमुं सहीयां, अजी नायउ नाह रे॥
संयोगिणी मिलि कंत साथइ, रमइ लाल गुलाल रे।
चंपेल तेल फूलेल मेली, करइ राता गाल रे॥
भला चंग मृदंग वाजे, गीत राग धमाल रे।
करइ क्रीडा तजी व्रीडा, जल तणी सुविसाल रे॥

इणि परइं होली रमइ टोली, पहिर चोली सोहती ।
निज कंत दोली फिरइ भोली, मानिनी मन मोहती ॥
मुझ प्राणनाथ मनाइ ल्यावउ, खेलीये मन रंग रे ।
निज नाथ साथि विलास कीजे, रागरंग सुरंग रे ॥ ५ ॥
चतुर चैत्र सुहामणउ, आयउ राज वसंत रे ।
तरु पान पाका पडी थाका, नवा पल्लव हुंत रे ॥
दव तणा दाधा जेह तरुवर, तांह माथइ फूल रे ।
हुं नाह विरह वियोग दाधी, देखि माहरउ स्नूल रे ॥
बहु मूल भूषण अंग दूषण, पहिरीया न सुहाय रे ।
पटकूल चरणा चीर वरणा, फरस कंटक थाय रे ।
कुण नाह विणि सिणगार देखइ, रीझवुं हुं कासि रे ।
किणि साथ मन नी वात करीये, नही प्रीतम पासि रे॥
कोई कहइ प्रीतम आवइ तउ, दीउं नवसर हार रे ।
वली कनक जीभ घड़ाइ आपुं, वली लाख दीनार रे ॥६॥
सहु सुणउ सहीयां कहइ कोस्या, आवीयउ वैसाख रे ।
वनखंड फलीया सयल तरुअर, फली दाडिम द्राक्षरे ॥
सहकार बइठी कोकिला, बोलत मधुरइ सादरे ।
पापिणी पिउ पिउ संभारइ, वधइ मन विसवाद रे ॥
मुझ अंग योवन बाग फूल्यउ, माण गर वर कंत रे ।
ते गयउ रस नउ लेणहारउ, सबल मनमें चिंत रे ॥
मन चिंत केहने कहुं सहीयां, दीह जिमतिम जाइ रे ।

पिणि पापिणी ए राति दूभर, मुझ छमासी थाइ रे ॥
सेज सूता सुपन माहे, मिलइ प्रीतम आइ रे।
उघाड़ि नयण निहालि देखुं, नाह नासी जाइ रे ॥७॥
जेठ जेठा थया वासर, तपे आतप जोर रे।
रवि किरण लागइ जाणि पावक, करूं आचि निहोर रे ॥
लू कठिण वायइ क्षीण थायइ, देह आकुल व्याकुली।
ढ़ीला तराणी हुवइ कांकण, हाथ थी जाइ नीकली ॥
इणि रितइं कंता कांइं मूक्या, गउख मंदिर मालीयां।
दधिना करंब कपूर वासित, नारी प्रीसइ थालीयां ॥
एकवार आवी मिलउ प्रीतम, ताप तन नउ ओल्हवउ।
करि अङ्ग सीतल संग करिनइ, प्रेम रस पाई ध्रवउ ॥
तुझ विना सूल समान आभ्रण, अंग लागइ सर सरा।
बावना चंदण अगनि सरिसा, मुज्झ लागइ आकरा ॥८॥
आषाढ़ आयउ गाढ करिनइ, सूर वादल छाईयउ
वरसात रिति आई सहेली, नाह अजी नावियउ ॥
निज महल महिला सांभर्या, परदेशीया नइ पिणि सखी।
इणि कठिन नाह वीसारिमूंकी, प्रीति कीधी एक पखी ॥
मानसरोवर भणी चाल्या, हंसला पिणि हरसीया।
पंखीए पिणि नीड़ घाल्या, नरे घर फ़ेरी कीया ॥
नरनारी मिलीया विरह टलीया, सहु थई संयोगिणी।
निर्दोष छोडी प्रीति तोडि, कंत कीध वियोगिणी ॥

थूलभद्र गुरुनी आगन्या लेई, आवीया कोस्या घरे ।
चउमासि करिवा निरखि हरखी, सफल दिन थयउ आजरे ॥६॥
मास श्रावण चित्रसाली, मुनि रह्या चउमासि रे ।
सुचि नीर भंजन कंत रंजन, चीर पहिर्या सासि रे ॥
निलवट्ट तिलक बनाइ केसर, नेत्र काजल अंजीया ।
रवि तेज मंडल कांन कुंडल, कनक सीका मंजीया ॥
कनक नथ मोती मुकर जोती, पानबीडा चावती ।
कोटइंत पहिर्या हार सुंदर, कनकमाला फावती ॥
झूमणउ पारा हार तूसी, चाक भ्रमर सीसफूल रे ।
फूमतउ सोहइ सीस वेणी, घूमतउ बहु मूल रे ॥
कर चूड़ि खलकइ कनक फेरी, कांकणे कर सोहतउ ।
वहिरखा वींटी गूजरी, अंगूठडी मन (मन) मोहतउ ॥
चरणेत जेहउ वींछीया, अण वट्ट पहिरि पटउलडी ।
अतलस्स चरणउ पंच पयनी, कांचली उरसुं जडी ॥
सिणगार सोलह सज्या सुंदरी, मदन माती मानिनी ।
थूलभद्र आगलि आवि बइठी, चतुर चित चंद्रानती ॥१०॥
भाद्रवे गाज आवाज करि ने, आवीयउ जलधार रे ।
घन घटा घोर अन्धार चिहुं दिसि, वहइ नीर आधार रे ॥
चमकंत चपला डरुं अबला, कंत मेलउ आपि रे ।
मुझ प्राण जाता राखि कंता, विरहिणी दुख कापि रे ॥
बापीयडा पीउ पीउ करे पीउ, सांभरे मुझ राति रे ।

हीयडं त सालइ साल नी परि, कहुं केही वात रे ॥
इणि रितइं पावस जीव नहीं वसि, मिलउ बांह पसारि रे।
मुझ साथि भोग वियोग टाली, भोगवउ भरतार रे ॥
एवडउ हठ न कीजे स्वामि, प्रीति पूरवि पालि रे।
मुझ पंच बाण प्रहार लागै, राखि राखि दयाल रे ॥११॥
एहनउ हीयडउ वज्र सरीखउ, मिलइ न अन्तर खोलि रे।
चांद्रणी रयणी दुख दइणी, कामिणी विणि कंत रे।
बहु काम व्यापे हीयउ कापइ, कापि दुख गुणवंत रे ॥
बहु गया वासर रह्या थोड़ा, निठुर हिवे हठ छोड़ि रे।
ए गयुं जोबन आविस्ये नहीं, कहुं, बे कर जोड़ि रे ॥
सिसि किरण लागइ बाण सरिखा, बाण मइं न खमाइ रे।
राखइत प्रीतम राखि तूं मुझ, प्राण नीसरी जाइ रे।
नवरंग सेज विलास कीजे, टालि विरह वियोग रे।
तुं कंत हुं गुणवंत नारी, मिल्यो ए संयोग रे ॥१२॥
कातीत कंता आवीयउ, वहि गयउ हिवे चउमासि रे।
मुझ वयण चित न भेदीयउ, भागउ त मन वेसास रे ॥
दीवा करे घरि-घरि दीवाली, करे परम उच्छाह रे।
मुझ नाह म्हाण न मेल्हियउ, तन दीयउ होली दाह रे ॥
निज सखी मेली तान भेली, करे निरुपम नृत्य रे।
कंसाल ताल मृदंग धप मप, रीझवे प्रिय चित्त रे ॥
थेइ थेइ उच्चरइ मुखि, झिझिकि झंझें झझरा।

गिधु धौंकि दों दों तिवल वाजइ, झिमिकि रमिझिम घुग्घरा ॥
देशी दिखावे राग गावे, कठिण चित पिणि परघलइ ।
थूलभद्र चित भेद्यउ नही किम, मेरुगिरि चाल्यु चलइ ॥१३॥
थूलभद्र कहे कोश्या सुणउ, विपय विषफल सारिखा ।
ए थकी लहीये नरक ना दुख, तेहनउ कोइ न सखा ॥
प्रतिवोध देई सील समकित, ऊचराव्यउ तास रे ।
कोश्या कहे धन धन्न थूलभद्र, मुझ दीयउ सुख वास रे ॥
एहवा सज्जन थोडला, जे करे धर्म प्रकाश रे ।
मुनिराय निर्मल सील पाली, आविया गुरु पासिरे ॥
गुरु कहे आदर मान देई, दुक्कर दुक्कर कार रे ।
मसि कोटर्डामां वस्त्र निर्मल, रहे नहीं निरधार रे ॥
इम शील पालइ धन्य ते नर, तास नमीये पाय रे ।
जिनहरख वारहमास भणता, रिद्धि नव निधि थाय रे ॥१४॥
श्री थूलभद्र बार महीना लिखितान्येतत्पत्राणि जिनहर्षेण ।

थूलभद्र चउमासा

॥ ढाल चद्रायणानी ॥

श्रावण आयउ साहिबा रे, झिरमिर वरसइ मेहो ।
झव झव झवकइ वीजली रे, दाझइ मोरी देहो ॥
दाझइ मोरी देह रे वाल्हा, हीयडइ लागइ तीखा भाला ।
प्रिउ चीतारइ चातक काला, मो विरहिणि ना कउंण हवाला ॥१जी॥
पीयाजी रे तुमे कांइ थया निसनेह, सांभलि वातडी रे ।

एतउ मातउ पावस मास, दूभर रातडी रे ।आं०।
ऊमटि आव्यउ वालहा रे, भादरवे जलधारो ॥
नयणे जलधर ऊल्हर्यउरे, जाग्यउ विरह अपारो ।
जाग्यउ विरह अपार पियारा, तुझ पाखइ किम रहुं निरधारा ॥
तुं प्रीतम मुझ प्राण आधारा, विरह बुझाइ करउ उपगारा ॥२जी॥
आसू मो मन आसडी रे, सूईयइ एकणि सेजो ।
करीयइ मननी वातडी रे, हीयडइ आणी हेजो ॥
हीयडइ आणी हेज निहेजा, ढाहइ कांइ चिण्या ए चेजा ।
हेजइं मिलिकइ तउ मुझ लेजा, प्रीति करे कांइ रेजा रेजा ॥३जी॥
काती छाती मइं वहइ रे, कह्यउ न मानइ कंतो ।
ए वाल्हउ नीठुर थयउ रे, कांइ न पूरी खंतो ॥
कांई न पूरी खंति हीयानी, आरति सबलि नेह कीयानी ।
ईणइ न लही पीडि तीयानी, आस किसी हिवइ मुझ जीयानी ॥४जी॥
च्यारे मास उलास सुं रे, श्री थूलिभद्र जयकारो ।
कोशा नारी बूझवी रे, पाय प्रणमुं वारंवारो ॥
पाय प्रणमुं वार-वार सदाइ, मोटा साधु तणी अधिकाइ ।
नारी संगति सील रहाई, लही जगत जिनहरख भलाई ॥५जी॥

स्थूलिभद्र गीत

भलै ऊगउ दिवस प्रमाण, पियाजी ! आज रौ सौभागी ।
मैं तो दरसण दीठौ वाट, जोवंता राज रौ ॥ सौ० ॥
भरि भरि थाल वधावौ, हो गज मोतीयां, सो०

म्हारी आँखड़िया उमाहो, निसदिन जोतीयां ॥१॥ सो०
ऊभी वेकर जोड़ कोस्या प्रिय आगलै, सो०
मुझ सफली कर अरदास, मनोरथ ज्युं फलै। सो०
थें तो महिलां आवो आज, कठिण चित क्युं थया
म्हारी पूरो वंछित आस, करौ मुझ सुं मया ॥२॥ सो०
थूलभद्र कहै सुणि कोस्या वात्त सुहामणी,
दे चौमास रहेवा थानिक मुझ भणी, सो०
... ...
ए चित्रसाली गोख सुरंगी जालियां ॥३॥ सो०
मुझ सुं साढा तीन रहे कर वेगली,
लेई वोल अमोल रह्यां तिहां मन रली,
षटरस भोजन सरस सदाई तिहाँ करै,
जोवन रूप अनूप विन्हेई इण परै ॥४॥
आयौ पावस मासक अम्बर गाजियौ,
ऊमट आयौ इंदक मेहा राजियौ,
काली कांठल मांहि क झबूकै वीजली,
वांहे वेहुं पसारि मिलुं पूजै रली ॥५॥
थारां भीभलीयां नैणा रा जाउं वारणै,
मैं तो कीधा सहु सिणगार, तम्हीणै कारणै।
... ...
तुं तो आवो ही हठ छोड़, हठीला नाहला ॥६॥

थैतो कांइ तजौ निरदोस, सलूणी कामिनी,
आ तो अपछर रे, अनुहार चलै गज गामिनी।
सरीआजी रा थे वीर, सधीरा हुइ रह्या,
मैं तो इण भव तोरा नाह, चरण सरणै ग्रह्या ॥७॥
तूं तो सुण कोस्या संसार, असार असासतो,
श्री जिनवर भाषित, धरम अछै इक सासतो।
सहु भोग संयोग, किंपाक सरीखा ए अछै,
समझि-समझि गुणवंत, कहिसि न कह्यो पछै ॥८॥
दे उपदेस विसेस, धरम सुं रीझवी,
धन धन थूलिभद्र जेणि, कोस्या प्रतिबूझवी।
सील तणो व्रत जेणि, धर्‌यो थइ श्राविका,
लुलि-लुलि लागी चरणे, पुण्य प्रभाविका ॥९॥
करि नै चौमास उल्हास, गुरां पासै गया,
दुक्कर दुक्कर कार, कही ऊभा थया।
पंच महाव्रत निरमल चित्त पालीया,
देव थया देवलोक तणा सुख भालिया ॥१०॥
एहवा जे मुनिवर गावे, जे गुण जीभड़ी,
जनम सफल दिन सफल, सफल थाये घड़ी।
चउरासी चौवीसी, नाम न जावसी,
कहै जिनहरख सुजांण, घणा सुख पावसी ॥११॥

दादाजी जेतारण थूंभ गीतम्

मनड़ौ उमाह्यउ दादा माहरउ, हो दादा जाणुं हो हुं तो
भेटुं थारां पाइ, थां परि वारी हो साहिब जी।
अलजौ तउ दादा थांरौ अति घणौ, हो दादा,
दरसण हो देखुं हियडै हरख न माइ ॥१ थां परि०॥
केसर चंदण दादा अगरजउ हो दादा, मांहे हो कस्तूरी मेल कपूर।
पगला हो पुजुं दादा प्रेम सुं हो दादा, संकट हो सगला जायइ दूर २
आरति चिंता दादा अपहरउ हो दादा,
वंछित हो वारू मनड़ा केरा पूर।
सेवक सुखीया दादा कीजीयइ हो दादा,
आराध्या आवौ आवौ वेग हजूर ॥ ३ ॥
एकण जीभइ दादा ताहरउ हो दादा,
किणपरि हो गाउं गाउं जस सोभाग।
मोटा तो विरचइ दादा नहीं कदे हो दादा,
सेवक हो ऊपरि राखौ राखौ राग ॥४॥
तो सुं तो दादा म्हारो मन मिल्यौ हो दादा,
बीजउ हो कोइ नावइ नावइ दाइ।
भमर विलूधौ दादा केतकी हो दादा,
कहौ नइ किम अरणी फूले जाइ ॥५॥
सीस नवाऊं दादा तुझ भणी हो दादा,
गाउं हो तुझ आगे गुण गीत।

सुनजर जोवौ दादा साम्हो हो दादा,
मुझ सुं हो पूरी पालौ पालौ प्रीत ॥६॥
परचौ तौ दादा ताहरो अति घणौ हो दादा,
खरतर संघ केरी पूरउ पूरउ आस।
कहइ जिनहरख उमेद सुं हो दादा,
थुंभ वण्यो थांहरौ जैतारण मइं खास ॥७॥
इति श्री दादाजी गीतं संवत् १७३५ वर्षे ॥ श्री

दादा जिनकुशलसूरि गीत

ढाल—सोहला री

सदगुरु सुणि अरदास हो, सेवक हो दादाजी।
सेवक कर जोड़े कहै हो।
पूरौ वंछित आस हो।
महियल हो. दा. म. म. जिण भलपण लहै हो ॥१॥
इण कलकाल मझार हो, तो सम हो दा. तो. तो. अवर बीजो नही हो
दीठां देव हजार हो, मनडै हो. दा. म. म. तूं मांन्यौ सही हो।२।
सीस धरुं तुझ आंण हो, बीजा हो दा. बी. बी. सहु अवहील नै हो।
तूं साचौ दीवांण हो. आपौ हो., दा. आ. आ. संपति लीलनै हो।३।
भावठि भाजै नाम हो. दरसण हो, दा. द. द. नवनिधि पांमीयै हो।
पूज्यां टलै विरांम हो. सदगुरु हो., दा. स. स. तिण सिर नामियैहो।४
जील्हागर जसु तात हो, दाखां हो. दा. दा. दा. दुनियां दीपतौ हो।
जैतसिरी प्रभुमात हो. तिहुअण हो, दा. ति. जस ताहरौ हो ॥५॥

कूरम नयण निहार हो. वंछित हो, दा. वंछित. व. सीझै माहरा हो।
तूं सेवक प्रतिपाल हो. प्र. दा. प्र. पूजे जग पग ताहरा हो ॥६॥
जिणचंदसूरि पटधार हो, खरतर हो. दा. ख. गछ सांनिधि करै हो।
अड़वड़ियां आधार हो साचौ हो, दा. सा. सा. खोटै अरै हो ।७।
अवर सुरासुर देव हो. करतां हो, दा. क. क. मुझ मन ऊभग्यौ हो।
हिव मैं लाधौ देव हो. तिण तुझ हो. दा. ति. ति. चरणे हूं लग्यौ हो८
श्री जिनकुशल सूरीसहो. हाजरि हो. दा. हा. हा. हुइ देखै किसुं हो।
साहिव तुझ सुजगीस हो, गावै हो, दा. गा. गा. गुण जिनहरख सुं हो६

॥ इति श्री जिनकुशलसूरि गीतं ॥

सवत् १७३५ वर्षे जेष्ट वदि १० दिने । पं० सभाचंद लि०

श्री गणेशजी रो छंद

संपति पूरै सेवकां, अंग वसै आसत्ति,
माण मोडि कर जोड़ि कर, गाइजे गणपत्ति ॥१॥
सूंडालो आखाँ सकल, सहू वातां समरत्थ,
अनमि नमावण अकल गति, अगणित जाण अरत्थ ॥२॥

॥ गाथा ॥

गवरी पूत गणेशं, हीयै सोहंत क्रिन्ह अहि सेस।
चंदद्ध भाल चढियं, पढीयं गुण सायरं वंदे ॥३॥
वंदे सुर नर त्रय वखत, थानिक थानिक थट्ट।
गावै जस मिलि मिल गुणी, गीत गुणे गहगट्ट ॥४॥

॥ छंद त्रोटक ॥

गहगट्ट सदा नर गीत गुणे, थिर थानिक थानिक जस्स थुणे
महिमा नव खंड अखंड महं, गह पूरत मत्त मसत्त गहं ॥५॥
झिग मिग निरमल नूर झिगै, आदीत दुवादस तेज अगै ।
वपु रूप वण्यो कहि केम कहाँ, लख लोक तुमीणँ पास लहां ॥६॥
गज सीस अधीस गजे गहटा, पूरंत पटा झरता पहटा,
घणघोर सजोर असाढ़ घटा, लहकंत इसा सिर साम लटा ॥७॥
भणि भाल अरद्ध ससी झलकै, क्रुपनंग भुयंग गले किलके ।
दीरग्घ अरग्घ इको दशनं, रस वाणि सुखांणि वदे रसनं ॥८॥
सुंडाल सचाल जडाल जडा, धमचाल सत्राल उथेल घड़ा ।
मछराल वहाल अचाल मतं, त्रुधियाल छंछाल रसाल वतं॥९॥
पेटाल फुंदाल सखै प्रघलं, सुकमाल वडाल नमै सकलं ।
किरणाल कृपाल तपै कमलं, उरमाल फूलाल वसै अमलं ॥१०॥
चढि मूपक वाहण पंथ चलै, त्रयलोक अधार अपाण तले ।
फरसी ग्रह सत्रव फंफरीयं, करि प्राण केवाण वसं करीयं ॥११॥
अनमी अरिनांमण जाय अडै, प्रभु कोप करै सिर रीठ पडै ।
महिपति सुरासुर आन मनै, कुमुखै जिण ऊपर कीध कनै ॥१२॥
श्रीयपति तणी जदि जान सझै, गड़ड़ंत मदोमत गोड गजे ।
हय पाखरीया हणणंत हठी, करि आरम्भ पारन कोइ कठी ॥१३॥
रथ पायक लायक रूकहथा, तकि तीख अणी मिल तान तथा ।

गड़ड़ै नीसांण सबद्द गिरे घमसाण मच्यो उछरंग घरे ॥१४॥
चतुरांग सुरां दलि सुं चलिया, हिव साथ विनायक जी हलीया ।
मिल माहोमाही मतो मतीयो, लछि लाभ पिता मति साथ लीयो
॥१५॥

घट ओघट घाट सहूल घणं, गणपति रहो मकरो गमणं ।
सहू मेलिह चल्या हरि जान सुरं, हेरम्बतरै हठ कोप करं ॥१६॥
करि रीस करामति फोरवीयां, कोइ जांण न पावे एम कीया
फिरीणा निसि पाछो साथ फिरै, कर जोड़ी मनाय अरज्ज करै ॥१७॥
महाराज थया अम्ह मूड मनं, पिण धोरी तूं हिज धन्न धनं
करुणा हिव दीनदयाल करौ, हठीयाल मनां सुं रीस हरो ॥१८॥
लखि वार पगे नमि साथ लियो, कुमखे गणपत्ति अचंभ किया ।
कहि केहा तुज्झ वखाण करां, सुर राय मानवी सीख सुरां ॥१९॥
महारुद्र तणौ सुत मोट मनं, धणीयाप धणी कर देह धनं ।
आतम थकी उपाय उमा, सरजीत करै थाप्यो सुरमां ॥२०॥
धरणी सिधि बुधि सुं प्रेम घणै, वर वींद थयो ज्युं इंद्र वणै ।
करि जोड़ि विन्हे नित सेव करै, उदियो बलवंत मुखां उचरै ॥२१॥
लछि लाभ सऊजम बेइ सुतं, जसु नाम कह्यां लछि लाभ युतं ।
कहतां तो नाथ विघन्न कटै, घट पाप खिणंतर मांहि घटे ॥२२॥
सुर कोटि तेतीस नमंति सदा, कोइ आंण न लोपे तुज्झ कदा ।
देवां चो आगेवाण दिपै, छल छिद्र सकोइ दूरि छिपै ॥२३॥
दुख भूत दईत खईस डरं, न लगै कोइ रोग निरोग नरं ।

धर ध्यान जिके मन मांहि धरै, भण्डार तिहां धन धान भरै ॥२४॥
गुण नीर कमण्डल हाथ ग्रहै, बीजै कर अंकुश सत्रवहै।
जपमाली झाले जाप जपै, कर हेकण मोदिक भूख कपै ॥२५॥
सेवकां सामि प्रसन्न सदा, कुमणा मन काय रहै न कदा।
केऱ्यां चो अंत तुरंत करै, पर दीपां आण समंद परै ॥२६॥
वाल्हेसर सेण मिलावै वेग, उचाट मिटे मिट जाय उदेग।
पछाडै सत्र करै पैमाल, नमै पग तेह सदाई निहाल ॥२७॥
वीवाह विषै तो थाप तठै, कहताज उपद्रव कोड़ कटै
लख लाभ विनायक नाम लीयां कीरति दिसो दिस जाप कियां॥२८

कलस—जाप कियां जस वास वास पूरण इधकारी।
नाम लीयां नवै निध अधिक साहिब उपगारी॥
पूरै वांछित प्रेम मनै मही रावल राजा।
गुण गायां गणपति तुरत तूसै दिन ताजा॥
सुवनीत नारि सकजा सुतन, महीयल मन चिंतत मिलै।
जिनहर्ष विनायक जस जपै तो जपियां दोहग टलै॥२६॥

इति श्री गणेशजी रो छंद सम्पूर्ण

देवी जी री स्तुति

दोहा

पारंभ करी परमेसरी, केहर चढी सकोप।
असुर तणा दल आयनै, अडीया सन्मुख ओप॥१॥

रगत नेंण रातं मुखी, रातंबर रो साल
सहस भुजे हथीयार सझि विड रूपण वैताल ॥२॥
असुर जिकै असलामरा, मिलीया वेढक मल्ल
देवीनैं देतां दलै, हूकल लागी हल्ल ॥३॥

छंद—पाढगति

हल्ल हल्ल लागी हूक टोलै ऊडै लोह टूक
सागिड़दा गिडदा वाजैसोक वेरियां विचाल।
सणणवहंत सर सूरिमा फिरै समर
गडड वाजंत गोला नाग्डिग्डिदा नाल ॥४॥
गाग्डि ग्डिदा गाजै गज ढालां सोहे नेज धजा
हैंवरां नरां हैंखार पामिजै न पार
सीहणी पलाणी सीह वेरियां तणो न बीह
हाग्डिग्डिदा हथियार हीवती हजार ॥५॥
दागिड गिडदा दीयै दोट चाग्डिग्डिदा चोट चोट
ईसरी रहे न ओट झूंझे झाझे झूल
खांड़ा तणी खाटि खड़ धाग्डि ग्डिग्डिदा पाड़ै धडा
चटका भरंती वाल त्रीबीया त्रिसूल ॥६॥
ना ग्डिदा घुरै नीसाण जंग मातो जम राण
जाग्डि ग्डिदा ढाल जांगी सिंधुडे सबद्द
धुंआ माण धिधिकट नारद नाचै निकट
ताग्डि ग्डिदा तता थेइ वाचंतो विहद्द ॥७॥

फाग्डिदा भरंति फाल केवीयांह ह्नाल काल,
खलकै रूहिर खाल गोडीया गयंद।
दोपीया निजर दीठ रोस माथै पाडै रीठ,
छाग्डिदा उतारै छाक माल्हती मयंद ॥८॥
खाग्डिग्डिदा थाट थाट झाग्डिग्डिदा दीयै झाट
चिढंती आराण वीच वाढंती विहंड।
महादेव मछराल माग्डिग्डिदा रुंडमाल
सोहे हीयडै सिणगार पाड़ीया प्रचंड ॥९॥
देत दलां लागी लीक भगवती निरभीक,
त्राहि त्राहि तुंही तुंही राखि राखि राखि।
महामाई महामाई पांण छोड़ कर आया पाय,
पाग्डिग्डिदा पालिपालि भाग्डिग्डिदा भाखि ॥१०॥

कलश

नागिड गिडदा भाखि असुर ज्युं तूल उडाये
निह स पडै नीसाण छोह अरियणां छुडाये
जागिड गिड़दा जैत सुजस दह दिसे सवाइ
राग्डि गिड़दा रूप मेर समवड़ महामाइ
खेरीयो खाग सत्रां सिरे हार मनावी हूकले
जिनहरख नमो चलि योगिणी वखतांवर आखां वले ॥११

इति श्री देवीजी री स्तुति

—:०:—

वर्षा वर्णनादि कवित्त

प्रथम तपइ परभात, रगत वरणो रातम्बर
पीड झरइ परसेद, अधिक मिस वरणो अम्बर
उदक कुंभ उकलइ, निपट चिड़िय रज नाहइ
वृषि चढ़इ विषधार, सगति मुख इंडा साहइ
तुरत रिलवइ तिमरी चपल, घणु जीव हाकइ घणा
जिनहरष चपल चात्रिग चवइ, ए आरख वरसा तणा ॥१॥
मेह कइ कारण मोर लवइ फुनि मोर की वेदन मेह न जाणइ।
दीपक देखि पतंग जरइ अंगि सो वहू दुख चित्त मइ नांणइ।
मीन मरइं जल कंइज विछोहत मोह धरइ तनु प्रेम पिछाणइ।
पीर दुखी की सुखी कहाँ जाणत, सयण सुणइ 'जसराज' बखाणइ।२

सिंह के कौन सगा

काहेकुं मित्त ज्युं प्रीति न पालत प्रीति की रीति समूल न जाणइ।
नेह करइ करि छेह दिखावत, सयण कुसयण उभय न पिछाणइ
रोस करइ ज्युं विचार सनेह, सनेह पुरातन चीत न आणइ।
सिंह कइ कवण सगा असगा, सवही सरखा 'जसराज' वखाणइ ॥३॥

शृंगारोपरि सवैयाः—

गोरउ सउ गात रसीली सी वात, सुहात मदन की छाक छकी है।
रूप की आगर प्रेम सुधाकर, रामति नागर लोकन की है।
नाहर लंक मयंद निसंक, चलइ गति कंकण छय्यल तकी है।
घुंघट की ओट में चोट करइ, 'जसराज' सनमुख आय धकी है ॥४॥

जाके आछे तीछे नयण, आछे ही रसीले वयण;
चातुरी ही आछी जाकी, आछउ गोरउ गात है।
आछी ही चलत चाल, आछे ही कपोल गाल;
आछे ही अधर लाल, आछी आछी बात है।
आछो ही दखिण चीर, आछी कंचुक वोचि हीर;
आछी ही पहिर सारी, आछी ही कहातु है।
आछी ही पायल वाजइ, आछी घुघराली छाजइ;
'जसराज' गोरी भोरी, आछी आछी जातु है ॥५॥

दुर्जन उपरि पुनः सवैयाः—

नयन कुं देखो नाहिं, कानन कुं सुनी नांहि;
ऐसी बनाय कहै, सुणी हुँ खीजिये।
जाकै मेली मति गति, अति है कठोर चित्त;
क्रोधन को गेह तासु, कबल न पतीजिए।
जाका मन में है खोट, हरदे है कपोट का खोट;
ऐसी ही बनाय कहै, देख्यां पतीजिए।
सुनो मेरे यार, 'जिनहरष' कहै विचार;
ऐसो दुर्जन ताको, कारो मुंह कीजिये ॥१॥

जात छुटे भय प्राण अमानत, ऐसो हलाहल भी विप पीजे।
केसरी सीह अबीह उमंग सुं, जाइ सनमुख साह भी लीजे।
जाके वदन वसै विष झाल, भुजंगम झालिके चुम्बन लीजे।
सजनी सीख सुनो 'जसराज' के संग कुमाणस को नहु कीजे।२

सगा—सज्जनोपरि कवित्त :-

सरवर जल तरु छांहड़ी, सगौ जु भंजै भीड़ ।
सजण सोई सराहीयै, जाणै सुख दुख पीड़ ।
जाणै सुख दुख पीड़, नहीं सो सज्जण केहो ।
सो सरवर किणि काम, नीर ग्रीषम दै छेहो ॥
तरवर झड़ि झुड़ि जाउ, पंथि छाया नहु रंजै ।
सोई सयण अकयत्थ, भीड़ जौ किमही न भंजै ॥
दिल कूड़ सयण सरवर निजल, तरु छाया विण परिहरौ
जसराज भीड़ि भजै नहीं, सगौ तिकौ किण कामरौ ॥१॥

पनरह तिथ रा सवैया

आज चले मनमोहन कंत, विदेश हठी मोहि छोरि इकेली
कह्यो समझाय चल्यो परवा मत, सूकेगी स्याम विना तनु बेली
तोइ न मांन्यो कथन्न सयन्न, वयन्न उथापि चल्यो री सहेली
कहै जसराज रटै निसवासर, प्रेम परव्व सनेह गहेली ॥१॥
दूज कै घोर महोछव कीजत, दोनि[१] निसापति सांझ समै
घनघोर निसाण घुरै, पुर मंगल हींदु तुरक्क पच्छिमनमै
परदेस संदेस न पाउं जसा, खिनय देखि चिसा दृग नयननमै
मत मोहि विसारि तजो विण दूषण चित्त तुम्हारै समीपि रमै ॥२॥

---

१ देखि २. पिय देखि दिसा दृग पान गमै

केइ सझे सिणगार अपार अणाइ दरप्पण वेस बनाई
काजल नैण अनोपम सारत भाल तिलक की सोभ सवाई
केइ सहेली के साथ विनोद स्युं गावत गीत रु नाचत काई
माहि जसा विनु प्रीतम श्रावण मास की तीज अकयारथ आई ॥३॥

चोथी वितीत भई मोहि[1] प्रीतम कागद ही नित भेज न दीनौ
मोहि संतावत मैण अहोनिसि वात[2] जगावत काम उगीनौ
नैण झरैं जल पावस काल ज्युं घाउ कलेजे करै[3] जिउ लीनौ
चोथि करूं जसराज महाव्रत जौ घरि आवै[4] तौ नाह नगीनौ ॥४॥

जा दिन तै अलि प्रांण धनी मुहि छोरि इकेलि विदेस सिधायो
ता दिन तै न तंबोल भख्यो न सरीर विषै घसि चंदन लायो
रामति खेल विनोद तजे सब नारिन भूषण वेस बनायौ
कौन जसा उपचार करूं अब पांचिम आई पै कंत न आयौ ॥५॥

वीर बटाऊ संदेस कहुं तोही प्रीतम सु फुनि लेत सिधावौ
लालच छाय रह्यौ परदेस तहां जाइ कागद ले दिखलावौ
मो मुख तैं मुख तेरैं संदेस जसा जाइ प्रीतम कुं समझावौ
छट्ठि को दीह अनीठ भयौ अब आय मिलौं अब क्युं ललचावो ॥६॥

जा दिन नाथ पधार्यो गृहंगण बांटत हुं पुर मांहि वधाई
प्रेम वियोग मिट्यौ तन अंतर प्रीतम सुं मिल केलि मचाई

---

१. तौ हि २. तिणि ३. बान लगावत ४. कियौ ५. आवत
६ पाइ पहू ।

सातिम सेजि इकेली मैं सूती सुपन्न रयन्न के आय जगाइ
जागत ही जसराज निरास अचेत भई मांनुं वासिग खाई ॥७॥
आठिम आज भई जसराज विराजत प्रीतम[1] प्रेम अघाई
हास विलास करै निसवासर सोल भृंगार त्रणावै लुगाई
मोह न मानत चित्त कछू हिरदा विचि धूम अगन्नि धुखाई
नाहँ कठिन्न भयौ नहि आवत कौण सुं कूक पुकारूं री माई ॥८॥
मैं तेरे कारण मंदिर वार खरी नित की पिय काग उडाऊं
नौम वसंत सखि मिलि खेलत हुं न धणी चिण खेलण जाऊं
एकर[3] सु घर आवो ज्ञा तुम एकांत वेठ कर में कहिलाउं
नैणनि[4] जौ जसराज परै पिय दे हित सीख भले समझाउं ॥९॥
आज वडो दिन है दसराहो रूघप्पति जैत दसुं दिन पाई
सीत वियोग मिट्यौ दसमी दिन रावण कुं हरि लीक लगाई
वडै वडै राज महोछव गोठि करै सवही[5] जसराज सवाई
हुं किण सुं गुण गोठि करूं अलि नाह विदेस भयौ दुखदाई ॥१०॥
दिन आयौ इग्यारसि को हरि पौढत वासिग सेज पताल महैं
व्रत लोक करै सुख संपति कारण वैण गुणी जसराज कहैं
परदेसन तें घर कूं उमहै दिन रैन वटाऊ सुपंथ वहैं

---

१. जाण्यौ मैं नाथ पधारे २. कामणि ३ भूरत ही द्रग जोति घटी पल लोहू घट्यो सुख चैन न पाऊं ४ नैन तजौ ५. दसमी ।

निसनेही न आवत तोही सखि मरिहुँ मेरी[1] दुख्य वलाइ सहै ॥११
बारसि बांभण बूझ्यौ सहेली री मोहि कहो कव प्रीतम आवै
ज्योतिष राउ वड़े जसराज सुतौ पिय[2] साच अगम्म बतावै
करक लगन्न भयौ[3] वर सुंदर राम करै तौ सही सुख पावै
च्यार दिवस्स में नाह मिलै विरहानल की झल आइ बुझावै ॥१२॥
आज सखी खटमास बराबर तेरिस वासर नीठ गमायो
सनमुख राति अव्वझ भई दृग देखत ही जिय मै डर आयौ
नखत्र गिणंत निशां निठ वौरी निसाकर आतम[4] ताप लगायौ
जसा पतियां लिख दीनी सनेही कुं ताको कदै[5] मुहि कागद नायो ॥१३
उजुवारी चोदस देवीको वासुर देवल[6] संत मिलै हरसै
सझि ताल कंसाल पखाउज ले नटई मिलि नाचारंभ तिसै
घनसार अपार सुकेसर चंदन पूजन कुं नर नारी इसै[7]
जसराज भवानी कुं ध्यावत नागर मो मनमै[8] मेरो स्याम वसै॥१४॥
पूनिम दीध वधाई सखी री तेरे घरि प्रीतम तोही पधार्यौ
खुसी भई उठि सनमुख जाइ वदन्न विलोकित दुक्ख विसार्यौ
मिलि कै दोउ कामिनि कंत हसंत सरीर तिया अपनौ सिनगार्यो
फली उर की सब आस विलास भले जसराज सनेह वधास्यो।१५

इति श्री पनरह तिथरा सवैया संपूर्णम्

—:०:—

पाठान्तर—१. तेरी २. आगम साच ३. कह्यो चिर ४. आनसंताप ५ कसै ६ देउलसंत ७. बसै ८. तन में।

राग करण समय कवित्त

सवैया

रसिक हींडोल राग ताकी पिया[1] देवसिरी,
भूपाल[2] वसंत धुर पहर वणाइ जू।
मालवकौसक जाम जैतसिरी मालसिरी
धन्यासिरी द्वितीय ऊगत सूर गाइ जू॥
दीपक मारुणी तोडी गूजरी कामोद[3] फुनि,
वैरारी त्रितीय जाम सुगुण सुणाइ जू।
दिवस कै अंत जसराज श्रीयराग[5] काफी,
सामेरी गौरी सुजांन चातुरी जनाइ जू॥१॥
मालवी पूरवी गौरी कल्यान करन दौरौ,
विहागरौ माधवी प्रथम जाम निसि कै।
अधरत कांनरौ केदारौ प्यारौ लागै मोहि,
सुहव समझि नट-नारायण रसिकै।
सोरठ मल्हार सार रामगिरि आसाउरी,
तदुपरि पंचम अलाप मुख हसिकै।
भैरव ललित गति जसराज[6] वेलाउल,
कीजियै विभास दिन ऊगत उलसिकै॥२॥

इति रागकरण समय सूचनिका कवितद्वयम् (सवैया)

---

१ प्रिया देवगिरी २ भूपाली ३. कमोद ४ वैराड़ी ५ श्रीराग
६ कीजियै विभास वेलाउल, जसराज उगहि उलसि कै।

प्रेम पत्री रा दूहा

स्वस्ति श्री प्रभु प्रणमीयें, सुखकर सिरजणहार ।
जपतां दुख नासै जसा, वारै विखमी वार ॥१॥
दुखीयां दुख भंजण दई, अइयो आदि पुरुक्ख ।
जल थल महियल जपि जसा, सयणां मेलण सुक्ख ॥२॥
जसा कुशल जणाविज्यो, आपणड़ा सो आज ।
हीयडो सुणि हरषित हुवै, जिम चकोर दुरराज ॥ ३ ॥
हीयडो लीधो हेरिने, मन हेजालू मुज्झ ।
चेत जसा नहीं चित्त में, तरसै मिलवा तुज्झ ॥४॥
सयण तणा संदेसडा, आतम ना आधार ।
हीयडो[1] राखू हटकिनें, अहनिस हरष अपार ॥५॥
हीयडो राखुं हटकि नें, मन पिंजरै न माय ।
मिलूं जसा मन मेलूआं, जाणुं भेटुं जाय ॥६॥
घट सयणां विण परघल, थिर न पड़ै पग ठाह ।
नैणे नावै नींदडी, उर ऊमटीयो दाह ॥७॥
चाहतां चित्त चोरणां, हीयै वसै ज्युं हार ।
जोतां ते सज्जन जसा, कदि मिलसी करतार ॥८॥
सज्जन आवि सुहामणा, रस मांणण जसराज ।
वतडीयां केइ वीनवां, उर ऊपन्नी आज ॥९॥

---

१. सांभलतां श्रवणे जसा

मन मेलू न मिले जसा, वलि करि घालुं बाथ।
नीकलि जासी जीवडो, सही नीसासां साथ ॥१०॥
पंजर मांहि पलेवणो, सयण गया सिलगाय।
बुझै न जसा बुझाइयौ, जोरै वधतो जाय ॥११॥
विरहै आतम[1] वींटीयो, मो मारेसी आज।
साईना[2] सयणां भणी, जाइ कहे जसराज ॥१२॥
जो नैडा हूंता जसा, सज्जन तां ससनेह।
वीछडता वीसारीया, झटकि दिखायो छेह ॥१३॥
पसरै मनडो पवन ज्युं, सयणां मिलवा काज।
पिण तन न मिले तरसतां, जीवूं क्युं जसराज ॥१४॥
जे सज्जन मिलता जसा, दिन में सौ सौ वार।
संदेसे सांसो पड्यौं, विच वन पड्या अपार ॥१५॥
मुझ हीयडो हेजालूओ, भाखर गिणै न भींत।
मेलूं सुं मिलवा जसा, आवै जाइ अचींति ॥१६॥
सयण संदेसा मोकलै, झिलता मीठू झेल।
वेगा जो मिलीया नहीं, हुसी जसा कोई हेल ॥१७॥
हेल हुंसी तो होण दे, पिण पछतावो एह।
आवटसी युंही हीयो, मन[3] री मन में देह ॥१८॥
सज्जन सुंहणै राति रै, मो मिलीया मन हेज।
जागि निंहालुं ज्युं जसा, सुंनी दीसै सेज ॥१६॥

---

१. औतन २. संदेसोसैणां। ३ जसा।

सेजडीयां विण सज्जनां, अधिक अलूणी आज ।
आंखडीयां जल ऊबकै, जोवुं ज्युं जसराज ॥२०॥
मन मेलू सुहणै मिलै, ज्युं जागुं त्युं जाइ ।
जीव ज़ु तड़फड़तां जसा, इण विधि रयण विहाइ ॥२१॥
मनडो आयो माहरो, मुझ तीरे तजि लाज ।
सारी लेज्यो सज्जनां, जोइ नइं जसराज ॥२२॥
पहिली कीधी प्रीतडी, किण हिक सुख रै काज ।
सुख सुंहणै ही नां हूओ, जुड़ीयो दुख जसराज ॥२३॥
सयणां सांई दे मिलूं, बांहा बिन्हे पसार ।
आंखडीयां सुं आरती, जीभां जसा जुहार ॥२४॥
कोई वटाऊ कहि गयो, आसी सज्जन आज ।
विरह गयो मन विकसीयो, जीव खुसी जसराज ॥२५॥
मेलू माणस जो मिलै, जोवाडै जसराज ।
नैण मटक्कै निरखतां कोडि सुधारै[1] काज ॥२६॥
काम करूं मनडो किहां, केथही भमै क रंक ।
प्रीतडीयां परवसि जसा, झूरै नैण निसंक ॥२७॥
हूं विलवुं भरियै हीयै, जपुं नाम जसराज ।
महिर करो मुझ ऊपरै, आवि सनेही आज ॥२८॥
साजनीया सालै जसा, जेम सरीरां[2] भाल ।
रोइ रोय दिन रातडी, लोयण कीधा लाल ॥२९॥

---

१ समारइ २. भडंजर

वासर ज्युं त्युं वौलियै, लोकां हंदी लाज।
वलि आई निस वैरिणी, जासी क्युं जसराज ॥३०॥
जसा कहुँ जगदीसनैं, कासूं कीधो कांम।
वाल्हा समय विछोहीया, हिव जीवणो हराम ॥३१॥
मो मन मेलू हल्लीयो, ऊभी मेल्ही आज।
हाथ घसै फाटै हीयो, जोर न को जसराज ॥३२॥
वीर वटाऊ वीनवुं, करि लाखीणो काज।
संदेसो सयणां कहै, जाई नइं जसराज ॥३३॥
हेतू सुं हूओ जसा, संदेसे व्यवहार।
तन मेलो होसी तदा, जदि करिसी करतार ॥३४॥
जिण दिन वीछड़ीया जसा, मो मांनीता मीत।
तिणदिन हूंती तन्न नें, चेडो लागो चीत ॥३५॥
मनड़ो तड़फै माहरो, देखण तुम दीदार।
कै मेलो मनमेलूआं, कै तुझ हाथै मारि ॥३६॥
जिण वेला साजन जसा, मुझ मिलसी भरि वत्थ।
वातड़ियां करिस्यां विन्हे, साय घड़ी सुकयत्थ ॥३७॥
सयण तणा संदेसड़ा, वाल्हां हंदी वात।
सांभलतां श्रवणे जसा, रोमांचित हुइ गात ॥३८॥
सो साजन मिलसी कदे, जिणसुं साची प्रीत।
सूतां ही सुपनै जसा, खिण खिण आवै चीत ॥३९॥
वाल्हा वीछड़िया थया, विरही जिके विहाल।

जोड़े सयण तिया जसा, नमिया करै निहाल ॥४०॥
कुशल क्षेम कल्याण इह, पदकज तुज प्रसाद।
सुक्ख जसा संदेशड़ै, निसुणि जेम मृगनाद ॥४१॥
विरह थियां वाल्हां तणौ, कारिस लागी काई।
मेलू विण मिलियां जसा, जम्मारो क्युं जाई ॥४२॥
सज्जन मिलि निज सेवकां, दिल दीदार दिखाई।
तन मन तो ऊपर जसा, सदकै करूं सदाई ॥४३
सयणा मेलो साइंयां, दियै न विरह म देह।
जो विरही राखै जसा, मो पहिली मारेह ॥४४॥
प्रीत म करि मन माहरा, करै तो काचौ काइ।
काचा मिणिया काच रा, जसराज भांजे जाई ॥४५॥

सोरठा—

धन पारेवां प्रीति, प्यारी विण न रहै पलक।
ए मानवियां रीति, एखी जसा न एहडी ॥४६॥
एक पखीणि अंग, प्रीति कियां पछताइजै।
दीपक देखि पतंग, जस वलि राख हुवै जसा ॥४७॥
साजनियां संसार, जो कीजै तौ जोयनै।
नेह निवाहणहार, जसा न विरचै जीवतां ॥४८॥
दीह दुहेलौ जाइ, निस नीसासै नीगमूं।
दुखियां देखी दाय, आवै तो आवै जसा ॥४९॥

केहौ कीजै दुःख, केही आरति आणियै ।
सिरज्यां पाखै सुख, जिम तिमही न मिलै जसा ॥५०॥
कांइ करै अणराय, कांइ मन पछतावौ करै ।
रहणहार थिर थाइ, जाणहार जायै जसा ॥५१॥
सुगुणै सैण क्रियोह, निगुणै मन मिलियौ नहीं ।
नरभव नीगमियौह, जसा सुपन ज्युं रात रौ ॥५२॥
सूतां सुपनै आई, मन मेलू नितकौ मिलै ।
जागूं तां उठ जाइ, जतन कियां न रहै जसा ॥५३॥
अगलूणा नहिं आज, आज अनेरी भांति रा ।
ज्युं जोउं जसराज, त्युं बेदल मन माहरौ ॥५४॥
करी मन धीर करार, विलवै कांइ विरही थयौ ।
सयण न लही सार, जावण दे परहा जसा ॥५५॥
सयणे न लही सार, तो पण मनड़ौ माहरौ ।
आतम तणा आधार, जीवीजै दीठां जसा ॥५६॥
अम्हे न करिस्यां कोइ, साजनियां सहु को करौ ।
फिर दूणौ दुःख होई, वेदन वीछडियां पछै ॥५७॥
सयण तणां संदेश, जो कोइ केथे ही कहै ।
अंतर मिटै अंदेश, तो तन ताढक वापरै ॥५८॥
प्रेम विहूणी प्रीति, जोइ मन न ठरै जसा ।
रस विण पानां रीति, रंग न आवै राचणौ ॥५९॥
मेलू विण मिलीयाह, मनडौ क्युं मानै नहीं ।

गहिला ज्युं गलियाह, फिरै फिकर थीयौ जसा[1] ॥६०॥
रत्तड़ियां वहि जाय, सुणतां सज्जन वत्तड़ी।
जसा सु नावै दाइ, कत्थ अनेरी चित्त में ॥६१॥
जिण सुं लागौ मन्न, तिण विन खिण न रहै जसा।
ताढक व्यापै तन्न, सज्जन दर्शन देखतां ॥६२॥
कामण सयणां कीध, घट न चलै धसटेरियौ।
बाण तणी परि बींध, जोइ जसा मन माहरौ ॥६३॥
करि जसराज जतन्न, सयण भला सा संग्रहै।
तो दाझेसी तन्न, मूरख मिलीयां माढुवां ॥६४॥
जिणरी जोउं वाट, ते सज्जन दीसै नही।
तितड़ा मांहि उचाट, सु जनम क्युं जासीजसा ॥६५॥
मै कीधौ तूं मीत, जोइ लाखां मे जिसौ।
पलटै क्युं हिव मीत, पलट्यां शोभ न पाइयै ॥६६॥
एकरस्यौं मिलि आइ, साजन भीड़ै सांइयां।
थिर मो मनड़ौ थाइ, जाइ जसा दुःख जूजुआ ॥६७॥
खातां न गमै खाण, पाणी न गमै पीवता।
सयणां विन समसाण, जग सगलौ दीसै जसा ॥६८॥
भुज करि बे भेलाह, मिलस्युं जदि मन मेलुंआं।
चाल्ही साइ वेलाह, जनम सफल गिणसुं जसा ॥६९॥
नयणे मिलसै नैण, उर सुं उर मेलिस जसा।

---

१ कालाहोठ थयाह मुख निसासा नांखता।

सुख पामेस्यै सैण, आयां लेस्युं वारणा ॥७०॥
प्राण सटै ही प्रीत, जुड़ती जो दीसै जसा ।
आदरि रूड़ी रीत, मति छोड़ै मतवंत तूं ॥७१॥
कहिसी कोड़ि वचन्न, अति आसंगा ऊपरै ।
सहु खमिसी साजन्न, वाल्हा कदे न विरचसी ॥७२॥
लाखीणौ सुणि लेख, वले न रीझै वाचतां ।
सो साजन सुविवेस, जाणै पसु ढांढौ जसा ॥७३॥
तन हुंती तजि धेख, मो कहियौ हित मानिजो ।
लिखजो सज्जन लेख, जुग लगि प्रीत हुमी जसा ॥७४॥
नेहालू नजरांह, जोइ कामण परहत्थ जसा ।
निरही पारेवाह, तारा हूं तूटे पड़ै ॥७५॥
देखि सुरंगी डाल, जाणुं जाइविलगूं जसा ।
आस करूं हूं आलि, करम विना मिलवौ कठइ ॥७६॥
चिति मिलवा री चाह, रात दिवस अलजौ रहइ ।
आऊं भुइ अवगाहि, जाणु सयण कन्हइ जसा ॥७७॥
तूं वीछड़ियौ त्यार मन वीछड़ियौ माहरौ ।
लागौ जायइ लार, जतन कियां न रहइ जसा ॥७८॥
मोलौ पाणी लाज, साजन वीछड़ियां समी ।
जाई ल्याउं जसराज, कोई जो केथी कहइ ॥७९॥
चाइस उडी कलाइ ल्युं, चाड अम्हीणी आज ।
सयण सकाजा आवता, जौ देखइ जसराज ॥८०॥

वाइस वाल्हा मेलणौ, अम्मा बोलै आज।
साजणिया मिलसी सही, जाणूं छुं जसराज ॥८१॥
सज्जन तो कारण सदा, कोड़ि उड़ावुं काग।
करि शीतल काया जसा, आइ बुझाइहु डाग ॥८२॥
तन धन जोवन ताकतां, नीठ जुड्या जसराज।
माणं कांई न माण रा, आई महल्ले आज ॥८३॥

सोरठा—

साजन गया सम्वाहि, ज्यां सूं प्रीति[1] हुंती जसा।
मकरि मकरि मन मांहि, अवरां सुं हित[2] आमनौ ॥८४॥
साजनियां संसार, मिलेतो कीजइ मन समा।
दिन में दस-दस वार, जोतां नित नवला जसा ॥८५॥
सज्जनियां[3] सहु को करौ, एको न करूं अहे जसा।
हेकर मौ सुख होई, वेदन वीछड़ियां पछै ॥८६॥
विरहणी विरह निवारि, आवै ने अण चीतरो।
हियडै हैज धरेह, मोकै तूं मिलजे जसा ॥८७॥
मन मिलियौ[4] सयणांह, तन मिलियौ नहीं तरसतां।
निरखि-निरखि नयणांह, जलणि हुवै विवणी जसा ॥८८॥
निगुणां सेती नेह, थिरन रहै कीधां थकां।
छीलर सर ज्युं छेह, जल जातौ दीसै जसा ॥८९॥

---

१. पर। २ हिव। ३ साजनियां सहुकोई, करो अम्हे नकरां जसा।
४ लागौ।

निगुणां हंदो नेह, ऊगत दिन छाया जिसी ।
सुगुणा तणौ सनेह, जसा ढलती छाहड़ी ॥६०॥
जसा सुसज्जनियाह, मन गमता मिलिया नहीं ।
काला होठ थयाह, नीसासा मुख नाखता ॥६१॥
जो जावइ तउ जोइ, हरणाखी हित वांटि नइ ।
नयण गमाया रोइ, जीव जसा छै जावता ॥६२॥
कीधी प्रीत कुठार, माजन लीधौ माहिलौ ।
गेरै काइ गमार, जल ऑख्या हुती जसा ॥६३॥
मन मेलू मन मेल, इवडौ हठ कांइ आदरइ ।
भरि दिल सुं दिल भेल, निठुर जसा हुइजे नहीं ॥६४॥
जो देवौ जगदीस, मो पांखड़ियां करि मया ।
विधि सुं विसवा वीस, उडी मिलत आवै जसा ॥६५॥
मिलियौ प्रेम म मेलि, वलतौ मिलसी नहीं वलै ।
झगड़ौ ही करि झेलि, जोइ आडौ आसी जसा ॥६६॥
जो जोड़ै तो जोड़ि, आतम जोड़ी आपणी ।
जीव जासी तन छोड़ि, जोयां न मिलसी जसा ॥६७॥
प्रीत सुं प्रीत प्रमाण, मिलीया मन राखइ नहीं ।
ऊलटि अंग अमाण, जड़ छाता न मिटइ जसा ॥६८॥
कदे न राखइ काण, मनसा मेलू सुं कहइ ।
आढवीयौ अवसाण, सुघड़ो सैणनिको जसा ॥६९॥
सुखिया सहु संसार, नीका नरहु भव नीगमइ ।

सिरज्या सिरजणहार, जग मांहे दुःख हो जसा ॥१००॥
माजनिया सावास, बेठो बीसारे मना ।
विरुद्द वात विमास, उचा बोली आदरी ॥१०१॥
नानक मेह,··· जतन करतां ही जसा ।
···लियो ऊअर छासि, ऊतरि जाये आफणे ॥१०२॥
प्रीति करउ पतिसाह, पतिसाहां री···।
विरला पावे वाह, कायर की जाणे जसा ॥१०३॥
ओछो अधिको होइ, जपीवो अणगमतो जसा ।
साजण खमजो मोहि, मन मंइ रीस न आणज्यो ॥१०४॥
प्रेम सहित लिखि पत्र, समाचार संदेसड़ा ।
मोकल देज्यो सित्त,···[हेतू] माणस सुं जसा ॥१०५॥
तन हुंती तजि धेख, मो कहियो हित मानियो ।
लिखजो साजन लेख, जुगति थी जि हुसी जसा ॥१०६॥

॥ इति श्री प्रेम-पत्रिका दूहा संपूर्ण ॥

फुटकर दोहे

चित चिंतै कांई वात, करणीगर काई करै ।
अघटित अवली धात, नर कोई न लखै जसा ॥१॥
सुगण न कीधा फूटरा, निरगुण रूप अथाग ।
जगदीसर जसराज है, दांतां पाड़न भाग ॥२॥
साजन मिलियां सुख हुवै, चैन हुवै चित माय ।
हिवड़े हरख हुवै जसा, दिन सुकियारथ जाय ॥३॥

दस दुवार को पींजरो, तामै पंछी पौन।
रहण अचूँबो है जसा, जाण अचूंबो कौण ॥४॥
पहिली प्रीति लगावतां, पट्ट (छ ?) न कीधो वोय।
अव वीछड़ो ना सजनां, न्याइं छ (झ ?) गड़े होइ ॥५॥
सजन तव लग वेगला, जव लग नयणे न दिट्ठ।
वीछडियां यह अंतरो, पंजर मांहै पइठ ॥६॥
एक ही दीपक कै कीइं, सगरे नदे निधि होय।
तू नमे नह कहां छीपै, जहां इग दीपक होइ ॥७॥
जो हम ऐसे जाणते, प्रीति वीचि दुख होइ।
सही ढंढेरो फेरते, प्रीत करो मत कोई ॥८॥
वीछडता ही साजना, न उर लगा तीर।
पेपरी सी चहि गई, उभल के रहे सरीर ॥९॥
सजन यु मत जाणीओ, वीछरयां प्रीति घटाइ।
व्यापारी के व्याज ज्यु, दिन दिन वधती जाइ ॥१०॥

प्रहेलिका*

नर एको निकलंक वदन पट जास वखाणां।
रसण इग्यारह रूप जगत में वड हथ जाणां ॥
दोइ हाथ पग दोइ वले ताइ लोचन बारह।
पुंछ एक वलि पुठ ईला जस वास अपारह ॥

* इनके अर्थ :—१ सुपार्श्व। २ ध्वजा। ३ गुड़ी। ४ चौपड़। ५ लेखण। ६ मेह। ७ मकोड़ी, ८ खटमल। ९ कीड़ीनगरो।

आरखां नाम तिहुं अखरे कला तास जाणें न को ।
जिनहरप पुरप कुण जालमी तुरत नाम कहिज्यो तिको ॥१॥
उड़ै मग आकास धरणि पग कदे न धारै ।
पीवे अह निसि पवन नाज नवि कदे आहारै[1] ॥
सुकलीणी सुंदरी वप्प सिणगार विराजै ।
जाव विहूंणी जोइ जिलै[2] नेहागलि जाजै[3] ॥
काठ सुं प्रीति अधिकी करै पंख[4] चरण करयल पखै ।
जसराज तास सावासि जपि अरथ जिको[5] इणरो लखै ॥२॥
एक नारि असमान दिट्ठ विण पंख चढंती ।
चावा सींग चियार मिलै ताह अंग मुडंती ॥
पाछलि पूंछ पतंग गीत गुणवंती गावै ।
नाज भखै निरलुख नीर दीठौ न सुहावै ॥
करमज्झ जीव झालै अमर छोड़ दीयै तौ जाय मर ।
जसराज कहै नारी किसी कहो अरथ सुजाण नर ॥३॥
वसै नगर विधि वडी दिसै च्यारे दरवाजा ।
सोलै पायक सूर रहै तिण में त्रिण राजा ॥
गिणि छिनूं मिलि गाम च्यार पायक चौवीसां ।
राय हुकम रिण खेत मरै माहो मैं रीसा ॥
आणीजै घरे ऊपाडि नै ऊठि चलै वलिउ इसो ।
जिनहर्ष अचंभो जोइज्यो कवण नगर कारण किसो ॥४॥

---

१ निहारइ २ झिलै ३ झामै ४ चरण नहीं मुख कर पखै ५ कवित्त ।

वनिता इक धन वसै सरल पत्रली सचाली ।
तीन वरण तसु नाम नगर पैसती निहाली ॥
चतुर नरां कर चढी चपल चालै चंचाली ।
पांणी पी परिहरै पाव पिण न चलै पाली ॥
कांनसूं आय वातां करै निनग चीर पहिरे नहीं ।
जिनहर्ष कवित इणपरि जपै सुगुण अर्थ कहिज्यो सही ॥५॥
उतपति तो आकास वसै उरध दिसि वासो ।
निरमल गंगा नीर तासु मुख कृष्ण तमासो ॥
कामणि संग करूर, सदा निति रहै सनुरो ।
असै न पांणी अन्न पुहवि जस ग्राहक पुरो ॥
अरि काल रूप भंजै इला विहाग जेम तातो वहै ।
जिनहर्ष लहै सावासि सो जिको अरथ साचौ कहै ॥६॥
सीह लंक नहीं संक चीर वकौ वेढालौ ।
फिरै जोर वल फौरं द्रुतौ रंढालौ ॥
गैवर सीस गिरीस वीस वीसवा चंचालौ ।
फिरै डाड मुंह फाड जाड करडी तनु कालौ ॥
धर धणी घणी नांखै धडछि पट चरणे मरणे खिसै ।
जिनहर्ष सुभट कुण जालमी उलखिज्यो आरख इसै ॥७॥
नान्हडीयो नर एक चोर मैं निरख्यौ नयणे ।
चक नै धकली कहॉ गुण कासूं वयणे ॥
नवखंड मोटो नाम जासु सहु कोई जाणै ।

छाँनै सूं छेतरै टलै नहीं आये टाणै ॥
रसलुध फिरै वल रातिरै घर धापट झाड़ौ धडै ।
जिनहरष सार लहिमी तिके पांनौ जिहां सेती पडै ॥८॥
नाम जासु नवखंड नगर इक दिठ्ठो नयणे ।
अडालीड असमान वड़ा कहि सकैं न वयणे ॥
पुरवासी पायक वहसि मुहि कदे न वोलै ।
हाथ नही हथियार सुर सचा सम तोलै ॥
नर अछै तोइ को न लखै नारि नारि सहुको कहै ।
जिनहरष कहै साबास सो जिको अरथ साचौ लहै ॥९॥

वरसात रा दूहा

मनड़ौ आज उमाहियौ, देखि घटा घन घोर ।
सयणा साइ दे मिलूं, अलजो जसा सजोर ॥१॥
मनड़ौ न रहै मांहरो, ऊमटि आयौ मेह ।
सांइ साजन मेलिहौ, जसा वधंते नेह ॥२॥
आयौ पावस आजरौ, नयण झबक्कै बीज ।
विरही मन मांहैं जसा, खिण खिण आवै खीज ॥३॥
पावस रितु पापी पड़े, नदी खलकै नीर ।
विरह संतावै मो जसा, वलि सज्जन वेपीर ॥४॥
घटा वांधि वरसै जसा, छांट लगै खग भाई ।
इण रितु सज्जन वाहिरी, क्यूं करि रयण विहाइ ॥५॥
काली काजल सारखी, घटा मंडाणी आज ।

आजूणी निशि एकलां, जासी क्युं जसराज ॥६॥
पावस रुति झड़ मंडियौ, चातक मोर उल्लास।
बीजलियां झबकै जसा, विरही अधिक उदास ॥७॥
झड़रूपी पावस झरै, विरह लगावै बाण।
ऊंडो गाजि गड्डकियौ, जसा लिया मुझ प्राण ॥८॥
भरि पावस सयणा पखै, ऊल्हरियौ जसराज।
जाणुं छुं ले जाइसि, काढि कलेजौ आज ॥९॥
ऊंडौ गाज्यौ धुर खिव्यौ सहीज वरसणहार।
जाय मिलीजै सज्जना, लांबी बाँहि पसार ॥१०॥
जिण दीहै पावस झरै, नदी खलकै नीर।
तिण दीहै कीजै जसा, सज्जनियां सूं सीर ॥११॥
चिहुं दिशि जलहर ऊनम्यौ, चमकी बीजलियांह।
इण रुति सयण मिलै जसा, तो पूगै मन रलियांह ॥१२॥
बीजलियां झबकै जसा, काली कांठल मांहि।
आवि सनेही साहिबा, यौवन रा दिन जांहि ॥१३॥
बीजलियां झारोलियां, चमकि डरावै मोहि।
आवि घरे सज्जन जसा, हूं वलिहारी तोहि ॥१४॥
बीजलियां वहुली खिवै, डावा डूंगर मज्झ।
गला उतारे कंचूऔ, नयणे लोपी लज्ज ॥१५॥
आज अवेलौ उनम्यौ, मयडी ऊपरि मेह।
जाउं तौ भीजै कंचूआ, रहूं तौ तूटै नेह ॥१६॥

बीजुलियां खलभल्लियां, आभै आभै कोड़ि।
कदे मिलेसूं सज्जना, कंचू की कस छोड़ि ॥१७॥
बीजलियां गली वादला, सिहरां माथै छात।
कदे मिलेसुं सज्जना, करी उघाड़ौ गात ॥१८॥
बीजलियां चमके घणी, आभइ आभइ पूरि।
कदे मिलूंगी सज्जना, करि के पहिरण दूर ॥१९॥
बीजलियां खलभल्लियां, ढाबा थी ढलियांह।
काठी भीड़े वल्लहो, घण दीहे मिलियांह ॥२०॥

फुटकर कवित्त

पंचम प्रवीण वार, सुणो मेरी सीख सार,
तेरमो नखत्त भैया नौमी रासि दीजिये।
ईहण आये तें द्वारि, मातन कौं तात छारि,
तातनकौं तात किए, सुजस लहीजिये ॥
तीसरी संक्रान्ति तूं तौ, दसमीही रासि पासि,
कुगति को धर मनूं, चौथी रासि कीजिये।
पर त्रिया धिया रासि, सातमी निहारि यार,
जिनहर्ष पंचमी रासि, ऊपमा लहीजिये ॥१॥
सतयुग के साथ गये—
रयणि खाणि नहीं काय, नहीं बावन्ना चन्दन।
नारि नहीं पद्मिणी, नहीं आंकुरित कुंदन ॥
पाणीपंथा अश्व नहीं, सीस गयवर नहीं मोती।

कौस्तुभ मणि नहीं काय, जिका बहु मोलख होती ॥
चलवंत लख जोधा नहीं नहीं दानदाता जकां ।
जिनहर्ष थोक एतां गयां, सतयुग तो जातां थकां ॥

सुन्दरी स्त्री

सुन्दर वेस लवेस अनोपम सोवन वान घनी सुघराई ।
चौसठि नारि कला गुन जानत हंसनितं वनि चालि हराई ॥
छैल छवीली सुहागिण नारि सूं कोकिलकंठ सूं सोभ सवाई ।
कहै जसराज इसी त्रिय होत मनो निज हाथ विरंचि उपाई ॥

राधाकृष्ण

उमटी घनघोर घटा मन की तन की किहु पीर कहूं ॥
मोहि श्याम विना अकुरात तना विजुरी चमकै अव कसै सहूँ ॥
ऐसी पावस को निस जीवनही वसि कैसी सहेली इकेली रहूँ ।
जसराज राधा व्रजराज की जोरि, ज्यूं जोरि करूँ अव जोरि लहूँ ॥
तेरै हि[1] पाय परुं मोय छोड़ दै कान रे पाणि कुंजांण दे मोहि अवै ।
मेरी सासु विलोकत है[2] समझो मेरी हासि करैगी नणंद सबै ॥
तेरे[3] ही मन भायो सोई मन मेरे ही आतुर कामन होत कवै ।
जसराज तेरो[4] हूं तेरे ही आधिन कूं हूँ आई मिलूंगी कहौगे तवै ॥

यौवन

जोवन में राग रंग, अंग चंग जोवन में रूपरेखा मेख सुविचारिहै ॥

---

१ तुहिं २ हासिवूमुंनहीं ३. अरी मो मनि भायो सतायो है मोरै रि ४ कहै भईया तेरी अधानसुं

खेलवो खिलाइवो, शरीर सू धुलाइवो, कमाइगो भि जोवन में ।
जोवन में देस परदेस फिरै सारिसेवी संग यारिहै ।
कहै जसराज जोवन में ध्रमध्यान ज्ञान मान जोवन की वातघात न्यारीहै ॥१॥

रागिनी स्त्री

लोयण भरि निरखंत, कांम मुख कथा वखाणै ।
आंगुलीयां मोडंत, कहै मन रीस (न) आणै ।
आलस भांजै अंगि, कठिन कूच उदर दिखावै ।
सखी कंठ करि पासि, घालि निज हसै हसावै ।
सुकमाल बाल भीडै हीयै, वाइक मिट्ठ वखांणीयै ।
जिनहरष कहै त्री रागिनी, इण आचरणे जाणीयै ॥१॥

उरसीउ

उरसीउ आणि हे सखी, सूकड़ि घसीइ जेणि ।
विरह दाधी प्रेम कौ, अगनि वुझावुं जेणि ॥१॥
मैं जाण्यौ तुं जाण छै, पणि तुं वड़ी अजाण ।
मैं उरसीयौ मंगीऊं, तैं आण्यौ पाषाण ॥२॥

मानिनी वर्णन

महल्लां मालियां, जोति मै जालीयां ।
सुचित्र सुंहालीयां, ओपमा आलीयां ।
ढोलीयां ढ़ालीयां, सेझ सुहालीयां ।

लूंब लूंबालीयां, भूंपजै भालीयां।
दीप दीवालींयां, इम ऊजालीयां।
चींदणी वालीयां, लंक लंकालीयां।
सा सुकमालीयां, एण अंखालीयां।
नाक नथालीयां, विद्ध री वालीयां।
चीर चोसालीयां, फूटरी फालीयां।
हेम हेमालीयां, झिगइ झमालीयां।
कॅठले कालीयां, बीज बींबालीयां।
यु उपमा आलीयां, नारि निहालीयां।
छोक जोबन छोगालीयां, संघलदीप संभालीयां।
जसराज आठ दुआलीयां, माहि महल्लां मालीयां-१
मालीयां माल्हती, हंस गै हालती।
देह दीपावती, छैल बीड़ीछती।
चालती चावती, गुंजती गावती।
अग ऊलसती, कंचूउ कसती।
हेत सुं हसती, लोयणां लसती।
दुझलीं डसती, सोह साची सती।
मनड़ा मोहती, काम ज्यूं कामती।
जोर जागवती, रत्ति रूपवती।
जोवनी जुवती, ओज आप मती।
खोण ज्युं खमती, रंग मै रमती।

आइ आक्रमती, झांझरी पाइ झमंकती।
चंदावदनी चालती, जसराज महल में आवती,
मिल्या प्रीतम माल्हती—२

माल्हती मांणणी, आइ ऊभी अणी।
पेखि प्री प्राहुणी, वेस वणावणी।
रुअड़ी राखणी, घट सोभा घणी।
वड़ी बोलावणी, वींद मुं वींदणी।
सेज सोहासणी, बांह कंठै वणी।
जांणि वेली जणी, आपड़ै आहणी।
हाथीयै हाथणी, घेर घ घूखणी।
झेलजै झूवणी, रोस मै रंजणी।
भीड़ीया भजणी, आहि आक्रंदणी।
हाइ वाए हणी, लथ वथां लुणी।
भोगवै भांमिणी, वूव वूंबावणी।
मेल्हां हो सोभणी, पेख मरंती पद्मणी।
ओहि ओहि हूं ओगणी जसराज जेण जपीयां धणी,
तिके मांणं, इण विध भांणणी—३

—:०:—

नंद बहुत्तरी

सवे नयर सिरि सेहरो, पुर पाडली प्रसिद्ध ।
गढ मढ मंदिर सपत भुंइ, सुभर भरी समृद्ध ॥१॥
सूरवीर आरण अटल, अरियण कंद निकंद ।
राजत है राजा तहां, नंदराइ आनन्द ॥२॥
तासु प्रधान प्रधान गुण, वीरोचन वरीयाम ।
एक दिवस राजा चल्यौ, ख्याल करण आराम ॥३॥
कटक सुभट परिवार सुं, चढ्यौ राइ सरपाल ।
वस्त्र देखि तहां सूकते, ऊभौ रह्यौ छंछाल ॥४॥
इक सारी तिहि वीच परी, भमर करत गुंजार ।
नृप चिंतै या पहिरि है, साइ पद्मणि नारि ॥५॥
सास सुवास सुवास तनु, दामणि ज्युं झवकंत ।
कंचण काया झिगमिगै, ऐसी पद्मणी हुंत ॥६॥
रजक तेरि नृप पूछि है, किसके चीर सुचीर ।
महाराइ प्रधान तुम, वीरोचन त्रिय चीर ॥७॥
सुनत वात चित्त पट लगी, नृप तव भयो अधीर ।
पाछौ फिर आयौ सुघरि, पिणि मन में दिलगीर ॥८॥
ए पद्मिणि नारि विण, इहु जीवित अप्रमाण ।
वारोचन त्रिय भोगवुं, जनम गिणुं सुप्रमाण ॥९॥
नृप बोलाई प्रधान तव, कहत वात सुविचार ।

तुम्ह परदेश सिधाइ कै, ल्यावौ अजब तुषार ॥१०॥
करि सलांम तहां तैं चाल्यौ, करि निज त्रियसुं सीख।
राजा बहुत खुसी भयौ, त्रिपत पीयैं ज्युं ईख ॥११॥
नृप आयौ गृह निसि समौं, पोरि जरी तिहिं वार।
देखि कहत प्रतिहार पैं, ऊठि उघारि किमार ॥१२॥
पोलिया वाइक—या तो पोरि न ऊघरे, मो पैं कहो न कोय।
नृप तब आपणैं कांन के, दीने कुंडल दोय ॥१३॥
गृह भींतर आयौ जबैं, तब बतलायौ कीर।
नंदराइ पुर मैं धणी, तूं न पिछाणत वीर ॥१४॥
सुआवाइक—कीर पाउ प्रणमैं तबैं, भलैं पधारे राज।
आज महल निज पूत के, आए हो किहि काज ॥१५॥
राजा वाचक- पद्मणि तियसुं चित लग्यौ, तिणि आयौ सुकराज।
चूक परी तुम्हको सबल, नहीं तुम्हारौ काज ॥१६॥
राजा वाइक—काहे पर निंदा करै, बांधी बात न घेर।
तुझैं पराई क्या परी, तू अप्पणी निवेर ॥१७॥
यूं कहि नृप आघो चल्यौ, तब बोल्यौ मंजार।
कीर कहत रक्षक विषै, सुणि उठी है धारि ॥१८॥
मंत्री त्रिय संचल लह्यौ, तजि लज्या करि लाज।
अलगी जाइ ऊभी रही, मांहि पधारे राज ॥१९॥
पदमणि वाइक—करि प्रणांम ऐसैं कहै, घर नाहीं तुम पूत
क्युं आबहो बापजी, तब लाज्यौ रजपूत ॥२०॥

ऊठि चल्यो तिहां थी तुरत, पहिरि पानही तास।
वीसारी निज पांनही, आयौ पौरि उदास ॥२१॥
राजा वाइक—प्रतोहार पैं नृप कहै, करणाश्रण दे वीर।
काम हमारो नां भयौ, भयो न जोवन सीर ॥२१॥
पोलिया वाइक—भावैं पांणी धौकरौ, भावैं रहौ तृषाल।
पांणी मैलै धण दीया, ऊरण भए गुवाल ॥२३॥
आयौ कुंडल हारि कै, तिण अवसर तिणवार।
पदमणि सूती निसि समैं, आयौ तासु भरतार ॥२४॥
भूप पांनही देखिकै, मंत्री चमक्यौ चित्त।
दीसत वात विराम की, आयौ गेह नृपति ॥२५॥
चंचल भमरी पीग ज्युं, चंचल कुंजर कन्न।
चंचल सलिता वेग ज्युं, चंचल अस्त्री मन्न ॥२६॥
गुपति राखि नृप पांनही, सेज्या आइ बइट्ठ।
जागी आलस मौरि कै, नयणा प्रीतम दिट्ठ ॥२७॥
चरणां लागि ऊठि कै, पदमणि वधतै प्रेम।
हरख बहुतसुं हिल मिले, पूछि कुसलात खेम ॥२८॥
वीरोचन उंह पांनही, सात सावटू वीटि।
भेट्यौ नृप ले भेटणौ, भई परस्पर मीटि ॥२९॥
भूप लजाणौं देखि कै, तव अधो मुख कीध।
मंत्रि कहत हस्ती त्रिपत, पांणी पीध न पीध ॥३०॥
राजा वाइक-तिरखातुर हस्ती गयौ देख्यो सरवर सीध।

युंही आयौ देखिकै, पिण पांणी नहुं पीध ॥३१॥
मंत्री मन भाग्यौ भरम, खुसी भयो नरराउ।
अरधराज दीनौ तवैं, कीनो वहुत पसाउ ॥३२॥
माली वाइक-इक दिन नृप बैठौ तखत, आइ कहै वनपाल।
वाग विधुंसै रावलौ, सूअर एक वड़ाल ॥३३॥
सुणत भूप असवार हुइ, सुं मंत्री परवार।
रहे वाग सहु वीटि कै, करत हुस्यार हुस्यार ॥३४॥
घुरक करत ही नीसर्यौ, मंत्री नृपति विचाल।
तिण पूठै दीने तुरी, पवनवेग असराल ॥३५॥
सूअर नासि गयौ कहां, भयौ त्रिसातुर राइ।
बैठौ वड़ तल आई कै, नृपति कहति जल पाई ॥३६॥
सुंदर सुघरी वावरी, निकट तहाँ जल लैन।
वीरोचन आयौ त्रिषत, जल भृत सीतल नैन ॥३७॥
गलि पाणी छागल भरी, लिखी प्रसस्त विलोक।
वांचै दसकत मंत्रवी, दीठौ एक सलोक ॥३८॥
अरधराज सेवक सधर, मर्म जांणि अरु जोइ।
पहिली ओह न मारियै, तौ फिरि मारै सोइ॥३९॥
अक्षर कर्दम लीपि कै, आयौ जिहां राजान।
भूप कहै जलपांन करि, करि आऊं असनान ॥४०॥
लोयै हिलोला हंस ज्युं, नूतन गारि निहारि।
मुख पांणी सुं मंजीया, वांचै नृप अविकार ॥४१॥

मंत्री मुझ भय भंजिया, नृप आयौ तिणि ठांम।
छागल जल भरि ल्याइ हूं, राजि करो विश्राम ॥४२॥
अक्षर देखे जाइ के, बात भई विपरीत।
राइ अबै मुझ मारिसी, मंत्री भयौ भयभीत ॥४३॥
आयौ नृप सूतो निरखि, करग झाल करवाल।
नंद नृपति मंत्री हण्यो, बूर्‌यौ सरवर पाल ॥४४॥
माली देखत ही डर्‌यौ, चढ्यो वृख परि नासि।
साखा कंपी रुंख की, मंत्री चित्त विमासि ॥४५॥
नर अथवा वानर किणिहि, साख हलाई जास।
होंणहार तउ होइसी, साखा भेद विणास ॥४६॥
माली तौ किहि दिसि गयौ, आयौ मत्री गेह।
प्रजा लोक मिलि पूछिहै, राइ कहाँ कहै तेह ॥४७॥
मंत्रीवाइक—कहा कहूं मंत्री कहै, भूप हण्यौ वाराह।
पाछै सुत नही राइ कै, पाट वैसारे ताहि ॥४८॥
नगर लोक मिलिकै दीयो, वीरोचन कुं पाट।
इक राणी कै गर्भ है, सो मन मांहि उचाट ॥४९॥
सुत जायौ पूरण दिवस, अरिमरदन तसु नाम।
चंदकला वाधै कला, रूप अधिक अभिराम ॥५०॥
वार वरस बोले कुमर, तब ले थाप्यौ पाट।
मात कहौ मुझ तातकूं, मरण भयौ किण घाट ॥५१॥
माता वाइक—मात सुणी जैसी कही, तौही न मानै चित्त।

खबर करण सुधी अबै, पुर में फिरै नृपत्ति ॥५२॥
एक दिवस माली घरहि, छांनौ रह्यौ छंछाल।
सुणो करंत तिंह वारता, मालणि मालागार ॥५३॥
मालणी वाइक—वार बरस तुम कहाँ रहे, कहां गये थे कंत।
अहो प्रीति तुम कारिमी, हसि हसि यु पूछंत ॥५४॥
कबहूं मोहि चितारिते, कहत मालिणी भाख।
तुं मुझ कबहु न विसरती, ज्युं वीरोचन साख ॥५५॥
वात कहौ मालणि कहै, अजहू है निसि नारि।
सठ तिय हठ गहि कै रही, वात कहहि तिणिवार ॥५६॥
अरिमरदन संबही सुण्यौ, सुणी श्रवण सब वात।
करि सहिनांण गयौ सहल, चर भेजे सुप्रभात ॥५७॥
प्यादा वाइक—रे हो मालि तेरि है, तो कुं श्री महाराज।
चालै क्युं न उतावरो, ढीलन का नहीं काज ॥५८॥
वैण सुणत वेदल भयौ, गयौ जिहां नरराइ।
माली द्वै कर जोरि कै, जाई लग्यौ प्रभु पाई ॥५९॥
राजा वाइक—सुणि आरामिक नृप कहै, आज अरधथी राति।
अपणी प्यारी सुं कहौ, क्या करते थे वात ॥६०॥
माली वाइक—आरामि साचौ कहै, कैसी कहीयै वात।
नंदराई कुं मारि कै, वीरोचन को घात ॥६१॥
चाकर भेजे आपणं, सूधी वात सिखाइ।
वीरोचन परधान कुं, ल्यावौ जाइ बुलाइ ॥६२॥

द्वार रोकि चाकर रहै, चालि चालि मंत्रीस ।
तुझ कुं राइ वुलाइ है, तुरत लखी मन रीस ॥६३॥
प्रभु कुं मिलण चल्यो जबैं, कुसुकन भए अपार ।
फिरि पाछो गृह आइकै, कीनौ मरण विचार ॥६४॥
मंत्री वाइक—च्यारौं पुत्र वुलाइ कै, द्यै है मंत्री सीख ।
मो मारौ तौ रज रहे, नहीं तर मांगो भीख ॥६५॥
तुम्हकुं कहिकै जाइ हुं, राई तणैं दरवार ।
कुनजर देख्यो राइ की, तौ हणीयौ खगधार ॥६६॥
चौथै सुत वीरौ गह्यो, गयौ दरवार कुलीन ।
फिरि वैठौ नृप देखि कै, घाउ तवैं उण कीन ॥६७॥
फिटि फिटि मूरख क्या किया, कीनो वहुत अकाज ।
राजि हरामी तात सुं, नहीं हमारै काज ॥६८॥
खुसी भयौ नृप सुणतही, वहुत वधारूं तुझ ।
सांमिधरम्मी तुं खरो, साचौ सेवक मुज्झ ॥६९॥
ताहि दीयो परधान पद, वाजी रही सुठाह ।
अरिमरदन मान्यौ वहुत, प्राक्रम अंग अथाह ॥७०॥
पुन्य पसायैं सुख लह्यौ, सीधा वंछित काज ।
कीनी नंद वहुत्तरी, संपूरण जसराज ॥७१॥
सत्तरै सै चवदोतरै, काती मास उदार ।
की जसराज वहुत्तरी, वीलहावास मझार ॥७२॥

इति श्री नंद वहुत्तरी दूहावंध वारता समापता ।

[पत्र २ अभय जैन ग्रन्थालय]

अथ चौबोली कथा लिख्यते

॥ कवित्त ॥

सभा पूरि विक्रम्म, राइ बैठो सुविसेसी ।
तिण अवसर आवीयउ, एक मागध परदेसी ।
ऊभो दे आसीस, राइ पूछइ किहां जासौ ?
अठा लगैं आवीयौ, कोइ तैं सुण्यौ तमासौ ?
कर जोड़ि एम जंपइ वयण, हुकम रावलौ जो लहुं ।
जिनहर्ष सुणण जोगी कथा, कोतिग वाली हूं कहुं—१
श्री वल्लभपुर सबल, तासु पति श्रीपति सौहै ।
कुमरी जोवनवंत, रूप रति सुर नर मोहइ ।
चवि चौबोली नाम, तेण हठ एम संबाह्यउ ।
बोलावेसी वहसि, वार मो च्यार उमाह्यौ ।
जिनहर्ष पुरुष परणिसि तिको, ताँ लगि नर निरखुं नहीं ।
बहु भूप आइ बंदी हूआ, बोल न बोलै मैं कही —२
पर दुख भंजण भूप, साथि वेताल करेनइ ।
हर्ष धरिनइ हालीयौ, गयौ तिण पुरसो लेनें ।
अरहट कु भरी आंण, वहै विण वलदां पेखै ।
मालण घरि ऊतरे, सांझि जदि थई विसेषैं ।
नृप तांम गयो कुमरी महल, मुख बोलै नहीं मूल था ।
जिनहर्ष कहै सुणि आगीया, निसि बोलै ज्युं कहि कथा—३

॥ दूहा ॥

मोनइ काइ नावै कथा, कहै वैताल नरेस।
राजि कहौ रूड़ी परइ, हूं हूंकारौ देस—४

अथ प्रथम पहुर झारौ बोलायौ

॥ दूहा ॥

माइ-बाप, मांमै मिलै, भाई चौथौ भालि।
जण च्यारे दी जूजुई, कन्या एक निहालि—५

॥ कवित्त ॥

चींद च्यारि चींदणी एक, च्यारे चढि आया।
दोष वधंतौ देखि, वप्प पावक जलाया।
एक वल्यौ तिण साथि, एक तीरथ पयांणइ।
एक चल्यउ ले फूल, एक फिर भिख्या आंणइ।
इम ठोड़ि-ठोड़ि च्यारे हुआ, चल्यौ आइ गंगा तिकौ।
इक नगर मांहि गृह देखिनइ, भोजन काजि वैठो तिकौ—६
कामणि करइ रसोइ, बाल तदि आड़ो मंडइ।
चूल्हा मइ चांपीयउ, हाथ पग सीस विहंडे।
रीस करे ऊठीयौ, तांम तिण अमृत आणे।
चिंद छांटीयउ बाल, हूऔ जीवत अहिनांणे।
तिण पास ग्रहे वलीयउ तिको, मारग मइ मिलीयउ बीयउ।
रस छांटि सजोड़ै कन्यका, ऊठी आलस न कीयउ—७
नारि नीहाली नरे, राड़ि मांहो मइं मंडी।

धूंकल सबलौ धूखै, जाइ किण वतइ न छंडी।
कहि झार कुण धणी? राय विक्रम पयासै।
साथि वल्यौ तेहनी, तांम चौबोली भासइ।
काइ रे मूढ कूड़ौ चवइ, तेतौ भाई सारिखो।
जिनहर्ष पिंड भरीयौ जियै, नारि तासु ए पारिखो—८

अथ बीजे पहुर सिंघासण बोलायौ

॥ दूहा ॥

जोवां परदेसइ जई, करम तणो अधिकार।
चार मित्र मिलि चालिया, वारू करे विचार—९

॥ कवित्त ॥

च्यारे मिल चालीया, देस सुत्तार दरजी।
त्रीजौ कहि सोनार, विप्र सहु जाण सुकजी।
वासौ वसीया वेड़ि, वांधि पहुरा च्यारेइं।
धुर बैठो सूत्रधार, कठ इक चंदन लेई।
निज राछ काढिनइ पूतली, कीधी कन्या जेहवइ।
पूरइ पहुर सूतौ तिकौ, जाग्यौ सूजी जेहवै—१०
देखि पूतली नगन, चीर सीवी पहिरायौ।
ओ सूतौ अधि रात, अनइ सोनार जगायौ।
घड़ि ग्रहणा घाट, अंग सिणगार वणायौ।
पहुराइत पौढीयौ, विप्र तिन ठाइ पठायौ।
सरजीत कीध पंचालिका, माहो मै झगड़ौ करइ।

विक्रमादीत राजा कहै, कवन पीढ़ नारी वरै—११
कहइं सिंहासण सांमि, वात एहवी सुहावै।
कह न सकुं बीहतौ, नारि बांभणनइ आवइ।
चौबोली कुंयरी रीस करि इण परि जंपै।
गहिला कांइ गिवार, वयण असमझ पयंपै।
सूत्रधार ईस सूई सहज, बांभण पिता सु जाणीयइ।
जिनहरष नारि सोनार री, बीजी कथा वखाणीयइ—१२

॥ दोहा ॥

अथ तीजै पहुर दीयौ बोलायौ

लाट देस भोगवती, नगरी भल नर नारि।
देवी रौ तिहां देहरौ, महिमा नगर मझार—१३

॥ कवित्त ॥

चरचै नृप चामंड, भगति सुं होमि भली परि।
वर दीधौ तिण वार, मात दे पुत्र मया करि।
देवी वर दीकरौ, हुयो महिमा जग मोहइ।
तिणपुर धोबी एक, तासु घरि कन्या सोहै।
अनगाम तिणै धोबी तिका, दीधी विरहाकुल थयौ।
जागतौ पीठ जग जाणिजै, देवी प्रासादइ गयौ—१४
मात चढाइस सीस, रजक जौ कन्या देसी।
अरज करे आवीयौ, सकल सुरवर सुविसेसी।
परणाई तिण सुता, रजक-सुत पूगी रलीयां।

चल्यौ लेइ कलत्र, मित्र ज्युं विकसइ कलीयां ।
तिण ठोड़ि आय रथ थंभीयौ, भुवन जाइ सिर कापीयउ ।
तिहां गयौ मरण देखे तुरत, मित्र तासु तिमहिज कीयौ—१५
अजी न आया केम, तिका कामणि तिहां पहुती ।
पेखि मरण एहवौ, मरै देवी मां कहती ।
तौ ए करि सरजीत, सीस धड़ मेल्हि निचंता ।
तिण मेल्हा जूजूया, हुआ जीवता चिढंता ।
कहि दीप नारि ते केहनी, धड़ वनिता राजन लहइ ।
जिनहरष रीस करि सीसरी, कांमणि चौबोली कहै—१६

अथ चउथइ पहुर हार बोलायौ

॥ दूहा ॥

आयो दक्षण देश थी, उलगाणौ वर वीर ।
वर्द्धमानपुर वर-प्रसिद्ध, वीरसेन नृप धीर—१७

कवित्त

वर्द्धमानपुर वड़ौ, नाम वीरसेण नरेसर ।
दक्षण थी आवीयौ, एक रजपूत वीरवर ।
राइ कहइ किन काम, सेव कजि साहिब आयौ ।
रोजगारा की लेसि, सहस दीनार दिवायौ ।
असवार किता सुत नारि हुं, रावति पुरपति राखीयउ ।
निसि नारि काइ रोती सुणी, भूप जागि इम भाखीयौ—१८
कोइ जागै पाहरू, तरइ वर वीर हूंकारइ ।

कुण रोवइ करि खबरि, ऊठि चाल्यो नृप लारइ ।
कोइ रोवै, तूं कवण भूप कुलदेवी भाखइं ।
दिन त्रीजइ नृप मीच, कष्ट किम टलइ सु दाखै ।
निज हाथ मारि सुत घाव सुं, वल मोनुं जो को दीयइ ।
नरराइ रहै तउ जीवतौ, वीरै जाइ निज सुत लीयै—१६
आई साथे अवल पूति, करि घाउ चढ़ायौ ।
माइ मूई उरि फूटि, वीर निज सीस वढ़ायौ ।
राइ करइ अपघात ताम देवी करि झालइ ।
तौ ए करि सरजीत, हुआ जीवति उठि चालै ।
सतवंत हार कुण ओलगू, ताती होइ भाखै तथा ।
जिनहर्ष सत्त राजा अधिक, चौवोली च्यारे कथा—२०
च्यार वार वोलाय, चार फेरां सुं परणी ।
वरत्यां मंगलच्यार, च्यार वेदों गति करणी ।
च्यारे दिसि जस हूयौ, च्यार जुग तांइ नामो ।
च्यार दरसण गुण चवइ, पुहवि सुख सपत्ति पामो ।
नवनिधि सिद्धि आठे अचल, विक्रमराइ वधावियौ ।
जिनहर्ष नगारे निहसते, उज्जेणीपुर आवीयौ—२१

———

कलियुग आख्यान

ढाल—चउपईनी

सतजुग मा नलराजा थयउ, रामचन्द्र त्रेता जुग कह्यउ।
द्वापर मांहि करण दातार, पांडव पांच थया जोधार—१
धरमपुत्र युधिष्ठिर राय, बीजउ भीम भ्रात कहवाय।
अर्जुन त्रीजउ बाणावली, चउथउ सहदेव नकुलउ बली।—२
ए पांचे हथिणापुर राज, करइ धरम करम ना काज।
न्याई नीतिशास्त्र ना जांण, जेहनी मह को मानइ आंण।—३
एक दिन धर्मपुत्र महाराज, रयवाड़ी रमिवानइ काज।
अलगउ एक वन माहै गयउ, ख्याल निहाली अचरिज थयउ ४
नीची थईनइ धावइ गाय, निज वछीनइ दीठी राय।
जोवउ रे अचरिज ए किसउ, राजा मनमां चिंतइ इसउ।—५
आगलि रायइ कीधी मींट, तीन सरोवर त्रेणइ दीठ।
तीने सरवर जल कल्लोल, भरीया करता छाको छोल।—६
प्रथम सरोवर थी ऊपड़इ, जलधारा त्रीजा मा पड़इ।
विचिला मांहे न पड़इ टीप, ए अचरिज दीठउ अवनीप।—७
राजा मन विस्मय पांमीयउ, हीयड़इ धरि आगलि चालीयउ।
पांणी भीनी वेलू साहि, रज्ज वणइ भाजइ खिण मांहि।—८
देखी कौतुक चाल्यउ राय, आगलि जातां अचरिज थाय।
त्रूटंतउ पांणी आवाह, खांची ल्यइ जल कूप अवाह।—९

आगलि चाल्यउ नृप निरभीक, एक चंपक दीठउ सश्रीक।
पासइ एक समी नउ वृक्ष, वन माहे दीठउ नृप दक्ष।—१०
समी वृक्षनइ पूजइ सहु, चोवा चंदन लेपइ चहुं।
आगलि नाटक करइ अनेक, रायइ दीठउ एह विवेक।—११
पुष्फपत्र फरु भरीया घणां, छत्राकारइ सोहामणा।
तेहनी कोइ न पूजा करइ, राजा देखी अचरिज धरइ।—१२
बालाग्रइ बाँधी वंकिला, आकासइ लंबित रही सिला।
राजा अचरिज नउ ख्यालीयउ, देखीनइ आगलि चालीयउ—१३
तरुअर वधियउ फलनइ काज, फल दुखदाई दीठा राज।
आगलि दीठउ लोह कड़ाह, सुंदर अनी पाक नउ ठाह।—१४
ते माहे रंधायइ मंम, देखीनइ थायइ मन भ्रंस।
आगलि नृप जायइ ज भलइ, सरप गुरुड़ दीठा तेतलइं—१५
पूज अपूजा नयण निहालि, आगलि चाल्यउ वली भूपाल।
गज जूता खर जूता रथइं, कलह सनेह निहालइं पथइं।—१६
आगलि चाल्यउ जायइ राय, देखीनइ मन विस्मय थाय।
सिंहासण बइठउ वायंस, सेवइ तेहनइ उत्तम हंस।—१७
एहवा अचरिज दीठी भूप, मनमइ चिंतइ किसउ सरूप।
घरि आव्यउ पिणि मनमा चिंत, जईनइ पूछूं श्रीभगवंत।—१८
नारायण नइं लागी पाय, बेकर जोड़ी पूछइ राय।
मइ दीठा छइ अचरिज एह, टालउ त्रीकम मुझ संदेह।—१९

ढाल—आख्यातनी

श्री कृष्ण भाखइ धर्मसुत सुणि, प्रथम एह विचार रे।
सत्वहीण थास्यइ नारि नर, कलिजुगइ तुं अवधारि रे।
मात पिता दुख भूख पीड्या, नहीं कोई आधार रे।
धनवंत नइ निज सुता देई, तास द्रव्य आहार रे।--२०
जिम गाय धावइ वाछड़ीनइ, वात उलटी इम हुस्यइ।
धन दीकरी नउ भक्ष करिस्यइ, लोक नीति न चालिस्यइ।
तइं सरोवर तीन दीठा, तास सुणि विरतंत रे।
प्रथमनउ जल ऊछलीनइ, अंत माहि पडंत रे।—२१
जे रह्यउ छइ विचइ सरवर, बूंद न पड़इ एक रे।
कलिजुगइ थास्यइ लोक एहवा, नहीं लाज विवेक रे।
जे सगा अनइ निजीक वाल्हा, आविस्यइ नहीं काम रे।
ते सोथि करिस्यइ वैर बांधा, निकटवासी धाम रे।—२२
जे साथि सगपण नहीं किमही, वसइ अलगा जेह रे।
बहु प्रीति करिस्यइ ते संघातइ, मान लहिस्यइ तेह रे।
दोरड़उ वेलू तणौ भाग्गा, जतन करतां जाइ रे।
कलिकाल भाव तणा फल, श्रीपतिकहइ सुणि राय रे।—२३
कृष्णादिकइ बहु क्लेश संयुत, लोक धन ऊपाविस्यइ।
ते अगनि चोर जलादि कारण, राजा डंड पजाविस्यइ।
बहु जतन करिनइ राखिसइ धन, तउ ही पिण रहिसइ नहीं।
धन अलप आय उपाय बहु, व्यय, आवाह फल सांभलि सही २४

कृष्य वाणिज्य क्लेस कलिनइं, द्रव्य मेलविसइ बहु।
कर सीस धरिसइ दंड करिसइ, राय संग्रहिसइ सहु।
समी चंपक फल कहउ प्रभु, राय पूछइ पग ग्रही।
गुणवंत उत्तम महासज्जन, तेह पूजासइ नहीं।—२५
जे अधम पापी सुमति कापी, नील खल दुष्टातमा।
तेह तणी पूजा लोक करिस्यइ, मानिस्यइ परमातमा।
सिला दीठी वाल बांधी, पाप कलिजुग सिल सही।
तिहां अलप धर्म वालाग्र आयइं, लोक निस्तरिस्यइ लही।—२६
वृद्धि तरु फल अरथ सांभलि, कहइ चतुर्भुज नृप तणी।
पिता वृक्ष समान परतिख, पुत्र फल सरिखउ गिणी।
बहु अरथ अरथइ बापनइ सुत, हणइ दुख आपइ घणउ।
उद्वेग उपजावइ निरंतर, फल थयउ असुहामणउ।—२७
लोक कड़ाह मइ मांस पाचइ, तेहनउ कारण किसुं।
स्वज्ञातिनउ परिहार करिसइ, प्रीत करिसइ नीच सुं।
पर वर्ग नइ निज सीस देसइ, नीच खल सुं प्रीतड़ी।
गुरुड़ न लहइ रिती पूजा, सर्प पूजा एवड़ी।—२८
सर्प सरिखउ धर्म निर्दय, तेहनइ सहु मानिसइ।
धर्म उत्तम गुरुड़ सरिखउ, तेहनइ अपमानिस्यइ।
नर जेह उत्तम गुणे सत्तम, कलह माहो मां करइं।
रथ धुरा मर्यादा न धारइ, मांण गइवर जिम धरइ।—२९
नींच कुल ना परसरीखा, प्रीति माहो मां घणी।

निज नीति मर्यादा न मेल्हइ, मिष्ट वाणि सुहामणी।
काग दीठउ हंस सेवित, फल कहउ हरि तेहना।
काग सरिखा हुसइ राजा, नीच कुल ना ऊपना।—३०
हंस सरिखा सुद्ध निरमल, तास करिसइ चाकरी।
ते थकी रहिसइ बीहता जन, सीह थी जिम बाकरी।
एहवा दृष्टांत राजा, पूछिया कलिजुग तणा।
श्रीकृष्ण भाख्या हीयइं राख्या, लोक नीच हुस्यइ घणा।—३१
बहु धर्म हाणि अधर्म महिमा, नीति मारग चूकिसइ।
पूज्य पूजा नहीं थायइ, अपूज्या पूजाइसइ।
धनहीण खीन दलिद्र पीड्या, लोक दुखीया थाइसइ।
धरम करिसइ जन सदंभी, नारि पिण नीलज हुसइ।—३२
लोक माहे तर्कन हुस्यइ, नवि कदाग्रह मूंकिस्यइ।
जलधार अलप हुसइ महीतल, राज विग्रह अति घणा।
व्यवहार माहे खोट पड़िस्यइ, लोक कपटी मन तणा।—३३
पांच पांडव इसुं सांभलि, हीया माहे थरहर्या।
कलि मांहि न रहइ लाज केहवी, धर्म मारग संचर्या।
जिनहर्ष कलि विरतंत एहवुं, कृष्ण नृप आगलि कह्यउ।
जे धर्म करिसइ तेह तरिसइ, तिणइ परमारथ लह्यउ।—३४

इति कलियुग आख्यान समाप्ता

[पत्र २ दानसागर भंडार, बीकानेर प्रति नं० ५४।१६२६]

—:०:—

सज्झाय संग्रह

रहनेमि राजिमती गीत

ढाल कलाल की-री

नेमभणी चाली वंदिवा हो लाल, मारग वूठो मेह-राजीमती ।
भीनी साड़ी कंचूओ हो लाल, भीनी सगली देह राजीमती ॥१॥
तै मारौ मनड़ौ मोहियौ हो लाल, मोहियो श्री रहनेम राजी०॥२॥
देखि एकांति सुहामणी हे लाल, आइ गुफा मझार ॥राजी॥
चीर सुकाया आपणां हो लाल, दीठी रहनेम तिवार ॥राजी० ३॥
रूप निरखो रलियामणौ हो लाल, चूको चित मुनिराय ॥राजी॥
वचन कहैं सुणी साधवी होलाल, मत मन व्याकुल थाय॥राजी०॥
हूँ रहनेम रहूँ इहां हो लाल, तूं आइ मोरे भाग ॥ राजी० ॥
भोग तणां सुख भोगवां हो लाल, छोड़ि परौ वैराग॥राजी०॥४॥
लाजी मनमें साधवी हो लाल, पहिर्या साड़ी चीर ॥राजी॥
बोली साहस आंणीनै हो लाल, सुणि नेमजीरा वीर ॥राजी॥५॥
रहनेमजी तू जादव सिर सैहरौ हो लाल, समुद्रविजैरा नंद॥रहनेम॥
वचन विचारी बोलिये हो लाल, जिम थाये आणंद ॥रह० ॥६॥
विषय विकार न सेवियै हो लाल, किम कीजै व्रत भंग ॥रह०॥
रहनेमजी ! इन वातैं छै मेहणौ हो लाल, आवैकुलनैगाल ॥रह॥
संजम सूं चित लायनै हो लाल, सुद्ध महाव्रत पाल ॥रह०७॥
आदरिऊ भजियै नहीं हो लाल, ले मूंकीजे केम ॥ रह० ॥
वम्यो आहार न जीमियै हो लाल, राजल जंपे एम ॥ रह० ८॥

धरम मारग थिर थापीयौ हो लाल, आंकुस जिम सुंडाल ॥रह०
थाज्यो मांहरी वंदणा हो लाल, कहे जिनहरख त्रिकाल ॥रह० ६॥

ढंढणकुमार सज्झाय

ढाल ॥ १ करकडूने करूं वंदणा हुं वारी ॥
२ वाल्हेसर मुझ वीनति गोडीचा एहनी

ढंढण रिषिने वंदणा हुं वारी, उतकृष्टउ अणगार रे हुं वारीलाल
अभिग्रह कीधु[1] माहरी[2] हुं वारी, लबधे लेस्युं आहार रे॥हुंवारी॥१॥
दिन प्रति जाये गोचरी हुं वारी, मिलइ नही सुध भातरे॥हुंवारी।
न लीये मूल असूझतउ हुं वारी, पंजर हूअउ गात रे हुं वारी॥२ढं॥
हरि पूछइ श्रीनेमिनइ हुं वारी, मुनिवर सहस अठार रे ।हुं वारी।
उत्कृष्टउ कुण एह मा हुं वारी, मुझनइ कहउ विचार रे॥हुं वारी ३ढं
ढंढण अधिकउ दाखीयउ हुं वारी, श्रीमुखिनेमि जिणंद रे हुं०।
कृष्ण उमाह्यउ वांदिवां हुं वारी, धन यादव कुल चंद रे हुं०॥४ढं॥
गलीयारइ मुनिवर मिल्युं हुं वारी, वांदइ कृष्ण नरेस रे हुं०।
किणि ही मिथ्याती देखिनइ हुं वारी, आव्यं[3] भाव विसेसरे हुं०५ढं॥
आवउ मुझ घर साधुजी हुं वारी, ल्यु[4] मोदक छे सुद्ध रे हुं वारी।
रिषिजी वहिरी[5] आवीयाहुं वारी, प्रभुजी पासि विसुद्ध रे हुं०॥६ढं॥
मुझ लबधइं मोदक मिल्या हुं वारी, पूछइ दाखो[6] कृपाल रे हुं वारी
लबधि नहीं ए ताहरी हुं वारी, श्रीपति लब्धिनिधान रे हुं वारी॥७ढं॥

---

१ लीधो २ आपणो ३ आयो ४ ल्यो ५ लेइ ६ कहै

तउ मुजने लेवा नहीं हुं वारी, चाल्यो परठण काज रे हुं०लाल।
ईंट नीवाहइं जाइनै हुं वारी, चूरे करम समाज रे हुं०लाल॥८ढं॥
आवी[७] निर्मल भावना हुं वारी, पाम्युं केवलनाणरे हुं वारीलाल।
ढंढणरिषि मुगतइं गया हुं वारी, कहे जिनहरख सुजाणरे
हुं वारी लाल ॥६ ढं॥

चिलातीपुत्र स्वाध्याय

ढाल १ जिरे जिरे सामि समोसर्या ॥

साधु चिलातीपुत्र गाईयइ, तोड्यां जिणि करम कठोरो रे।
तास चरण निति प्रणमीये, सह्यां जिणि उपसर्ग घोरा रे॥१सा॥
राजगृह पुर "रलीयामणउ, अलिकापुरि अवतारो रे।
धन सारथवाह तिहां वसइ, धनवंतमां सिरदारो रे ॥ २ ॥
दासी चिलाती छइ तेहने, चिलातीपुत्र थयउ जाणो रे।
सेठि नइ पांच छइ दीकरा, कन्या एक निहाणोरे ॥ ३सा ॥
रूप तु अपछरा सारिखी, रति सरसति अनुहारौ रे ।
वाल्ही माय-बापने अति घणुं, भाईने जीव आधारो रे ॥ ४ सा॥
अनुक्रमि दास मोटउ थयउ, (करे) घरमां अन्यायोरे।
लोकना ल्यावइ ओलंभडा, काढ्यउ घरथी कर साह्यो रे ॥५सा॥
चोर पल्ली मांहे जइ रह्यउ, पल्लीपति तसुदेसी रे।
पुत्रकरी तिणि राखीयउ, आपद तास नवेसी रे ॥ ६ सा ॥

७ आई

ढाल २ धन-धन संप्रति साचव राजा ॥ एहनी

जोवउ करमतणी गति केहवी, करम सवल जग मांहिरे।
सुखीया-दुखीया थाये प्राणी,ते सहु करम पसाइ रे ॥ ७ जो ॥
पल्लीपति परलोक सिधायउ, चतुर चिलातीपुत्र रे।
पांचसइ चोर तणउ स्वामी, चोरीकरे असत्र रे ॥ ८ जो ॥
वाट पाड़इ वहु नगर उजाड़इ, मारे माणस वृन्द रे।
लूटइ साथ हाथ नवि आवै, एहवउ दासी नंद रे ॥ ९ जो ॥
एक दिवस वहु चोर संघाते, आव्यउ राजगृह तेह रे।
धन सारथवाह ने घरि पइठउ, न गण्यउ पूरव नेह रे ॥१०जो॥
चोरे शेठ तणु धन लीधउ, कन्या लीधी तेणि रे।
नीकलीया लेइ पुर वाहिरि, वाहर थई ततखेण रे ॥११जो॥
नाठा चोर सहु धन नासी, तिणि पापी अपवित्र रे ।
कन्या सिर छेदी कर लेई, नाठु चिलातीपुत्र रे ॥१२जो॥

ढाल ३ ॥ हो मतवाल्हे साजना ॥ एहनी

आगलि दीठउ मुनिवरु, प्रतिमाधर वर निरमोहीरे।
काया नी ममता तजी, अंतरगत समता सोही रे ॥१३आ ॥
परिग्रह जिणि पासइ नहीं, मुख मून दिगंवर धारी रे।
समिति गुपति सूधी धरइ, वहु लवधिवंत उपगारी रे ॥१४आ॥
देखी मुनि नइ पूछीयउ, कहउ धरम रिसीसररायाा रे।
उपसम विवेक संवर कह्यउ, ए धरम तणा छे पाया रे ॥१५आ॥

इम कहिने ऊडी गयउ, त्रिपदी नउ अरथ विचारइ रे।
उपसम तउ मुझ मां नही, हुँ तउ भरीयउ क्रोध अपारे रे॥१६॥
नही विवेक मुझ मां रती, आस्ये मस्तक स्यइ कामे रे।
संवर आण्यउ आतमा, राख्या निज योग सुठामइ रे॥१७आ॥
मुनि चरणे काउसग रह्यउ, कायानी ममता मूंकी रे।
ध्यान धरे त्रिपदी तणउ, बीजी सहु भावठि चूकी रे॥१८॥आ॥

। ढाल (४)।

भाव चारित्र आव्यउ उदइ जी, निंदइ पातक कर्म।
पाप कीया ते प्राणीया जी, जेह थी दुर्गति भर्म॥१९॥
सुविचारी रे साधु, तोरूं अधिक खिमा गुण एह।
गुणवंता रे मुनिवर, धर्यउ समता सुं नेह॥
महिमावंत मुनिवर, परिसह सह्यउ निज देह।
बलवंतारे साधु तोरा चरण तणी हुं खेह॥२०॥सु॥
साधु चिलातीपुत्र नउ जी, लोही खरड्यु शरीर।
आवी तेहनी वासना जी, कीडी छंछोल्यु धीर॥२१सु॥
वज्रमुखी अति आकरी जी, पइठी कान मझारि।
आंखि मांहे ते नीसरी जी, कीधलां छिद्र अपार॥२२सु॥
पइसी पइसी नीकली जी, वींध्यउ सयल शरीर।
काया कीधी चालिणी जी, पिणि न डिग्यउ वडवीर॥२३सु॥
राति अढी वेदन सही जी, निश्चल थइ मुनिराय।
सूरतणी परि झूझीयउ जी, पाछा न धर्या पाय॥२४सु॥

ढाल ५ ॥ सुणि वहिनी पीउडउ परदेसी ॥ एहनी

विसम सही उपसर्ग चिलाती,—पुत्र तिहांथी मूअउरे ।
सुभ ध्याने सुभ भाव संयोगे, सुर भुवने सुर हूअउ रे॥२५वि॥
अनुक्रमि तेह परम पद लहिस्यइ, करम कठिण निज दहिस्यइ रे।
एहवा साधु तणा गुण ग्रहिस्ये, सुरनर तेहने महिस्यइ रे ॥२६वि॥
साधु चिलातीपुत्र नमीजइ, सगला पाप गमीजइ रे।
मानव भवनुं लाहउ लीजइ, निज मन निर्मल कीजे रे ॥२७वि॥
साधु तणी संगति सुख लहीये, साधुसंगति दुख दहीये रे ।
साधुतणी आणा सिर वहीये, तउ भवमांहि न फहीयइ रे॥२८वि॥
एहवइ उपसर्गइ नवि भाजइ, सदगति मांहि विराजइ रे ।
तेहनी कीरति त्रिभुवन गाजे, जसनी नउबति वाजे रे ॥२९वि॥
जीभ पवित्र हुवइ मुनि थुणतां, श्रवण पवित्र जस सुणतांरे ।
कहे जिनहरख जासु गुण गणतां, जनम सफल हुइ भणतांरे॥३०॥

प्रसन्नचंद राजर्षि स्वाध्याय

ढाल॥जिहो मिथिला नगरी नउ धणी॥एहनी

जीहो राजगृह पुर एकदाजी, जीहो समवसर्या महावीर ।
जीहो वाट विचइ काउसग रह्यउ, जीहो पामेवा भवतीर ॥१॥
प्रसनचंद वंदु तोरा पाय,
जी हो राज देई लघु पुत्रने, जीहो आप थया निरमाय । प्र०।
जी हो श्रेणिक आवे वांदिवा, जी हो वीर भणी तिणि वार ।

जीहो सुमुख ऋीधीस्तवना सुणी, जीहो नाण्यउ मन अहंकार ॥२॥
जीहो दुष्ट वयण दुर्मुख तणा, जीहो सांभलि जाग्यउ क्रोध ।
जीहो प्रेम पुत्र उपरि धर्युं, जीहो मेल्या सहु निज जोध ॥३प्र॥
जीहो अरिदल सुं सनमुख थयउ, जीहो मनसुं करइ संग्राम ।
जी हो श्रेणिक कहे प्रभो उपजइ, जी हो प्रसनचंद किणि ठाम ॥४प्र॥
जीहो सातमी, सुरगति अनुक्रमइं, जी हो वाल्यउ मन ततकाल ।
जी हो वात करंतां ऊपनउ, जी हो केवल झाक झमाल ॥५प्र॥
जी हो सुभ असुभ दल मेलवइ, जी हो गरुअउ मन व्यापार ।
जी हो मन ही मेल्हइ सातमी, जी हो मनही मुगति मझारि ॥६॥
जी हो जोवउ ए गुण भावना, जी हो त्रोडी नाख्या कर्म ।
जी हो प्रसनचंद मुगते गया, जी हो लह्या जिनहरख सुशर्म ॥७॥

हरिकेसी मुनि स्वाध्याय

ढाल॥जीरे जीरे सामि समोसर्या ॥एहनी

हरिकेसी मुनि वंदिये, जोडी कर नितमेवो रे ।
तिंदुक वासी देवता, जेहनी करइ सेवो रे ॥१॥
पंच समिति तीन गुपतीसुं, इरज्या सोधंतोरे ।
ब्राह्मण वाडइ आवीयु, मासखमणने अंतो रे ॥२ह॥
रूप कुरूप कालउ वणुं, तप काया सोपी रे ।
तन मइलउ मन उजलउ, जेहनी करणी चोखी रे ॥३ह॥
फाटा पहियां कलपड़ा, राखेवा लाजो रे ।
ब्राह्मण याग करे तिहां, आव्युं भिक्षा काजो रे ॥४ह॥

बाडव देखी बोलिया, मानी मतवाला रे।
किहां आवइ रे दैत्य तुं, नीच जाति चंडाला रे ॥५ह॥
सुर आवी तनु संक्रम्यउ, बोलइ मधुरी वाणी रे।
भोजन अरथइ आवीयउ, आपउ पुन्य जाणी रे ॥६ह॥
अन्न घणु छइ तुम घरे, मुझ पात्र ने पोसउ रे।
एहवउ सुपात्र वली तुम्हे, लहीस्यु किहां चोखउ रे ॥७ह॥
पात्र जाणुं ब्राह्मण कहइ, ब्रह्म सास्त्र ना पाठी रे।
नित्य षटकर्म समाचरइ, करणी नहीं माठी रे ॥८॥
आश्रव सेवे जे सदा, क्रोधादिक भरीया रे।
तेह कुपात्र ब्राह्मण कह्या, संसार न तिरिया रे ॥९ह॥
पाठक भाखे एहने, मारी ने काढउ रे।
छात्र द्रउड्या लेई चाबखा, सुर कोप्युं गाढउ रे ॥१०ह॥
रुधिर धार मुख नाखता, पड्या थईय अचेतो रे।
भद्रा राय सुता कहइ, तुम कुल एकेतो रे ॥११ह॥
एहनी सुर सेवा करइ, मुझ नइ इणि छोडि रे।
जउ जाणउ छउ जीवीये, सेवुं कर जोडी रे ॥१२ह॥
सगला विप्र मिली करी, कहे स्वामी तारउ रे।
तुम थी रहोये जीवता, प्रभु क्रोध निवारउ रे ॥१३॥
क्रोध नही अमने कदी, जक्ष सेवा सारइ रे।
एह कुमर तुमचा हण्या, वयावच संभारइ रे ॥१४ह॥
तउ प्रभु ल्यउ भिक्षा तुम्हे, परघल अन्न आपइ रे।

वसुधारा वर्षण करइ, मुनि दान प्रतापे रे ॥१५ह॥
निरवद्य याग कही करी, प्रतिबोध्या विप्रो रे ।
कहे जिनहरख महामुनि, गया मुगते खिप्रो रे ॥१६ह॥

मेतारज मुनि सज्झाय

श्रेणिक राजा तणो रे जमाई, जात तणो साहुकार जी
मेतारज संजम आदरीऊ, क्षमा तणो भंडार जी ॥१श्रे॥
ऊंच नीच कुल भीख्या अटंतो, लेतो सुध आहार जी
सोवनकार तणै घर आयो, मुनि दीठो सोनार जी, ॥२श्रे॥
भावै वंदे ते उठिनै, भलै पधार्‌या आज जी
खबर देइ ने घरमें आयो, ऊभा रह्या रिषराय जी ॥३श्रे॥
सोवन जव तिहां मुक्या हुंता, ते सहु गलिया क्रोंच जी
सोवन जव सोनार न निरखै, इसौ थयौ प्रपंच जी ॥४श्रे॥
जव उरा आयो मुझ रिख जी, म करो इवड़ो लोभ जी
ऋद्धि छोडिने तुम्हें व्रत लीधो, म गमो संयम सोभ जी ॥५श्रे॥
नाम प्रकास्यो नवि पंखी नो, आणी करुणा साधु जी
सोनारै घर में तेडि नें, माथे वींट्यो वाध जी ॥६श्रे॥
तावड़ सु ते वांध सुकाणो, अति भीडाणो सीस जी
ते वेदन सही सबली पिण, मन में नाणी रीस जी ॥७॥
आंख पड़ी वे धरणी छिटकी नै, पाम्यो केवलग्यान जी
मेतारिज रिख मुगते पुंहता, पाम्यां सुख असमान जी ॥८॥

धन धन रिख मेतारीज, दया तणो प्रतिपाल जी
कहै जिनहरख सदा पाय प्रणमुं, प्रहसम उठी त्रिकाल जी ॥६॥

इति श्री मेतारिज मुनि नी सज्झाय

काकंदी धन्नर्षि स्वाध्यायः

ढाल ॥ नाचे इद्र आणदसु ॥

वीर तणी सुणि देसणा, जाण्यु अथिर संसारो रे।
सीह तणी परि आदर्युं, वयरागे व्रत भारो रे ॥ १ ॥
वंदु मुनीवर भाव सुं, धन धन्नउ अणगारो रे।
छठि-छठि नइ पारणइ, आंबिल उझित आहारो रे ॥ २वं ॥
देह खेह सम जाणि नइ, तप तपे आकरा जोरो रे।
कठिण परीसह जे सहइ, जीपण करस कठोरो रे ॥ ३वं ॥
साप कलेवर खोखलउ, सूकुं तेहवउ सरीरो रे।
हाड हिंडंता खडखडे, मंदरगिरि जिम धीरो रे ॥ ४वं ॥
वीर नइ श्रेणिक पूछीयउ, चउदह सहस मझारो रे।
आज अधिक कुण मुनिवरु, तपगुण दुक्कर कारो रे ॥ ५वं ॥
धन्नउ वीर वखाणीयउ, पाय वंदण थयउ कोडो रे।
राय नइ रिषि साम्हु मिल्यु, वांदइ बेकर जोड़ो रे ॥ ६वं ॥
श्रेणिकराय गुण वरणवइ, धन-धन तुझ अवतारो रे।
निज मुख वीर प्रसंसीयउ, तुझ समउ नही को संसारो रे ॥७वं॥
नव मास चारित्र पालियउ, धरिय संलेहण ध्यानो रे।
एका अवतारी थयुं, लह्यु अनुत्तर थानो रे ॥ ८वं ॥

एहवा मुनि पाय वंदीये. परम दयाल कृपालो रे।
कहइ जिनहरख सदा नमुं, प्रहउठी नइ त्रिण कालो रे ॥१९वं ॥

गजसुकमाल स्वाध्याय

ढाल ॥ घरि आवउ हो मन मोहन घोटा ॥ एहनी

गजसुकमाल वइरागीयउ, सुणि नेमीसर उपदेस । वारी ।
मन मानी तुझ देसणा, हुं तउ लेइसि संजम वेस ॥ वारी१ ॥
मुझ तारउ हो नेमीसर वारी, तुं तउ ज्यादव कुल सिणगार ।वारी।
वाल्हा तुझ ऊपरि सउवार । वारी । मु । आं ।
जिम सुख थाये तिमकरु, अनुमति लेई दीधी दीख । वारी ।
बालपणे व्रत आदर्युं, जगगुरु आपे धर्म सीख वारी ॥२मु॥
कर्म खपे किम माहरां, वइगा कहउ नइ जग भांण । वारी ।
समता रस मन मां धरी, काउसग जई करि समसाण ॥वारी३मु॥
प्रभु आदेस लेई करी, आव्यउ तिहां गजसुकमाल । वारी ।
थिर काउसग ऊभु रह्यो, सोमिल दीठउ ततकाल ॥वारी४मु॥
क्रोध प्रबल हीयडइ वाध्यउ, फिट फिट रे पापी मुंड। वारी ।
नीच करम ए आचर्युं, मुझ बालक कन्या छडि ॥वारी५मु॥
सीखामण द्युं एहनइ, वलतुं न करे कोई आम । वारी ।
रिपि हत्या मन चींतवी, चंडाल तणउ कीयउ काम ॥वारी५मु॥
पाल करी माटी तणी, बलता सिरि धर्या अंगार । वारी ।
सोमल सीस प्रजालीयुं, पिणि नाण्यु क्रोध लिगार ॥वारी७मु॥

अंतगड केवली थई करी, मुगतइं पहुता मुनिराय । वारी ।
चरण कमल निति निति वंदीये, जिनहरख कहइ चितलाइ ।।वारी८

अरहन्नक मुनि स्वाध्याय

ढाल।। मुगुण ।।

वहिरण वेला हो रिषिजी पांगर्या, सोभागी सुकमाल ।
मागी न सके हो भिक्षा लाजतउ, ऊभउ रह्यउ छांह निहालि ।।१
कोइ बतावे हो अरहन्नउ माहरउ, आतम तणउरे आधार ।
नेह गहेली हो मायडी विलविलइ, नयणे वरसइ जलधार ।।२को।।
गउखइ वइठी हो नारि निहालीयउ, सुंदर रूप सुजाण ।
ए रिखि उभां हो वार घणी थई, आवी कहइ मीठी वाणि ।।३को।।
किम तुमे आवा हो ऊभाथाइ रह्या, सी मन ध्यावउछउ वात ।
संयम दोहिलो हो रिषिजी पालतां, सुख भोगउ दिन राति ।।४को।।
अङ्ग सुरङ्गो हो सोहइ सुन्दरी, तन सोलह सिणगार ।
जोवनवती हो अरहन्नो मोहीयउ, लागा नयन प्रहार ।।५को।।
नारी वयणे हो चरित्र मूकीयउ, मांडि रह्यौ घरवास ।
भोग करमने हो वसि तिहां भोगवे, विविध विनोद विलास ।।६।।
गली गली में हो फिरती इम कहइ, आवउ म्हारा जीवन प्राण।
माइडी विसूरइ हो वाल्हा तुझ विना, दुख सालइ जिम वाण ।।७।।
पुत्र वियोगे हो गहिली हुइ गई, केडइ लोक अपार ।
प्रेम विलूधी हो इम थई सोधवी, हींडइ घरि घरि वार ।।८को।।

क्रीड़ा करता हो दीठी मावडी, ऐ ऐ मोह विकार।
मारइ मोहइ हो एह विकल थइ, धिग धिग मुझ अवतार ॥९ को॥
आवी पाए हो लागउ, देखी मन मायनइ आव्यु रे ठाम।
एस्युं कीधुं रे पूत वलाइल्युं, किम तजीये व्रत आम ॥१० को॥
चारित्र न पलइ हो मइ ए मात जी, खरउ कठिण विवहार।
घरि घरि भिक्षा हो मांगी नवि सकुं, चरित्र खंडा नी धार ॥११॥
विष पासी नउ हो मरण भलउ कह्यु, पिणिन भलउ व्रत भंग।
सिलपट उन्ही हो करि आतापना, परिहरि नारी नउ संग ॥१२॥
माडी वयणे हो जाग्यउ जुगतस्युं, तुरत तज्युं घरवास।
सूरज किरणे हो ताती सिल थई, व्रत लेई सूतउ उलास ॥१३॥
अगनि प्रसंगे हो जिम मांखण गलइ, तिम परघलीयउ रे अङ्ग।
सरणा आपइ हो ऊभी मावडी, म करिसि मोह प्रसंग ॥१४ को॥
प्राण तजी ने हो ततखिणि पामीयउ, अनुपम अमर विमाण।
विषम परीसह हो एहवउ जिणि सह्यउ, धन जिनहरख सुजाण ॥१५॥

नंदिषेण मुनि स्वाध्याय

ढाल ॥ इतला दिनहु जाणती रे हा ॥ एहनी

वहिरण वेला पांगर्युं रे हां, राजगृह नगर मझारि। नंदषेण साधुजी
करम संयोगे आवीयउ रे हां, वेस्या ने घर बार ॥ १ नं ॥
करम सुं नही कोइ जोर, सके नहीं वल फोरि।
चांपी न सके कोर, करम दीये दुख घोर ॥ नं ॥
ऊँचे स्वर आवी करी रे हां, धर्मलाभ मुनि दीध। नं।

अरथलाभ अम जोईयेरे हां, गणिका हासी कीध ॥ २नं ॥
जाण्यउ ए नहीं कुलवहू रे हां, एतउ वेस्या नारि । नं ।
अणवोल्यउ पाछउ वल्यु रे, हां वली आव्युं अहंकार ॥३नं॥
खांच्यु वर नउ तिणखलउ रे हां, लगारि क हाथ मरोडि ।नं।
वृष्टि थइ सोवन तणी रे हां, साढी बारह कोडि ॥ ४नं ॥
चतुर नारी चित चमकीयउ रे हां, लागी रिषि ने पाइ ।नं।
धन लेई जाअउ तुम रे हां, कइ भोगवउ ईहां आइ ॥ ५नं ॥
करम भोग मुनिवर तणइ रे हां, उदय आव्यउ तिणि वार ।नं।
नारी वयण सुहामणा रे हां, लागा अमृत धार ॥ ६ ॥
वेस्या सुं सुख भोगवे रे हां, दस दस दिन प्रति बोधि ।नं।
श्री जिन पासइं मोकले रे हां, इम करे अभिग्रह सोध ॥७नं॥
बार वरस ने आंतरे रे हां, कठिन मिल्युं एक आइ । नं ।
प्रतिबोध्यउ बूझे नही रे हां, ते फिरि साम्हउ थाइ ॥८नं ॥
वेस्या आवी वीनवे रे हां, ऊठउ जिमवा स्वामि । नं ।
एक वि वार आवी कहुंरे हां, तउ ही न ऊठे ताम ॥ ९नं ॥
हसती बोली हुंस सुं रे हां, दसमा तुम्हें थया आज । नं ।
वचन तहत्ति करि ऊठीयउ रेहां, आज सर्या मुझ काज ॥१०नं॥
फेरि चारित्र आदर्युं रे हां, आलोयां सहु पाप । नं ।
कहे जिनहरख नमुं सदा रे हां, चरण कमल सुख व्याप ॥११नं॥

—:०:—

सती सीता री सज्भाय

जल जलती मिलती घणी रे लाल, झालो झाल अपार रे।सुजांणसीता
जांणे केसू फूलीया रे लाल, राताखेर अंगार रे सुजांण सीता ॥१॥
धीज करै सीता सती रे लाल, सील तणे परमाण रे ॥सु०॥
लखमण राम खड़ा तिहां रे लाल, निरखै रांणो रांण रे ॥२सु॥
स्नान करी निरमल जले रे लाल, पावक पासै आय रे ।सु०।
ऊभी जांण देवंगना रे लाल, वीवणो[1] रूप दिखाय रे ।।सु३धी॥
नरनारी मिलिया बहु रे लाल, ऊभा करैय पुकार[2] रे ।सु०।
भस्म हुस्यै इण आग में रे लाल, राम करे अन्याव[3] रे ।।सु४धी०॥
राघव विण वांछ्यो हुस्यै रे लाल, सुपने ही नर कोय रे ।सु०।
तो मुझ अगन प्रजालज्यो रे लाल, नहीं तर पाणी होयरे।।सु५धी०॥
इम कही पेठी आग में रे लाल, तुरंत थयो ते[4] नीर रे ।सु०।
जांणै द्रह जल सुं भर्यो रे लाल, झीलै धरम नो[5] धीर रे।।सु६धी
रलीयायत सहु को हुया रे लाल, सगले थया उछरंग रे ।सु०।
लखमण राम थया खुशी रे लाल, सीता सील सुरंग रे ।।सु७धी॥
देव कुसुम वर्षण[6] करै रे लाल, एह सती सिरदार रे । सु०॥
सीता धीजे उतरी रे लाल, साख भरे नर[7] नार ।।सु८धी०॥
पंचमी[8] गत नित पामवा रे लाल, अविचल सील उपाय[9] रे ।
कहै जिनहरख सती तणा रे लाल, नित प्रणमीजै पाय रे ।।९॥

इतिश्री सीता सती री सज्भाय

---

१ अनुपम २ हाय्र हार्य ३ अन्याय ४ अगनि ५ सुधीर ६ वर्षा ७ संसार ८ जग माहे जस जेहनोरे ९ कहाय ।

सीता महासती स्वाध्याय

ढाल ॥ रसीयानी ॥

धीज करे पावक नउ जानकी, पइसइ अगनिकुंड मांहि ।
मोरा रसिया ।
निज प्रीतम ने कहे इम पदमिणी, चालउ जोवा रे जांहि॥मो१धी॥
लांवुं पहुलुं कुंड खणावीयउ, पांचसे धनुप रे मान । मो ।
झालो झाल मिली पावक तणी, फूल्या जाणे केसू समान ॥मो२धी
नगर अयोध्या वासी सहु मिल्या, मिलिया रावतरे राण ।मो।
कौतक जोवा आव्या देवता, रथ थंभी रह्यउ रे भाण ॥मो३धी॥
लक्ष्मण राम आव्या परिवार सुं, सीता करी रे स्नान । मो ।
आवी कुंड समीपे मल्हपति, करी शृंगार प्रधान ॥मो४धी॥
नर नारी सहु को सुणिज्यो तुम्हे, माहरे किणि सुं रे लाग ।मो।
राघवविणि कोइ चित्तधर्यउ हुवे, तउ वालेज्योरे आगि ॥मो५धी॥
इम कही पइठी पावककुंड मां, पावक पाणीरे होइ । मो ।
हंसतणी परि तिहां क्रीडा करे, हरपित थया सहु कोइ ॥मो६धी॥
नीर प्रवाह चल्यउ जग रेलिवा, सीता मारी रे हाक । मो ।
सील प्रभावे जल वल उपसम्यउ, सतीयइं राख्युं रे नाक ॥मो७धी॥
फूल तणी सिरि वृष्टि सुरे करी, धन-धन सीता रे नारि ।मो।
सहु सतीयां मांहे मोटी सती, एहनउ धन्य अवतार ॥मो८धी॥
निः कलंकित थई ने व्रत आदर्यु, राख्युं जगमां रे नाम । मो ।
चारित्रपाली सुरपति पद लह्यु, करे जिनहरख प्रणाम ॥मो९धी॥

—:०:—

सुभद्रा सती स्वाध्याय

ढाल॥अरध मंडित नारि नागिलारे॥एहनी

सील सलूणी सुभद्रा सतोरे, नामथी थाये निस्तार रे ।
सानिधि कीधी जेहने देवतारे, थयउ जेहनउ जयकाररे ॥१सी॥
नगर वसंतपुर मां धनी रे, सेठ वसे धनदत्त रे ।
तास सुता सुभद्रा भली रे, धरमसुं रातउ जेहनउ चित्त रे ॥२सी॥
रूपेरे नागकुमारीकारे, सुर कन्या सुकमाल रे ।
तात परणावे नही साहमी विनारे, मोटी थई ते बाल रे ॥३॥
चंपानयरी नउ तिहां व्यापारीयुरे, मिथ्यात्वी नामे वुद्धिदासरे ।
नयणे ते दीठी कन्या फूटरी रे, परणेवा इच्छा थई तासरे ॥४सी॥
कपट श्रावक थई परणीयउ रे, लेई आव्यउ निज गाम रे ।
धरम करे रे जिनवर तणउ रे, जयणासुं सहु करे काम रे॥५सी॥
मुनिवर आव्यउ एक अन्यदारे, वहिरावइ सूझतउ आहार रे।
आंखि झरइरे पाणी नीकले रे, त्रिणउ दीठउ आंखि मझार रे ॥६॥
जीभसुं काढ्युं रिपि वहिरि गयुंउ रे, तिलक सतीनउ चउटउ मीसरे
सासू कलंक सिरि चाडीयउ रे, धरम कलंक्यउ वीसवा वीसरे॥७॥
काउसग लेई ने ऊभी रही रे, कहे सासणदेवि आय रे ।
कांइ रे सुभद्रा अभिग्रह कीयुरे, कलङ्क ऊतारउ मोरी मायरे॥८॥
काल्हि चंपाना दरवाजा जडीरे, कहीसुं चालणीये काढी नीररे।
सतीरेसिरोमणि छांटिस्येरे, पउल ऊघडिस्यइ साहस धीर रे॥९॥
तुझ विणि कांइन ऊघाडिस्यइरे, इम कहीने गई देवि रे ।

प्रात थयुंरे पउलि न उघडेरे, पडहउ फेराव्यउ रायइं टेवरे ॥१०॥
आव्युं सुभद्रा केरे बारणेरे, पडहउ निवार्यु सतीयें तामरे ।
राजा परजारे सहु कोआवीया रे, आवी सुभद्रा कूआ ठामरे ॥११॥
काचे रे तातण बांधी चालणीरे, कूआथी काढ्युं निर्मल नीर रे।
पोलि उघडी तीने छांटिनेरे, जस थयउ निर्मल खीर रे॥१२सी॥
मुझ सारीखी चली जे हुवेरे, तेह उघाडइ चउथी पोलि रे ।
कलङ्कउतार्युं जिनशासनतणउरे, निर्मल कचणवानी सोलरे ॥१३॥
घणइ रे महोच्छव मंदिर आवीयारे, सासू सुसरा ना टाल्या रोसरे।
श्री जिन धरम पमाडीयुरे, टाल्यउ टाल्यउ मिथ्यात दोसरे ॥१४॥
सासू कहे रे वहुअर माहरउ रे, खमिजे पनोती तुं अपराध रे ।
अम्हेरे अज्ञान पणे घणी रे, तुझ ने उपजावी छइ आबाधरे ॥१५॥
पुरनो वासी समकित वासीयारे, टाल्युं टाल्यु नगर नउ दाहरे ।
कहे जिनहरख सती तणारे, गुण गातांथायइ उच्छाह रे ॥१६॥सी

नवग्रह गर्भित मंदोदरी वाक्य स्वाध्याय

ढाल॥ कृपानाथ मुझ वीनती अवधारि॥एहनी

जिणि आ दी तम्ह सीखडी जी, राम घरणि घरि आणि ।
मित्र म जाणे तेहनइ जी, दोषी तेह पिछाणि ॥१॥
मोरा प्रीतम सांभलि मुझ अरदास ।
कर जोडी चरणे नमीजी, कहे मदोदरि भास ॥२मो॥
सोम सरल चितना धणी जी, परिहरि रुघपति नारि ।

ताहरइ बहु अन्तेउरीजी, सुन्दर देव कुमारि ॥३मो॥
दिन दिन मंगलमालिकाजी, दिन दिन सुखनी वृद्धि ।
जाती देखुं छुं हिवे जी, सगलि रिद्धि समृद्धि ॥४मो॥
बुद्धि किहाँ ताहरी गई जी, वसती जेह कपाल ।
पिणि छठीना अक्षराजी, कोई न सके टालि ॥५मो॥
मइ सद्गुरु मुखि सांभल्यउ जी, शास्त्र तणी वली द्रेठि ।
परनारी ना संग थी जी, कीचक कुंभी हेठि ॥६मो॥
सुक्र रुहिर संयोग थी जी, ऊपनु एह सरीर ।
स्युं देखी ने मोहिया जी, कंता सुगुण सधीर ॥७मो॥
थावर दृढ़ व्रत तउ धणी जी, परदारा तजि एह ।
पर दारा परतखि छुरी जी, तिणि सुं न करि सनेह ॥८मो॥
निज कुल राह न लोपीयेजी, करिये नहीं अन्याय ।
वेद पुराणे इम कह्युं जी, राज्य अन्याये जाय ॥९मो॥
केतु सरीखउ वंस में जी, तुं कंता गुण जाण ।
त्रिभुवनपति नारी तजउ जी, जउ वांछउ कल्याण ॥१०मो॥
सतवंती सीता सती जी, एहने चरणे लागि ।
लइ एहनी आसीस तुं जी, जउ तुझ सावल भाग ॥११मो॥
कह्युं न माने कंतडा जी, स्युं कहीये तुझ साथ ।
सूतउ सिंह जगाडीयउ जी, रोसवीयउ रघनाथ ॥१२मो॥
नवग्रह रूठा तुझ थकी जी, जाणीजइ छइ आज ।
तिणि मति एहवी ऊपनी जी, करिवा एह अकाज ॥१३मो॥

जीती क्षुण जाई सके जी, जगमें इम कहवाय ।
भावीने कोई मेटिवाजी, नहीं जिनहरख उपाय ॥१४मो॥

पंच इन्द्रियां री सज्झाय

ढाल-नदी जमुना के तीर, उड़ै दोय पखीया

काम अंध गजराज, अगाज महावली ।
कागल हथनी देखि, मदोमत उछली ।
आवै पावै दुख्य अजाडी मैं पडे ।
आंकुस सीस सहंत, फरस इन्द्री नडे ॥१॥

स्वेच्छाचारी मच्छ, द्रहां मांहे रहै ।
आंकोड़ै पल बीधि, नीर मैं नांखि है ।
गिलै जाणि भख मूढ, जाइ कंठे फहै ।
रसण तणै वसि मरण, लहै जिणवर कहै ॥२॥

कमल सहसदल विमल, बहुल वासाउली ।
चंचल लोलप गध, लैण आवै अली ।
अस्तंगत रवि होइ, फूल जायै मिली ।
घ्राणेन्द्री वसि प्राण, तज, न तजै कली ॥३॥

दीपक जोति उद्योत, निहारि पतंगियौ ।
सोवन भ्रांति एकांति, ग्रहेवा लोभीयौ ।
अगन्यांनी सुख जाणि, दीप मांहे धसै ।
भसम हुवै तिण ठाम, चख्य इन्द्री वसै ॥४॥

जूथाधिप वन गहन, सुखै रहै हिरणलौ ।
धीवर आइ बजाइ, वीण गावै भलौ ॥
सरस सुणेवा नाद, तिहां ऊभौ रहै ।
मारै कांन विसेण, मरण दुख ते सहै ॥५॥
पांचे इन्द्री चपल, आपणा वसि करौ ।
दुरगति दुख दातार, जांणि उपसम धरौ ।
आराहौ जिन धरम, आणि मन आसता ।
कहै जिनहरख सुजाण, लहौ सुख सासता ॥६॥

इति श्री पंच इन्द्रिया री सज्झाय ❋

परनारी त्याग गीत

ढाल-वणरा ढोला

सीख सुणो प्रीउ माहरीरे, तुझनइं कहुं कर जोड़॥धणरा ढोला॥
प्रीति न करि परनारिसूंरे, आवै पग-पग खोड़ ॥धणरा ढोला॥
कहियो मानो रे सुजाण, कहियो मानो ।
वरज्या लागौ मारा लाल वरज्या लागो ।
पर नार रौ नेहड़लौ निवार ॥ध० आंकणी ॥
जीव तपइ जिम वीजली रे, मनड़ो न रहइ ठांम ॥ध॥
काया दाह मिटइ नहीं रे, गांठै न रहै दाम ॥ध २ क॥
नयणे नावै नींदड़ी रे, आठे पहर उदेक ॥ध॥
गलीयारै भमतो रहै रे, लागू लोक अनेक ॥ध ३ क॥

❋संवत १७३५ वर्ष आषाढ वदि १ दिने पं० सभाचंद लि० पत्र १ संग्रह में

धान न खायै धापिनै रे, दीठां न रुचै नीर ॥ध॥
नीसासा नांखै घणा रे, सांभलि नणद रा वीर ॥ध ४ क॥
गात्र गलै नस नीकलै रे, झुरि-झुरि पंजर होई ॥धं॥
प्रेम तणै वसि जे पड़ै रे, तेह गमै भव दोइ ॥ध ५॥
राति दिवस मन में रहै रे, जिणसुं अविहड़ नेह ॥ध॥
वीसारंत न वीसरै रे, दाझै खिण खिण देह ॥ध ६क॥
माथै वदनामी चढै रे, लागै कोड़ि कलङ्क ॥ध॥
जीव तणा सांसा पड़ै रे, जोइ रावणपति लङ्क ॥ध ७ क॥
पर नारी ना संग थी रे, भलो न थायै नेठ ॥ध॥
जोवौ कीचक भीमड़ै रे, दीधा कुंभी हेठ ॥ध ८ क॥
धायै लंपट लालची रे, वटती जायै ज्योति ॥ध॥
जैत न थायै तेहनी रे, जिम राइ चंडप्रद्योत ॥ध९क॥
पर नारी विष वेलड़ो रे, विष फल भोग संयोग ।
आदर करि जे आदरै रे, तेहनें भवि-भवि सोग ॥ध१० क॥
वाल्हा माहरी वीनती रे, साच करै नैं जांण ॥ध॥
कहै जिनहर्ष संभारिज्यो रे, हियड़े आगम वाण ध॥११क॥

माया स्वाध्याय

ढाल-अरथ मंडित नारी नागिला रे एहनी

माया धूतारि मोह्या मानवी रे, कांई मोह्या मोह्या मोटा राजा राणरे
सिधसाधक जोगी जती रे, खान मुलक सुलताण रे ॥१मा॥

माया ने वसि जे पड्या रे, ते तउ थई गया अन्ध रे।
बोलाव्या बोले नहीं रे, केहनइ नमावइ नहीं कंध रे ॥२मा॥
मद माता ताता रहे रे, कांई करे अनेक आरम्भ रे।
माया ने कारणि केळवे रे, कांई कूड़ कपट छल दंभ रे ॥३मा॥
महल चिणावे मोटा मालिया रे, वइसाडे द्रव्यनी कोड़ि रे।
दीन दुखी देखी करी रे, महिर न आवे मोटी खोड़ि रे ॥४मा॥
माया छै एह असासती रे, जेहवी तरुअर छांह रे।
ए माया महा पापणी रे, कांई सिर काटइ देइ बांह रे ॥५मा॥
माया नी संगति थकी रे, कांई घणा विगूता लोक रे।
कहे जिनहरख माया तजइ रे, तेहने चरणे माहरी धोक रे ॥६मा॥

श्री जीव प्रबोध स्वाध्याय

ढाल-ते मुझ मिच्छामि दुक्कड, एहनी

सुणिरे चंचल जीवड़ा, मन समता आणि।
पंच प्रमाद निवारिये, दुरगतिनी खाणि ॥१सु॥
च्यारि कषाय चतुर्गुणा, वली नव नोकषाय।
परिहरिये पचवीस ए, अविचल सुख थाय ॥२सु॥
राग द्वेष नवि कीजिये, कीजै उपगार।
जीवदया नित पालीये, गणीयइ नवकार ॥३सु॥
दान सुपात्रे दीजिये, आणी ऊलट भाव।
श्री जिनधर्म आराधिये, भवसायर नाव ॥४सु॥
विषय म राचिसि बापड़ा, थास्ये सुखनी हाणि।
हियडे सूधी धारिजे, जिनहरखनी वाणि ॥५सु॥

चतुर्विध धर्म सज्झाय

ढाल-आज निहेजउ रे दीसइ नाहलउ-एहनी

जीवड़ा कीजे रे धरम सुं प्रीतडी, जेहना च्यारि प्रकार ।
दान सील तप रूड़ी भावना, भव भव एह आधार ॥१जी॥
धन नामे सारथपति नइ भवइं, दीधउ घृत नउ रे दान ।
समकित लह्यु तिहां निर्मलु, थया रिखभ भगवान ॥२जी॥
अभया राणीरे दूषण दाखव्यु, सूलारोपण होई ।
शील प्रभावे रे सिंहासण थयुं, सेठि सुदरसण जोई ॥३जी॥
अरजनमाली रे माणस मारतउ, दिन दिन प्रति सात ।
करम खपावी रे मुगतिइं गयउ, तप ना एह अवदात ॥४जी॥
ऊभउ आरीसा ना महल मइं, चक्रवर्त्ति भरत सुजाण ।
अनित्य भावनारे मनमां भावतां, पाम्युं केवलनाण ॥५जी॥
चउगतिना भंजण च्यारे कह्या, जिनवर धरम रसाल ।
भविक जिके जिनहरख धरम करइ, वंदण तास त्रिकाल ॥६जी॥

पंच प्रमाद सज्झाय

॥ढाल भावननी ॥

पंच प्रमाद निवारउ प्राणी वेगला रे, जे पाड़इ संसार ।
छेदन भेदन वेदन नरक निगोदनारे, आपइ दुख अपार ॥१पं॥
जात्यादिक आठे मद मदिरा सारिखा रे, एहथी वधे उदमाद
जे जे करीये तेते हीण पामीये रे, पहिलउ तजि परमाद ॥२पं॥

पांचे इन्द्री केरा विषय न सेवीये रे, विषय कह्या किंपाक ।
धुरि मीठा ए लागे अति रलीयामणा रे, कडूआ जास विपाक ।।३।।
अगनि समान कह्या भगवंते आकरा रे, च्यारे कटुक कषाय ।
तपजप संयम धर्म कीयउ सहु नीगमइ रे, गुण गौरव सहु जाय ।४।
झाझी निद्रा नयणे आवे जेहनेरे, न लहे कथा सवाद ।
भलउ न दीसे वइठउ लोकसभा विचे रे, चइथउ एह प्रमाद।।५पं।।
विकथा करता फोकट पाप विधारिये, लहिये अनरथ दंड ।
च्यारे गतिमां भमे निरंतर जीवडउरे, एहसुं प्रीति म मंडि।।६पं।।
एह प्रमाद करता भवसायर पड़इरे, एहनी संगति वारि ।
मन इच्छित फलपामे इणिभवपरभवइंरे, कहे जिनहरखविचारि ।७।

आत्मप्रबोध सज्झाय

ढाल-विणजारानी

सुणि प्राणी रे, तुझ कहुं एक वात, वात हियामइं धारिजे।।सु।।
आऊखउं दिन राति, अंजलि नीर विचारिजे ।।१सु।।
आरज कुल अवतार, पाम्युं पुन्य उदय करी ।।सु।।
खोवे कांइ गमार, त्रिषय प्रमाद समाचरी ।।२सु।।
इणि संसार मझारि, जनम मरण ना दुख घणा ।।सु।।
तइं भोगव्या अपार, नरग निगोद तिर्यंचना ।।३सु।।
वसीअउ गरभावास, असुचि तिहां तइं आहर्यु ।।सु।।
वेदन सही नव मास, योनि संकट मां नीसर्यु ।।४सु।।

मूंझ्यउ माया जाल, ते वेदन तुझ वीसरी ॥सु॥
रमणी भोग रसाल, मगन थयउ तेहमां फिरी ॥५सु॥
तुझ केड़इं यम धाड़ि जोइ फिरइ छइ जीवड़ा ॥सु॥
तेहने पाड़ि पछाड़ि, नहीं तउ खाइसि बहुदड़ा॥६सु॥
श्री जिन धर्म सभारि, चउंप करी चोखइ चित्तइ ॥सु॥
अचवन हियडे धारि, जउ भव थी छूटण मतइ ॥७सु॥
मात पिता परिवार, ए सगला छ कारिमा ॥सु॥
काया असुचि भंडार, आभरणे तुं भारीमां ॥८सु॥
नावे कोई साथि, साथि कमाई आपणी ॥सु॥
ऊभी मेल्हिसि आथि, कुण धणियाणी कुण धणी ॥९सु॥
पाम्यंउ अवसर सार, पाम्या योग अमोलड़ा ॥सु॥
सफल करउ अवतार, सुणि जिनहरख ना बोलडा ॥१०सु॥

जीव काया सज्झाय

ढाल—वहिनी रहि न सकी तिसइजी—एहनी

काया कामिणि वीनवे जी, सुणि मोरा आतम राम ।
तूं परदेसी प्राहुणउ जी, न रहे एकणि ठाम ॥१॥
मोरा प्रीतम वीनतडी अवधारि,
मुझ अबला ने परिहरउ जी, अवगुण किसइ विचारि ॥२मो॥
हूँ राती तुझ सुं रहुँजी, हूँ माती तुझ मोह ।
तुझ मुझ संगति जनम नी जी, आपउ कांई विछोह ॥३मो॥

तुझ गायउ गाउं सदा जी, कह्यो करूँ एकंत ।
चयण न लोपुं ताहरउजी, हूँ कामिणि तू कंत ॥४मो॥
विभचारी तुझ सारीखउ जी, कोइ नहीं संसार ।
एक मूंकइ एक आदरे जी, तुझनइ पड़उ धिकार ॥५मो॥
हूँ सुकुलीणी तुझ विना जी, न करूं अन्य भरतार ।
तुझ मुझ अन्तर एवड़उजी, सरसव मेरु अपार ॥६मो॥
वालपणानी प्रीतड़ी जी, ताहरइ माहरे रे नाह ।
वार न लागी तोड़तां जी, ऊठि चल्यो देई दाह ॥७मो॥
तइं निसनेही परिहरी जी, पिणि हुं न रहुं जोइ ।
कहे जिनहरख सती परे जी, जलि वलि कोइला होइ ॥८मो॥

इति काया जोव स्वाध्याय

नारी प्रीति सज्झाय

राग गउडी

मन भोला नारि न राचिये रे, एतउ कूड़ कपटनी खांणि ।
बोलइ मीठड़ी वांणी, न करे केहनी कांणि ॥म॥
फल किंपाक सरीखी नारी, सुन्दर अति रलीयाली ।
पिणि ए अंत हुवइ दुखदायक, मधु खरड़ी जिम पाली ॥१म॥
प्रीति पुरातन खिणिमां त्रोड़इ, मन मा नेह न आणे ।
खिणि राचइ विरचे खिणि मांहि, गुण अवगुण नवि जाणे ॥२॥
बोले मीठी कोइल सरिखी, हंसती हियड़े भोली ।
पिणि अन्तर कडुई नींबोली, चिस वाटकड़ी घोली ॥३म॥

पाड़इ पास वेसास देई नइ, तन मन सरवस लूसइ ।
कारण विणि ए छेह दिखावइ, दोस विना ए रूसइ ॥४म॥
जउ आधीन थई ने रहिये, जउ गायउ गाईजइ ।
तउ पिणि करडू मग सारीखी, हियड़उ किमही न भीजइ ॥५म॥
एहनउ जे विसवास करे नर, जे जग मांहि विगूचइ ।
सुख छांड़ी ने दुख ल्यइ परतखि, भव कादममइं खूचई ॥६म॥
मुंज सरीखा मोटा भूपति, नारी तेह नचाव्या ।
राज रिद्धि थी रहित करीने, घरि घरि भीख मंगाव्या ॥७म॥
राय परदेशी ने विष दीधउ, सूरिकंता राणी ।
तांड़ि प्रीति तुरत प्रीतमसुं, मन मइं सरम न आणी ॥८म॥
पुत्र भणी मारेवा मांडयुं, चुलणी चरित्र निहालउ ।
नीच लाज करती नवि लाजइ, एहनी संगति टालउ ॥९म॥
महासतक घरि रेवती नारी, सउकी अनेरी वारइ ।
मतवाली मांसासी पापिणि, छल करि ते सहु मारइ ॥१०म
सेठ सुदरसणनइ अभयाये, जोइ सूली दिवरायउ ।
पाप करंती किमही न बीहे, अपयश पड़हउ वजाव्यउ ।११।
इत्यादिक अवगुणनी ओरी, चउगति मांहि भमाड़े ।
विरती वाघणी थी विकराली, चरित्र अनेक दिखाड़इ ॥१२म॥
इम जाणीरे प्राणी एहनउ, कोई विश्वास म करिस्यउ ।
नारी नहीं ए छे धूतारी, श्रवणे वचन म धरिस्यउ ॥१३म॥

जेहवउ रंग पतङ्ग हरिद्रनउ, तेहवउ रंग नारी नउ ।
कहे जिनहरख कदी किणिहींसुं, एहनउ चित्त न भीनउ ॥१४॥

॥ इति स्वाध्याय ॥

काया जीव सज्झाय

ढाल-श्रेणिक राय हु रे अनाथी निग्रथ —एहनी

काया सलूणी वीनवे, सुणि कंतजी मुझ वात ।
बालापण नी प्रीतडी, तुझ साथे रे रंगाणी धात॥१प॥
परदेसी लाल ऊठि चल्यउ परदेश, मुझ साथे रे नही प्रेम विसेस ॥प॥
मुझ सङ्ग रमतउ खेलतउ, करतउ विविध विनोद ।
मन रंग हसतउ मुलकतउ, तुं धरतउ रे मन माहि प्रमोद ॥२प॥
रहतउ न मुझ थी वेगलउ, तुं कन्तजी खिण मात ।
सुख भोग मुझसु माणतउ, रस भीनउरे रहतउ दिन राति ॥३॥
जातउ नहीं मुझ छोड़ी नइ, किणि ही न काम कल्याण ।
हुँ पिणि कह्यउ नवि लोपति, तु म्हारे रे हुतउ जीवन प्राण॥४॥
तुझ विना हुँ स्या कामनी, तुझ विना हुं अकयत्थ ।
तुझ विना भाग सुहागस्यउ, तुझ पाखइ रे नहीं कोई अरत्थ॥५॥
वलतुं कहे प्रिउ इणि परइ, सुणि नारी मूढ गमार ।
तुझ साथ माहरे किम बने, मुझ करिवा रे फिरी २ व्यापार ॥६॥
लख चउरासी पाटणे मइ, कीया छइ विवसाय ।
वली करिसि माहरी मौज में, एक ठामे रे मइं रह्यउ न जाय॥७॥

जिहां जईसुं तहां वली परणिसुं, नारिनी नहीं कोई खोट।
सुगुणां भणी साजन घणा, भमरा ने नहीं कमलनु तोट ॥८प॥
तुं करे प्रिउ बीजी प्रिया, हुं अवर न करुं कंत।
हुं सती तूं विभिचारियउ, तुझ मुझ में बहुअंतर दीसंत ॥६पा॥
रोवती रडती मूंकिनइ, तुं चालीयउ परदेश।
आधार कुण मुझ तुझ विना, किणी आगे रे सुख दुख कहेसि ॥१०प॥
पतिव्रता पति विणि नवि रहे, सति विरह न खमें तेह।
पति विना बीजा किणि ही सुं, सुकुलीणीरे करइ नहीं नेह ॥११॥
तेडी न जायइ मुझ भणी, किम रहुं हुं रे अनाथ।
जिनहरख पावक परजली, पिणि न रही रे जातां निज नाथ ॥१२॥

इति काया जीव स्वाध्याय

बारह मास गर्भित जीव प्रबोध

ढाल—तुंगिया गिरि सिखर सोहे —एहनी

चेतरे तूं चेत प्राणी, म पड़ि माया जाल रे।
कारिमी ए रची बाजी, रातिनउ जंजाल रे ॥१चे॥
ताहरी वयसाख रूड़ी, लोक मइ जस वास रे।
अथिर परिहरि कनक कामिणि, जिम लहे जसवास रे ॥२चे॥
भारी खमा जेठ गरूया, जें खमइ कुवचन्न रे।
रीस रोस न करे किणिसुं, सदा मन्न प्रसन्न रे ॥३चे॥
विषय आसा ढल सरीखी, नहीं कोइ सवाद रे।
दूरि तजि भजि सील समता, जिम न हुइ विषवाद रे ॥४चे॥

जोइ लंका ईस रावण, जे हुतउ बलवंत रे।
जउ थयउ पर नारि रसीयउ, हण्यउ सीता कत रे ॥५चे॥
पुरुष सोभा द्रव थकी हुइ, द्रव्य सोभा दान रे।
दान सोभा पात्र उत्तम, इम कहे भगवान रे ॥६चे॥
खिणिक मां आ सूकि जास्यै, कनक काया वेलि रे।
सींचि सुकृत जल प्रबल सुं, जिम हुवे रंग रेलि रे ॥७चे॥
काती लीये कर काल डोले, राति दिन तुझ केड़ि रे।
ध्यान प्रभु समसेर ग्रही ने, नाखि तास उर्थड़ि रे ॥८चे॥
मागसिर बइसी रह्यउ तु, फोरवइ नहीं प्राण रे।
चालि उद्यम क्रिया करतां, लहिसि फल निर्वाण रे॥९चे॥
पोसि मां ए अथिर काया, कारिमी करि जांणि रे।
जतन करतां पिणि न रहिस्यइ, अछइ अवगुण खाणि रे ॥१०॥
माहरि ए सीख मनमां, धारिजे तूं मीतरे।
धरम संबल साथि लेजे, चालिवुं छइ अंत रे ॥११चे॥
नफागुण जिणि मांहि थाये, भलउ ते व्यापार रे।
देव गुरु सुध धर्म आदरि, लहे भव दुख पार रे ॥१२चे॥
बार मास लगइं सयाणा, तुझ भणी ए सीख रे।
भाव भजि जिनहरष आणी, लहे सिव सुख ईख रे ॥१३चे॥

इति 'बार मास' गर्भित स्वाध्याय

पनर तिथि स्वाध्याय

ढाल – कपूर हुवे अति ऊजलउ रे —एहनी

पड़िवा दुरगति वाटड़ी रे, नारी विषय विलास।
जाणी परिहरि जीवड़ा रे, जउ चाहे सिववास रे ॥१॥
प्रांणी बूझि म मूझि गमार।
सदगुरु वयण हियड़े धरे रे, जिम पामे भवपार रे ॥प्रा०॥
बीज सुकृत नउ रोपिये रे, धरीये शील अखण्ड।
समता रस मां झीलिये रे, पवित्र हुवे जिम पिंड रे ॥२प्रा०॥
त्रीजइ अंगइं जिन कहिये रे, विकथा च्यारि निवारि।
करिस्ये ते फिरिस्यइ सही रे, चउगति भ्रमण मझारि रे ॥३प्रा॥
चतुर हंस तूं वुथिमां रे, अपवित्र नारी अंग।
पंडित नर ते परिहरे रे, न करे तास प्रसंग रे ॥४प्रा॥
पंचमि अंग जमालिये रे, ऊथाप्यउ जिन वइंण।
तउ भव मां भमिस्ये घणुं रे, जोइ उघाड़ी नैण रे ॥५प्रा॥
छट्ठी रातइं जे लिख्यउ रे, सुख दुख विभव विलास।
तिणि मइं रंच घटे नहीं रे, म करि वृथा वेपास रे ॥६प्रा॥
सातिमी नरक सुभूमि नेरे, पहुचाड्यउ इणि लोभ।
लोभ न कीजे अति घणउ रे, तउ लहिये जग सोभ रे॥ ७प्रा॥
आठ महा मद छाकियउ रे, मयगल ज्युं मय मत्त।
ऊवट वाट न ओलखेरे, योवन चंचल चित्त रे॥८प्रा॥

नमि जिनवर चरणे सदारे, नमि निज सदगुरु पाय ।
जैन धर्म करि भावसुं रे, सदगति तणउ उपाय रे ।।६प्र।।
दस महीना माय ने रे, गरभ रह्यउ तुं जीव ।
ते वेदन तुझ वीसरी रे, दुख भर करतउ रीव रे ।।१०प्रा
एग्यारस तुं जाणिजे रे, इंद्री विषय विलास ।
मधु-बिंदुआं सुख कारणइं रे, स्युं बाधी रह्यउ आस रे ।।११प्रा।।
वारिसि तुझने जीवड़ा रे, जउ तुं कह्यउ करेसि ।
आरंभथी अलगउ रहे रे, ए माहरउ उपदेस रे ।।१२प्रा।।
ते रसीयो गुण रस भर्या रे, जेहनउ समकित सुद्ध रे ।
समयसार रसमां सदा रे, भीना रहे प्रतिबुद्ध रे ।।१३प्रा।।
चउदस भेद जीव तत्वना रे, जाणे जेह सुजाण ।
पर्यापत अपर्यापता रे, तेहनी दया प्रमाण रे ।।१४प्रा।।
पूरण माया पामी ने रे, दीजइ दान अपार ।
दोधा विणि नवि पामिये रे, जोइ लौकिक विवहार रे ।।१५प्रा।।
पनर तिथि अरथे भली रे, धरिये श्री जिन आण ।
कहइ जिनहरख लहीजियेरे, जेहथी कोड़ि कल्याण रे ।।१६प्रा।।

इति पनरतिथि गर्भित स्वाध्याय:

तेरकाठिया स्वाध्याय

ढाल।। चउपईनी ।।

सांभलि प्राणी सुगुण सनेह, धरम महोनिधि पाम्युं एह ।
जतन करे हरिस्ये लांठिया, वट-पाडा तेरह काठिया ।।१।।

सामायक पोषध नवकार, जिनवंदन गुरुवंदन वार ।
धरम ठाम आलस आवीयउ, पहिलउ ए आलस काठीयउ ॥२॥
छईया छोड़ी रामति रमइ, नारी विरहउ खिणि नवि खमइ ।
मोह विलूधउ मूढ गमार, बीजउ मोह काठीयउ वारि ॥३॥
दान शील तप भाव सु धर्म, गुरुस्युं कहिस्यइ अधिकउ मर्म ।
गुरुनी एम अवज्ञा वहइ, त्रीजउ अवज्ञा काठीयउ कहे ॥४॥
गुरुनइ नींचउ थई वांदिवउ, साहमी आव्यां वली ऊठिवउ ।
मइं थाये नही जावुं रह्यउं, थंभका ठीयउ चोथुं कह्युं ॥५॥
साहमी सुं मिलि वेसे सदा, कलह थयउ किणिही सुं कदा ।
धरम ठाम वलतं नावेह, पंचम क्रोध काठीयु एह ॥६॥
आवे नयणे उंघ अनन्त, वइठउ जाये नहीं एकंत ।
विकथा विषय तणउ स्वादीयउ, छठउ कह्यउ प्रमाद काठियउ ॥७॥
धरम ठाम खरच्यउ जोईये, फोकट इम किम वित खोईयइ ।
वीहतउ जाइ न पोषधसाल, सातमउ लोभ काठीयउ भालि ॥८॥
जउ मुनि पासि वइसीस्ये घडी, तउ कहीस्ये ल्यउ काई आखड़ी ।
मुझ सुं तेह पलइ नहीं समउ, एह काठियउ भय आठमउ ॥९॥
कोई कहीयइं मूअउ हुवइ, तेहनइ सोगइ निसि दिन रुवे ।
कउनइ धरम करेवुं गमइ, सोग काठियउ नवमउ इमइ ॥१०॥
अम्हें न समझुं गुरु आख्यान, तवन सझाय न समझुं ज्ञान ।
स्युं करीए पोसालइं जाइ, दसमउ अज्ञान काठीयउ थाइ ॥११॥

आहट दोहट झूनइ चित्त, आरति ध्यान धरे नित नित्त ।
घर धंधा माहे घाठीयउ, इग्यारम विषे ए काठीयउ ॥१२॥
बाजीगर मांड्यउ छइ ख्याल, चहुटइ खेलइ जेठी माल ॥
ते जोतां धर्म वेला वटे, द्वादशमउ कौतुहल हटइ ॥१३॥
रामति रुड़ी पासा सारि, आवउ रमीयइ दाव वि च्यारि ।
एहथी धर्म भलउ छे किसुं, रमण काठियउ तेरम इसुं ॥१४॥
ए तेरह काठीया सुजाण, धरम वेलायइं अंग न आणि ।
सावधान थई कीजै धर्म, तउ जिनहरख कटे सहु कर्म ॥१५॥

इति तेरह काठियानी स्वाध्याय:

सामायिक बत्तीस दोष स्वाध्याय

॥ ढाल चउपईनी ॥

सामायकना दोष बत्रीस, जाणी टालउ विसवा वीस।
मन वचन ना दस दस जाण, काया ना तिम बार प्रमाण ॥१॥
करइ विवेक रहित मन धरउ, जस करिति काजे तीसरउ ।
करे अहंकार करी लावतउ, करइ नीयाणउ वली बीहतउ ॥२॥
रोस करे मन धरे संदेह, भक्ति रहित दस दूसण एह ।
हिवइ वचन ना दस सांभलउ, कुवचन बोलइ मुख मोकलउ ।३।
परने आपे कूड़उ आल, गेलि मांहि बोलइ ततकाल ।
अविचार्यु भाखइ वहु परइ, अक्षर पूरा नवि ऊचरे ॥४॥
कलह करे वली विकथा घणी, हास्य करे तेड़इ परभणी ।
वस्तु अणावे ए दस दोष, एह थी थाये पातक पोष ॥५॥

हिवइ काया ना बारह कहे, पोलगठी अथिरासण रहइ।
उरहउ परहउ जोवइ सही, ओठीगण नइसइ ऊमही ॥६॥
अंगोपांग गुपति नवि धरइ, आलस मोड़ कड़का करइ।
खाजि खणइ ऊतारइ मइल, वीसामणा करावे सइल ॥७॥
ऊंघइ उरहउ परहउ फिरइ, बार दोष जाणी परिहरे।
ए दूषण टालउ बत्रीस, सामायक पालउ निसिदीस ॥८॥
सामायक जे सूधउ धरे, ते भवसायर हेलइं तिरइं।
इम जाणी सामायक करउ, कहे जिनहरख दोष परिहरउ ॥९॥

—:०:—

तेत्रीस गुरु आशातना स्वाध्याय

ढाल-हिव रांणी पदमावती ॥एहनी॥

गुरू आसातन जाणिवी, सूत्रे कहीय तेत्रीस।
दुरगति अति दुखदाइनी, भाखी श्री जगदीस ॥१गु॥
गुरु आगलि विहुं पाखती, नइड़उ थइ चालइ।
पूठइ पिण अति ढूकडउ, विहुं बाजू हालइ ॥२गु॥
गुरु नइ आगलि पाछलइ, अति नइड़उ बइसइ।
नव आसातन इणि परइं, जिणवर उवएसइ ॥३गु॥
एक न भाजन थंडिलइ, जल ल्यइ गुरु पहिली।
गमणागमण सगुरू थकी, आलोवइ वहिली ॥४गु॥
साद न आपइ जागतो, जउ गुरु बोलावइ।
साधु श्रावक नइ आवतां, पहिली ब्रतलावइ ॥५गु॥

गुरू तजि बीजां आगलइ, आहार आलोवइ ।
गुरु पहिली बीजा भणी, देखाड़इ जोवइ ॥६गु॥
गुरु पहिली अन्य साधु नइ, भात पाणी थापइ ।
सरस मधुर अणपूछीयइ, भावइ तेहनइ आपइ ॥७गु॥
गुरू नइ अरस निरस दीयइ, पोतइ सरस आहारइ ।
वचन तहति करि पडिवजइ, गुरू नउ न किवारइ ॥८गु॥
कर्कस बोलइ गुरू प्रतिइं, बइठउ द्यइ ऊतर ।
गुरू पूछइ कहइ छइ किसुं, इम भाखइ नूतर ॥९गु॥
तुंकारा गुरु नइ दियइ, वैयावच कहि एहनउ ।
तुम्हे ईज कां करता नथी, मनमानइ तेहनउ ॥१०गु॥
गुरू शिक्षा मानइ नहीं, सून्य चित्त रहावइ ।
विस्मृत अर्थ जइ होयइ, तुम्ह नइ रूडु नावइ ॥११गु॥
गुरु व्याख्यान विचइ करइ, व्याख्यान समेला ।
कथा कहंता वहि गई, विहरणनी वेला ॥१२गु॥
लोक समख्यइ गुरु कह्यउ, जे अरथ विचार ।
ते पोतइ फेरी कहइ, करिनइ विस्तार ॥१३गु॥
चरण लगावइ बइसणइ, बइसइ गुरु पाटइ ।
वार करइ गुरु पातरइ, ऊँचउ बइसइ निराट ॥१४गु॥
बइसइ सुगुरु बराबरी, विनइ नहीं तेह ।
ऊँच वस्त्र अति वावरैं, निज गुरु थी जेह ॥१५गु॥
ए तेत्रीस आसातणा, चउथइ अंग भाखी ।

तेतीसमइ समवाय महं, गणधर तिहां साखी ॥१६गु॥
आसी विस आसातना, बहु मरण पमाड़इ ।
आगलि ए सिव वाटनी, दीवी कुगति दिखाड़इ ॥१७गु॥
जे सुविनीत सुधातमा, आसातणा टालइ ।
गुरु नउ विनय करइ सदा, आगन्या प्रतिपालइ ॥१८गु॥
दसवीकालक एहना, गुण अवगुण भासइ ।
विनयसमाही जोइज्यो, जिनहरष प्रकासइ ॥१६गु॥

इति तेत्रीस गुरु आसातना स्वाध्याय समाप्त

श्री सम्यक्त्व स्वाध्यायः लिख्यते ।

॥ढाल-जोधपुरीनी॥

सांभलि तुं प्राणी हो, मिथ्या मति लीणउ ।
तुं तउ ऊझड़ पड़ीयउ हो, ज्ञान सुधन खीणउ ॥१॥
समकित नवि जाण्यु हो, मोहइं मूंझाणउ हो ।
भमें भव चक्र मांहे हो, करतउ जिम ताणउ ॥२॥
समकित धन पासइहो, निरधन किम कहिये ।
धन सुख एक भव नउ हो, समकित शिव लहिये ॥३॥
समकित विणि किरिया हो, लेखइ नवि लागइ ।
समकित संघातइ हो, भवना दुख भागइ ॥४॥
समकित विणि श्रावक हो, वाल पशू सरिखउ ।
जो लोचन मोटा हो, तउ पिणि अंध लखउ ॥५॥

समकित दृढ़ पायउ हो, धरम आवास तणउ ।
जिन धर्म रयणनी हो, पेटी एह गिणउ ॥६॥
सुध समकित कीजे हो, जिम कंचण कसीये ।
हियड़इ ऊलसीयइ हो, जई सिवपुर वसीये ॥७॥
समकित नवि नाणउ हो, गांठइं बांधीजइ ।
सद्दहणा साची हो, समकित जाणीजे ॥८॥
गुरुदेव धरम नइ हो, सुध करि आदरीये ।
समकित धरीये हो, खोटा परिहरीये ॥९॥
गति नरग निगोदइं हो, मिथ्यातइं पड़ीये ।
तिहां काल अनंतउ हो, दुख मां आथडीये ॥१०॥
इम जाणी प्राणी हो, समकित आदरउ ।
जिनहरख वचन सुं हो, साचउ रंग धरउ ॥११॥

अथ सम्यक्त्व सत्तरी

दूहा

एको अरिहंत देव, देवन को बीजउ दुनी ।
सारइ सुरपति सेव, परतखि एहिज पारिखउ ॥१॥
मन माहरा मिलेह, अरिहंत सुँ हित आणिनइ ।
बीजा काचकलेह, जगवासी करमी जसा ॥२॥

ढाल (१) ते मुझ मिच्छामि दुक्कड । एहनी ।

सांभलि रे तुं प्राणीया, सद्गुरु उपदेशो ।
मानव भव दोहिलउ लह्यउ, उत्तम कुल एसो ॥१सां॥

देव तत्व नवि ओलख्यउ, गुरु तत्व न जाण्यउ ।
धर्म तत्व नवि सद्दह्यउ, हीयइ ज्ञान न आण्यउ ॥२सां॥
मिथ्यात्वी सुर जिन प्रतइं, सरिखा करि जाण्या ।
गुण अवगुण नवि ओलख्या, वयणे वाखाण्या ॥३सां॥
देव थया मोहइं ग्रह्या, पासइ रहइ नारी ।
काम तणे वसि जे पड्या, अवगुण अधिकारी ॥४सां॥
केई क्रोधी देवता, वली क्रोध ना वाह्या ।
कइ किणि ही थी बीहतां, हथीयार संवाह्या ॥५सां॥
क्रूर नजर जहनी घणी, देखंतां डरीये ।
मुद्रा जेहनी एहवी, तेहथी स्यंउ तरीये ॥६सां॥
आठ करम सांकल जड्या, भमे भवहि मझारो ।
जनम मरण ग्रभवासथी, पाम्यउ नही पारो ॥७सां॥
देव थई नाटिक करइ, नाचइ जण जण आगइ ।
भेख लई राधा कृष्ण नउ, वली भिक्षा मांगइ ॥८सां॥
मुख करि वावइ वांसली, पहिरइ तनु वागा ।
भावंता भोजन करं, एहवा भ्रम लागा ॥६सां॥
देखउ दैत्य संहारिवा, थया उद्यमवंतो ।
हरि हरिणांकुस मारीयउ, नरसिंह बलवंतो ॥१०सां॥
मच्छ कच्छ अवतार ले, सहु असुर विदार्या ।
दस अवतारे जूजुआ, दश दैत्य संहार्या ॥११सां॥
मानइ मूढ मिथ्यामती, एहवा पिणि देवो ।

फिरि फिरि जे अवतार ल्ये, देखउ कर्म नी टेवो ॥१२सां॥
स्वामी सोहइ जेहवउ, तेहवउ परिवारो।
इम जाणी ते परिहरउ, जिनहरष विचारो ॥१३सां॥

॥ ढाल—ऊधवने कहिज्यो एहनी ॥

जगनायक जिनराज ने, दाखवीये देव।
मुंकाणा जे कर्मथी, सारे सुरपति सेव ॥१ज॥
क्रोध मान माया नहीं, नहीं लोभ अज्ञान।
रति अरति वेवइ नही, छांड्या मद थान ॥२ज॥
निद्रा सोग चोरी नही, नही वयण अलीक।
मच्छर भय वध प्राण नउ, न करइ तहतीक ॥३ज॥
प्रेम क्रीड़ा न करे वली, नही नारी प्रसंग।
हास्यादिक अढार ए, नही जेहने अंग ॥४ज॥
पद्मासण पूरी करी, बइठा अरिहंत।
सीतल लोयण जेहना, नाशाग्र रहंत ॥५ज॥
जिन मुद्रा जिनराजनी, दीठां परम उलास।
समकित थाये निर्मलु, दीपइ ज्ञान उलास ॥६ज॥
गति आगति सहु जीवनी, देखे लोकालोक।
मन पर्याय सन्नी तणा, केवलज्ञान विलोक ॥७ज॥
मूरति श्री जिनराज नी, समता भंडार।
सीतल नयन सुहामणा, नहीं वांक लिगार ॥८ज॥
हसत वदन हरपे हीयउ, देखी श्री जिनराय।

सुन्दर छबि प्रभु देहनी, सोभा वरणी न जाइ ॥६ज॥
अवरतणी एहवी सिवी, कीहां ही न दीसंत ।
देव तत्त्व ए जाणीये, जिनहरष कहंत ॥१०ज॥
सर्व गा० २३ ॥

ढाल—यत्तिनी ३

श्री जिनवर प्रवचन भाख्या, माहि कुगुरु तणा गुण दाख्या ।
पासत्थादिक पांचेई, पापसमण कह्या नाम लेई ॥१॥
गृहीना मंदिर थी आणी, आहार करे भात पाणी ।
सूवे ऊंघइ निसि-दीस, परमादी विसवा वीस ॥२॥
किरिया न करे किणि वार, पडिक्कमणुं सांज सवार ।
न करे सूत्र-अरथ सझाय, विकथा करंतां दिन जाय ॥३॥
घृत दूध दही अप्रमाण, थाये न करे पचखाण ।
ज्ञान दरसण ने चरित्त, मुंकी दीधा सुपवित्र ॥४॥
सुविहित मुनि समाचारी, पाले नही सिथिलाचारी ।
आहारना दोष वयाल, टाले नही किणि ही काल ॥५॥
धव धव धसमसतउ चाले, जयणा करतउ नवि हाले ।
रवि आथमता लगी जीमे, रात्रि-भोजन नवि नीमे ॥६॥
कांई सचित अचित नवि टाले, काचे जल देह पखाले ।
अरचा रचना वंदावे, वस्त्रादिक सोभ वणावे ॥७॥
परिग्रह वली झाझउ राखइ, वलि-वलि अधिका नइ धांखइ ।
माठी करणी जे कहीये, ते सगली जिणि मइं लहीये ॥८॥

एहवा जे कुगुरु आरंभी, मुनि साधु कहावे दंभी ।
किय कम्म प्रसंसा करीयइ, तेहथी संसार न तरीये ॥९॥
लोहडानी नावा तोलइ, भव सायर मां ज बोले ।
जिनहरष कहे अहि कालउ, वर कुगुरुनी संगति टालउ ॥१०॥
॥स०गा० ३३॥

ढाल—कर जोडी आगलि रही एहनी ।४।

गुण गरुआ गुरु ओलखउ, हीयडे सुमति विचारी रे ।
सुगुरु परिक्षा दोहली, भूली पड़े नर नारी रे ॥१गु॥
पांचे इंद्री वसि करे, पंच महाव्रत पाले रे ।
च्यारि कषाय करे नही, पांच क्रिया संभाले रे ॥२गु॥
पांच समिति समता रहइ, तीन गुपति जे धारे रे ।
दोष सइतालीस टालिने, भात पाणी आहारइ रे ॥३गु॥
ममता छांड़ी देहनी, निरलोभी निरमाई रे ।
नव विधि परिग्रह परिहरे, चित मइं चिंत न काई रे ॥४गु॥
धरम तणा उपग्रण धरइ, संजम पलिवा काजे रे ।
मुंइजोइ पगला भरें, लोक विरुध थी लाजइ रे ॥५गु॥
पडिलेहण निरती विधइ, करे प्रमाद-निवारी रे ।
कालइं सहु करिया करइ, मन उपयोग विचारी रे ॥६गु॥
वस्त्रादिक सुध एषणी, ल्यइ देखी सुविसेषइ रे ।
काल प्रमाणे खप करे, दुषण टलता देखे रे ॥७गु॥
कुखी संबल जे कह्या, संनिधि किमही न राखइ रे ।

घइ उपदेश यथास्थितइं, सत्य वचन मुख भाखइ रे ॥८गु॥
तन मेला मन ऊजला, तप करि खीणी देही रे।
बंधण वे छेदी करी, विचरे जे निसनेही रे ॥६गु॥
एहवा गुरु जोई करी, आदरीये शुभ भावे रे।
बीजउ तत्त्व सुगुरू तणउ, ए जिनहरप सुहावे रे ॥१०॥

सर्व गाथा ॥४३॥

॥ ढाल—करम न छूटे रे प्राणीया एहनी ॥

भवसागर तरिवा भणी, धरम करे सारंभ।
पत्थर नावइ रे वइसिनइ, तरिवउ समुद्र दुलंभ ॥१भ॥
आपे गोकुल दूझणा, आपे कन्या ना दान।
आपइ क्षेत्र पुन्यारथइ, गुरु ने देई वहुमान ॥२भ॥
लूटावइ घाणी वली, पृथिवी दान सु प्रेम।
गोला कलसा रे मोरीया, आपइ हल तिल हेम ॥३॥॥
वली खणावइ रे खांतिसुं, कूआ सुंदरि वावि।
पुष्करिणी करणी भली, सरवर सखर तलाव ॥४भ॥
कंद मूल मूंके नही, इग्यारसि व्रत दीस।
आरंभ ते दिन अति घणउ, धरम किहां जगदीश ॥५भ॥
मेध करइ होमइ तिहां, घोड़ा नर ने रे छाग।
होमइ जलचर मींडका, धरम कीहां वितराग ॥६भ॥
करइ सदाई रे नउरता, जीव तणा आरंभ।
हणीयइ भइंसा रे वाकरा, जेहथी नरग सुलंभ ॥७भ॥

सारावइ ब्राह्मण कन्हां, पूरवज तणा सराध ।
तेडइ समली कागड़ा, देखउ एह उपाधि ॥८भ॥
तीरथ करे गोदावरी, गंगा गया प्रयाग ।
न्हाया अणगल नीरसूं, धरम तणौ नही लाग ॥९भ॥
इत्यादिक करणी करे, परभव सुख नइ रे काज ।
कहइ जिनहरख मिले नहीं, एहथी शिवपुर राज ॥१०भ॥

ढाल-रे जाया तुझविणिघडी रे छः मास एहनी ॥

धरम खरउ जिनवर तणउ जी, सिव सुख नउ दातार ।
श्री जिनराज प्रकासीयउजी, जेहना च्यारि प्रकार ॥१॥
भविकजन ज्ञान विचारी रे जोइ ।
दुर्गति पड़ता जीवने जी, धारइ ते धर्म होइ ॥२भ॥
पंच महाव्रत साधुना जी, दस विधि धरम विचार ।
हितकारी जिनवर कह्या जी, श्रावक ना व्रत वार ॥३भ॥
पंचुंबर च्यारे विगइ जी, विष सहु माटी हीम ।
रात्रीभोजन ने कराजी, बहु बीजा नउ नीमि ॥४भ॥
घोलवड़ा वली रींगणाजी, अनंतकाय बत्रीश ।
अणजाण्या फल फूलड़ा जी, संधाणा निसि दीस ॥५भ॥
चलित अन्न वासी कह्यउ जी, तुच्छ सहु फल दक्ष ।
धरमी नर खाये नहीं जी, ए बावीस अभक्ष ॥६भ॥
न करइ निधंधस पणइ जी, घर ना पिणि आरंभ ।
जीवतणी जयणा करे जी, न पीये अणगल अंभ ॥७भ॥

घृत परि पाणी वावरे जी, वीहइ करतउ पाप ।
सामायक व्रत पोषधइजी, टालइ भवना ताप ॥८भ॥
सुगुरु सुधर्म सुदेवनीजी, सेवा भगति सदीव ।
धर्मशास्त्र सुणतॉ थकां जी, समझइ कोमल जीव ॥६भ॥
मास मास ने आंतरे जी, कुश अग्र भुंजे चाल ।
कला न पहुचइ सोलिमी जी, श्री जिन धरम विशाल॥१०॥
श्री जिन धर्म पुरी दीये जी, चउगति भ्रमण मिथ्यात ।
इम जिनहरख विचारिये जी, बीजउ तत्त्व विख्यात ॥११भ॥

ढाल-मधुर आज रह्यो रे जन चलो ॥एहनी॥

श्री जिन धरम आराहिये, करि निज समकित सुद्ध । भवियण
तप जप करिया कीधली, लेखे पड़े सहु किद्ध ॥भ०१श्री॥
कुगुरु कुदेव कुधर्म ने, परिहरिये विष जेम ।भ।
सुगुरु सुदेव सुधर्म ने, ग्रहिये अमृत तेम ॥भ२ श्री ॥
कंचन कसि कसि लीजिए, नाणुं लीजे परीख ।भा।
देव धर्म गुरु जोइने, आदरीये सुणी सीख ॥भ ३श्री॥
मूल धर्म नुं जिन कह्यु, समकित सुरतरु एह ।भ।
भव भव सुख समकित थकी, समकित सुं धरि नेह ।भा ४श्री।
सतरे छत्रीसे समे, नभ सुदि दसमी दीस ।भा।
समकित-सतरी ए रची, पुर पाटण सुजगीस ।भा॥५श्री॥
भणिज्यो गणिज्यो भावसूं, लहीस्यो अविचल श्रेय ।भा।
शांतिहरख वाचक तणुं, कहे जिनहरख विनेय ।भा॥६श्री॥

॥इति समकित सितरी समाप्त॥

सगुरु पचीसी

ढाल ॥क्षमा छत्रीसीनी॥

सुगुरु पीछाणउ इणि आचरणं, समकित जेहनुं शुद्ध जी।
कहणी करणी एक सरीखी, अहनिसि धरम विलुद्ध जी ॥सु१॥
निरतीचार महाव्रत पाले, टाले सगला दोष जी।
चारित्र सुं लयलीन रहे निति, चित मा सदा संतोष जी ॥सु२॥
जीव सहुना जे छे पीहर, पीड़इ नहीं षटकाय जी।
आप वेदन पर वेदन सरीखी, न हणे न करे घाय जी ॥३सु॥
मोह कर्म ने जे वसि न पड्या, नीरागी निर्माय जी।
जयणा करता हलुये चाले, पुंजी मूंके पाय जी ॥४सु॥
उरहउ परहउ दृष्टि न जोवे, न करे चलतां बात जी।
दूषण रहित सूझतउ देखइ, ते ल्यइ पाणी भात जी ॥५सु॥
भूख तृषा पीड्या दुख भीड्या, छूटे जउ निज प्राणजी।
तउ पिणि असुद्ध आहार न वांछइ, जिनवर आण प्रमाणजी।६सु॥
अरस निरस आहार गवेसइ, सरस तणी नही चाहि जी।
इम करतां जउ सरस मिलइ तौ, हरसे नही मनमांहि जी ॥७सु॥
सीतकाल सीतइ तन धूजइ, उन्हाले रवि ताप जी।
विकट परिसह घट अहीयासे, नाणइ मन संताप जी ॥८सु॥
मारे कूटे करें उपद्रव, कोइ कलंक द्यइ सीसजी।
निज कृत कर्म तणा फल जाणे, पिणि मन नाणइ रीस जी।९सु॥

मन वच काया ने मन वसि राखइ, छंडे पंच प्रमाद जी।
पंच प्रमाद संसार वधारे, जाणे ते निसवाद जी ॥१०सु॥
सरल सभाव भाव मन रूडुं, न करे वाद विवाद जी।
च्यारि कषाय कुगति ना कारण, वरजइ मद उनमाद जी।११सु।
पाप तणा थानक अढारइ, न करे तास प्रसंग जी।
विकथा मुख थी च्यारे निवारे, समिति गुपति सुरंग जी ॥१२सु॥
अंगउपांग सिद्धांत वखाणे, द्यइ सूधउ उपदेश जी।
सूधइ मारग चले चलावे, पंचाचार विशेष जी ॥१३सु॥
दश विधि जती धरम जिन भाख्यु, तेहना धारणहार जी।
धरम थकी जे किमही न चूके, जउ हुइ लाख प्रकार जी ॥१४सु॥
जीवतणी हिंसा जे न करे, न वदइ मृषा अधर्म जी।
त्रिणउ मात्र अणदीधउ न लीयइ, सेवे नही अब्रह्म जी ॥१५सु॥
द्रव्यादिक परिग्रह नवि राखे, निसिभोजन परिहार जी।
क्रोध मान माया नइ ममता, न करे लोभ लिगार जी ॥१६सु॥
ज्योतक आगम निमित न भाखइ, न करावइ आरंभ जी।
ओषध न कहइ नाडि न जोवइ, रहे सदा निरारभ जी ॥१७॥
डाकणी साकणी भूत न काढइ, न करे हलुअउ हाथ जी।
मंत्र यंत्र राखडी न बांधइ, न करे गोली काथ जी ॥१८सु॥
विचरे गाम नगर पुर सगलइ, न रहइ एकणि ठाम जी।
चउमासा ऊपरि चउमासउ, न करे एकणि गाम जी ॥१९सु॥

चाकर नफर न राखइ पासइ, न करावइ कोई काज जी ।
न्हावण धोवण वेस वणावण, न करे देह इलाज जी ॥२०सु॥
व्याज वटाव करे नही कईयइं, न करे विणज व्यापार जी ।
धरम हाट मांडी नइ वइठा, विणजे पर उपगार जी ॥२१सु॥
सुगुरु तिरइ अवरांनइ तारइ, सायर जेम जिहाज जी ।
काठ प्रसंगइ लोह तिरइ तिम, गुरु संगति ए पाज जी ॥२२सु॥
सुगुरु प्रकाशक लोयण सरिखा, ज्ञान तणा दातार जी ।
सुगुरु दीपक घट अंतर केरा, दूरि गमइ अंधार जी ॥२३सु॥
सुगुरु अमृत सारीखा सीला, दीये अमरपुर वास जी ।
सुगुरु तणी सेवा निति करतां, करम विछूटइ पास जी ॥२४सु॥
सुगुरु पचीसी श्रवणे सुणि ने, करिज्यो सुगुरु प्रसंग जी ।
कहे जिनहरख सुगुरु सुपसाये, शांति हरख उछरंग जी ॥२५सु॥

कुगुरु पचीसी

ढाल ॥चउपईनी॥

श्री जिन वाणी हीयडे धरे, कुगुरु तणी संगति परिहरे ।
लोह सीलाना साथी जेह, कुगुरु तणा लक्षण छइ एह ॥१॥
कालउ साप कुगुरु थी भलउ, एको वार करे मामलउ ।
कुगुरु भवोभव दुख अछेह, कुगुरु तणा लक्षण छइ एह ॥२॥
पृथ्वि नीर अग्नि ने वाय, वनस्पति छठी त्रसकाय ।
एह तणी रक्षा न करेह, कुगुरु तणा लक्षण छइ एह ॥३॥
थानक पाप तणा अठार, तेतउ सेवे वारंवार ।

संयम लोर उडावइ खेह,कुगुरु तणा लक्षण छइ एह ॥४॥
धुरि सुं पंच महाव्रत धरे, सव्वं सावज्जं उच्चरे।
चरित्र भंजइ रंजे देह, कुगुरु तणा लक्षण छइ एह ॥५॥
झूठुं बोले लीये अदत्त, चोरी करि ल्यइ परनउ वित्त।
काम कुतूहल सुं बहु नेह, कुगुरुतणा लक्षण छइ एह ॥६॥
परिग्रह सुं राखइ बहु मोह, धन नइ काज करे परद्रोह।
परभवथी बीहे नही तेह, कुगुरु तणा लक्षण छइ एह ॥७॥
असनादिक च्यारे आहार, राते पिणि न करे परिहार।
दूषण निज मन न विचारेह, कुगुरु तणा लक्षण छइ एह ॥८॥
पाणी काचुं जे वावरे, आप तणा दूषण छावरे।
केम तिरइ गुरु किम तारेह, कुगुरु तणा लक्षण छइ एह ॥९॥
मोटी पदवी ना जे धणी, लोकां माहे प्रभुता घणी।
ते पिणि करणी खोट धरेह, कुगुरु तणा लक्षण छइ एह ॥१०॥
पाप विवरावे वांदणा, गुणहीणा नइ अवगुण घणा।
घरवासी नी परि निन्नसेह, कुगुरुतणा लक्षण छइ एह ॥११॥
चीणीनइ थिरमां पांगरइ, भेष लेई वे तोरा करे।
त्रिसई पिणि मिलती नही घरेह, कुगुरु तणा लक्षण छइ एह॥१२॥
गृहस्थ तणी परि करे व्यापार, वेचे पुस्तक वस्त्र अपार।
व्याज वटइ धन ऊपावेह, कुगुरु तणा लक्षण छइ एह ॥१३॥
आठ पहुर छत्रीसे घडी, पंच प्रमादां सुं प्रीतडी।
किरिया पडिकमणुं न करेह, कुगुरु तणा लक्षण छइ एह ॥१४॥

गाडां पाखइ न चले भार, गाड़े बइठा करे विहार ।
ईरज्यासमिति किसी पालेह, कुगुरुतणा लक्षण छइ एह ॥१५॥
हसे धसे बोले पारिसी, मुख धोवइ जोवे आरसी ।
वेस वणाव करइ निसंदेह, कुगुरु तणा लक्षण छइ एह ॥१६॥
रवि आथमता तांई जिमइ, रूसइ रीष दीयां नवि खमइ ।
न करे कोई पचखाण वलेह, कुगुरु तणा लक्षण छइ एह ॥१७॥
सेवे देवी दुरगा मात, वरत करे बइसइ नवराति ।
पोथी सातसई वाचेह, कुगुरु तणा लक्षण छइ एह ॥१८॥
राति दिवस ओपध आरंभ, चूरण गोली करे असंभ ।
नाड़ि चिकित्सा वैदग रेह, कुगुरु तणा लक्षण छइ एह ॥१९॥
सरस कतूहल कथा चरित्र, वाचे कान करे अपवित्र ।
सूत्र सिद्धांत न संभलावेह, कुगुरुतणा लक्षण छइ एह ॥२०॥
पोतइ न चलइ सूधइ राह, परनइ सुध चलावइ काह ।
चोर चांद्रणउ न सुहावेह, कुगुरु तणा लक्षण छइ एह ॥२१॥
रंधावी ने लीये आहार, असूझता नउ किसउ विचार ।
जिम तिम करि निज पेट भरेह, कुगुरु तणा लक्षण छइ एह॥२२॥
पोतइ कहइ अम्हे छां जती, पिणि आचार चलइ नही रती ।
अनाचार दिसि निति चालेह, कुगुरु तणा लक्षण छइ एह ॥२३॥
पापश्रमण नी परि आचरे, साधु तणी वलि निंदा करे ।
पाप तणु किम आणइ छेह, कुगुरु तणा लक्षण छइ एह ॥२४॥
कुगुरू पचीसी ए मइ करी, कहे जिनहरख कुमति परिहरी ।
मुनि लोयण भोयण प्रमितेह, कुगुरूतणा लक्षण छइ एह ॥२५॥

नव वाडनी सज्झाय

दूहा

श्री नेमीसर चरण युग, प्रणमुं उठी प्रभाति ।
बावीशम जिन जगतगुरु, ब्रह्मचारि विख्यात ॥ १ ॥
सुन्दरि अपछरि सारिखी, रति सम राजकुमारी ।
भर-जोवन में जुगति सुं, छोड़ि राजुल नारी ॥ २ ॥
ब्रह्मचर्य जिण पालियो, धरता दूधर जेह ।
तेह तणा गुण वर्णवूं, जिम पावन हुवे देह ॥ ३ ॥
सुरगुरु जो पोते कहै, रसणा सहस बणाय ।
ब्रह्मचर्य ना गुण घणा, तो पिण कह्या न जाय ॥ ४ ॥
गलित पलित काया थई, तो ही न मूकै आस ।
तरुणपणै जे व्रत धरै, हुं बलिहारी तास ॥ ५ ॥
जीव विमासी जोय तूं, विषय म राचि गिमारि ।
थोड़ा सुख नैं कारणै, मूरख घणो म हारि ॥ ६ ॥
दश दृष्टांते दोहिलो, लाधो नरभव सार ।
शीयल पाल नव वाड़ि सुं, सफल करो अवतार ॥ ७ ॥

ढाल ॥ मन मधुकर मोही रह्यो ॥

शील सुरतरु सेवियै, व्रत मांही गिरुओ जेह रे ।
दंभ कदाग्रह छोड़िने, धरिये तिण सुं नेह रे ॥ ८ ॥
जिन शासन वन अतिभलो, नंदन वन अनुहार रे ।
जिनवर वनपालक जिहां, करुणा रस भंडार रे ॥ ९ ॥

मन प्राणे तरु रोपियो, बीज भावना वंभ रे।
श्रद्धा सारण तिहां वहै, विमल विवेक ते अंभ रे॥ १० ॥
मूल सुदृष्टि समकित भलो, खंध नवे तत्त दाख रे।
साख महाव्रत तेहनी, अनुव्रत ते लघु साख रे॥ ११ ॥
श्रावक साधु तणा घणा, गुण गण पत्र अनेक रे।
मौर कर्म शुभ वंधनो, परमल गुण अतिरेक रे॥ १२ ॥
उत्तम सुर सुख फूलड़ा, शिव सुख ते फल जांण रे।
जतन करी वृख राखियो, हीयड़ै अति रंग आंण रे॥१३॥
उत्तराध्ययनें सोलमें, वंभसमाही ठाण रे।
कीधी तिण तरु पाखती, ए नव वाडि सुजाण रे॥ १४ ॥

दूहा

हवि प्रांणी जांणी करी, राखी प्रथम ए वाड़ि।
जो ए भांजि पैसमि, प्राणै प्रमदा धाड़ि॥ १५ ॥
जेहड़ि तेहड़ि खलकती, प्रमदा गय मयमत्त।
शीयल वृक्ष ऊपाडसी, वाड़ि वीभाड़ि तुरत्त॥ १६ ॥

ढाल-नणदल री

भाव धरी नित पालीजै, गिरुवो ब्रह्मव्रत सार हो भवियण।
जिण थी शिव सुख पामीयै, सुन्दर तन सिणगार हो ॥१७॥
स्त्री पसु पंडग जिहां वसै, तिहां रहिवो नहीं वास हो।
एहनी संगति वारीयै, व्रतनो करै विणास हो॥ १८ ॥
मंजारी संगति रमै, कूक्कड़ मूंसक मोर हो।
कु ल किहां थी तेहने, पामै दुःख अघोर हो॥ १६ ॥

अगनिकुंड पासे रही, प्रघलै घृत नो कुंभ हो।
नारी संगति पुरुष नो, रहे किसी परि बंभ हो ॥ २० ॥
सींह गुफा वासी जती, रह्यो कोस्या चित्रसाल हो।
तुरत पड्यो वश तेहनै, देश गयो नेपाल हो ॥ २१ ॥
विकल अकल विण बापड़ा, पंखी करता केलि हो।
देखी लखणा महासती, रुली घणुं इण मेल हो ॥ २२ ॥
चित चंचल पंडग नर, वरतैं तीजै वेद हो।
घजरा गति रति तेहनी, कहैं जिनहर्ष उमेद हो ॥ २१ ॥

दूहा

अथवा नारी एकली, भली न मंगति तास।
धर्मकथा नहीं कहवी, बैसी तेहने पास ॥ २४ ॥
तेहथी अवगुण हुवै घणा, संका पामे लोक।
आवे अछतो आल सिर, चीजी वाडि विलोक ॥ २५ ॥

ढाल ॥ कपूर हुवे अति ऊजलो रे ॥

जात रूप कुल वेशनी रे, रमणी कथा कहे जेह।
तेहनो ब्रह्मव्रत किम रहे रे, किम रहे व्रत सुं नेह रे।
प्राणी नारी कथा निवारि ॥ २६ ॥
तूं तो वीजी वाड़ संभार रे, प्राणी नारी कथा निवारि ॥
चंद्रमुखी मृगलोयणी रे, वेणि जांणि भुयंग।
दीपशिखा सम नासिका रे, अधर प्रवाली रंग रे ॥ २७ ॥
वांणी कोयल जेहवी रे, वारण कंभ उरोज।

हंसगमण कृश हर कटी रे, करयुग चरण सरोज रे ॥ २८ ॥
रमणी रूप इम वरणवैरे, आंणि विषय मन रंग रे।
मुगध लोक नै रीझवै रे, वींधै अंग अनंग रे ॥ २९ ॥
अपवित्र मल नो कोठलो रे, कलह काजल नो ठाम।
बारह श्रोत वहै सदा रे, चरम दीवड़ी नाम रे ॥ ३० ॥
देह उदारीक कारमी रे, क्षिण में भंगुर थाय।
सप्त धात रोगाकुली रे, जतन करंता जाय रे ॥ ३१ ॥
चक्री चोथो जांणीयै रे, देवे दीठो आय।
ते पिण खिण में विणसीयो रे, रूप अनित्य कहाय रे ॥३२॥
नारी कथा विकथा कही रे, जिणवर बीजे अंग।
अनरथदंड अंग सातमें रे, कहै जिनहरख प्रसंग रे ॥३३॥

दूहा

ब्रह्मचारी जोगी जती, न करै नारि प्रसंग।
एकण आसण बेसतां, थायै व्रत नो भंग ॥ ३४ ॥
पावक गालै लोहने, जो रहे पावक संग।
इम जांणी रे प्राणीया, तज आसण त्रिय रंग ॥ ३५ ॥

ढाल ॥ थे सौदागर लाल चलण न देस्यु ॥

तीजि वाड़ि हिवे चित विचारो, नारी संग बैसवो निवारो लाल।
एकण आसण काम दीपावै, चौथा व्रत नें दोष लगावे लाल ॥३६॥
इम बैसंता आसंगो थावै, आसंगे काया फरसाये लाल।
काया फरस विषय रस जागे, तेहथी अवगुण थाये आगे लाल।३७।

जोवो श्री संभूति प्रसिद्धो, तन फरसे नीयांणो कीधो लाल ।
द्वादशमो चक्रवर्ती अवतरीयो, चित्त प्रतिबोध तेहने दीधो लाल ।३८।
तेहने उपदेशे लेश न लागो, विरतन का कायर थई भागो लाल ।
सातमी नरकतणां दुख सहीया, स्त्री फरसे अवगुण इम कहीया ।३९।
काम विराग वधै दुख खांणी, नरक तणी साची सहिनाणी ।
इक आसण इम दूषण जांणो, परिहर निज आतम हित आंणी ।४०।
माय बहन जो बेटी थाये, ते बैसी ने ऊठी जाये ।
कलपे इकण मोहर्त्त पाछो, वैसेवो जिनहर्ष सु आछौ ॥४१॥

दूहा

चित्र लिखित जे पूतली, ते जोयेवी नांहि ।
केवलनाणी इम कहे, दशवैकालिक मांहि ॥४२॥
नारि वेद नरपति थयो, चक्षु कुशील कहाय ।
लख भव चोथि वाडि तजी, रुलियो रूपी राय ॥४३॥

डाल ॥ मोहन मुदड़ी लेगयो ॥

मनहर इन्द्री नारिना, दीठां वधै विकारि ।
वागुर कांमी मृग भणी हो, पास रच्यो करतार सुगुण नर
नारी रूप न जोइयेरे, जोइये नहीं धर राग सुगुण नर ॥४४॥
नारी रूपे दीवलो, कामी पुरुष पतंग ।
झंपे सुखने कारणै हो, दाझै अंग सुरंग ॥४५॥
मन रमतां हीयै, उर कुच वदन सुरंग ।
नहर अहर भोगी डस्यो हो, जोवंतां व्रत भंग ॥४६॥

कामणगारी कामिनी, जीतो सयल संसार।
आखै अणी न क्यो रहोह्यो, सुरनर गया सहु हार ॥४७॥
हाथ पांव छेद्या हुवै, कांन नाक पिण तेह ।
ते पिण सो वरसां तणी हो, ब्रह्मचारी तजे जेह ॥४८॥
रूपै रंभा सारखी, मीठा बोली नारि ।
ते किम जोवे एहवी हो, भर जोवन व्रत धार ॥४९॥
अबला इंन्द्री जोवतां, मन थायै वसि प्रेम।
राजमती देखी करी, हो तुरत डिग्यो रहनेम ॥५०॥
रूप कूप देखी करी, मांहि पड़ै कामंध ।
दुख मांणै जांणै नहीं हो, कहै जिनहर्ष प्रबंध ॥५१॥

दूहा

संयोगी पासै रहै, ब्रह्मचारी निशदीस ।
कुशल न तेहना व्रत तणी, भाजे विशवा वीस ॥५२॥
वसे नहीं कुट अंतरे, शील तणी हुवे हाणि ।
मन चंचल वसि राखिवा, हियै धरो जिन वांणि ॥५३॥

ढाल ॥ श्री चद्राप्रभु प्राहुणो रे ॥

वाडि हिवे सुणि पांचमी रे, शील तणी रखवाल रे ।
चक्षु रो पड सीतो शही रे, व्रत थासी विशटाल रे ॥५४॥
परियछ भींत ने आंतरे रे, नारि रह्वे जिहां रात रे ।
केल करे निज कंतसु रे, विरह मरोडे गात रे ॥५५॥
कोयल जिम कुहु केलवै रे, गावै मधुरे शाद रे ।

ग्रह माती राती थकी रे, सुरत सरस उन्माद रे ॥५६॥
रोवे विरहाकुल थकी रे, दाधी दुख दव झाल रे ।
दीणे हीणे बोलडे रे, कांम जगावे बाल रे ॥५७॥
कांम वधै हड़हड़ हंसे रे, प्रीय मेटो तनताप रे
वात करे तन मन हरै रे, विरहण करै विलाप रे ॥५८॥
राग वधै सुण उल्लसै रे, हासे अनरथ होय रे ।
राम घरण हासा थकी रे, रावण वध थया जोय रे ॥५९॥
व्रतधारी नव सांभले रे, एहवी विरही वाण रे।
कहै जिनहर्ष थिर मन टलै रे, चित चले सुणि वैण रे ॥६०॥

दूहा

छठी वाडै इम कह्यो, चंचल मन म डिगाय ।
खाधो पीधो विलसीयो, तिण सुं चित्त म लाय ॥६१॥
काम भोग सुख पारख्या, आपे नरग निगोद ।
परतिख नो कहिवो किसुं, विलसे जेह विनोद ॥६२॥

ढाल ॥ आज नहेजो दी ० .

भर यौवन धन सामग्री लही, पामी अनुपम भोगो जी ।
पांच इन्द्री ने वस भोगव्या, पांमे भोग संयोगो जी ॥६३॥
ते वीतारे ब्रह्मचारी नहीं, धुर भोगवियां सुखो जी ।
आसी विस साल समोपमा, चीतार्यां द्यै दुखो जी ॥६४॥
सेठ माकंदी अंगज जाणीये, जिनरक्षत इण नामो जी ।
जक्ष तणी सीख्या सहु वीसरी, व्यामोहीतवस कामो जी ॥६५॥

रयणादेवी सन्मुख जोइयो, पूर्व प्रीत संभारो जी।
तो तीखी करवालै वींधीयो, नांख्यो जलधि मंझारो जी ॥६६॥
सेवो जिनपालित पंडित थयो, न कीयो तास वेसासो जी।
मूल गली पिण प्रीत न मन धरी, सुख संयोग विलासो जी॥६७॥
सेलग यक्षै ततक्षण ऊधरयो, मिलीयो निज परिवारो जी।
कहै जिनहर्ष न पूर्व भोगव्या, न संभारै नरनारो जी ॥६८॥

दूहा

खाटा खारा चरपरा, मीठा भोजन जेह।
मधुरा मोल कसायला, रसना सहु रस लेह ॥ ६९ ॥
जेहनी रसना वश नहीं, चाहे सरस आहार।
ते पामे दुख प्राणीयां, चौगति रुलै संसार ॥ ७० ॥

ढाल ॥ चरणाली चामूड रिण चढै ॥

ब्रह्मचारी सांभल वातड़ी, निज आतम हित जाणी रे।
वाड म भांज सातमी, सुण जिणवर नी वांणी रे ॥ ७१ ॥
कवल झरे ऊपाडतां, घृत बिन्दु सरस आहारो रे।
तेह आहार नीवारीयै, जिणथी वधै विकारो रे ॥ ७२ ॥
सरस रसवती आहार रे, दूध दही पकवानो रे।
पापश्रमण तेहनें कह्यो, उत्तराध्ययनें मानो रे ॥ ७३ ॥
चक्रवर्ती नी रसवती, रसिक थयो भूदेवो रे।
काम विटम्बण तिण लही, वरज वरज नित मेवो रे ॥७४॥
रसना नो जे लोलपी, लपटे इण संवादो रे।

संगु आचार्य नी परै, पामे कुगति विषादो रे ॥७५॥
चारित्र छांड़ि प्रमादीयो, निज सुत नी रजध्यानी रे।
राज रसवती रम पड्यो, जोवो शेक``द पानी रे ॥७६॥
सबल आहारे बल वधे, बल उपशसे न वेदो रे।
वेदै ब्रत खंडित हुवै, कहै जिनहरख उमेदो रे ॥७७॥

दूहा

वहु घणे आहारे विष चढै, घणै ज फाटै पेट।
धांन अमापो ऊरतां, हांडी फाटै नेटि ॥ ७८ ॥
अति आहार थी दुख हुवै, गलै रूप बल गात।
आलस नींद प्रमाद घणुं, दोष अनेक कहात ॥ ७६ ॥

ढाल ॥ जवुदीप मझारि ए ॥

पुरुष कवल बत्रीश भोजन विध कही, अठवीश नारी भणी ए।
पंडिक कवल चोवीश अधिके दूखण, होये असाता अति घणी ए।८०
ब्रह्मव्रत धर नर नारि खाये तेहनै, उणोदरीये गुण घणा ए।
जीमे जा सक जेह तेहने गुण नहीं, अतिचार ब्रह्मव्रत तणाए ॥८१॥
जोय कंडरीक मुणींद सहस वरस लगै, तप करि करि काया दहीए।
तिण भांगो चारित आयो राज में, अति मात्रा रसवती लहीए।८२।
मेवाने मिष्ठान व्यंजन नव नवा, साल दाल घृत लूंचिकाए।
भोजन करि भरपूर सूतो निश समै, हुई तास विसूचिकाए ॥८३॥
वेदन सही अपार आरति रूद्र में, मरि गयो ते सातमी ए।
कहै जिनहर्ष प्रमाण ओछो जीमीये, वाड़ि कहीए आठमी ए ॥८४॥

दूहा

नवमी वाड़ि विचारि नैं, पाल सदा निरदोष।
पामीस ततखिण प्राणीयो, अविचल पदवी मोख ॥८५॥
अंग विभूषा ते करे, जे संजोगी होय।
ब्रह्मचर्य तन सोभवै, ते कारण नव कोय ॥ ८६ ॥

ढाल ॥ वीरा वाहुवली गज थकि ऊतरो ए ॥

शोभा न करि देहनी, न करै तन सिणगार।
उवटणा पीठी वली, न करै किण ही वारो रे ॥ ८७ ॥
सुण सुण चेतन तुं तो मोरी वीनती, तोने कहूँ हितकारो ।८८॥
ऊन्हा ताढा नीर सूं, न करे अंग अंघोल।
केशर चंदन कुमकुमे, सुं तैं न करे मूलो रे ॥ ८९ ॥
घण मोला ने ऊजला, न करै वस्त्र बणाव।
घाते काम महाबली, चौथा व्रत नै घावो रे ॥ ९० ॥
कंकण कुंडल मुंद्रड़ी, माला मोती हारो।
पहिरे नहीं शोभा भणी, जे थायै व्रतधारो रे ॥ ९१ ॥
काम दीपन जिनवर कह्या, भूषण दूषण एह।
अंग विभूषा टालवी, कहै जिनहर्ष सनेह ॥ ९२ ॥

ढाल ॥ आप सुवारथ जग सहू रे ॥

श्री वीर दोय दश परखदा, उपदेस्यो इम शील।
पाले जे नव वाड़ि सुं, ते लहसी हो शिव संपद लील ॥९३॥
शील सदा तुमे सेवयो रे, फल जेहना अति रस अखीण।

आठ करम अरियण हणी रे, ते पांमे हो ततखिण सु प्रवीण ॥६४॥
जल जलण अर करि केशरी, भय जाय सगला भाज।
सुर असुर नर सेवा करै, मन वांछित सीझै हो सहु काज ॥६५॥
जिनभवन नीपावै नवौ, कंचण तणो नर कोय।
सोवन तणी कोइ कोड़िद्यै, शील समवड़ हो तो नही पुन्य न होय।६६
नारी नै दूपण नरथकी, तिम नारी थी नर दोप।
ए वाड़ि विहुं नी सारखी, पालेवी हो मन धरीय संतोप ॥६७॥
निधी नयण सुर शशी (१७२८) भाद्रव वदि आलस छाड़ि।
जिनहर्ष दृढ़ मन पालयो, ब्रह्मचारी हो जुगति नव वाड़ि॥६८।

इति श्री नव वाड़ि स्वाध्याय संपूर्णम्

अथ मेघकुमार रो चोढालीयौ

श्री जिनवरना रे चरण नमी करी, गायस मेघकुमारो जी।
राजग्रहीपुर अति रलीयामणौ, श्रेणिक नृप गुणधारोजी।१श्री
गुणवंती पटरांणी धारणी, मंत्री अभयकुमारो जी।
....।२श्री
निस भरि रांणी गज सुपनो लह्यौ, पूछै राय विचारो जी।
पुत्र होस्यै तुम घरि पडित कहै, हरख्यौ सहु परवारो जी।३श्री
त्रीज मसवाडे रे डोहलौ उपनौ, जौ वरसे जलधारो जी।
पंचवरण वादल वरसात ना, खेल्हूं वनह मझारो जी।४श्री
खाल नाल गिर नीझरणा वहै, नदीय वहै असरालो जी।
गुहिरौ गाजै रै चमकै वीजली, चातक चकवै रसालोजी ५श्री०

हस्ती कुंभस्थल बैसी करी, नृप सिर छत्र धरंतौ जी।
गिर वैभार तलै क्रीड़ा करै, तो पूगै मन खंतो जी।६श्री०
अभयकुमारें रे डोहलौ पूरव्यो, सुर सांनिध तिण वारो जी।
दस मसवाडे रे पुत्र जनम थयौ, नामें मेघकुमारो जी।७श्री०
सस्त्रकला सहु सास्त्र कला भण्यौ, योवन पुहुतो जामो जी।
आठ कन्या परणावी सुंदरी, सुख विलसै अभिरामो जी।८श्री०
तिण अवसर श्रीवीर समोसर्या, श्रेणिक वंदण जायो जी।
मेघकुमर पिण वंदै भाव सुं, धरम सुण्यौ चितलायो जी।९श्री०
कुमर सुणी प्रतिबूझ्यो देसना, व्रत लेस्युं तुम्ह तीरो जी।
जहा सुहं प्रतिबंधि न कीजीये, इम कहै श्रीमहावीरो जी।१०श्री०

ढाल २

घरि आईनै रे माइड़ी ने कहै जी, मैं प्रणम्या महावीर।
देसना सुणी रे हिव व्रत आदरूं रे, अनुमत द्यो मोरी मात

धारणी कहै रे मेघकुमार नै रे।

तुं सुकमाल कली सारखौ रे, कोमल कदली नौ गात।१धा०॥
नयणे आँसू छूटै चौसरा रे, जिम पांणी परनाल।
हीयड़ौ फाटै रे दुख मावै नहीं रे, भुय लोटै असराल।२धा०।
मुखड़ौ दीठै रे हीयडा उलसै रे, विण दीठां वैराग।
तुझ नै राखुं रे हीयड़ा उपरै रे, जिम ब्राँभण गल त्राग।३धा०
रमणी खमणी नमणी ताहरी रे, आठं ही सिरदार।
कह्यौ न लोपै वाल्हा ताहरौ रे, तुझ विण कवण आधार।४धा०

ए चित्रसाली रे मंदिर मालीया रे, सखर सुंयाली सेज ।
भोग पुरंदर ए सुख भोगवौ रे, अबला धरौ हेज ।६धा०
सुख नें काजै रे जे तप कीजीयै रे, ते सुख पाम्या एह ।
तूं छोड़ै छै आस्या आगली रे, स्युं जाणै छै तेह ।७धा०
जीभड़ी माहरी ए जुगती नही रे, जिण कहीयै तुं जाय ।
तुझनें कोइ रे अनुमत न आपस्यै रे, देई म जाय सदाह ।८धा०
कुमर कहै रे सुण मोरी मातजी रे, कूड़ा म कर विलाप ।
जातां मरतां कुण राखी सकै रे, जौवौ विचारी आप ।६धा०
मा समझावी नें व्रत आदर्यौ रे, पहिलां दिवस मझार ।
त्रण संथारें सूतौ छेहड़ौ रे, बहु मुनिवर संचार १०धा०
ढीचण पगना रे संघट दुहवै रे, नावैं नींद लिगार ।
निरमायल कर मुझनें परहर्यौ रे, कोइ न लै मोरी सार ।११धा०

ढाल ३

इम करतां दिन ऊगम्यौ रे हां, आयौ जिनवर पास ।
रिषजी सांभलौ, मीठी वांणी वीरनी रे हां, बोलावै सुविलास रि०१।
तुम्हे गुरवा गंभीर, साहसवंत सधीर ।
कांय दीसौ दिलगीर, इम कहै श्री महावीर ॥ रि०२ ॥
इहां थकी तीजै भवै रे हां, गिर वैताढ्य समीप ।रि०।
सुमेरप्रभु हाथी हुतो रे हां, षटदंतु गज जीप ॥ रि०३ ॥
सहस हाथणी परवर्यो रे हां, आयौ ग्रीषम काल ।रि०।
दावानल में दाझतौ रे हां, पुहतौ सर ततकाल ॥रि०४॥

जल थोड़ौ कादम घणौ रे हां, पैठो पीवा नीर ।रि०।
कीच वीच खूची रह्यौ रे हां, पामी न सकै तीर ।।रि०५।।
पूरव वयरी हाथीयौ रे हां, देखी दीध प्रहार ।रि०।
पीड्यौ पद दंतूसलै रे हां, सही त्रिस भूख अपार ।।रि०६।।
सात दिवस वेदन सही रे हां, आयौ वरस सतावीस ।रि०।।
आर्त ध्यांन मरी करो रे हां, विंध्याचल गज ईस ।।रि०७।।
रातै वरण सोहामणो रे हां, मेरुप्रभु चौदंत ।रि०।
हथणी जेहनें सातसै रे हां, रवल करै अत्यंत ।।रि०८।।
वनदव देखी एकदा रे हां, जातीस्मरण उपन्न ।रि०।
दव ऊगरवा कारणें रे हां, ध्यांन धर्यो गज मन्न ।।९ रि०।।
करै योजन नौ मांडलौ रे हां, नदी गंगानें तीर ।रि०।
....।।रि०१०।।
सुयर सांवर हिरणला रे हां, वाघ रोज गज सीह ।
नाठा त्राठा मांडलै रे हां, आव्या वलवानें वीह ।रि०११।।
तूं पिण तिहां उभौ रह्यौ रे हां, दव देखी भय भीत ।
सिसलौ तिहां इक वापड़ौ रे हां, न लहै ठांम सु रीत ।रि०१२।।

।। ढाल ४ ।।

कांन खुजालण तेतलै रे, गज उपाड़यौ पाग ।
तिण सिसलै तिहां पग तलै रे, इहां दीठौ रहिवा लाग ।।१।।
श्री वीर कहै विख्यात, तें दुख पाम्या वहु भांत ।
कांई न संभारै वात रे, मेघमुनि कांई न संभारै रे वात ।।२।।

मेघमुनि सुण पूरव भव वात—आंकणी
गयवर भुंय पाग मूंकताजी, दीठौ नान्हौ जीव ।
मन माहे ततखिण ऊपनों जी, करुणा भाव अतीव ॥मे०३॥
जीव दयाधर कारणौ, अधर चरण तिण वार ।
रात अढी वनदव रह्यौ रे, जीवे पांम्यौ पार रे ॥मे०४॥
भूख तृखा पीड़ै करी रे, भुंय पग मूकै जांम ।
त्रूटि पड़ीयौ तेतलै रे, मूंओ सुभ परणामो रे ॥मे०५॥
दया परणामे रे ऊपनौ रे, श्रेणिक अंगज जात ।
हाथी भव वेदन सही रे कांई, नही संभारै वात रे ॥मे०६॥
धन-धन जिनवर वीरजी रे, धन-धन ए तुम ग्यांन ।
मुझ उझड़ पड़तै छतै रे, राख्यौ देई मांन रे ॥मे०७॥
मीठा जिनवर बोलड़ा रे, सांभल मेघमुणिंद ।
जातीसमरण पांमोयो रे, पाम्यौ परमाणंद रे ॥मे०८॥
कायानी ममता तजै रे, न करूं कोई उपचार ।
जीवदया कारण करूं रे, दोय नयणां री सार रे ॥मे०९॥
फेरी नै चारत्र लीयौ रे, आलोया अतिचार ।
विपुलगिरै अणसण करी रे, पुहता विजय मझार रे ॥मे०१०॥
एकण भव नें आंतरै रे, लहिस्यै भव नौ थाग ।
इम जिनहरखै सीस ने रे, चूकौ आंण्यौ माग रे ॥मे०११॥

इतिश्री मेघकुमार रो चोढालीयो संपूर्ण ।
पं० देवचंद लिखतुं बाहड़मेर मध्ये ।

पंचम आरा सज्झाय

वीर कहै गौतम सुणो, पंचम आरा नो भाव रे।
दुखीया प्राणी अति घणा, सांभलि गोतम सुभाव रे ॥१॥ वी०।
सहिर होसी ते गामड़ा, गाम होसी समसानो रे।
विण गोवालें धन चरै, ज्ञान नहीं निरवाणो रे ॥२॥ वी०।
पाखंडी घणा जागस्यें, भागस्यें धरम ना पंथो रे।
आगम मति मरड़ी करी, करस्यें वली नवा ग्रंथो रे ॥३॥ वी०।
कुमति झाझा कदाग्रही, थापसी आपणा बोलो रे।
शास्त्र मारग ते[1] मुंकस्यें, करसें निज[2] मुख मूलो रे ॥४॥ वी०।
मुझ केड़े कुमती घणा, होस्यै ते निरधारो रे।
जिनमती नी रुचि नवि गमें, थापसी निजमति सारो रे ॥५॥ वी०
सुगुरु नें उथापस्यें, कुगुरु नें जइ मिलसै रे।
मोटा द्रव्य लंचायस्यै, नीच नें निश्चें होस्यें रे ॥६॥ वी०
सुमित्र थोड़ा हुस्यै, कुसंगी सुं रंग धरस्यै रे।
सूत्र सिद्धांत उथापस्यै, जेठाणी देराणी विढस्यें रे ॥७॥ वी०।
छोरू विनयवंत थोडला, मात पिता ना वयण न चालै रे।
गुणग्राही नर थोड़ला, कुलटा नें संग चालै रे ॥८॥ वी०।
चालणी नी परि चालस्यें, धरम ना जाणे न भेदो[3] रे।
आगम साखनें टालस्यें, पालसें आप[4] उमेद रे ॥९॥ वी०।
राजा परजा नें पीडस्यें, होडस्यें निरधन लोक रे।

---

१ सवि २ जिनमतमोल रे ३ लेश ४ निज उपदेश रे।

मांग्या न वरसें मेहलो, मिथ्या होस्यें बहु थोको रे ॥१०॥वी०।
चोर चरड़ बहु लागस्यें, बोल न पालें बोल रे।
साधुजन सीदावस्यें, दुरजन बहुला मोलो रे ॥११॥वी०।
संवत उगणीस चवदोतरें, होस्यें कलंकी रायो रे।
माता ब्रामणी जाणीये, बाप चंडाल कहायो रे ॥१२॥वी०।
असी[1] वरसनो आउखो, पाडलिपुर में होस्ये रे।
तसु सुत दत्त नामें भलो, श्रावक कुल सुध[2] धरस्यें रे ॥१३॥वी०
कोतुकी दाम चलावस्यें, चरम तणा जे[3] जोयो रे।
चोथ लेस्ये भिक्षातणी, महा आकरा कर होया रे ॥१४॥वी०।
इंद्र अवधियें जोयसे, देखसें एह सरूप रे।
द्विज रूपे आवी करी, हणसे कलंकी भूपो रे ॥१५॥वी०।
दत्त नें राज थापी करी, इन्द्र सुरलोकें जाय रे।
दत्त धरम पालै सदा, भेटें सेत्रुंज गिरि राय रे ॥१६॥वी०।
पृथवी जिन मंडित करी, पामसे सुख अपार रे।
देवलोक सुख भोगवी, नामे जय जयकार रे ॥१७॥वी०।
पांचमा आरा नें छेहड़ें, चतुर्विध श्रीसंघ होस्ये रे।
छठो आरो वैसतां, जिनधर्म प्रथमें[4] जास्यें रे ॥१८॥वी०।
बीजें (पहिरें) अगनि जायसें, तीजें राज[5] न कोइ रे।
चोथें पुहरें लोपना, छठो आरो ते होय रे ॥१९॥वी०।

---

१ छयासी २ शुभ पोसे रे ३ ते ४ पहिलो ५ राय।

दूहा

छठें आरे मानवी, विलवासी सहु कोय।
वीस वरस नो आउखो, षट वर्षे गर्भ होय ॥२०॥

वरस सहस्र चोरासी पणइ, भोगवस्यें भव कर्म।
तीर्थंकर होस्यें भलो, श्रेणिक जीव शुभ धर्म ॥२१॥

तस गणधर अति सुंदरु, कुमरपाल भूपाल।
आगम वाणी जोय नें, रचीया वयण रसाल ॥२२॥

पांचमा आरा नो भाव ए, आगम भाख्या वीर।
ग्रंथ वोल विचार कह्या, सांभलज्यो भवि धीर ॥२३॥

भणतां समकित संपजें, सुणतां मंगलमाल।
जिनहरषे करि[1] देखीयो, भाख्या ययण रसाल २४॥+

श्री राजीमती सज्झाय

ढाल—केसर वरणो हो काढ कसुंवो माहरा लाल ॥

कांइ रीसाणा हो नेम नगीना, माहरा लाल,
तुं पर वारी हो वुद्धे लीना ।मा०।
विरह विछोही हो ऊभी छोड़ी मा०
प्रीति पुराणी हो के तें तो तोड़ी ।मा०।१॥

---

१ कही जोड़ ए।

+ सज्झायमालादि में इसकी २१ गाथाएँ छपी हैं। पद्यांक ६-७ नहीं है।

सयण सनेही हो क्युं पण राखो मा०
जे सुख लीणा हो के छेह न दाखो ।मा०।
नेम नहेजो हो के निपट निरागी मा०
कये अवगुणे हो के मुझ ने त्यागी ।मा०।२॥
सासू जाया हो के मंदिर आवो मा०
विरह वुझावो हो के प्रेम बनावो ।मा०।
कांइ वनवासी हो के कांइ उदासी मा०
जोवन जासी हो के फेर न आसी ।मा०।३॥
जोवन लाहो हो के वालम लीजे मा०
अंग उमाहो हो के सफल कहीजे ।मा०।
हुं तो दासी हो के आठ भवां री मा०
नवमें भव पण हो के कामणगारी ।मा०।४॥
राजुल दीक्षा हो के लही दुख वारे मा०
दियर रहनेमी हो के तेहने तारे ।मा०।
नेम ते पहला हो के केवल पामी मा०
कहे जिनहर्ष हो के मुगतिगामी ।मा०।५॥

गजसुकमाल मुनि सज्झाय

वासदेव हेव उछव करें, दीक्षा तणो अवसाण ।
कुमर विराजे पालखी, निहस घुरै नीसाण ।।व०१॥
वड़ वैरागियो गुरुओ गज सुकुमाल, जीव दया प्रतिपाल ।

रिद्धि तजी ततकाल, रमणी रूप उदार ॥ व०२ ॥
आविया गहगट थाट सुं, श्री नेमिनाथ समीप ।
करजोड़ कीधी वंदना, जय भवसायर दीप ॥ व०३ ॥
ए सचित्त भिख्या प्रभु ग्रहो, ए कुमर गजसुकमाल ।
एहनें तुमे दीक्षा दीयो, टालो भवदह जाल ॥ व०४ ॥
जगनाथ हाथ पसार नें, कीधो अंगीकार ।
श्री साधुनो धरम आपीयो, चउ महाव्रत सार ॥व०५॥
माता पिता पगे लागी ने, सहु गया निज-निज गेह ।
मन थकी तोहि न वीसरे, नवलो एह सनेह ॥व०६॥
हिवें पंच मुठि लोच करें, प्रभु आय लागो पाय ।
किम करम तूटे माहरा, सो दाखवो महाराय ॥व०७॥
जगनाथ नेमीसर कह्यो, समसाण कर काउसग ।
मन क्रोध तजि आदर क्षमा, आया खमो उपसर्ग ॥व०८॥
कर तहत गजसुकमाल चित्त, आवियो तिहां समसाण ।
काउसग कर ऊभो रह्यो, रहतां निरमल झाण ॥ व०९ ॥
निरखियो सोमल ब्राह्मण, जागियो क्रोध प्रचंड ।
माहरी कन्या छोड़ नें, ए पापी थयो मुझ (दंड) ॥ व०१०॥
सर थकी माटी आणी ने, तसु सीस बांधी पाल ।
बलता अंगारा मेल्हिया, मुख थी देतो गाल ॥ व०११ ॥
रे जीव सहि तुं वेदना, मन मांहि नाणिस रोस ।
भोगव्या विगर न छूटको, किण ने देइ सिर दोष ॥व०१२॥

मुगतें गयो मुनिवर तुरत, सुख सासता छै जेथ ।
चवदमें गुणठाणें चढ्यो, केवल पाम्यो तेथ ॥व० १३॥
एहवा मुनिवर गावतां, वर मिलें मंगल च्यार ।
रिद्ध वृद्ध आवी मिलें, कहै जिनहरष विच्यार ॥ध० १४॥

परस्त्री वर्ज्जन सज्झाय

॥ ढाल—धण रा ढोला—ए देसी ॥

सीख सुणो पिउ माहरी रे, तुझ ने कहुं कर जोड़ । धणरा ढोल
प्रीत म कर परनारी सुं रे, आवे पग-पग खोड़ । धण० ।
कह्यु मानो रे सुजाण कह्यु मानो, वरज्यां वरजो म्हारा ला
वरज्यां वरजो, परनारी नो नेहड़लो निवार ॥ध० १॥
जीव तपे जिम वीजली रे, मनडुं न रहे ठाम ।ध०।
काया दाह मिटे नहीं रे, गांठे न रहे दाम ॥ ध० २ ॥
नयणे नावे नींद्रड़ी रे, आठों पहोर उद्वेग ।ध०।
गलीआरे भमतो रहे रे, लागू लोक अनेक ॥ ध० ३ ॥
धान न खाये धापतो रे, दीठुं न रुचे नीर । ध० ।
नीसासा नांखे घणा रे, साँभल नणदी रा वीर ॥ ध० ४॥
भूतल में निशि नीसरे रे, झुरि-झुरि पिंजर होय ।ध०।
प्रेम तणे वश जे पड़े रे, नेह गमे तन दोय ॥ ध० ५ ॥
रात दिवस मन मां रहे रे, जिण सुं अविहड़ नेह ।ध०।
वीसारच्या नवि वीसरे रे, दाझे क्षण-क्षण देह ॥ ध० ६ ॥
माथे वदनामी चढ़ै रे, लागे कोड़ कलंक ।ध०।
जीवित नो संशय पड़े रे, जूवो रावण पत्ति लंक ॥ध० ७॥

परनारी ना संग थी रे, भलो न थाये नेट ।ध०।
जूवो कीचक भीमड़े रे, दीधो कुंभी हेठ ॥ ध०८ ॥
थाये लंपट लालची रे, घटती जाये ज्योत ।ध०।
जीत न थाये तेहनी रे, जिम राय चंडप्रद्योत ॥ ध०६॥
परनारी विष वेलड़ी रे, विषफल भोग संयोग ।ध०।
आदर करी जे आदरे रे, तेहने भव भय सोग ॥ध०१०॥
वाहला माहरी वीनती रे, साची करि ने जाण ।ध०।
कहे जिनहर्ष तुम्हें सांभलो रे, हीयड़े आणि मुझ वाण ॥११॥

छप्पय

हरखे किस्युं गमार देख धन संपत नारी।
प्रौढ पुत्र परिवार लोक मांहे अधिकारी।
यौवन रूप अनूप गर्व मन माहे उमावै।
करतो मोडा मोड जगत तृण सरखो भावै।
अंखीयां मूढ़ देखे नहीं आज काल मरवुं अछे।
जिनहर्ष समझ रे प्राणिया, नहिं तर दुख पामिस पछे ॥१॥
लंक सरीखी पुरी विकट गढ जास दुरंगम।
पाखली खाई समुद्र जिहां पहुंचे नही विहंगम।
विद्याधर बलवंत खंड त्रण केरो स्वामी।
सेव करे जसु देव नवग्रह पाये नामी।
दस कंध वीस भुजा लहे, पार पाखे सेना बहु।
जिनहर्ष राम रावण हण्यो, दिन पलट्यो पलट्या सहु ॥२॥

श्रावक करणी स्वाध्याय

श्रावक ऊठे तुं परभाति, च्यारि घड़ी ले पाछिल राति ।
मनमें समरे श्री नवकार, जिम लाभै भवसायर पार ॥१॥
कवण देव अम्ह कुण गुरु धर्म, कवण अम्हारो छै कुलकर्म ।
कवण अम्हारे छै विवसाइ, एहवौ चिंतवीजै मन मांही ॥२॥
सामाइक लेइ मन सुद्ध, धरम तणी हियड़ै धरि बुद्धि ।
पड़िकमणो करि रयणी तणौ, पातिक आलोए आपणो ॥३॥
काया सगति करे पचखांण, सूधी पाले जिनवर आंण ।
भणिजै गुणिजे तवन सिझाय, जिण हुंती निसतारौ थाय ॥४॥
चीतारै नित चवदह नीम, पालि दया जीवै तां सीम ।
देहरै जाइ जुहारै देव, द्रव्यतः भावितः करिजे सेव ॥५॥
पौसाले गुरुवंदण जाइ, सुणै वखाण सदा चित लाइ ।
निरदूषण सूझतो आहार, साधां ने देजै सुविचार ॥६॥
साहमीवच्छल करिजे घणौ, सगपण मोटो सांहमी तणो ।
दुखिया हीणा दीणा देखि, करिजै तासु दया सुविशेष ॥७॥
घर अनुसारे दीजे दान, मोटां सुं म करे अभिमान ।
गुरु नैं मुखि लेइ आखड़ी, धरम म मेल्हे एकां घड़ी ॥८॥
वारू सुद्ध करे व्यापार, ओछा अधिका नौ परिहार ।
म भरे केहनी कूड़ी साख, कूड़ा सूंस कथन मत भाख ॥९॥
अनंतकाय कही बत्तीस, अभख बावीसे विसवा बीस ।

ते भक्षण न करीजै किमैं, काचा कउला फल मत जिमैं ॥१०॥
रात्रिभोजन ना बहु दोस, जाणि ने करिजै संतोष ।
साजी साबू लोह नै गुली, मधु धाहड़ी म वेचे वली ॥११॥
वलि म कराये रांगण पास, दूषण घणा कह्या छै तास ।
पाणी गलीजे बे बे वार, अणगल पीधां दोष अपार ॥१२॥
जीवांणी नां करे जतन्न, पातिक छोड़ि करीजै पुन्न ।
छाणा इंधन चूल्हौ जोई, वावरजे जिम पाप न होइ ॥१३॥
घृत नी परि वावरिजे नीर, अणगल नीर म धोए चीर ।
बारह व्रत सूधा पालिजै, अतिचार सगला टालिजै ॥१४॥
कहिया पनरह करमादांण, पाप तणी परिहरिजे खांण ।
सीस म लेजे अनरथ दंड, मिथ्या मैल म भरिजै पिंड ॥१५॥
समकित सुध हियडै राखिजै, बोल विचारी ने भाखिजै ।
उत्तम ठामै खरचिजै वित्त, पर उपगार करै सुभचित्त ॥१६॥
तेल तक्र घृत दूध नै दही, ऊघाड़ा मत मेल्हे सही ।
पांचै तिथि म करे आरंभ, पालै सील तजे मन दंभ ॥१७॥
दिवसचरम करिजै चौविहार, च्यारे आहार नौ परिहार ।
दिवस तणा आलोए पाप, जिम भाजै सगला संताप ॥१८॥
संध्या आवश्यक साचवै, जिनवर चरण सरण भव भवै ।
च्यारै सरणा करि दृढ़ हुए, सागारी अणसण ले सुए ॥१९॥
करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ सेत्रुंजै जेहवा ।
समेतसिखर आबू गिरनार, भेटिसि हूं कदि धन अवतार ॥२०॥

श्रावक नी करणी छै एह, एह थी थाये भवनौ छेह ।
आठै करम पड़े पातला, पाप तणा छूटे आमला ॥२१॥
वारू लहिये अमर विमान, अनुक्रमि लाभे शिवपुर थान ।
कहे जिनहरख घणे सुसनेह, करणी दुख हरणी छै एह ॥२२॥

इति श्री श्रावक करणी स्वाध्याय

सवत १७४४ वरसे वैसाख वदि २ दिने श्री क्षेमकीर्ति शाखार्या वा० श्री श्री श्रीसोमगणि तत्शिष्य वा० श्रीशातिहर्ष गणि तत्-शिष्य मुख्य पडित श्रीजिनहर्ष गणि तन् शिष्य पं० सभाचन्द लिखितं सुश्रावक पुण्यप्रभावक लूणीया मं० किसनाजी पुत्र विमलदासजी ततपुत्र चिरं हरिसिंह पठनार्थम् ।

———

कविवर जिनहर्ष गीतम्

दोहा

सरसति चरण नमी करी, गास्युं श्री ऋषिराय।
श्री जिनहरष मोटो यति, समय अनुसार कहिवाय ॥१॥
मंदमती ने जे थयो, उपगारी सिरदार।
सरस जोडिकला करी, कर्यो ज्ञान विस्तार ॥२॥
उपगारी जगि एहवा, गुणवंता व्रतधार।
तेहना गुण गाता थका, हुइ सफल अवतार ॥ ३ ॥

देसी—वाडी ते गुडा गामनी

श्री जिनहरप मुनीश्वर गाईये, पाईयै वछित सिद्ध।
दुषमकाल माहिं पणि दीपती, किरियां शुद्धी कांध ॥ १ ॥ श्री० ॥
शुद्ध क्रिया मारग अभ्यासता, तजता माया रे मोस।
रोष धरइ नहीं केहस्यु मुनीवरू, सुंदरु चित्तइं नही सोस ॥२॥ श्री०
पंच महाव्रत पालै प्रेमस्युं, न धरै द्वेप न राग।
कपट लपेट चपेटा परिहरइ, निर्मल मन मे वइराग ॥ ३ ॥ श्री० ॥
सरल गुणे दूरि हठ जेहनै, ज्ञाने, शठता (रे) दूरि।
ममता मान नहीं मन जेहनें, समता साधु नुं नूर ॥ ४ ॥ श्री० ॥
मंदमती नें शास्त्र वंचावता, आपता ज्ञान नो पंथ।
जोड़िकला माहि मन राखतो, निर्लोभी निर्ग्रंथ ॥ ५ ॥ श्री० ॥
'शत्रुंजय महातम' आदि भला, तेहना कीधा रे रास।
जिन स्तुति छद छप्पया चउपई, कोधा भल भला भास ॥६॥ श्री० ॥
निज शकति इम ज्ञान विस्तारीयुं, अप्रमत्त गुण ना निवास।
इर्यासमिति मुनिवर चालता, भापासमिति स्युं भाष ॥७॥ श्री० ॥
एषणा समिति आहारइ चित धर्युं, नहीं किहाइं प्रतिवंध।
निरीही पणें मन लूखु जेहनुँ, नहीं को कलेश नो धंध ॥ ८ ॥ श्री०
गच्छ नो ममत्व नहीं पण जेहने, रूड़ा निष्पृहवंत।
शातो दात गुणे अलकरू, सोभागी सत्यवंत ॥ ९ ॥ श्री० ॥

श्री जिनहरप मुनीश्वर वंदीइ, गीतारथ गुणवत ।
गच्छ चुरासीइं जाणइ जेहने, मानइ सहु जन संत ॥ १ ॥
पंचाचार आचारइं चालता, नव विध ब्रह्मचर्य धार ।
आवश्यकादिक करणी उद्यमइं, करता शकति विस्तारि ॥ २ ॥
आज कालि ना रे कपटी थया, माडी झाक झमाल ।
निज पर आतम ने धूतारता, एहवो न धर्यो रे चाल ॥ ३ ॥
आज तो ज्ञान अभ्यास अधिक छे, किरिया तिहा अणगार ।
ते 'जिनहरष' माहि गुण पामीइ, निंदे तेह गमार ॥ ४ ॥
आपमती अज्ञान क्रिया करी, त्राडूकइ जिम साड ।
हुं गीतारथ इम मुख भाखता, खुल नु थाइ रे खाड ॥ ५ ॥
कामिनी कांचन तजवा सोहिला, सोहिलुं तजवुं गेह ।
पणि जन अनुवृत्ति तजवी दोहिली, जिनहरषइं तजी तेह ॥ ६ ॥
श्री साहायिक पणि सुभ आवी मिल्या, श्री वृद्धिविजय अणगार ।
व्याधि उपन्नइ रे सेवा वहु करी, पूरण पुण्य अवतार ॥ ७ ॥
आराधना करावइ साधु ने, जिन आज्ञा परमाण ।
लख चुरासी रे योनि जीव खमावता, ध्याता रूडुं ध्यान ॥ ८ ॥
पंच परमेष्ठी रे चित्तइ ध्याइता, गया स्वर्ग मुनिराय ।
माडवी कीधी रे रूड़ी श्रावके, निहरण काम कराय ॥ ९ ॥
'पाटण' मांहि रे धन ए मुनिवरु, विचर्या काल विशेप ।
अखंडपण व्रत अंत समइ ताइ, धरता शुभमति रेख ॥ १० ॥
धन 'जिनहरष' नाम सुहामणु, धन धन ए मुनिराय ।
नाम सुहावइ निष्पृह साध नु, 'कवीयण' इम गुण गाय ॥ ११ ॥
॥ इति श्री जिनहर्ष गीतम् ॥

जिनहर्ष ग्रन्थावली में प्रयुक्त देशी सूची

—:o:—

श्री नेमिनाथ राजीमती बारहमास सवैया

घनघोर घटा घन की उनई विजुरी चमकंत जलाहलसी,
विच गाज अवाज अगाज करत सु लागत मोहि कटारी जिसी।
पपीया पीउ-पीउ करै निसवासर दादुर मोर वदे उलसी,
अैसे श्रावण में सखी नेम मिलै सुख होत कहै जसराज रिपी ॥ १ ॥
भादव रैन मे मेन सतावत नैनन नींद परै नहीं प्यारी,
घटा करि श्याम वरषित मेह वहै भारि नीरह नीर अपारी।
सूनी मो सेज सुखावत नाहि जु कंत विना भई मैं विकरारी,
कहै जसराज भणै इसै राजुल नेमि मिलै कब मो हईयारी ॥ २ ॥
माम आसोज सखी अब आयौ संजोगण के मन माँहि सुहायौ,
कारे धुसारे कहुं सित वादर देखत ही दुख होत सवायौ।
चंद निरम्मल रैण दीपावै जसा अलवेसर कंत न आयौ,
राजुल ऐसें सखी सुं कहै षट मास वराबर यूंस गमायौ ३ ॥ ॥
कातिक काम किलोल विना विरहानल मोहि न जाति सखी री,
अंधारी निसा सुख चेंन मे सूती थी प्रीतम प्रीतम ऐसें भखी री।
मैं पीउ कौन पै मोहि तजी उण प्रीत चलै कैसे एक पखी री,
कहै जसराज वदे ऐसें राजुल कंत विना न दीवारी लखी री ॥ ४ ॥
मिगसिर आयो कहै सहेली री सीत अनीत अबें प्रगटाणौ,
कामण कंत दोऊ मिल सोवत रैण गमावत होत विहाणौं।
छोरि त्रीया निज दूषण पाखे रह्यो किण कारण वैठ के छांनो,
राजुल बात कहै जसराज यदुपति मोहि कह्यौ क्यों न मान्यों ॥ ५ ॥

सीत सजोर लगै तनु अंतर कौन सुं वात कहुँ विरहा की,
वियोग महोदधि मोहि तरावत सेंण ई अरु दास हुँ ताकी।
मैंन के जोर शरीर भयौ कृश काय रही तनु माहि न बाकी,
पोष के मास में कंत मिलावै जसा बलि जाऊं अहो निस वाकी ॥६॥
माह के मास में नाह मनावौ सहेली री बीनति जाइ करौ,
तुम्हें काहे रीसावत प्राण धणी अबला पर काहे कुं रोस धरौ,
निज आठ भवातर प्यारी सु प्रेम की प्यारी जसा नेमि आइ वरौ।
तिय राजुल कुंवरि विलाप करै मोहि अंगन आइ कै दुख हरौ ॥ ७ ॥
फागुण मास मे खेलत होरी सहेली सभै कछु मो न सुहावैं,
न्हाइ सिंगार बनाऊं नहीं तनु सौंधौ लगावत मोहि न आवै।
प्यारौ घरे नहीं नाह नगीनौ वसत जसा मन मेरे न भावै,
राजुल राजकुमारी कहै कुन ऐसी त्रिया पीउ कुं विरमावै ॥ ८ ॥
आतप जोर तपै तनु कोमल क्युं तुम कंत कहै गरमाई,
और त्रिया मन मांहि वसी काइ नाह कुं आली री हुँ न सुहाई।
स्याम-विना टुक ही न सुहावत मो वाके सरीर मे चितन काई,
दाख जसा उग्रसेन किसोरी कुं चैत महीनो महा दुखदाई ॥ ६ ॥
मंदिर मोहन आवत काहे कूं जोऊं मे वाट खरी पीउ तेरी,
दाघ वियोग लग्यो तनु भीतर क्यों न बुझावत मैं तेरी चेरी।
मास वैसाख मे नेम मिलावत ताहि वधाई मैं देत घनेरी,
राजुल आज कहै जसराज करौ प्रिउ प्रीति अबें अधिकेरी ॥ १० ॥
जेठ मे सीतल नाह करौं तनु आइ मिलौ मेरे प्राण पीयारे,
तौ विनु चैंन न पावु इकेली मैं तैं कछु कामण कत कीया रे।

बोलत बोलन आवत मो पै कपाट रिदा विचु तें छु टीया रे,
राजमती जसराज यदुपति देखण कुं तरसें अखिया रे ॥ ११ ॥
प्रगटे नभ बादर आदर होत घनाघन आगम आली भयौ है,
काम की वेदन मोहि सतावै आसाढ़ मे नेमि वियोग दयौ है।
राजुल संयम लेके मुगति गई निज कत मनाइ लयौ है,
जोर कै हाथ कहै जसराज नेमीसर साहिब सिद्ध जयौ है ॥ १२ ॥
इति नेमिनाथ राजीमती बारैमासै रा सवैया संपूर्ण
संवत् १८२० रा वर्ष श्रावण वदि १४ [प्रति-जैन भवन, कलकत्ता]

—:०:—

हीयाली गीत

परम परवीत अणजीत निर्मल बिहु पखे, सयल संसार जस वास सारइ
पुर इक मउज महिराणहर पालगर, वाट घणघाट दुख दाह वारइ ॥१॥
वदन जसु आठ दुनीया न सहुको वदइ, रमणदस पाच ताइ प्रगट राजइ
दोइ पग जासु दीसइ सदा दीपता, भेटता भूख भइ दूख भाजइ ॥२॥
चपल दृग भालीयल मोल बारू चवा, जुगल कर जीव सुर सेव सारइ।
सुगुण जिनहरष ची वीनती साभलउ, धींग नर नारि चउनाम धारइ॥३॥

गूढ प्रहेलिका

पढमक्खर विण सरवर सुहावे सहु जणा
मज्झक्खर विण किणही सुहावें नहि भणा
अतक्खर विण आगम कहै सयणा तणो
परिहा कहै कुमरी जिनहर्ष वाचौ सुणो ।१।